

अनुभूतिस्वरूपाचार्यप्रणीतं

# सारस्वतव्याकरणम्

( वृत्तित्रयात्मकम् )

निर्णयसागरमुद्रणालयम्, मुंबई २



**DONATED TO  
TTD CENTRAL LIBRARY**





अनुभूतिस्वरूपाचार्यप्रणीतं

# सारस्वतव्याकरणम्

( वृत्तित्रयात्मकम् )

श्रीमदिन्दिराकान्ततीर्थचरणान्तेवासिभिः

नारायण राम आचार्य “काव्यतीर्थ”

इत्येतैः संशोधितम्

---

सप्तमं संस्करणम् : १९५२

---

निर्णयसागर प्रेस, मुंबई २

मूल्यम् २॥।। रूप्यकाः

[ All rights reserved by the publisher ]

PRINTER & PUBLISHER  
Laxmibai Narayan Chaudhari

} for the Nirnaya-Sagar Press,  
} 26-28, Kolbhat Street, Bombay

## भूमिका

स्वरूपान्तोऽनुभूत्यादिः शब्दोऽभूद्यत्र सार्थकः ।

स मस्करी शुभां चक्रे प्रक्रियां चतुरोचिताम् ॥

संप्रति बहुत्र व्याकरणशास्त्रज्ञानायातीव सुगमप्रक्रियाकं बालो-  
पकारकमिति सारस्वतव्याकरणं विद्वांसो बालानध्यापयन्ति ।  
एतद्वन्थकारस्य प्रतिज्ञैवेत्थं ग्रन्थारम्भे वरीवरीति—“—बालधी-  
वृद्धिसिद्धये । सारस्वतीमृजुं कुर्वे प्रक्रियां नातिविस्तराम्” इति ॥  
अपि च ग्रन्थारम्भहेतुरित्थं श्रूयते—‘पुरा किल कस्मिंश्चित्समये विद्व-  
त्पुरोगमा अनुभूतिस्वरूपाचार्याः पण्डितवृन्दालंकृतपरिषदि ‘पुंक्षु’  
इत्यवदन् । तच्छ्रुत्वाऽव्यवहितक्षण एव तच्छिद्धान्वेषिभिः सदस्यैः  
पण्डितैः ‘अशुद्धोऽयं प्रयोगो भवद्भिः कृतः’ इति तेषां मानभङ्गायोपहासः  
कृतः । पृष्ठं च यदि भवदुक्तः पुंक्ष्विति प्रयोगः शुद्धश्चेत्तर्हि कथं  
तत्सिद्धिः ? । आचार्यैस्तदा सादरं श्रो दर्शयिष्य इत्युक्तम् ।  
अनन्तरं दूयमानस्वान्तैस्तैः स्वभवनमागत्य समाराधिता श्रीभग-  
वती सरस्वती देवी । सा चैतस्य शुद्धभावनया सुप्रसन्नीभूयार्धरात्रेऽ-  
नुभूतिस्वरूपाचार्याभिमुखी बभूव जगाद च—‘ईप्सितं वरं वृणीष्व’  
इति । तदा देवीदर्शनात्कृतार्थमन्यैरेभिरपूर्वमिदं व्याकरणकरणमेव  
वृतम् । प्रसन्नया तया दत्तं स्वीयहारात्सूत्रसङ्गं व्याकरणनिर्माण-  
सामर्थ्योर्जितं वरं च समाकलय्य तन्नाम्रैवेमं ग्रन्थमाचार्या अररुचन् ।  
सोऽयं प्रसादलब्धो ग्रन्थः शिष्यप्रशिष्यशाखापरंपरया विचकासः ।  
आक्षेपकाणां समाधानं चानेन यथावदभूदिति जनश्रुतिः’ ।

वृत्तित्रयात्मकेऽस्मिन्व्याकरणेऽनुभूतिस्वरूपाचार्यैस्तत्र तत्र बाढानां सुखबोधाय सूत्रवृत्तिस्तत्तदुदाहरणानि च यथावद्व्याख्यातानि सन्ति । तथा पाणिनीयव्याकरणवदाक्षेपसमाधानाद्यपि विशेषतोऽनवबोध-भिया नोपकृष्टम् । किंतु यथानायासेनाल्पमतीनामपि व्यत्पित्सुवा-लानां सुबन्त-तिङन्त-कृदन्त-समास-तद्धिताद्युदाहरणानां सुखबोधः स्यात्तथास्य रचना कृतास्ति ।

तदेतत्सर्वोपकारकमेतत्पुस्तकमेतावन्तं बहुभिरङ्कितमपि सुव्यव-स्थयाऽस्माभिरस्य मूलतो यावदन्तं प्रतिसूत्रं सूत्रारम्भ एव क्रमाङ्को विन्यस्तः । सूत्रान्ते प्रकरणसूत्राङ्कोऽपि पूर्वाङ्कितक्रमपरिपाठ्यैव तत्र तत्र स्थापितोऽस्ति । सर्वेषां वृत्तित्रयस्थसूत्राणां प्रसङ्गसम-कालं शीघ्रोपस्थितये च य आरम्भादाग्रन्थावधि स्थूलः क्रमाङ्को निवेशितस्तदनुगुणमेवान्तेऽखिलसूत्राणामकारादिमातृकावर्णक्रमकोशः संयोजितः । तथा पूर्वमेकवारमागतान्यपि कानिचित्सूत्राणि ग्रन्थ-कृता प्रसङ्गवशात्कचन पुनरुपात्तान्यपि तत्तत्स्थलोपस्थित्यै तानि तानि भिन्नक्रमाङ्कयोजनेन निर्दिष्टक्रमाङ्क एव गुम्फितानि सन्ति । ग्रन्थारम्भे च सर्वेषां सौलभ्याय प्रत्याहार-वर्ण-प्रयत्नादिग्रन्थबहि-र्भूता अपि विषयाः पृथक्कोष्ठकैर्निर्दिष्टाः सन्ति । सर्वं मूलं च जयपुरतः पण्डितवर-शिवदत्तशास्त्रिभिः प्रहितप्राचीनहस्तलि-खितपुस्तकमेलनेन यथामति शोधितमासीत् । कृतेऽप्येतादृशि प्रयत्ने ‘गच्छतः स्वलन-’ मिति न्यायेन मनुजाल्पधिषणानिसर्गमुलभं स्वलितं क्षमध्वमिति सदयार्द्रहृदो ग्रन्थशोधनायासविदः कोवि-दानसकृदभ्यर्थ्यते ॥

# विषयानुक्रमकोशः

## प्रथमा वृत्तिः १

| प्र० | प्रक्रियानाम                      | पृष्ठम् |
|------|-----------------------------------|---------|
| १    | संज्ञाप्रकरणम् ... ..             | १       |
| २    | स्वरसन्धिः ... ..                 | ६       |
| ३    | प्रकृतिभावसन्धिः ... ..           | ११      |
| ४    | व्यञ्जनसन्धिः ... ..              | १३      |
| ५    | विसर्गसन्धिः ... ..               | १६      |
| ६    | स्वरान्ताः पुंलिङ्गाः ... ..      | १९      |
| ७    | स्वरान्ताः स्त्रीलिङ्गाः ... ..   | ३३      |
| ८    | स्वरान्ता नपुंसकलिङ्गाः ... ..    | ३८      |
| ९    | हसान्ताः पुंलिङ्गाः ... ..        | ४२      |
| १०   | हसान्ताः स्त्रीलिङ्गाः ... ..     | ६२      |
| ११   | हसान्ता नपुंसकलिङ्गाः ... ..      | ६५      |
| १२   | युष्मदस्मत्स्वरूपप्रक्रिया ... .. | ६९      |
| १३   | युष्मदस्मदोरादेशविशेषाः ... ..    | ७२      |
| १४   | स्त्रीप्रत्ययप्रकरणम् ... ..      | ७६      |
| १५   | कारकप्रकरणम् ... ..               | ८१      |
| १६   | समासप्रकरणम् ... ..               | ९२      |
| १७   | तद्धितप्रकरणम् ... ..             | १०४     |

## द्वितीया वृत्तिः २

| प्र० | प्रक्रियानाम             | गणः | पृष्ठम् |
|------|--------------------------|-----|---------|
| १    | भ्वादिषु परस्मैपदिनः     | १   | ११९     |
| २    | भ्वादिष्वात्मनेपदिनः     | १   | १४७     |
| ३    | भ्वादिषूभयपदिनः          | १   | १५३     |
| ४    | अदादिषु परस्मैपदिनः      | २   | १५७     |
| ५    | अदादिष्वात्मनेपदिनः      | २   | १६६     |
| ६    | अदादिषूभयपदिनः           | २   | १६८     |
| ७    | जुहोत्यादिषु परस्मैपदिनः | ३   | १७०     |
| ८    | जुहोत्यादिष्वात्मनेपदिनः | ३   | १७२     |
| ९    | जुहोत्यादिषूभयपदिनः      | ३   | १७३     |
| १०   | दिवादिषु परस्मैपदिनः     | ४   | १७४     |
| ११   | दिवादिष्वात्मनेपदिनः     | ४   | १७७     |
| १२   | दिवादिषूभयपदिनः          | ४   | १७८     |
| १३   | स्वादिषूभयपदिनः          | ५   | १७८     |
| १४   | स्वादिषु परस्मैपदिनः     | ५   | १८०     |
| १५   | स्वादिष्वात्मनेपदिनः     | ५   | १८१     |
| १६   | रुधादिषूभयपदिनः          | ६   | १८१     |
| १७   | रुधादिषु परस्मैपदिनः     | ६   | १८२     |
| १८   | रुधादिष्वात्मनेपदिनः     | ६   | १८३     |
| १९   | तनादिषूभयपदिनः           | ७   | १८३     |
| २०   | तुदादिषूभयपदिनः          | ८   | १८४     |
| २१   | तुदादिषु परस्मैपदिनः     | ८   | १८६     |

| प्र० | प्रक्रियानाम           | गणः | पृष्ठम् |
|------|------------------------|-----|---------|
| २२   | तुदादिष्वात्मनेपदिनः   | ८   | १८७     |
| २३   | क्र्यादिषूभयपदिनः      | ९   | १८८     |
| २४   | क्र्यादिषु परस्मैपदिनः | ९   | १८९     |
| २५   | क्र्यादिष्वात्मनेपदिनः | ९   | १९०     |
| २६   | चुरादयः                | १०  | १९०     |
| २७   | ण्यन्तप्रक्रिया        | ... | १९२     |
| २८   | सप्रक्रिया             | ... | १९५     |
| २९   | यङ्प्रक्रिया           | ... | १९८     |
| ३०   | यङ्लुक्प्रक्रिया       | ... | २०१     |
| ३१   | नामधातुप्रक्रिया       | ... | २०३     |
| ३२   | आत्मनेपदव्यवस्था       | ... | २०५     |
| ३३   | भावकर्मप्रक्रिया       | ... | २०७     |
| ३४   | लकारार्थप्रक्रिया      | ... | २११     |

## तृतीया वृत्तिः ३

| प्र० | प्रक्रियानाम         |     |     |     | पृष्ठम् |
|------|----------------------|-----|-----|-----|---------|
| १    | कर्त्रर्थप्रक्रिया   | ... | ... | ... | २१२     |
| २    | निष्ठाधिकारप्रक्रिया | ... | ... | ... | २३०     |
| ३    | कसादिप्रक्रिया       | ... | ... | ... | २३७     |
| ४    | शीलार्थप्रक्रिया     | ... | ... | ... | २४०     |
| ५    | उणादिप्रक्रिया       | ... | ... | ... | २४५     |
| ६    | भावाधिकारप्रक्रिया   | ... | ... | ... | २४९     |
| ७    | कृत्यप्रक्रिया       | ... | ... | ... | २५३     |
| ८    | रुयधिकारप्रक्रिया    | ... | ... | ... | २५७     |
| ९    | क्त्वाप्रक्रिया      | ... | ... | ... | २६१     |





# श्रीः सारस्वतवृत्तित्रयसूत्रानुक्रमकोशः

| क्रमाङ्कः सूत्राणि. | क्रमाङ्कः सूत्राणि.     | क्रमाङ्कः सूत्राणि.    |
|---------------------|-------------------------|------------------------|
| अ.                  | ३४५ अचाक्षुषज्ञानार्थ-  | १३७० अतिबृहिभ्यां म-   |
| १ अइउऋऌसमानाः       | धातूनां योगे नैते       | निष्                   |
| ४३ अ इ ए            | आदेशा वक्तव्याः         | १०९ अतोऽत्युः          |
| ६२३ अइकौ च मत्वर्थे | ५९३ अचित्तवाचकादिकः     | २१५ अतोम्              |
| ३१ अः इति विसर्ज-   | २२६ अच्चास्त्रां शसादौ  | ७२९ अतोन्तोऽनतः        |
| नीयः                | ३६१ अजादेश्वाप् व-      | ४७५ अतोऽमनतः           |
| ४६२ अकथितं च        | ७७५ अजेरार्धधातुके      | ८११ अत्यतिव्ययतीनां    |
| ४६३ अकर्मकधातुभि-   | वी वक्तव्यः व-          | थपो नित्यमिड्          |
| योगे देशः कालो      | सादौ वा                 | ८७६                    |
| भावो गन्तव्योऽ-     | २८४ अञ्जेः पञ्चसु नुमा- | ४७२ अत्यादयः क्रा-     |
| भ्वा च कर्मसंज्ञः   | गमो वक्तव्यः            | न्ताद्यर्थे द्वितीयया  |
| स्यादिति वाच्यम्    | २८६ अञ्जेर्दीर्घश्च     | ११०७ अत्र गत्वाभावो    |
| १३३ अकारस्य भिसि    | ९९६ अञ्जेः स्यौ नित्य-  | वाच्यः                 |
| छन्दस्येकारो व-     | मिड् वाच्यः             | १३३५ अत्रभवत्तत्रभव-   |
| क्तव्यः             | १००५ अङ्द्वित्वव्यवधा-  | च्छब्दौ पूज्यार्थे     |
| १२५ अकाराज्जसोऽसु-  | नेऽपि सुट् स्यात्       | निपात्येते             |
| क् क्वचिद्वक्तव्य-  | १२१६ अटौ                | ७८४ अत्वतो नित्यानि-   |
| १०६० अङ्परि जौ इङो  | ५८९ अणीनयोर्युष्मद-     | टस्थपो वेद्            |
| गाङ् वा वक्तव्यः    | स्मदोस्तवकादिः          | २९४ अत्वसोः सौ         |
| १०४३ अङ्सयोः        | १४९ अतः                 | १२६१ अदसोम् आदेशः      |
| ८४५ अङि लघौ ह्रस्व  | ७०५ ”                   | २९० अदसोर्सेर्दादुदोमः |
| उपधायाः             | ५६१ अत इज्जृषेः         | ८८०                    |
|                     | ७५७ अत उपधायाः          | ६९५ अदे                |
|                     | १०९५ अतिशये ह्रसादे-    | १२९० अदो जङुः          |

## सारस्वतव्याकरणे

| क्रमाङ्कः सूत्राणि.  | क्रमाङ्कः सूत्राणि.   | क्रमाङ्कः सूत्राणि.   |
|--|---|---|
| ८८२ अदो दिस्योरहा-<br>गमो वक्तव्यः                                 | २५ अन्यस्वरदिष्टिः<br>२६ अन्यात्पूर्वं उपधा   | ९३१ अबादावीपि ति-<br>स्मि   |
| १३१ अद्वि  | १००८ अन्यत्र सो जः  | ५२७ अभाषितपुंस्कस्य<br>च न पुंवत्   |
| ८७७ अद्विरुक्तस्य ह्य-<br>तेः संप्रसारणं व-<br>क्तव्यम्            | ५७७ अन्यस्य दक्<br>४९९ अन्यादीनां विभ-<br>क्तिलोपे कर्मव्य-<br>तिहारे पूर्वपदस्य<br>सगागमो भवति | ४३० अभिनिविशश्च<br>१२२२ अभूततद्भावे<br>१२३७ अभूततद्भावे क्-<br>भ्वस्तियोगे नान्न-<br>शिवः |
| ४९२ अन् खरे  | ५२३ अन्यार्थे   |   |
| १२३५ अन उः   | ४९७ अभ्यादेः सोमादीनां<br>षत्वं वक्तव्यम्   | १२६ अमृशसोरस्य<br>३०० असंभवे पुंसः क<br>क् सौ   |
| १२४५ अनः   | ४५८ अन्योक्ते प्रथमा  |   |
| २७१ अनटौ सोः   | ३२१ अहः सः  | १२२९ अमनुष्यकर्तृके च   |
| ७०६ अनद्यतनेऽतीते  | १०८ अहो रोऽरात्रिषु   | ४८३ अमादौ तत्पुरुषः   |
| १०९७ अनपि च हसात्  | ६९१ अप् कर्तरि  | २०१ अम्बादीनां धौ ह्रस्वः   |
| ४९३ अनादेशोऽपदा-<br>न्तवद्वाच्यः                                   | ५५७ अपत्येऽण्   | १०१८ अयकि   |
| ७५४ अनिटो नामिवतः  | ६९३ अपित्तादिर्ङित्   | १८५ अरु पञ्चसु  |
| ९१० अनिति  | ८५१ अपिद्वाधास्थामि-<br>त्वं सेर्ङित्वं आ-<br>त्मनेपदेवाच्यम्                                   | २३ अरेदो नामिनो<br>गुणः   |
| ११६६ अनुपसर्गाज्जाना-<br>तेरात्मगामिनि<br>फले आत्मनेपदं<br>वाच्यम् | ८२३ अपिरञ्जदंशषञ्ज-<br>ष्वजाम्  | १३९५ अर्विरुचिशुचिहु-<br>सृपिच्छादिहृदिभ्य<br>इस् प्रत्ययो भवति                           |
| ८१ अन्तस्था द्विप्र-<br>मेदाः                                      | ९१ अपिशब्दादीर्घा<br>त्पदान्ताद्वेति व-<br>क्तव्यम्   | ६११ अर्णः केशयोर्वः<br>३८४ अर्यक्षत्रियाभ्यां<br>वा स्वार्थे                              |
| १९५ अन्ते गोराम् छ-<br>न्दसि                                       | ३७६ अप्ययोरानित्यम्   | २५६ अर्वणक्षसावनमः  |
| ३७१ अजन्ताद्बहुव्रीहे-<br>र्भाप् वा वाच्यः                         | १३३० „ „<br>१००९ अप्रत्ययो ऋद्वत्   | १३३८ अलंकृष् निराकृष्<br>प्रजन् उऽऽत्   |

| क्रमाङ्कः सूत्राणि.     | क्रमाङ्कः सूत्राणि.     | क्रमाङ्कः सूत्राणि.      |
|-------------------------|-------------------------|--------------------------|
| त्पत्उत्पद्प्रसउ-       | ६९७ अव्यवधानाच्च पु-    | ९०९ अस्तेरीट्            |
| मन्दूश्च अपत्रप्        | रुषविशेषः               | ६०६ अस्त्यर्थे मतुः      |
| वृत्तुवृत्तुसहचरभू-     | ४३३ अशिष्टव्यवहारे      | ६३५ अस्मायामेधास्त-      |
| भ्राज् अन्त             | दाणः प्रयोगे            | गभ्योऽस्त्यर्थे          |
| एभ्य इष्णुः             | चतुर्थ्यर्थे तृतीया     | विनिर्वक्तव्यः           |
| १४८९ अलंखत्वोः प्रति-   | १०९९ अशेरनायो वा        | १३८९ अस्य गुणः           |
| षेधे क्त्वा             | ११४६ अश्ववृषयोर्मैथुने- | १३९० अस्य घान्तादेशो     |
| ५४९ अलुक् कचित्         | च्छायां यः प्रत्य-      | गागमश्च निपा-            |
| ५१७ अल्पाख्यायां च      | यः सुगागमश्च            | त्यते कन्प्रत्यये        |
| ६८० अल्पार्थे कुटीश-    | २६७ अष्टनो डौ वा        | परे                      |
| मीशुण्डाभ्यो रः         | ३०० असंभवे पुंसः कक्    | ८७८ अस्यतिवक्तिख्या      |
| २२७ अल्लोपः खरेऽम्ब-    | सौ                      | तिलिपिसिचिह्न-           |
| युक्ताच्छसादौ           | २७ असंयोगादिपरो         | यतीनां सेर्गे वा         |
| १०४० अल्लोपिनो नाङ्     | हस्वो लघुः              | वाच्यः                   |
| कार्यम्                 | १४२५ असरूपोऽपवादः       | ९२० अस्यतिवक्तिख्या-     |
| १४७ अवकुप्वन्तरेऽपि     | प्रत्ययोऽस्त्रियां      | तीनामात्मनेपदे           |
| १३६९ अवतेर्मुक्         | वा वाधकः सरू-           | सेर्गे वाच्यः            |
| ४७७ अवधारणार्थे या-     | पस्तु नित्यम्           | ९७४ अस्यतेर्गे धुग्वक्त- |
| वति च                   | ७७९ असवर्णखरे पूर्वे-   | व्यः                     |
| ५ अवज्या नामिनः         | कारोकारयोरियु-          | ५३६ अहोरात्रमित्यत्र     |
| ९४ अवसाने वा            | वौ वक्तव्यौ             | नपुंसकत्वं वा            |
| १२२ अविभक्ति नाम        | ९५५ असवर्णे खरे पू-     | वक्तव्यम्                |
| १३९८ अवेतृस्तृप्तश्चि-  | र्वस्य इयादेशो          | १०८ अहो रोऽरात्रिषु      |
| कण्ठिभ्य ईः             | भवति                    | आ                        |
| ५८८ अव्ययसर्वनाम्ना-    | १३९४ असि नलोपो          | ६३० आइश्चैतदो वा         |
| मकच् प्राक् टेः         | वाच्यः                  | ११७० आई भुवि कर्मणि      |
| ३५९ अव्ययाद्विभक्त्यैक- | ९०३ अस्तरनपि भू         | ५१६ आगन्तुकस्यैक-        |
| ४७९ अव्ययीभावात्        | वक्तव्यः                | वचनान्तस्स वा            |

| क्रमाङ्कः सूत्राणि. | क्रमाङ्कः सूत्राणि.   | क्रमाङ्कः सूत्राणि.   |
|---------------------|-----------------------|-----------------------|
| १७१ आगमजमनित्यम्    | ६८४ आदनुदात्तङितः     | १४४ अभिमुख्याभि-      |
| ४७९ आङ् मर्यादाभि-  | ८८४ आदन्तविदद्वि-     | व्यक्तये हेतुबन्धस्य  |
| विध्योः             | षामन उस् वा           | प्राक्प्रयोगः         |
| ९२ आङ्माङ्भ्यां च   | वक्तव्यः              | ७१२ आभ्वोर्णादौ       |
| वक्तव्यम्           | १११ आदवे लोपश्        | ४०९ आमन्त्रणे च       |
| ४५१ आढादियोगे च     | ६९८ आदाथ ई            | १४२ आमन्त्रणे सिध्दिः |
| ११५३ आढो दोऽनास्य-  | २३९ आदिजबानां         | ८९८ आमि विदेर्न गुणः  |
| विहरणे              | ज्ञभान्तस्य           | ३२८ आमौ               |
| ११५७ आढो यमहनः      | ज्ञभाः रुध्वोः        | १८३ आमूर्ध्वेर्नियश्च |
| ११४४ आचार उपमा-     | १२८५ आदितः कर्मणि     | ८३८ आमृप्रत्ययो       |
| नात्                | निष्ठा कर्तरि च       | यस्माद्विहितः स       |
| १२२३ आढ्यसुभगस्थूल- | वाच्या                | चेदात्मनेपदी          |
| पलितनम्रान्ध-       | ५५८ आदिस्वरस्य ङिण-   | तर्हि अनुप्रयुक्त-    |
| प्रियेषु कृञः       | ति च वृद्धिः          | कृञ् आत्मनेपदं        |
| ख्युट् वाच्यः       | १२८२ आदीदितः          | भवसोर्नात्मने-        |
| १०९९ आतः            | १३६५ आदतः किर्दिश्च   | पदम्                  |
| ८६७ आति सक्कोकार-   | भूते                  | १९४ आम् शसि           |
| लोपः खरे            | ५५१ आदेश्व द्वन्द्वे  | ३३१ आम् स्मौ          |
| ८०४ आतो णप्डौ       | ७४८ आदेः णः स्त्रः    | ७८१ आयः               |
| १५७ आतो धातोर्लोपः  | १३१ आङ्नि             | ५६६ आयनेयीनीयियः      |
| ८०५ आतोऽनपि         | १३ आयन्ताभ्याम्       | फट्खल्लघां प्रत्य-    |
| ८०९ ”               | ४२६ आधारे सप्तमी      | यादीनाम्              |
| १२४२ आतो मनिन्क्-   | १९६ आपः               | २४ आरौ औ वृद्धिः      |
| निब्वनिपः           | १०९० आप्रोतेरीः       | ६३८ आलाटौ कुत्सित-    |
| ११७५ आतो युक्       | २०३ आबन्तः स्त्रियाम् | भाषिणि                |
| ११९२ ”              | ३६५ आबन्तस्यानाब-     | १३५२ आलौ विलोपा-      |
| १२० आत्खसयोः        | न्तस्यापि कप्रत्यये   | भावो वाच्यः           |
| ७८८ आदन्तानां यमि-  | परे बहुव्रीहौ वा      | ७१८ आशिषि च           |
| रमिनमीनां सेरिट्    |                       | ७०३ आशीःप्रेरणयोः     |
| सक् च पे वक्तव्यौ   |                       |                       |

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

७१९ आशीर्वादः  
पं किदिति वक्त-  
व्यम्

१२५९ आ सर्वादः

१३२८ आसेरानई

२५९ आसौ

९३२ आहश्च पञ्चानाम्

३५० आहि च दूरे

इ

१४७५ इक् कृष्यादिभ्यः

१४७२ इक्षितपौ धातु-  
निर्देशे

१२१७ इखलि

१०८६ इङः से गम्

वाच्यः

१०५९ इडादेर्जौ पुक् च

९२६ इडो णादौ गा

वक्तव्यः

९२६ इडो वा गी सौ

लृङि च तत्प-

रस्य प्रत्ययस्य

ङित्वं वाच्यम्

१४२७ इच्चातः

१०७५ इच्छायामात्मनः

सः

१४७४ इम् अजादिभ्यः

७३७ इट ईटि

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

८९३ इणः क्किति स्वरे  
यो वक्तव्यः

८९४ इणः किति णादौ  
पूर्वस्य दीर्घो व-  
क्तव्यः

८९५ इणिकोः सिलोपे  
गा वक्तव्यः

१३२३ इणो दीर्घता  
कसौ वक्तव्या

११७२ इण्तन्यकर्तरि

१३६० इण्णशजिस्सग-  
मिभ्यः करप्  
वाच्यः

१४४५ इण्णस्तुवृद्धशास्-  
जुषूखन् एभ्यः  
क्यप् वाच्यः

६५२ इतो जातार्थे

२५७ इतोत्पञ्चसु

४४८ इत्थंभावे तृतीया

३२५ इदमेतदोर्द्वितीयै-  
कवचने नपुंसके  
एनद्वा वाच्यः

३७४ इदमोऽप्यन्वादेशे  
द्वितीयादौः  
स्वेनादेशो  
वक्तव्यः

२६९ इदमो यं

१३८० इदिचदिशकिरु-  
दिभ्यो रः

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

७४७ इदितो नलोपा-  
भावो वाच्यः

७४५ इदितो नुम्

२०७ इदुञ्चाम्

२६१ इनां शौ सौ

३८२ इन्द्रादेरानीप् च

५११ इन्द्रादिभ्यश्च

६०३ इमनि लोपः

३३ इ यं स्वरे

३१७ इयं स्त्रियाम्

५८३ इयो वा

७४० इरितो वा

१४६८ इषादेरङ्घर्थे युट्

७९२ इषुसहलुभरिषरु-  
षामनपि तस्येङ्  
वा वक्तव्यः

१३६३ इषेरुश्छश्च

१४५४ इषेरुश्छःन्तादेशो  
यलोपश्च

१३३९ इष्णुप्रत्यये परे  
ज्यन्तानां जिलो-  
पाभावो वाच्यः

१३३७ इष्णुलुक्

१३९१ इस्मन्नासुकः स-  
र्वधातुभ्यः

१०८८ इस्ते

ई

८२१ ईटो ग्रहाम्

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

१२१ ईदीशोः सध्वयो-

रीड् वक्तव्यः

१२४८ ईपि वनो नस्य

रो वाच्यः

३७९ ईप्यनड्डहो वाम्

वक्तव्यः

३८८ ईप् समाहारे

गुणश्च

२१६ ईमौ

६५४ ईयस्त्रिष्टौ ङिता-

विति वक्तव्यौ

९५४ ईर्वा हौ

१०२२ ई हसे

६५७ ईलोपो ज्याश-

ब्दादीयसः

१४६० ईशशीङ्गेर्वरक्ति-

प्रत्ययौ नेङ्-

गुणश्च

६४० ईषदपरिसमाप्तौ

कल्पब्देश्य-

देशीयाः

१४२२ ईषहुःसुषु खल्य

उ

८६४ उः

४५ उ ओ

१९० उकारान्तस्यापि

क्रोडुशब्दस्य प-

ञ्चस्वधिषु तृप्रत्य-

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

यान्तता वा

वक्तव्या

४०६ उत ऊः

५१५ उत्पूतिसुसुरभि-

भ्यो गन्ध-

शब्दस्येकारा-

न्तादेशो बहु-

व्रीहां वक्तव्यः

२९१ उद इत्

१४१८ उदकस्य

११६१ उदश्चरस्त्यागे

१४२० उदःस्थाःस्तम्भोः

सलोपश्च

१४८२ उदितः क्त्वा वेद्

११६० उद्विभ्यां तपः

१०३४ उपधाया ऋवर्ण-

स्याङि ऋ वा

वक्तव्यः

१०५८ "

७३५ उपधाया लघोः

३७२ उपधालोपिनोऽ-

जन्ताद्बहुव्रीहे-

रीप् वा

५१८ उपमानाच्च

५५५ "

४१४ उपर्यध्यधसः सा-

मीप्ये

१४१७ उपसर्गकर्माधारे-

षु दाधोः किः

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

१३२७ उपसर्गस्थान्निमि-

ताञ्जकारस्य णो

वाच्यः

७६१ उपसर्गस्थान्निमि-

ताञ्जेर्गदादौ

णत्वं वाच्यम्

५९ उपसर्गादवर्णा-

न्तादकारादौ

धातौ आद्

भवति

४८२ उपसर्जनं पूर्वं

१०१४ उपात्तिकरतेऽष्टे-

देऽर्थेऽसुड् वाच्यः

४३१ उपान्वध्याङ्वसः

१३८२ उपप्रत्ययः

४४२ उभयप्राप्तौ कर्मणि

४ उभये स्वरः

५६० उरणि

१२१३ उरसः सलोपो

मुम्बा

३१३ उरसे

९८० उर्वमोर्वा लोपः

३८ उवम्

३०३ उशनसाम्

८०१ उषविदजागृणा-

माम्बा वक्तव्यः

९१२ उत्ति जागर्तेर्धातो-

गुणो वक्तव्यः

८०८ उत्स्यालोपः

## सूत्रानुक्रमकोशः

७

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

ऊ

- ७५१ ऊदितो वा  
 ५१९ ऊघसोऽनङ्  
 ५२६ ऊप्रत्ययान्तस्य च  
     न पुंवत्  
 ६१० ऊर्णाहंशुभंभ्यो युः  
 ९३६ ऊर्णोतेर्गुणो दिस्योः  
 ९३७ ऊर्णोतेरात्र  
 ९३५ ऊर्णोतेर्वा वृद्धिः  
 ९४१ ऊर्णोतेर्वा वृद्धिः  
     सौ परे  
 ९४० ऊर्णोतेरिडादिः  
     प्रत्ययो वा ङित्  
 ३५३ ऊर्युर्यङ्गीकरणे  
 ११३६ ऊष्मबाष्पाभ्या-  
     मुद्रमने यङ्  
     वाच्यः  

ऋ

 ५६ ऋ अर्  
 ६३ ऋलृवर्णयोः सा-  
     वर्ण्य वक्तव्यम्  
 १२०५ ऋकारान्ताच्च  
 ११२२ ऋकारान्तानामृ-  
     दुपधानां च य-  
  
 स्य रुक्प्रिक्रीक्  
 आगमा व-  
 क्तव्याः  
 ६१ ऋकारादौ आर्  
     नेति वाच्यम्

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

- ६० ऋकारादौ नाम-  
     धातौ वा  
 १३२५ ऋकारानुबन्धस्य  
     नुमानम् एव  
     भवति न वीर्धता  
     वक्तव्या  
 ३७० ऋचि पादन्तादाब्  
     वक्तव्यो न ईप्  
 १७२ ऋङ् ङे  
 ८२० ऋत इर्  
 ४३७ ऋत आदियोगे  
     पञ्चमी  
 ५५२ ऋतां द्वन्द्वे  
 ५८ ऋते च तृतीया-  
     समास एवाद्  
 ४३८ ऋतेयोगे द्विती-  
     यापि  
 १७३ ऋतो ङ उः  
 ११११ ऋतो रिः  
 ७१ ऋतौ समानो वा  
 ११०८ ऋत्वतो रीगवाच्यः  
 ८७९ ऋतेरीयङ्स्वार्थे-  
     नपितु वा  
 ८१६ ऋदन्तस्य थपो  
     नेद्  
 ८६३ „  
 १४३५ ऋदुपधात्क्यप्  
 ९४७ ऋप्रोरीः पूर्वस्य

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

- ३९ ऋ रम्  
 ६०४ ऋर इमनि  
 ७४३ ऋसंयोगात् णाङ्-  
     रक्त्वं वाच्यम्  
 ८१५ ऋसंयोगादेर्णादे-  
     रक्त्वं वाच्यम्  
 ९४९  
 १३७३ ऋस्तुसुहृदुमृक्षि-  
     क्षुभामान् यावा-  
     जक्षरैतीदृयैङ्पद  
     एभ्यो मः प्रत्य-  
     यो भवति  
 १४३० ऋहसात् घ्यण्  

लृ

 ६२ लृ अल्  
 ४० लृलम्  

ए

 ४१ ए अय्  
 ४४ ए ऐ ऐ  
 ३ एऐओऔ संध्य-  
     क्षराणि  
 १५९ ए ओ जसि  
 ४९८ एकवद्भावो वा स-  
     माहारे वक्तव्यः  
 ५०० एकत्वे  
 ६६६ एकादशादेर्ङः  
 ६३७ एकादाकिनिच्चा-  
     सहाये

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

६७५ एकाग्रमुष्वा  
 १२१९ एजां खश्  
 ३३३ ए टाड्योः  
 ६२७ एतर्त्तिक्यत्तञ्चः  
 परिमाणे वतुः  
 २८३ एतदोऽन्वादेशे  
 द्वितीयाटौःखे-  
 नादेशो वा  
 वक्तव्यः  
 ३४३ एते आदेशा अ-  
 न्वादेशे नित्य-  
 मनन्वादेशे वा  
 वक्तव्याः  
 १४४९ एते भावकार्ययो-  
 र्विहितास्तव्या-  
 दयस्तेऽर्हविधौ  
 च वक्तव्याः  
 ५१ एदोतोतः  
 ३०८ एरी बहुत्वे  
 १३५ एस्मि बहुत्वे  
 ४७ ऐ आय्  
 ४०१ ऐच् मन्वादेः  
 १६७ ऐ सख्युः  
 ओ  
 ४२ ओ अव्  
 ४६ ओ औऔ  
 १४३४ ओदातोर्त्यः प्रत्य-  
 यः खरवत्

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

५४ ओमाळावपि  
 ५५ ओमि नित्यम्  
 १४३३ ओरावश्यके घ्यण्  
 २४ ओरैऔ वृद्धिः  
 १९३ ओरौ  
 ८९१ „  
 ९८१ ओर्वा हेः  
 ६४ ओष्ठोत्वोर्वा  
 १३८ ओसि  
 औ  
 ४८ औ आव्  
 ६७ औ निपातः  
 ६३२ औन्नत्ये दन्तादुरः  
 १५८ औ यू  
 ९७ औरी  
 क  
 ६७२ कतिकतिपयाभ्यां  
 थः  
 १४९० कथमादिषु स्वार्थे  
 कृञो णम्  
 ८४७ कमेरङ् द्वित्वे वाच्ये  
 ८४२ कमेः स्वार्थे जिः  
 प्रत्ययो वक्तव्यः  
 १२६४ करणे उपपदे य-  
 जेर्णिनिर्वाच्यः  
 ११३३ करणे च  
 १४६५ कर्तरि क्तिश्च सं-  
 ज्ञायाम्

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

६९० कर्तरि पं च  
 ४२० कर्तरि प्रधाने क्रि-  
 याश्रमे साधने च  
 १२६६ कर्तयुपमाने णि-  
 निर्वाच्यः  
 ४१२ कर्तुरीप्सिततमं  
 कर्म  
 ११४० कर्तुर्यङ्  
 ४६१ कर्तृकरणयोस्तृ-  
 तीया  
 ४४१ कर्तृकार्ययोरक्तादौ  
 कृति षष्ठी  
 १२२७ कर्मणि संपूर्वाच्च  
 ५३७ कर्मधारयस्तु-  
 ल्यार्थे  
 ४१८ कर्मप्रवचनीययुक्ते  
 द्वितीया  
 ११८१ कर्मवत्कर्मणा तु-  
 ल्यक्रियः  
 ११६७ कर्मव्यतिहारेऽ-  
 न्यत्र हिंसादेरात्  
 ६०० कर्मण्यपि यण्  
 वक्तव्यः  
 ६५१ कल्याण्यादीना-  
 सिनेयः  
 ५९४ कवचिन्शब्दादिकः  
 १११७ कवतेर्यङि चुत्वा-  
 भावो वाच्यः



| क्रमाङ्कः सूत्राणि.       | क्रमाङ्कः सूत्राणि.     | क्रमाङ्कः सूत्राणि.      |
|---------------------------|-------------------------|--------------------------|
| २४२ कषसंयोगे क्षः         | १००१ कुर्चुरोर्न दीर्घः | १४४८ कृष्योर्वा क्यप्    |
| ५४२ काकवकदुष्णे           | ७४६ कुहोश्चुः           | ७९७ कृषादीनां रो वा      |
| ३६२ काप्यतः               | १४३९ कृजः क्यपि वा      | वक्तव्यः                 |
| ११२८ काम्यश्च             | रिङ् वक्तव्यस्तु-       | १०१७ कृषादीनां वा        |
| ५७९ कारकात्क्रियायुक्ते   | गभावश्च                 | सिर्वक्तव्यः             |
| १५ कार्यायेत्             | १००२ कृजो नित्यं वमो    | ६१८ कृष्यादिभ्यो वलच्    |
| १२१० कार्येऽण्            | रुलोपो वाच्यः           | दीर्घश्च                 |
| १४०२ कालसमयवेलासु         | १४५३ कृजो यक् वा        | १०८४ कृगृधुट्प्रच्छस्मि- |
| तुम्                      | वाच्यः                  | डवञ्ज्वशूढर्तो           |
| ४१९ कालाध्वनोर्नैरन्तर्ये | १००३ कृजो ये            | सस्येङ् वक्तव्यः         |
| ७६६ कासादिप्रत्यया-       | ११९० कृतः               | १४६३ कृत्वादिभ्यश्च      |
| दाम्कृअस्-                | १३१९ कृतद्वित्वानामेक-  | क्तेरर्थे निः प्रत्य-    |
| भूपरः                     | स्वराणामाद-             | यो भवति                  |
| १२८० कितः                 | न्तानां च घसेरेव        | ७४४ केचित्संयोगाद्वेति   |
| ५६७ किति च                | कसोरिङ्वाच्यो           | वक्तव्यम्                |
| ६२९ किमः किर्यश्च         | नान्येषाम्              | ५९६ केदाराद्यञ् च        |
| ३५१ किमः सामान्ये         | ४६७ कृते समासे अ-       | ५८० केनेयेका             |
| चिदादिः                   | व्ययानां पूर्वनि-       | ५२८ कोपधपूरणी संज्ञा-    |
| १२६० किमिदमः कीश्-        | पातो वक्तव्यः           | नां च न पुंवत्           |
| इशौ                       | ११८७ कृतकर्तरि च        | ६९४ क्लियद्भ्युसि        |
| ६५९ किमोऽव्ययादा-         | ४०० कृदिकारादक्तेरीप्   | १२७० क्तक्तवतू           |
| ख्याता च्चतरत-            | वा वक्तव्यः             | ५०९ क्तक्तवतू निष्ठा     |
| मयोराम् व-                | १३६७ कृवापाजिमिस्त्रि-  | १२९१ ,,                  |
| क्तव्यः                   | दिसाध्यशूङ्             | १२८९ क्तस्य च वर्तमाने   |
| ५४० कुगतिप्रादयः          | एभ्य उण्प्रत्ययो        | १४७० क्तिरापादिभ्यः      |
| २२ कुचुडुतुपु वर्गाः      | भवति                    | १२७७ क्तो वा सेद्        |
| १०१३ कुटादे               | १४३६ कृपिच्युर्न क्यप्  | ३५८ क्त्वाद्यन्तं च      |
| प्रत्ययो ङित्             | ८५७ कृपो रो लः          | ७८६ क्रमः पे चतुर्षु     |
| ५४१ कृत्सितेषदर्थयोः      |                         | दीर्घता वक्तव्या         |
| १०६ कृवोऽकऽपौ वा          |                         |                          |

क्रमाङ्कः सूत्राणि

७८५ क्रमुभ्रमुत्रसिनु-  
 टिलषभाश्-  
 भ्लाशो वा यः  
 प्रत्ययो वक्तव्यः  
 ७९६ क्रादेर्णादेः  
 ४२३ क्रियया यमभि-  
 प्रैति सोऽपि  
 संप्रदानम्  
 ६७६ क्रियाया आवृत्तौ  
 कृत्वसुच्  
 ११५४ क्रीडोनुसंपरिभ्यश्च  
 ४५३ क्रुधः  
 र्थानां यं प्रति  
 कोपः  
 २११ क्रोष्टुः क्रियां तृ-  
 ज्वद्भावः स्यात्  
 १४८४ क्यपि अर्गुणश्च  
 ४५५ क्यब्लोपे कर्मण्य-  
 धिकरणे च  
 पञ्चमी वक्तव्या  
 ४८५ कचिदमाद्यन्तस्य  
 परत्वम्  
 ५७ कचिदाद्  
 ५७३ कचिद्वयोः  
 ११९ कचिन्नानिनोऽबे  
 लोपश्च  
 १२४४ कनिष्कचिदन्ये-  
 भ्योऽपि दृश्यते  
 १३१७ कसुकानौ णवेवत्

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

२८० किन्प्रत्ययस्य कुः  
 १२४९ किप्  
 १२६८ ,,  
 १२६७ किप्कनिप्डाः  
 १२५० किप्बचिप्रच्छया-  
 यतस्तुकटप्रुड्-  
 जुश्रीणां दीर्घः  
 संप्रसारणभा-  
 वश्च वक्तव्यः  
 १२५४ क्तिबन्ते वह्यनसो  
 डान्तादेशो वाच्यः  
 १४१ क्तिलात्षः सः  
 कृतस्य  
 ५८४ क्षत्रशब्दादण्  
 वक्तव्यः  
 १४२६ क्षय्यजय्यौ श-  
 क्यार्थे निपात्येते  
 १३१३ क्षायो मः  
 १२९६ क्षियो निष्ठायां  
 कर्तरि दीर्घो  
 वाच्यः  
 ११३४ क्षीरलवणयोस्तु-  
 ण्णायां यः सुट् च  
 १३४२ क्षेत्थ तथा  
 ख  
 १४४६ खन एत्वं क्यपि  
 वाच्यम्  
 १३११ खनेरात्वं निष्ठा-  
 याम्

क्रमाङ्कः सूत्राणि

४०५ खरुसंयोगोपधाज  
 ५९९ खलगोरयेभ्य इ-  
 नित्रकट्याः  
 १२२० खशन्ते पूर्वपदस्य  
 ह्रस्वो वाच्यः  
 ८९ खसे चपा क्त्वा-  
 नाम्  
 १२१८ खिति पदस्य  
 १२२१ ख्युट् करणे  
 ग  
 ५९५ गणिकाया ण्यः  
 ४६४ गतिबुद्धिप्रत्यय-  
 सानार्थशब्दक-  
 र्माकर्मकाणा-  
 मणि कर्ता स णौ  
 १२७१ गत्यर्थादकर्मकाश्च  
 कर्तरि क्तः  
 १३६१ गत्वरो निपात्यते  
 शीलेऽर्थे  
 ११५१ गमः परौ सिष्यौ  
 आत्मनेपदे वा  
 कितौ  
 ७८७ गमां छः  
 ७८९ गमां खरे  
 १३८३ गमेडौः  
 १०८७ गमेः से इङ्वाच्यः  
 १३२१ गम्हन्विद्विश्-  
 दशां कसोर्वेद

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

१२५३ गम्यमूनमूहनत-  
नादीनां क्तिपि  
अमस्य लोपो वा-  
च्यः क्यपि वा  
३९३ गवयहयमुकयम-  
त्स्यमनुष्याणां  
न निषेधः  
१०१६ गिरते रस्य वा  
लः खरे वाच्यः  
११९८ गिले परेऽगिलस्य  
६९२ गुणः  
६७४ गुणोऽण् च  
८१२ गुणोर्तिसंयोगाद्योः  
१४४१ गुप्गुहोः क्यप्  
८२४ गुब्भ्यः  
२१८ गुरुः शिच्च सर्वस्य  
वक्तव्यः  
१४६९ गुरोर्हसात्  
६५६ गुर्वादेरिष्टेमेयःसु  
गरादिष्मलोपश्च  
८६५ गुहैरुपधाया ऊ-  
द्गणहेतौ खरे  
५३१ गोः  
३९० गोपालिकादीनां च  
६४५ गोः पुरीषे  
१०८१ गौणः प्रकृत्यर्थो-  
ऽन्यत्र सात्  
८७३ ग्रहां किति च

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

१४४३ ग्रहेः क्यप्  
१३४० ग्लाजिस्थाभूम्ला-  
क्षिपच्यजपरि-  
मृज् एभ्यः क्युः  
१३८४ ग्लानुदिभ्यां डौः  
१४६१ ग्लाम्लाज्याहाक्-  
त्वरिभ्यः केरर्थे  
तिः प्रत्ययो  
भवति  
घ  
१४०३ घञ् भावे  
१२२५ घदादेशो वक्तव्यः  
८३२ घसादेः घः  
१३५४ घसादेः क्मरः  
१३७२ घृष्टपदो मः  
१११३ घ्राधोरी  
ङ  
३३६ ङसिभ्यसोः णुः  
१३६ ङसिरत्  
१३७ ङस्य  
१६२ ङस्य  
२०९ ङितामट्  
२०० ङितां यट्  
१६२ ङिति  
९४६ ङिति हसे भिय इ-  
कारो वा वक्तव्यः  
१००० ङित्यदुः  
१४४० ङिदनेकाक्षरोप्या  
देशस्तदन्तस्यव  
वक्तव्यः

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

१७७ ङिदन्त्यस्य वक्त-  
व्यः  
१५१ ङि स्मिन्  
१३४ ङे अक्  
९७१ ङे नशेरत एत्वं  
वा वाच्यम्  
१६४ ङेरौ ङित्  
९०७ ङे वचेरुमागमो  
वक्तव्यः  
१८६ ङौ  
१०० ङ्गोः कुक्कुट्  
वा शरि  
८७ ङ्गनो ह्रस्वाद्भिः  
खरे  
च  
९१९ चक्षिष्ठोऽनपि  
ख्याक्क्षानौ  
णादौवा वक्तव्यौ  
१३५७ चजोः कणौ चिति  
६५० चटकादेरण्  
११ चटतकप  
५७५ चतुरश्च लोपो  
प्यणीययोः  
२४८ चतुरामूशौ च  
६७० चत्वारिंशुदादौ वा  
७२ चपा अबे जबाः  
७५ चपाच्छशः  
११०४ चरफलोरुचास्य

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

१२०० चरिचलिपतिह-  
निवदीनां वा  
द्वित्वं पूर्वस्या-  
गागमश्च

३४७ चादिभिश्च

३४८ चादिनिपाताः

१११६ चायो यङि की  
वाच्यः

१२२६ चारौ वा

४९४ चार्थे द्वन्द्वः

९८२ चिनोतेः सणादौ  
कित्वं वा वाच्यम्

१०८

५८६ चिरादिभ्यः स्त्रः

१०३६ चिस्फुरोञोवात्वं  
वा

१०३१ चुरादेः

२८५ चोः कुः

१२३९ च्वौ दीर्घ ई चास्य

१२४० च्वौ सलोपश्च

छ

८८ छः

१४१६ छः श्रे

१० छठथखफ

१०२ छन्दसि

३२४ छन्दस्यागमजा-

नागमजयोर्लोपा-

लोपौ च वक्तव्यौ

२७६ छशषराजादेः षः

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

१३९६ छादेरिस्मन्त्रघञ्  
क्विप्सु ह्रस्वो  
वाच्यः

१२५१ छ्वोः शऊ वाच्यौ  
किति ङिति स्से  
परेऽनुनासिके  
क्वौ च  
ज

९११ जक्षदिरन्तोदन

उस्

२५३ जचोर्ज्ञः

९ जडदगब

८६२ जनस्वनसनां

ङिति य आकारो  
वा वक्तव्यः

४५० जनिकर्तुः प्रकृतिः

८९० जनिवध्योर्न वृद्धिः

१८६८ जनीजृष्णसुरञ्जो-  
मन्ताश्च

१३१० जनेर्जा निष्ठायाम्

१४६७ जरादौ ङानुबन्ध-

रहितः अप्रत्ययो

भवति

२०५ जरायाः खरादौ

जरखा वक्तव्यः

१३४६ जल्पभिक्षकुट्टु-

ण्टवृङ्गभ्यः

षाकः

प्रत्ययो भवति

२६४ जडशसोर्लृक्

२१७ जडशसोः शिः

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

१४५ जसी

९५३ जहातेर्यादादावा

लोपो वाच्यः

९५२ जहातेराकारस्य

ङिति हसे ईर्वा

वाच्यः

१३०६ जहातेश्च किति

८८७ जह्येधिशायि

९१३ जागर्तेः किति

गुणो वक्तव्यः

१३१८

१४५६ जागर्तेर्गुणः

१३५९ जागर्तेरूको वाच्यः

९७५ जा जनीज्ञोः

५२९ जातिवाचका-

त्स्वाङ्गवाचकाश्च

ईप्सदन्तस्य न

पुंवदमानिनि

३९२ जातेरयोपधात्

१०७० जानातेर्जौ वा

ह्रस्वः

११९७ जानातेश्च

१२२८ जायापत्योष्टक्

५१४ जायाया निङादे-

शो बहुव्रीहौ व-

क्तव्यो यलोपश्च

१३४१ जिम्बोः सौ गु-

णाभावो न इद्

| क्रमाङ्कः सूत्राणि.  | क्रमाङ्कः सूत्राणि.   | क्रमाङ्कः सूत्राणि.  |
|--|---|--|
| १०२६ जृत्तम्भुचुम्भु-<br>चुम्भुचुम्भु-<br>ग्लुम्भुश्चिम्भु-<br>श्चैरङ् वा  | ६८५ जित्स्वरितेतश्च<br>उमे<br>११३७ जिडित्करणे<br>१२८३ जीतां तक् वर्त-<br>मानेऽपि<br>८४४ जेः<br>८४३ जेरयङ्द्विश्च  | २२० डलकवतीनां न<br>१२४१ डाच्क्चिद्वक्तव्यः<br>१६५ डिति टेः<br>१२९४ डीङ् इडभावः<br>२९६ डणः<br>१४१३ द्वितत्रिमक्<br>ढ  |
| ११६५ ज्ञाश्रुस्मृदशां सा-<br>न्तानामात्  | १४७३ ज्यन्त आम्ग्रन्थ-<br>अर्थश्रन्थघट्-<br>विद्वदिङ्<br>षिम्भ्यः स्त्रियां<br>युर्वाच्यः   | ५६५ ढकि लोपः<br>८०२ ढिडो लोपो<br>दीर्घश्च<br>ण   |
| १०७१ ज्वलग्लान्नाश्च<br>वा मितः  | ११८० ज्यान्तानां मिता-<br>मिणिणिदिटि च<br>वा वृद्धिर्वाच्या<br>णिदिटि जिलो-<br>पश्च   | ९१५ णप्रवृण्णस्युटो<br>हित्वान्यस्मा-<br>हरिद्रातेरनप्या-<br>लोपो डिति वा<br>८३० णवादां पूर्वस्य<br>७५८ णलुत्तमो वा णि-<br>द्वक्तव्यः                              |
| १२०९ ज्वलादर्णेः<br>झ<br>८ झडधघभ<br>७१४ झपानां जबचपाः<br>३५ झमे जबाः<br>७५६ झसात्<br>८७१ झसाद्धिर्हेः<br>ज<br>७ जणनडम  | ५३३ टाडकाः<br>२३१ टादावुक्तपुंस्कं<br>पुंवद्वा<br>१६१ टा ना स्त्रियाम्<br>८५ टित्कितावायन्त-<br>योर्वक्तव्यौ<br>१३० टेन<br>८३ टोरन्त्यात्<br>१९९ टौसोरे<br>१४१२ टित्तोऽथुः<br>ड<br>१७८ डतेश्च | ७०९ णादिः कित्<br>५७४ णित्तो वा<br>७५९ णित्पे<br>१२६३ णिनिरतीते<br>४०३ णीपि परे नुर्वृ-<br>द्धिर्वाच्या<br>५६३ प्यायनणेयणीया<br>गर्गनडात्रिन्नी-<br>पितृष्वन्नादेः |
| ११०३ जमजपां नुक्<br>१४८६ जमस्य क्यपि<br>वा लोपः<br>१२७२ जमान्तस्य क्किति<br>झसे दीर्घः<br>९६ जमा यपेऽस्य<br>७३ जमे जमा वा<br>११३८ जाविष्ठवत्कार्यम्<br>१०४१ जिनिमित्तः खरा-<br>देशो द्वित्वे क-<br>र्तव्ये स्थानिवत् |   |  |

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

त  
६२६ तकारान्तस्य स-  
कारान्तस्य  
हसादावस्यर्थे  
प्रत्यये परे अप-  
दान्तता  
वक्तव्या  
१०३ तकारोलचटवर्गेषु  
६२५ तडिदादिभ्यश्च  
८ तत्कालेपि क्यप्  
दृश्यते  
३४९ तत्रादिर्विभक्त्यर्थे  
निपात्यते  
४६५ तत्प्रयोजको  
हेतुश्च  
४१३ तथायुक्तं चानी-  
प्सितम्  
९३३ तथे  
७५३ तथोर्थः  
६४६ तदधीते वेद  
वेल्यत्राण्-  
वक्तव्यः  
३५२ तदधीनकार्त्तर्य-  
योर्वा सात्  
३५७ तदव्ययम्  
५४६ तद्गृह्यतोः करप-  
ल्योश्चौरदेव-  
तयोः  
सुद् तलोपश्च  
९९८ तनादेरकरोतेस्त-  
न्थासो वा सि-  
लोपो वाच्यः

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

९९७ तनादेरुप्  
९९९ तनादेरुपधाया  
गुणो वा पिति  
१०९३ तनेः सेवा दीर्घः  
११७८ तनोतेर्नो वा  
६७९ तयायडौ संख्या-  
या अवयवे  
३६४ तरतः पूर्वस्य  
पुंवत्  
६५३ तरतमेयस्त्रिष्टाः  
प्रकर्षे  
३३७ तवमम ङसा  
१४२३ तव्यानियौ  
१२३ तस्मात्  
४१५ तस्य परमाग्रेडि-  
तम्  
४५२ तादर्थ्ये चतुर्थी  
च वक्तव्या  
१४८५ तादीनां क्यपि  
इत्वाभावो  
वाच्यः  
२८८ तिरश्चादयस्त्रिच-  
तुरोः स्त्रियां  
तिसृचतसृचवत्  
१०४९ तिष्ठतेरुपधाया  
इकारो वक्त-  
व्योऽङि परे  
३१५ तिसृचतसृशब्द-  
योर्नामि दीर्घत्वं  
च वक्तव्यम्

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

१००७ तुदादेरः  
६३१ तुन्दादेरिलः  
६१७ तुन्दिवलिबटि-  
भ्यो भः  
३३४ तुभ्यं मद्यं ङ्या  
१४०१ तुमर्थे वुण्  
वक्तव्यः  
१४०० तुम् तदार्थायां  
भविष्यति  
८९२ तुरुनुस्तुभ्योऽङि-  
रुक्तेभ्यो हसा-  
दीनां  
चतुर्णामीड् वा  
७०४ तुह्योस्तातङ्काभिषि  
वा वक्तव्यः  
१९१ तृतीयादौ खरादौ  
तृप्रत्ययान्तता  
वा वक्तव्या  
११८९ तृवुणौ  
७९३ तृफलभजत्रपां  
किति णादौ सेटि  
थपि चैत्वपूर्वलो-  
पौ वक्तव्यौ  
५०५ तेन सहेति तुल्य-  
योगे  
८० तोर्लि लः  
५८५ त्यतनौ  
१७५ त्यादेष्टेरः स्यादौ  
७२२ त्यादौ भविष्यति  
स्यप्

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

- १२९९ त्राणाया वा  
३१४ त्रिचतुरोः त्रियां  
तिसृचतसृवत्  
१७६ त्रेरयङ्  
६६३ त्रेः संप्रसारणं  
सस्वरस्य  
३३० त्वन्मदेकत्वे  
३२६ त्वमहं सिना  
१४६२ त्वरतेर्वस्य उत्वं  
वाच्यम्  
३४० त्वामामा  
थ  
२५८ थो नुट्  
द  
१३०४ ददातेस्तो वाच्यः  
१३०५ दधातेर्हिनिष्ठायां  
वाच्यः  
८५० दयतेर्णादौ दिग्या-  
देशो द्वित्वा  
भावश्च वक्तव्यः  
१३३२ दरिद्रातेरालोपो  
वक्तव्यः  
९१४ दरिद्रातेरिदालो-  
पश्च जिति  
२७० दः सः  
५९१ „  
८९७ „  
३०६ दस्य मः

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

- १२८४ दस्तस्य नो दश्च  
९५७ दादेः  
७२५ दादेः वे  
१११२ दादेरिः  
८०७ दादेरे  
२३८ दादेर्घः  
९५९ दाधास्थामित्वं  
सेर्जित्वं  
४२२ दानपात्रे संप्रदा-  
नकारके  
चतुर्थी  
१२२४ दार्वाहनो अण्  
वक्तव्यः  
९५८ दाहौ  
५५६ दिक्संख्येसंज्ञायाम्  
९१७ दिपि सस्य तः  
सिपि वा  
९९४ „  
९६३ दिबादेर्यः  
३११ दिव औ  
७०७ दिवादावद्  
५४८ दिवो द्यावा  
३१९ दिशाम्  
८८५ दिस्योर्हसात्  
९० दीर्घादपि च  
वक्तव्यः  
१२९७ दीर्घादेव क्षियो  
निष्ठायास्तस्य  
नोवाच्यः

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

- १२०२ दुषेजौ कृति च  
दीर्घो वक्तव्यः  
१०६६ दुषेजौ वा दीर्घो  
वक्तव्यः  
८६६ दुह्दिह्लिह्गुह्-  
भ्यः सको  
लुगवायकारत-  
कारयोरिति  
११९६ दुहः के वा घो  
वाच्यः  
६९ दूरादाह्वाने च टेः  
१२०७ दृशादेः शः  
८१० दृश्यादेः पश्यादिः  
१२५८ दृशेष्टक्सकौ चो-  
पमाने कार्ये  
४९६ देवताद्वन्द्वे पूर्व-  
पदस्य वा  
दीर्घो वक्तव्यः  
५७२ देवतेदमर्थे  
८५३ दैङो णादौ दि-  
ग्यादेशो  
द्वित्वाभावश्च  
१३०१ दो दत्ति  
२९७ दोषाम्  
८५४ द्युतेः पूर्वस्य सं-  
प्रसारणं वक्तव्यं  
णादौ परे

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

८५५ द्युतादिभ्यो छुतिं  
वा परस्मैपदं  
वाच्यम्  
१२५६ द्युतिगमिजुहोती-  
नां क्विपि  
क्वचिद्वित्वं  
वाच्यम्  
१२५७ द्योततेः क्वचित्पू-  
र्वस्य क्विपि संप्र-  
सारणं वाच्यम्  
११८२ दुहल्लुनमां कर्म-  
कर्तरि यमिणौ  
न  
२४४ दुहादीनां घत्व-  
ढत्वे  
४९५ द्वन्द्वेऽल्पस्वरप्रधा-  
नेऽकारोकारा-  
न्तानां पूर्वनि-  
पातो वक्तव्यः  
५५३ द्वन्द्वे सर्वादित्वं वा  
६६१ द्वयोर्बहुनां चैकस्य  
निर्धारणे कि-  
मादिभ्यो ङ-  
तरङ्गतमौ व-  
क्तव्यौ  
४८४ द्वितीयाश्रिताती-  
तपतितगता-  
त्यस्तप्राप्तापन्नैः  
६७७ द्वित्रिचतुर्भ्यः सुः  
६६७ द्वित्र्यष्टैकानां द्वात्र  
योष्टैकाः

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

९८५ द्विरुक्तस्य हिनोतेः  
कुत्वं वाच्यम्  
१११५ द्विरुक्तस्य हन्तेः  
कुत्वं वाच्यम्  
११२५  
१३२२ द्विरुक्तस्य हस्तेर्ह-  
कारस्य घत्वं  
वक्तव्यम्  
८८८ द्विरुक्तस्य हन्तेः  
स्थपि घत्वं  
वाच्यम्  
२९५ द्विरुक्तानां जक्षा-  
दीनां च शतुर्नु-  
मृप्रतिषेधः  
पुंलिङ्गे नित्यं  
वक्तव्यो नपुं-  
सके वा शौच  
१०४४ द्विर्निमित्तेऽचि  
१६९ द्विवचनस्य वा  
छन्दसि  
७१० द्विश्च  
९४३ द्वेः  
१२२१  
९५१ द्वेस्तौ लोपोनुव-  
र्तते इकारश्च  
९६२ द्वेः स्वरेपि नोप-  
धागुणः  
ध  
१३९७ धनार्तिचक्षिष्पू-  
वपितपिजनिय-

क्रमाङ्कः सूत्राणि.

जिभ्य उस्  
प्रत्ययो भवति  
५२० धनुषश्च  
५१३ धर्मादिनिच् केवलात्  
६८२ धातोः  
१०४२ धातोः प्रेरणे  
३७५ धातोरुदितो न  
१०३९ धातोरुपधाया  
ऋकारस्य ईका-  
रादेशो वाच्यो  
जिप्रत्यये परे  
७६९ धातोर्नामिनः  
२१८ धातोः सलोपो  
वाच्यः  
१०९८ धात्वंशलोपनि-  
मित्ते आर्ध-  
धातुके परे  
तन्निमित्ते समा-  
ननामिनां गुण-  
वृद्धी न वाच्ये-  
२३७ धावम्  
२५१  
९८६ धिन्विक्कृष्योर्नो-  
लोपो वाच्यः  
१९८ धिः  
१८७ धेरद्  
१६० धौ  
२१० धौ हस्वः  
९१८ धौ सलोपो वाच्यः



## सूत्रानुक्रमकोशः

१७

| क्रमाङ्कः | सूत्राणि             | क्रमाङ्कः | सूत्राणि           | क्रमाङ्कः | सूत्राणि           |
|-----------|----------------------|-----------|--------------------|-----------|--------------------|
| १३०७      | व्याख्यापुमूर्च्छि-  | ९९३       | नमः                | ४९९       | ना                 |
|           | मदां कस्य नत्वा-     | ८९९       | नमसोऽस्य           | १०२१      | ना क्रयादेः        |
|           | भावो वाच्यः          | ४३५       | नमःस्वस्तिस्वाहा-  | २८७       | नाम्नेः पूजायां    |
| १२५५      | ध्यायतेः क्विपि      |           | स्वधालं वषट्-      | १०२३      | नातः               |
|           | संप्रसारणं दीर्घता   |           | योगे चतुर्थी       | ३४१       | नादौ               |
|           | च वक्तव्या           | १३५३      | नमादेरः            | ८४९       | नानप्योर्वः        |
| १३७५      | ध्वा                 | १०६५      | न रितः             | ८२५       | नानिति से          |
| ७३०       | ध्वे च सेर्लोपः      | ४४४       | न लोकाव्ययनि-      | १०७७      | „                  |
| ८७०       | „                    |           | छाखलर्थतृनाम्      | ३२३       | नान्ताददन्ता-      |
|           | न                    | ६८७       | नव परस्मैपदानि     |           | च्छन्दसि           |
| १४७७      | न क्त्वा सेट्        | ३६०       | नशब्दनिर्देशे      |           | क्षिप्तयोर्वा लोपो |
| ५८२       | नक्षत्रादण्वक्तव्यः  | ७८        | न शात्             |           | वक्तव्यः           |
| ३९८       | नखमुखयोश्च           | ९७०       | नशेः घान्तस्य      | ७४९       | नामधातुध्वेष्व-    |
|           | संज्ञायां नेप्       | ९५        | नश्वापदान्ते क्लसे |           | ष्कृष्टिवां षः सो  |
| १४१४      | नङ् की               | ८२        | न षि               |           | नेति वाच्यम्       |
| ४९०       | नङ्                  | ८४        | न सकृच्छते         | १३५३      | नामादेरः           |
| ४८९       | नमि                  | ६४९       | न संधिव्योर्युट् च | १४०       | नामि               |
| १२०६      | नञ्पूर्वभ्यः कृद्-   | ९०६       | नहिषत्चिरन्तिप-    | ७१७       | नामिनोऽच्चतुर्णां  |
|           | णीयाचृवदिभ्यो        |           | रः प्रयोक्तव्यः    |           | धो ङः              |
|           | णिनिश्च              |           | किंतु वदन्तीत्यु-  | २२५       | नामिनः स्वरे       |
| ९६४       | नतृत्तृष्टृदृचृत्तृ- |           | न्धारणीयम्         | ११४       | नामिनो रः          |
|           | तां सस्यासेरिद्      | १२५२      | नहिषतिभ्यधिवृ-     | ६५        | नामी               |
|           | वा वक्तव्यः          |           | षिरुचिषहित-        | ११४३      | नाम्न आचारे        |
| ३७८       | नदादेः               |           | निषु क्लिबन्तेषु   |           | क्लिबु वाच्यः      |
| २२३       | नपुंसकस्य            |           | पूर्वपदस्योपसर्ग-  | १२११      | नाम्नि च           |
| २३०       | „                    |           | स्यान्ते दीर्घो    | ५३९       | नाम्नि च कृता      |
| २२४       | नपुंसकात्स्यमो-      |           | वाच्यः             |           | समासः              |
|           | र्लुक्               | ३१०       | नहो धः             |           |                    |
|           | २                    |           |                    |           |                    |

| क्रमाङ्कः सूत्राणि                                      | क्रमाङ्कः सूत्राणि   | क्रमाङ्कः सूत्राणि   |
|---|--|--|
| ६८९ नाप्ति च शुष्मदि<br>चास्मदि च<br>भागेः              | ९६४ नृततृवृद्धृचृत्कृ-<br>तां सस्यासेरिङ्<br>वा वक्तव्यः                       | १०८९ पतो वेद<br>४०२ पठ्यादयः<br>२६० पथां टेः                         |
| २५२ नाम्नो नो लोप-<br>शधौ                               | ९९२ नृततृदृचृदृकृभ्यो<br>से. स्तादेरिङ्वा                                      | १११० पदसंसुध्वंसुभ्रंसु-<br>दंशुकस्वन्नुपत-<br>स्कन्दां यङि          |
| ११२६ नाम्नो य ई चास्य                                   | ७७८ नैकस्वरादनुदा-<br>त्तात्   | लुकि च सति<br>पूर्वस्य नुगागमो<br>वाच्यः                             |
| १०७८ नाम्यन्तात्परस्य<br>सस्य कित्वं वा-<br>च्यम्       | १४८० नोपधात्थफान्ता-<br>द्वा कित्  | ३४२ पदात्परयोरनयो-<br>रेते आदेशा<br>वक्तव्याः                        |
| १३०३ नाम्यन्तोपसर्गस्य<br>बीर्घो भवति                   | २२१ नोपधायाः<br>७४२ नो लोपः<br>५३४ नो वा<br>३६६ ऋण ईप्<br>२९३ न्संमहतोऽधौ<br>च | १७६ पदादेस्तानि कर्त-<br>र्यपि सेरिण् वक्त-<br>व्यो दीपादिभ्यो<br>वा |
| ११९५ नाम्युपधात्कः<br>३९९ नासिकाशब्दात्के-<br>बलाच्चेप् | प  | ११४२ पयसस्तु विभा-<br>षया  |
| ९६१ निजां गुणः  | ११९९ पचिन्दिप्रहादे-<br>रयुणिनि  | ६८६ परतोऽन्यत्<br>८४८ परापूवे यतावुप-<br>सर्गरेकस्य लत्वं<br>वाच्यम् |
| ११४८ निविशादेः  | १३१२ पचो वः<br>२३३ पञ्चस्वनडुहः<br>६६५ पञ्चादेर्मः                             | ६६० परिमाणे दघ्ना-<br>दयः  |
| १२८८ निष्ठायां ह्रस्वो<br>वाच्यः                        | १०९२ पततनदरिद्राभ्यः<br>सेवा इङ् वाच्यः  | ४१६ परितःसमयानि-<br>कषाहाप्रतियो-<br>गेऽपि                           |
| ७७० निसन्निक्षनिन्दा-<br>मुपसर्गाण्णत्वं वा<br>वाच्यम्  | १७४ पतिरसमास एव<br>सखिशब्दवद्व-<br>क्तव्यः                                     | ७०८ परोक्षे  |
| ७६४ नुगशाम्   | ८२६ पतेर्के पुमागमो<br>वाच्यः  |  |
| १३९ नुङामः  |  |  |
| ७७६ नुधातोः   |  |  |
| २१९ नुमयमः  |  |  |
| १८८ नुर्वा नामि बीर्घः                                  |  |  |
| ९७९ नूपः  |  |  |

## सूत्रानुक्रमकोशः

१९

| क्रमाङ्कः | सूत्राणि   | क्रमाङ्कः | सूत्राणि  | क्रमाङ्कः | सूत्राणि   |
|-----------|--|-----------|---|-----------|--|
| १२३०      | पाणिघताङ्घौ<br>क्षिप्पिनि निपा-<br>त्येते        | ३८१       | पुरुषाद्वा परिमाणे  | १२३४      | पृच्छतेर्विण्  |
| १०५३      | पातेर्नौ छुव-<br>क्तव्यः                         | ५४३       | पुरुषे वा   | ११३९      | पृथ्वादेरः   |
| ५०३       | पात्रायन्तो द्विगु-<br>र्नैबन्तः                 | ५२२       | पुंवद्वा  | ९४८       | पोरुर्   |
| ३६९       | पादन्तात्स्त्रिया-<br>मीप् वा वक्तव्यः           | १४२८      | पुशकात्   | १४८९      | पौनःपुन्ये णम्-<br>पदं द्विश्च   |
| २८१       | पादः पत्   | १३८१      | पुष्पादेरः  | १२९५      | प्यायः पी  |
| १०५०      |  | ५३८       | पुंसः स्त्रोपे ख्याव-<br>र्जिते च अम्परे                        | ४२१       | प्रकृत्यादिभ्यः  |
| ४८८       | पानस्य वा  |           | संयोगान्तस्या-<br>लोपो वक्तव्यः                                 | ५१२       | प्रजामेधयोरसुक्  |
| ६१४       | पामार्देर्नः                                     | २९९       | पुंसोऽसुक्  | ६१९       | प्रज्ञार्चाश्रद्धावृत्ति-<br>भ्योऽण्   |
| ४८०       | पारेमच्ये षष्ठा<br>वा                            | १२७९      | पृष्ठो वा क्तः सेट्   | ७५५       | प्रत्ययलोपे प्रत्य-<br>यलक्षणम्  |
| ५९८       | पाशादिभ्यो यः                                    | ७७२       | पूजायामश्चेर्नलो-<br>पाभावो वाच्यः                              | १४७१      | प्रत्ययान्तात्   |
| ६४२       | पाशः कुरुसायां                                   | १४७६      | पूर्वकाले क्त्वा  | १२६२      | प्रत्ययोत्तरपदयोः<br>परतो शुष्मदस्म-<br>दोरेकत्वे त्वत्तम-<br>तइत्येतावादेशौ<br>भवतः |
| ६१५       | पिच्छादेरिलच्                                    | ५७६       | पूरणेऽर्थे ष्यणीयौ<br>भवतः                                      |           |  |
| १०५१      | पिबतेरङि पूर्व-<br>स्येकारोपधा-<br>लोपौ वक्तव्यौ | ९६०       | पूर्वस्य ङिति ङसे<br>घः   | १५४       | प्रथमचरमतया-<br>यङ्लपार्धकतिप-<br>यनेमानां जसि<br>वा                                 |
| १३९३      | पिबतेरसि   | ७३९       | पूर्वस्य हसादिः<br>शेषः   | ३९६       | प्रथमवयोवाचि-<br>नोऽत ईप् व-<br>क्तव्यः  |
| ४८६       | पिशाचादेः सभा-<br>दीनां नपुंसकत्वं<br>वा         | १५३       | पूर्वादिभ्यो न-<br>वभ्यो ङसिङ्योः<br>स्मात्सि नौ वा<br>वक्तव्यौ | ४८१       | प्रथमानिर्दिष्टं स-<br>मास उपसर्जनम्   |
| १०४८      | पुगान्तस्य गुणो<br>वक्तव्यः                      | १५२       | पूर्वादीनां तु न-<br>वानां जस ईकारो<br>वा वक्तव्यः              | १६४       | प्रशंसायां रूपः  |
| ३८९       | पुंयोगे च  | ४६८       | पूर्वेऽभ्ययेऽभ्ययी-<br>भावः                                     |           |  |

| कमाङ्कः सूत्राणि   | कमाङ्कः सूत्राणि   | कमाङ्कः सूत्राणि  |
|--|--|---|
| ५०८ प्रहरणार्थेभ्यः परे<br>निष्ठासप्तम्यौ<br>वक्तव्यौ                          | ५०७ बहुव्रीहौ विशेष-<br>णसप्तम्यन्तयोः<br>पूर्वनिपातो<br>वक्तव्यः                      | १४१९ भावे युद्<br>४२७ भावे सप्तमी<br>१३५६ भासादेशुः<br>३१८ भिदपाम्  |
| ३५६ प्राग्धातोः<br>६४४ प्राचुर्यविकारप्रा-<br>धान्यादिषु म-<br>यदप्रत्ययो भवति | ६०५ बहोरिलोपो भू<br>च बहोः<br>६५८ बहोरिन्ने यिः<br>५६२ बह्वादेश                        | १३५५ भिदिछिदिविदि<br>एभ्यः कुरब्<br>वाच्यः स्त्रीलेऽर्थे  |
| ३५५ प्रादिरुपसर्गः<br>७५० प्रादेश्च तथा तौ<br>सुनमाम्                          | ३८३ ब्रह्मन्शब्दस्य<br>नलोपो वाच्यः  | १४४७ भियांघ्यौ नदे<br>निपात्येते  |
| ५१० प्रियादीनां वा<br>५२५ प्रियादौ न   | ९३४ भ्रुवो वचिः<br>भ   | १३६२ भियः कुक्कुक्रौ<br>वक्तव्यौ  |
| १०५५ प्रीम्धूलोनुक्<br>६८ झुतः<br>१०२७ प्वादेश्चः<br>फ.                        | १२३२ भजां विण्<br>११७९ भञ्जेरिणि वा<br>नलोपो वाच्यः<br>४४६ भयहेतौ पञ्चमी<br>च वक्तव्या | १०७३ भियो औ वा<br>पुगार्वे वाच्ये<br>२०६ भिस ऐस् वक्तव्यः<br>२७३ भिस् भिस्<br>१३७४ भीध्वोर्वा मक्<br>९४५ भीहुमृहीणामा-<br>म्वा वक्तव्यः |
| ८२८ फणादीनामेत्वपू-<br>र्वलोपो वा<br>वाच्यौ                                    | १३७६ भविष्यदर्थे णिनिः<br>१३३४ भविष्यदर्थे तिप्ते-<br>वत् शतृशानौ<br>भवतः              | १२१५ भुजस्य च मुम्वा<br>इप्रत्ययान्ते<br>गमौ  |
| ६०७ फलबर्हरथेभ्य इ-<br>नेनौ वा वक्तव्यौ  | १४०४ भावे करणेऽर्थे<br>घभि रञ्जेर्नलोपो<br>वाच्यः                                      | ११६८ भुजो भोजने<br>आत्मनेपदं<br>वाच्यम्   |
| ६१६ फेनादिभ्य इलच्<br>ब  | १२८६ भावे कर्तरि चा-<br>दितः फस्येद् वा<br>वाच्यः                                      | १४४४ भुवो भावे क्यप<br>७१५ भुवो लुक्<br>७२७ भुवः सिलोपो<br>ङ्गवाच्यः  |
| ६०८ बलवाताभ्यामूलः<br>६७८ बह्वादेः कारका-<br>च्छस्                             | ५९१ भावे तत्त्वगणः   |   |

| क्रमाङ्कः सूत्राणि      | क्रमाङ्कः सूत्राणि     | क्रमाङ्कः सूत्राणि    |
|-------------------------|------------------------|-----------------------|
| ७२८ भुवः सिलोपे खरे     | म                      | ११३२ मान्ताव्ययाभ्यां |
| वुवक्तव्यः              | २५५ मघवा बहुलं         | यो न                  |
| ६४३ भूतपूर्वे चरद्      | १४०८ मदामः             | ६२४ मान्तोपधाद्व-     |
| ७०४ भूते सिः            | ६२१ मध्वादेरः          | त्विनौ                |
| ९५६ मृगां लुकि          | ९९ मनयवल्परे           | १५५ मासस्यालोपो वा    |
| ५७१ मृगवत्रिकुत्साङ्गि- | हकारेऽनुस्वारस्य       | ७३४ मास्ययोगे लङ्     |
| रोवसिष्ठगोतम-           | ते यथाक्रमं भव-        | च                     |
| देशतुल्याख्यक्ष-        | न्ति                   | १०३५ मितां ह्रस्वः    |
| त्रियेभ्यः परस्य        | १३७१ मन्युपधाया ऋरः    | १०६७ ,,               |
| प्रत्ययस्य              | ७४ मयटि नित्यं         | १९ मित्रवदागमः        |
| ११४५ मृशादिभ्योऽभू-     | वाच्यम्                | २२० मिदन्त्यान्स्वरा- |
| ततद्भावे यङ्            | ९६९ मस्मिन् शोर्क्षसे  | त्परो वक्तव्यः        |
| वाच्यः                  | नम् वक्तव्यः           | १२८७ मिदेर्गुणः       |
| ११३ भोसः                | १०१ मः स्वरे           | ९७३ मिदेर्ये गुणो     |
| ४१० भोस्भगोस्अ-         | ५४७ महतष्टेराकारो      | वक्तव्यः              |
| घोस्                    | भवति समाना-            | १०२४ मीनातिमिनोति-    |
| १०१० भ्रजतेः सकार-      | धिकरणे                 | दीङां गुणवृद्धि-      |
| रेफौ लुङ्वा रमा-        | ३९५ महत्पूर्वात्तु ईप् | विषये क्यपि च         |
| गमोऽनपि वा              | ७३१ माङि लुङ्वेव       | आत्वं वाच्यम्         |
| वाच्यः                  | वक्तव्यः               |                       |
| १०६२ आजभासभाष-          | ५६९ मातृपितृभ्यां पि-  | २९ मुखनासिकाभ्या-     |
| वीपजीवमीलपी-            | तरि ङामहच्             | मुच्चार्यमाणो         |
| ङां वोपधाया             | ५६४ मातृपितृभ्यां      | वर्णोऽनुनासिकः        |
| ह्रस्वो ऋपरे औ          | स्वसा                  | ३० मुखेनोच्चार्यमाणो  |
| १३२ भ्यः                | ५६८ मातृष्वसुश्च       | निरनुनासिकः           |
| ३३५ भ्यसश्भ्यम्         | ३०७ मादू               | १३२६ मुगानेतः         |
| ६८३ भ्वादिः             | ८४१ मानादीनां पूर्वस्य | १०११ मुचादेर्मुम्     |
|                         | दीर्घो वक्तव्यः        | १४१० मूर्तौ घनः       |

| क्रमाङ्कः सूत्राणि  | क्रमाङ्कः सूत्राणि  | क्रमाङ्कः सूत्राणि  |
|---|---|---|
| १४७९ मृडमृदगुधुगुहृ-<br>षक्लिश्वदवस्सु<br>षग्रहिभ्यः                            | ५२४ यङ्मानिनत्वश-<br>संततरादौ<br>चारूप्ये   | १०६१ यवयोर्वसे हकारे<br>च लोपो वक्तव्यः<br>३८६ यवाद्दोषे  |
| १३४३ मृजेर्गुणनिमित्ते<br>प्रत्यये परे वृद्धि-<br>र्वाच्या                      | ८३१ यजां यवराणां<br>य्युतः संप्रसारणं<br>किति   | ८४० यः से<br>१२७३ यस्य कचिद्विक-<br>ल्पेनेद् तस्य नि-<br>ष्ठायां नेङ्<br>वाच्यः                                   |
| ९०४ मृजेर्गुणनिमित्ते<br>प्रत्यये परे वृद्धि-<br>र्वाच्या किति<br>ङिति स्वरे वा | १४३२ यज्याच्चृच्चृ-<br>प्रवच्चृच्चृत्यज-<br>पूजर्गभुजाङ्य-<br>णि कृत्वाभावः                                     | ३६७ यस्य लोपः<br>१६ यस्तेसंज्ञा तस्य<br>लोपः  |
| १४३७ मृजो वा क्यप्<br>७३२ मेटः<br>९३ मोऽनुस्वारः<br>२७५ मो नो धातोः             | १४१५ यज्याच्चयतवि-<br>च्छप्रच्छस्वप्<br>एभ्यो नङ्<br>प्रत्ययो भवति  | ७०० या ई<br>८१४ यादादौ<br>१२२७ यादौ प्रत्यये  |
| ११२४     ”<br>२७८ मो राजि समः<br>कौ<br>य  | २०४ यटोच्च<br>७८३ यतः<br>४३९ यतश्च निर्धारणं<br>६२८ यत्तदोरा<br>४७४ यथाऽसादृश्ये<br>१२९ यदादेशस्तद्व-<br>द्भवति | ओकारौकारयो-<br>रवावौ वक्तव्यौ<br>७०२ यामि यम्<br>११८५ यावत्पुरानिपात-<br>योर्योगे भविष्य-<br>दर्शे तिबादयो<br>लट् |
| ११०१ यकारपरस्य<br>रेफस्य द्वित्वं<br>वाच्यम्                                    | १२९८ यरलवसंयोगादे-<br>रादन्ताभिष्ठात-<br>स्य नो वाच्यः  | ४७८ यावदवधारणे<br>२७९ युजेरसमासे<br>५३० युद्धवर्जितरक्तवि-<br>कारार्थवाजितत-<br>दिनाः स्य न<br>पुंवत्             |
| ११२९ यकारस्यानपि वा<br>लोपो वाच्यः  | ५८१ यलोपश्च<br>३८७ यवनालिप्याम्<br>९८७ यवयोर्वसे हकारे<br>च लोपः  | ५९७ युवत्याऽरण्   |
| ११६९ यक्<br>१३५८ यङ् ङङ्कः<br>१०९६ यङि<br>११४१ यङि सलोपो<br>वाच्यः              |   |   |

क्रमाङ्कः सूत्राणि

१३७९ युवहाणिभ्यो निः  
३२७ युवावौ द्विवचने  
११९१ युवोरनाकौ  
३३९ युष्मदस्मदोः  
षष्ठोचतुर्थीद्वि-  
तीयाभित्तेमे  
वार्त्ता वल्लसौ  
७०१ युस इट्  
४०७ यूनस्तिः  
३२९ यूयं वयं जसा  
७७९ ये  
४४९ येनाङ्गविकारः  
९६५ योः  
२२९ द्युणां नपुंसके  
धौ वा गुणो  
वक्तव्यः  
६६ खे द्वित्वे  
१८० खोर्धातोरियुवौ  
खरे  
४९ खोलोपश् वा  
पदान्ते  
३१६ खोर्विहसे  
१८१ खौ वा  
र  
१२९२ र इति सूत्रं न  
पिपर्तैः  
१०६९ रजेर्नौ मृगरमणे-  
ऽर्थे नलोपो  
वाच्यः

क्रमाङ्कः सूत्राणि

११९४ रजेर्नलोपो वा  
१०५४ रभलभोः खर  
णाद्यपौ विना  
नुम्वाच्यः  
१४०५ ,,  
१४७८ रलो व्युपधाद्ध-  
लादेः संश्च  
११६ रः  
७६८ ,,  
१२७६ ,,  
२४९ रः संख्यायाः  
२५० रः  
१२३१ राजघ उप-  
संख्यानम्  
१३८७ राजादेः कन्  
१०३७ रातो औ पुक्  
५३५ रात्राह्वाहाः पुंसि  
९०५ रात्सस्य  
११२३ रान्सस्य  
१४९३ रादिफो वा  
३७ राद्यपो द्विः  
९६६ राधतेर्हिसायां  
किति णादौ  
सेटि थपि चैत्व-  
पूर्वलोपौ वा  
७९६ रारो ङसे दशाम्  
१३०८ राहोपः ङङोः  
११७ रिलोपो दीर्घश्च

क्रमाङ्कः सूत्राणि

११०६ रीगृदुपधस्य  
४३६ रुच्यर्थानां प्रीय-  
माणः  
१०८३ रुदविदमुषप्रहि-  
स्वपिप्रच्छः सः  
किद्वाच्यः  
९०९ रुदादेर्दिस्योरीड-  
टौ च वक्तव्यौ  
९०८ रुदादेश्वतुर्णां  
ह्रसादेः  
९८९ रुधादेर्नम्  
१२०४ रुशब्दाद्युरपि  
वक्तव्यः  
१०५७ रुहेर्नौ पो वा  
वाच्यः  
११५ रेफप्रकृतिकस्य  
खपे वा  
१९२ रैस्मि  
१२०३ रोर्युण्  
ल  
४१७ लक्षणेत्वंभूता-  
ख्यानभागवी-  
प्तासु प्रतिपर्य-  
नवः  
१३८६ लक्षेरीयुट् च  
८४६ लघोर्दीर्घः  
९२२ लङो ध्वस्य नेट्

| क्रमाङ्कः सूत्राणि   | क्रमाङ्कः सूत्राणि   | क्रमाङ्कः सूत्राणि  |
|--|--|---|
| १३४९ लघपतपदस्थाभू-<br>वृषनकमृगमृथ<br>एभ्य उकण्<br>प्रत्ययो भवति  | १४९४ लोकाच्छेषस्य<br>सिद्धिर्यथा मात-<br>रादेः<br>९७७ लोपः<br>११७३ „   | ७७४ वन्दिप्रउयोः सौ<br>नित्यं वृद्धिः<br>८२९ वम एत्वपूर्वलोपौ<br>वा वाच्यौ<br>८७४ वयो यस्य किति<br>णादौ वो वा<br>वक्तव्यः   |
| ६३९ लः समाहारप्रकृ-<br>ष्टयोः  | ७६२ लोपः पचां<br>कित्ये चास्य<br>५० लोपशि पुनर्न<br>संधिः  | १३६४ वरः<br>९८ वर्गे वर्गान्तः<br>१८ वर्णविरोधो<br>लोपश्च<br>३२ वर्णशिरोबिन्दु-<br>रनुस्वारः  |
| ७९४ लान्तस्याकारस्य<br>सौ नित्यं वृद्धि-<br>र्वाच्या   | ८८६ लेपस्त्वनुदात्तत-<br>नाम्<br>९०२ लोपागमयोर्मध्ये<br>आगमविधिर्बल-   | १४९२ वर्णात्कारः<br>१७ वर्णादर्शनं लोपः<br>११८३ वर्तमानार्थाया<br>अपि विभक्तेः<br>स्मयोगे भूतार्थता<br>वक्तव्या   |
| ४०८ लिङ्गाथं प्रथमा<br>७९१ लिप्पुषादर्धः<br>१०१२ लिपिसिचिह्नय-<br>तीनामात्मनेपदे<br>सेर्द्धो वा वाच्यः   | ७५२ लोपोह्रस्वाज्जसे<br>६१३ लोमादिभ्यः शः<br>६०२ लोहितादर्द्धिदि-<br>मन्<br>१२९३ ल्वाद्योदितः<br>व   | ६८८ वर्तमाने<br>११०५ वलयान्तस्य वा<br>नुक्<br>११०९ वशेर्यङि न संप्र-<br>सारणम्<br>२३६ वसां रसे<br>१२७५ वसिष्थ्योरिट्<br>३०२ वसोर्व उः<br>१०७ वाचस्पत्यादयः<br>संज्ञाशब्दा नि-<br>पातनात्साधवः |
| १०२९ लीलिङोरात्वं वा<br>१०६४ लीलंञौ क्रमात्त-<br>ग्लुको वा<br>१०६२ लीयतर्वावात्वं वा<br>१०६३ लीलोलोः पुग्वक्तव्यः<br>१७९ लुकि न तन्निमि-<br>तम्<br>२६५ „ | १३९२ वचादेरस्<br>१४३१ वचेः शब्दसंज्ञायां<br>कुत्वं वाच्यम्<br>५९० वत्तुल्ये<br>१४४२ वदेः क्यप्<br>भावादौ<br>१२४७ वनिपि अमस्यात्वं<br>वाच्यम् |   |
| ११२० लुकि सति पिति<br>त्सि वा ईकारो<br>वक्तव्यः<br>५७० लुगबहुत्वे क्वचित्<br>११०२ लुप्सदचरजपज-<br>भदहृदशगभ्यो<br>धात्वर्थगर्हाया-<br>मेव यङ्             |  |   |



| क्रमाङ्कः | सूत्राणि            | क्रमाङ्कः | सूत्राणि              | क्रमाङ्कः | सूत्राणि             |
|-----------|---------------------|-----------|-----------------------|-----------|----------------------|
| ६३६       | वाचो म्मिनिः        | १३३३      | विदेर्वा वसुः         | ३४६       | विशेष्यपूर्वसंबोध-   |
| ६०९       | वातातिसाराभ्यां     | ८९६       | विदो नवानां           |           | नेतरपूर्वं संबो-     |
|           | किन्                |           | त्यादीनां णबा-        |           | धनं हित्वान्य-       |
| ३७७       | ”                   |           | दिर्वा                |           | स्मात्संबोधना-       |
| १३२९-३७७  | वादीपोः             | ७६७       | विदूदरिद्राकास्-      |           | त्परयोनैते           |
|           | शतुः                |           | काश्चजागृउष           |           | आदेशा भवन्ति         |
| १३३१      | वादीपोः शतुरि-      |           | एभ्यो बाम्            | ४२४       | विशेषावधौ            |
|           | त्यत्र वाशब्दाद्वि- | ६९९       | विधिसंभावनयोः         |           | पञ्चमी               |
|           | रुक्तानां जक्षा-    | ४२८       | विनासहनमङ्गते-        | ४५६       | विषये च              |
|           | दीनां च शतु-        |           | निर्धारणस्वा-         | १३४४      | विष्वत्सगृधृषू-      |
|           | नित्यं नुमप्रति-    |           | म्यादिभिश्च           |           | क्षिप् एभ्यः क्तुः   |
|           | बोधो वक्तव्यो       | ६५५       | विन्मनुवतुप्रत्य-     | २८९       | विष्वग्देवयोश्च टे-  |
|           | नपुंसके शौ वा       |           | यानां लोपश्च          |           | रद्यच्चतां वप्रत्यये |
| १११९      | वान्यत्र लुगनु-     |           | इष्टादौ               | २८        | विसर्गानुस्वारसं-    |
|           | वर्तते              | ११४९      | विपराभ्यां जेः        |           | योगपरो दीर्घश्च      |
| ९७        | वा पदान्ते          | १४८७      | विपूर्वस्य दधातेः     |           | गुरुः                |
| ३१२       | वामि                |           | करोतेरर्थे क्यप्      | १०४       | विसर्जनीयस्य सः      |
| २१३       | वाम् शसि            | ५४५       | विभक्तिलोपे कृते      | १२१४      | विहायसो विहश्च       |
| ४७६       | वा टाड्योः          |           | दन्तस्य दत्           | ११९३      | वुणसयुटौ हित्वा      |
| ४३४       | वारणार्थयोगे        | १२१       | विभक्त्यन्तं पदं      |           | दरिद्रातेरनप्या-     |
|           | तृतीया              | २४१       | विरामोऽवसानम्         |           | लापो लुङि वा         |
| २४०       | वाऽवसाने            | ६६९       | विंशतेस्तिलोपः        |           | वक्तव्यः             |
| २६८       | वासु                | ६६८       | विंशत्यादेर्वा        | १३२०      | वुणसयुटौ हित्वा      |
| २४५       | वाहो वौ शसादौ       |           | तमद्                  |           | दरिद्रातेरनप्या-     |
|           | स्वरे               | ३४४       | विद्यमानपूर्वात्प्रथ- |           | लोपो वाच्यो          |
| १०२०      | विजेः पर इद्        |           | मान्तात्परयोर-        |           | लुङि वा.             |
|           | क्वद्वक्तव्यः       |           | न्वादेशेऽप्येते       | १०७६      | वुः से               |
| ११५२      | वित्तेरन्तो वारुद्  |           | आदेशा वा              | १०८२      | वृक् इत्यस्य         |
|           | आति                 |           | वक्तव्याः             |           | उर्वाच्यः            |

क्रमाङ्कः सूत्राणि  
 ८५६ वृतादिभ्यः स्य-  
 प्स्योर्बा पं पेऽनि-  
 द्रत्वं च  
 ९५० वृद्धिहेतौ साविटो  
 न दीर्घः  
 ८२२ वृद्धिहेतौ साविटो  
 न दीर्घो वाच्यः  
 १२३३ वेः  
 २२८ वेङ्योः  
 ८७१ वेजो णादौ संप्र-  
 सारणाभावो  
 वाच्यः  
 ८७२ वेयो वय् णादौ  
 वा वक्तव्यः  
 १३०९ वेटो निष्ठायां इद्  
 न  
 १०९४ वेडिस्से दीर्घता  
 च  
 २१४ वे युवः  
 ११८४ वैचिल्यापद्धवयोर-  
 ल्पकालेऽपि  
 णादिर्वक्तव्यः  
 ४०४ वर्गुणात्  
 ५५९ वोऽव्यस्यरे  
 ६९६ व्योरा  
 ८५९ व्यथतेर्णादौ पू-  
 र्वस्य संप्रसारणं  
 वक्तव्यम्

क्रमाङ्कः सूत्राणि  
 ५५४ व्यधिकरणे बहु-  
 व्रीहौ मध्यमप-  
 दलोपो वक्तव्यः  
 ११६३ व्यवपरिभ्यः  
 क्रीञः  
 ८६० व्याकूपर्युपेभ्यो  
 रमः पम्  
 १०७४ व्यापारमात्रे  
 भिर्वक्तव्यः  
 स च डित्  
 ६४७ व्यासादेः किः  
 ८७५ व्येजो णादौ  
 नात्वम्  
 २९२ व्रितो नुम्  
 श  
 ६१२ शंकभ्यां बभयुस्-  
 तितुतयसः  
 ६७१ शतादेर्नित्यम्  
 १३२४ शतृशानौ  
 तिप्तेवत् क्रि-  
 यायाम्  
 २० शत्रुवदादेशः  
 १०४७ शदेः शत्  
 ११३५ शब्दादिभ्यो यङ्  
 ११५५ शब्दे तु नु  
 ११६४ शप उपालम्भे  
 ८२७ शमां दीर्घः  
 ९७२ ”  
 १४५९ ”

क्रमाङ्कः सूत्राणि  
 १२३६ शमेरपि विण्  
 वक्तव्यः  
 १२ शषस  
 १०५ शषसे वा  
 ७७३ शसद्दवादिगुण-  
 भूताकाराणां नै-  
 त्वपूर्वलोपौ वक्त-  
 व्या  
 ७४१ शशात्स्वपाः  
 १३५७ शसादेः करणे  
 त्रक्  
 १२८ शसि  
 ३३२ शसो नो वक्तव्यः  
 ७२६ शाच्छासाप्राघेटो  
 वेति वक्तव्यम्  
 ९१६ शासेरिः  
 १२१८ शिति चतुर्वत्  
 ९२५ शीकोऽतो रुद्  
 ११७४ शीकोऽयङ् किति  
 किति ये वक्तव्यः  
 १११८ शीको यङ् किति  
 ये वक्तव्यः  
 १४५२  
 ९२४ शीकः सर्वत्र गुणो  
 भवत्यपि विषये  
 १२७८ शीङ् खिदिमिदि-  
 दिशदिष्टुषु पूरुः

क्रमाङ्कः सूत्राणि

८१५ शीयादेशे आत्म-  
नेपदं वाच्यम्

१३३६ शीले तृन्

१२१२ शुचः शूद्रे

१३१४ शुषेः कः

३९४ शूद्राज्जातौ न

६२० शूद्रवृन्दाभ्यामा-  
रकच्

१३५० शूवन्योरारुः

८६ शे चग्वा

४११ शेषाः कार्ये

२२२ श्वन्त्यादेः

६३३ श्रद्धादेर्लुः

९८८ शुवः शू

९६७ शिषेरालिङ्गने

१२७४ शिषशीङ्स्थाआ-  
सश्रिवसजनरु-  
हजीर्यतीनां सो-  
पसर्गत्वेन सकर्म-  
काणामपि कर्तरि  
क्तो वाच्यः

८३७ श्वयतेर्लु द्वित्वं वा

८३६ श्वयते रिलोपे के  
वक्तव्यः

१२८१ श्वयतेः संप्रसार-  
णस्य धीषेः

८३५ श्वयतेः सौ वृज्य-  
भावो वाच्यः

क्रमाङ्कः सूत्राणि

८३४ श्वयतेर्णादौ प्रथमं  
संप्रसारणं वा  
वक्तव्यम्

७२१ श्वस्तने

२५४ श्वादेः

२४६ श्वेतबाह्वुक्थशा-  
स्पुरोडाशभव-  
याजां ङस् रसे  
पदान्ते चेति  
वक्तव्यम्

ष

६६४ षट्चतुरोः स्थः

७९८ षटोः कः से

१३८८ षपेरशेः किति  
तुग् वक्तव्यः

५४४ षष उत्त्वं दधो-  
र्ढढौ

१६८ षष्ठीनिर्दिष्टस्यादेश-  
स्तदन्तस्य ज्ञेयः

४५७ षष्ठीसप्तम्यो चा-  
नादरे

४४७ षष्ठी च हेतुप्रयोगे

१३४५ षाकोकणः

१४६६ षिङ्गिदामङ्

२७७ षो ङः

७९ षुभिः षुः

३७४ ष्वित्तः

२६६ ष्णः

क्रमाङ्कः सूत्राणि

१४६ ष्वर्णोणोन्ते  
स्

१७० सखिपत्योरिक्

३७३ संख्यादेर्दान्न ईप्

५०१ संख्यापूर्वो द्विगुः

६७३ संख्यायाः प्रकारे  
धा

५३२ संख्यासु व्याघ्रा-  
दिपूर्वस्य पादश-  
ब्दस्याकारस्य  
लोपो वक्तव्यः

६६२ संख्येयविशेषा-  
धारणे द्वित्रिभ्यां  
तीयः

२९८ सजुषाधिषो रसे  
पदान्ते च धीर्घो  
वक्तव्यः

३२० " "

१४०६ संज्ञायां कर्तरि च

४८७ संज्ञायां वा

५२१ संज्ञायां वा

१३६६ सद्गोणादयः

३५४ सद्यादिः काले  
निपात्यते

७८२ स घातुः

८०३ संध्यक्षराणामा

४७० स नपुंसकम्

| क्रमाङ्कः सूत्राणि   | क्रमाङ्कः सूत्राणि  | क्रमाङ्कः सूत्राणि   |
|--|---|--|
| १४६४ संपदादेः क्तिप्<br>वा वाच्यः  | ६०१ समानस्य वा स<br>इत्यादेशः   | ९८३ संयोगादिऋद-<br>न्तवृद्ध्यां सि-  |
| १२३८ संपद्यकर्तरीति<br>वक्तव्यम्   | १४३ समानादेलोपो-<br>ऽधातोः  | स्योरात्मनेपदे इ-<br>द्धा वक्तव्यः   |
| १०१९ सपरोक्षयोस्तादौ<br>म्रियतेः परस्मैप-<br>दं वाच्यम्  | ४६९ समासप्रत्यययोः<br>४६६ समासश्चान्वये<br>नाम्नाम्                               | ८०६ संयोगादेरादन्तस्य<br>किति यादादावे-<br>कारो वा वक्तव्यः                            |
| ७९५ सपरोक्षयोर्जोर्गेः   | १४८३ समासे क्यप्  | १४५५ सरतेर्गुणः  |
| १३०० सं परि उप ए-<br>भ्यः परस्य करो-<br>तेर्धातोर्भूषणेऽर्थे<br>शोभनेऽर्थे च वा-<br>च्ये सति सुद्<br>प्रत्ययो भवति | ५५० समासे समाना-<br>धिकरणे शाक-<br>पार्थिवादीनां म-<br>ध्यमपदलोपो<br>वक्तव्यः     | ८१३ सतिशास्त्यतिभ्यो<br>लो लुङि  |
| १००४ संपर्युपेभ्यः करो-<br>तेर्भूषणे सुद्  | ५०२ समाहारेऽत ईप्<br>द्विगुः  | १३७८ सर्वधातुभ्यस्त्रमौ<br>१४८ सर्वादेः स्मट्<br>५२ सवर्णे दीर्घः सह                   |
| १२६९ सप्तम्यां जनेर्ङः   | ५९२ समाहारे ता च<br>त्रेर्गुणाश्च   | १००६ ससुद् कृञो णादौ<br>नित्यमिद्धाच्यः  |
| १४५० सप्रत्ययान्तादपि<br>एते प्रत्यया भव-<br>न्ति  | १४९१ समूलाकृतजीवेषु<br>हन्कृज्प्रहां णम्<br>वाच्यः स्वार्थे ते-<br>षामनुप्रयोगश्च | ८३३ सस्तोऽनपि<br>९२८ सस्यात्मनेपदे<br>स्वरे टिलोपो<br>वाच्यः                           |
| ४०५ संबन्धे षष्ठी  | ११५० समोगमादिभ्यः   | ८६९  |
| ३२२ संबोधने नपुंस-<br>कानां नलोपो<br>वा वक्तव्यः   | २३५ संयोगान्तस्य<br>लोपः  | ७११ सस्वरादिर्द्विरद्विः<br>४३२ सहादियोगे तृती-<br>याप्रधाने                           |
| ११५६ समवप्रोपविभ्यः<br>स्थः  | १०३० संयोगादि ऋद-<br>न्तवृद्ध्यां सि-<br>स्योरात्मनेपदे<br>इद् वा वाच्यः          | ५०६ सहादेः सादिः<br>८६१ सहिवहोरोदवर्ण-<br>स्य<br>२४७ सहैः षः सादि<br>४६० साधकतमं करणम् |
| ११६२ समस्तृतीयायु-<br>क्ताश्च  |   |  |

क्रमाङ्कः सूत्राणि  
 १४२१ साधनाधारयोर्युद्  
 १३४८ सान्ताशंसयोश्च  
 १३४७ सान्ताशंसभिक्ष  
 एभ्य उः प्रत्ययो  
 भवति  
 ३३८ सामाकम्  
 ३०९ सामाभ्येक्ष दसः  
 कः स्यादिवच्च  
 २३४ सावनडुहः  
 ८१८ सावनितो नित्यं  
 वृद्धिः  
 ९९५ „  
 ६२२ सिष्मादेर्लः  
 ६३४ „  
 ९०० सिसः  
 १३६८ सितनिगमिमसि-  
 सचिविविहिधा-  
 कुषि एभ्यस्तु-  
 न्प्रत्ययो भवति  
 ७२० सिसतासीत्यपा-  
 मिद्र  
 ८८३ सिसयोरदर्धस्तु  
 लिटि तु वा  
 ८५८ सिस्योः  
 १४०९ सिंहे वर्णविपर्य-  
 यश्च  
 ११४७ सुखादिभ्यो ज्ञाप  
 नार्या यङ्

क्रमाङ्कः सूत्राणि  
 १५० सुडामः  
 ६४८ सुधानुरक् च  
 ११०० सूचिसूत्रिमूढ्य-  
 व्यर्थशर्णातिभ्यो  
 यङ् वाच्यः  
 ९२३ सूतेः पिति गुणा-  
 भावो वाच्यः  
 ३९१ सूर्यादेवतायां  
 चाप्  
 ७६३ सेटि थपि एत्  
 पूर्वलोपौ वक्त-  
 व्यौ  
 १३१६ सेटि निष्ठायां जे-  
 लोपो वाच्यः  
 १०७९ से वीर्षः  
 १८२ सेनान्यादीनां  
 वामो नुङ् वक्त-  
 व्यः  
 ७३६ सेः  
 १८४ सेरा  
 ३०५ सेरौ  
 १६६ सेर्द्धाधेः  
 ११८ सैषादसे  
 १२७ सो नः पुंसः  
 ४५४ सोपसर्गयोः  
 कुधट्टहोयौगे  
 द्वितीया वक्तव्या  
 १३९९ सौकर्ये केलिमः

क्रमाङ्कः सूत्राणि  
 ३०४ सौ सः  
 ३०१ स्कोराद्योश्च  
 २८२ स्तः  
 १०२५ स्तम्भुस्तुम्भुस्क-  
 म्भुस्तुम्भुस्तु-  
 ऋभ्यो नुर्नाश्च  
 १८९ स्तुराद्  
 ९३० स्तुसुधूमां पे से-  
 रिङ् वक्तव्यः  
 ७७ स्तोः श्रुभिः क्षुः  
 १४५८ स्त्रियां भावे क्तिः  
 १४५१ स्त्रियां यज्ञां भावे  
 २०८ स्त्रियां व्योः  
 ६८१ स्त्रीपुंसोर्नञ्णौ  
 २१२ स्त्रीभ्रुवोः  
 १३८५ स्त्यायतेर्द्ध  
 ९६८ स्पृश्मृश्कृश्तृषां  
 सिर्वा वक्तव्यः  
 १२४३ स्थामी  
 १३५१ स्पृहिगृहिपतिष्ठी-  
 ङ् एभ्य आङ्-  
 वाच्यः  
 १३१५ स्फायः स्फी  
 १०७२ स्फायो वकारः  
 स्यात् औ परे  
 २७२ स्भ्यः  
 १०५६ स्मयतेरात्यात्वं  
 औ वाच्यम्

| क्रमाङ्कः सूत्राणि      | क्रमाङ्कः सूत्राणि     | क्रमाङ्कः सूत्राणि      |
|-------------------------|------------------------|-------------------------|
| ७३३ स्मयोगेभू तार्थ-    | ७६५ खरादेः             | ह                       |
| ता वक्तव्या             | ९३८ खरादेः परः         | १०८५ हन्तीळोः सो        |
| ४४३ स्मृतौ च कार्ये     | १०३८ ,,                | णित्                    |
| ११८६ स्मृत्यर्थधातुभि-  | २१ खरानन्तरिता         | ११७७ हन आत्मनेपदे       |
| योगे भूतेर्थे लट्       | हसाः संयोगः            | सिः किद्वाच्यः          |
| १०३३ स्मृदुत्तरप्रथमद-  | १४२४ खराद्यः           | ७९० हन्तः स्यपः         |
| स्तृस्पृशां पूर्व-      | ११७१ खरान्तानां हन्    | १०४६ हनो घत्            |
| स्यातोदङ्परै औ          | ग्रहट्शां च भाव-       | २६२ हनो झ               |
| ७३८ स्याविदः            | कर्मणोः सिसता-         | १४११ हनो वधादेशश्चा-    |
| ८६८ लुश्रिद्विवां सेरब् | सीस्यगामिद् वा         | प्रत्ययः                |
| धातोर्द्वित्वं च        | इण् वक्तव्यः           | १४२९ हनो वधादेशो ये     |
| १२४ लोर्विसगः           | ७७७ खरान्ताङ्गित्या-   | ११५९ हन्तेः स्याशीर्या- |
| ७२३ स्यपक्रियातिक्रमे   | निटस्थपो वेट्          | दादौ वधादेश             |
| ८३९ खजतेर्णादौ वा       | ११२ खरे यन्वं वा       | आति वा                  |
| क्त्विम्                | ३६८ खलाबीनामञ-         | ११७६ ,,                 |
| ४५९ खतञ्जः कर्ता        | न्तानां संख्यावा-      | २६३ हन्तेरन्पूर्वस्य    |
| ११८८ ,,                 | चिनां च नेप् व-        | ११५८ हन्तेरात्मनेपदे    |
| ९८४ खरतिसूतिस्य-        | क्तव्यः                | सिः किद्वाच्यः          |
| तिधुम्रधावीनां          | ३९७ खाज्ञाद्वा         | १२०१ हन्तेर्घनश्च       |
| वा                      | ९७८ खादेर्नुः          | १२६५ हन्तेर्निन्दायां   |
| ५७८ खरपरयोः कक्         | ४४० खाम्यादिभिश्च      | णिनिर्वाच्यः            |
| ३६ खरहीनं परेण          | ५८७ खार्थेऽपि          | १४५७ हन्तेस्तः          |
| संयोज्यम्               | ७५२ स्मृतिसूतिसूयतिधु- | ८८९ हन्तेः स्याशीर्या-  |
| १३०२ खरात्तो वा         | म्रधावीनामिद्वा        | दादौ वधादेशो            |
| ९३९ खरात्पराः संयो-     | वक्तव्यः               | वक्तव्यः                |
| गादयो नदरा              | ९२९ हकारस्य कचि-       | ११५९ हन्तेः स्याशीर्या- |
| द्विनं                  | जसम्भावो वा            | दादौ वधादेश             |
| १४०७ खरादः              | च्यः                   | आति वा                  |
|                         |                        | ११७६ ,,                 |

| क्रमाङ्कः सूत्राणि        | क्रमाङ्कः सूत्राणि     | क्रमाङ्कः सूत्राणि   |
|---------------------------|------------------------|----------------------|
| १११४ हन्तेर्हिंसायां घ्री | ११३१ हसाद्यस्य लोपो    | ७१३ हस्वः            |
| वा वाच्यः                 | वानपि                  | २ हस्वधीर्घमुतमेदाः  |
| ११० हवे                   | १४ हसा व्यञ्जनानि      | सवर्णाः              |
| ६ हयवरल                   | १५६ हसे पः सेर्लोपः    | १२४६ हस्वस्य         |
| ५३ हलादेरीषादौ टे-        | ३४ हसेऽर्हहसः          | ति तुक्              |
| लोपो वक्तव्यः             | ३८० हायनाद्वयसि च      | १४३८ हस्वाच्च क्यप्  |
| ८०० हशषान्तात्सक्         | ३८५ हिमारण्ययोर्मह-    | ४७३ हस्वादेशे संध्य- |
| ९९० हसात् झसस्य           | त्वे                   | क्षराणामिकारो-       |
| सवर्णे झसे लोपो           | १०१५ हिंसायां प्रतेश्च | कारौ च               |
| वाच्यः                    | ४४५ हेतौ तृतीया प-     | वक्तव्यौ             |
| ११३० हसात्तद्धितस्य       | श्चमी च वक्तव्या       | २३२ ,,               |
| लोपो ये                   | ९४४ हेर्धिः            | ३६३ हस्वो वा झियाम्  |
| ८१७ हसात्परस्य झस-        | ७० हैहयोः खरे सं-      | १०५२ ह्यतेरङि संप्र- |
| स्य सवर्णे झसे            | धिर्न वक्तव्यः         | सारणं युगभाव-        |
| लोपो वाच्यः               | ७६ हो झभाः             | श्च वक्तव्यः         |
| १०२८ हसादानहौ             | २४३ हो ङः              | कृतसंप्रसारणस्य      |
| ७७० हसादेर्लघ्वकारो-      | ७८० ह्यन्तक्षणश्चसी-   | श्च्यतेरङि क्रमा-    |
| पधस्य वा वृद्धिः          | जागृहसादिवर्ज          | द्गुणवृद्धौ वाच्ये   |
| सेटि सौ वाच्या            | सेटि सौ न वृद्धिः      | ९४२ ह्यादेर्द्विश्च  |







# श्रीः सारस्वतव्याकरणम् प्रथमा वृत्तिः

## संज्ञाप्रकरणम् १

प्रणम्य परमात्मानं बालधीवृद्धिसिद्धये ।  
सारस्वतीमृजुं कुर्वे प्रक्रियां नातिविस्तराम् ॥ १ ॥  
इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं न ययुः शब्दवारिधेः ।  
प्रक्रियां तस्य कृत्स्नस्य क्षमो वक्तुं नरः कथम् ॥ २ ॥

तत्र तावत्संज्ञा संव्यवहाराय संगृह्यते ॥ १ अ इ उ ऋ लृ समानाः  
१ ॥ अनेन प्रत्याहारग्रहणाय वर्णाः परिगण्यन्ते । तेषां समानसंज्ञा च  
विधीयते । नैतेषु सूत्रेषु संधिरनुसंधेयोऽविवक्षितत्वात् । विवक्षितस्तु  
संधिर्भवतीति नियमात्, लौकिकप्रयोगनिष्पत्तये समयमात्रत्वाच्च ॥  
२ ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदाः सवर्णाः २ ॥ एतेषां ह्रस्व-दीर्घ-प्लुतभेदाः  
परस्परं सवर्णा भण्यन्ते । 'लोकाच्छेषस्य सिद्धिः' इति वक्ष्यति । ततो

---

टिप्प०-१ अहं अनुभूतिस्वरूपाचार्यः इति कर्ताध्याहार्यः । २ अवैयाकरणानां  
वालानां बुद्धिवर्धनाय । ३ सरस्वतीप्रणीतसूत्रसंबन्धिनीम् । ४ सरलाम् ।  
५ सारस्वतव्याकरणाख्याम् । ६ शब्दबाहुल्यरहिताम् । ७ अष्टौ व्याकरण-  
प्रणेतारोऽपि । ८ शब्दसमुद्ररूपव्याकरणस्य । ९ शब्दव्युत्पत्तिम् । १० सर्वस्य ।  
११ समर्थः । १२ सम्यग्व्याकरणशास्त्रव्यवहाराय । १३ उक्तवक्ष्यमाणसूत्राणां  
समुच्चयेन । १४ प्रत्याहारलक्षणं त्रयोदशे सूत्रे प्रतिपादितम् । १५ परिपाठ्य  
प्रकाश्यन्ते । १६ व्यावहारिकप्रयोगसिद्ध्यर्थम् । १७ ग्रन्थान्ते इति शेषः ।

लोकत एव ह्रस्वासंज्ञा ज्ञातव्याः । एकमात्रो ह्रस्वः । द्विमात्रो दीर्घः । त्रिमात्रः प्लुतः । व्यञ्जनं चार्धमात्रकम् ॥

एकमात्रो भवेद्भ्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते ।

त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रकम् ॥ ३ ॥

चाषस्त्वेकां वदेन्मात्रां द्विमात्रं वायसो वदेत् ।

त्रिमात्रं तु शिखी ब्रूयान्नकुलश्चार्धमात्रकम् ॥ ४ ॥

एषामन्येऽप्युदात्तादिभेदाः सन्ति । उच्चैरुपलभ्यमान उदात्तः । नीचैरनुदात्तः । समवृत्त्या स्वरितः । स पुनः सानुनासिको निरनुनासिकश्च ॥ ३ एऐओऔ संध्यक्षराणि ३ ॥ एषां ह्रस्वा न सन्ति ॥ ४ उभये स्वराः ४ ॥ अकारादयः पञ्च, एकारादयश्चत्वारश्चोभये स्वरा उच्यन्ते । [ अइउऋलृ एऐओऔ ॥ ] ५ अवर्जा नामिनः ५ ॥ अवर्णवर्जाः स्वरा नामिन उच्यन्ते ॥ अनुक्रान्तास्तावत्स्वराः ॥

अथ प्रत्याहारजिग्राहयिषया व्यञ्जनान्यनुक्रामति । ६ हय-वरल ६ ॥ ७ जणनडम ७ ॥ ८ झडधघभ ८ ॥ ९ जडदगव

टिप्प०-१ पाणिनीयमतेन स्वराणामष्टादशभेदकोष्टकम् ।

| अ इ उ ऋ लृ             | अ इ उ ऋ ए ओ ऐ औ         | अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ       |
|------------------------|-------------------------|--------------------------|
| एकमात्रा ह्रस्वभेदाः । | द्विमात्रा दीर्घभेदाः । | त्रिमात्राः प्लुतभेदाः । |
| १ उदात्तानुनासिकः      | ७ उदात्तानुनासिकः       | १३ उदात्तानुनासिकः       |
| २ उदात्ताननुनासिकः     | ८ उदात्ताननुनासिकः      | १४ उदात्ताननुनासिकः      |
| ३ अनुदात्तानुनासिकः    | ९ अनुदात्तानुनासिकः     | १५ अनुदात्तानुनासिकः     |
| ४ अनुदात्ताननुनासिकः   | १० अनुदात्ताननुनासिकः   | १६ अनुदात्ताननुनासिकः    |
| ५ स्वरितानुनासिकः      | ११ स्वरितानुनासिकः      | १७ स्वरितानुनासिकः       |
| ६ स्वरिताननुनासिकः     | १२ स्वरिताननुनासिकः     | १८ स्वरिताननुनासिकः      |

२ प्रतिकार्यमाह्वयन्ते इति प्रत्याहाराः ।

९ ॥ १० छठथखफ १० ॥ ११ चटतकप ११ ॥ १२ शपस  
 १२ ॥ १३ आद्यन्ताभ्याम् १३ ॥ प्रत्याहारं जिघृक्षताऽऽद्यन्ताभ्या-  
 मेते वर्णा ग्राह्याः । आदिमवर्णोऽन्त्येन गृह्यमाणस्तन्नामा प्रत्याहारः ।  
 तथाहि—अकारो बकारेण गृह्यमाणोऽबप्रत्याहारः । स च अइउऋ-  
 लृएऐओऔहयवरलजणनडमझढधभजडदगब इति अबप्रत्याहारः ।  
 चटतकप इति चपप्रत्याहारः । झढधभ इति झभप्रत्याहारः । जडद-  
 गब इति जवप्रत्याहारः । एवं यत्र यत्र येन येन प्रत्याहारेण कृत्यं  
 भवति स स तत्र तत्र ग्राह्यः । प्रत्याहाराणां संख्यानियमस्तु नास्ति ॥  
 १४ हसा व्यञ्जनानि १४ ॥ हकारादयः सकारान्ता वर्णा हसा  
 व्यञ्जनानि भवन्ति । खरहीनं व्यञ्जनम् । खरेभ्योऽन्यत्स्वरहीनम् ।  
 अन्यथा खरेषु खरो नास्तीति तेषां स्वराणामपि व्यञ्जनता स्यात् ।  
 यद्वा भावप्रधानो निर्देशः, खरत्वहीनमित्यर्थः । तेष्वकारः सुखोच्चार-  
 णार्थत्वादित्संज्ञकः ॥ १५ कार्यायेत् १५ ॥ प्रत्ययाद्यतिरिक्तः  
 कस्मैचित्कार्यायोच्चार्यमाणो वर्ण इत्संज्ञो भवति ॥ १६ यस्येत्संज्ञा

टिप्प०—१ प्रत्याहाराणां संख्यानियमो नास्तीत्युक्तं, तथापि बालबोधाय चन्द्र  
 कीर्त्याद्युक्तसारस्वतीयविशेषप्रत्याहारसंग्रहोऽत्र क्रियते ।

|       |       |       |       |       |       |
|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| १ हस  | २ झब  | ३ जव  | ४ यप  | ५ अब  | ६ इल  |
| ७ वप  | ८ जम  | ९ झभ  | १० खस | ११ झस | १२ छत |
| १३ यम | १४ हव | १५ खप | १६ डब | १७ ढभ | १८ रस |
| १९ वस | २० शस | २१ झप | २२ अब | २३ ओ  | २४ भव |

२ खरहीनं अकारादिखरै रहितं खरेभ्योऽन्यच्च ।

तस्य लोपः १६ ॥ १७ वर्णादर्शनं लोपः १७ ॥ १८ वर्ण-  
विरोधो लोपश्च १८ ॥ एकं वर्णं नाशयति अन्यस्योत्पत्तिं प्रति-  
बध्नाति स वर्णविरोधः ॥ १९ मित्रवदागमः १९ ॥ २० शत्रु-  
वदादेशः २० ॥ २१ स्वरानन्तरिता हसाः संयोगः २१ ॥  
२२ कुचुडुंतुपु वर्गाः २२ ॥ उकारः पञ्चवर्णपरिग्रहणार्थः ॥  
२३ अरेदोन्नामिनो गुणः २३ ॥ नैमिनः स्थानका अर ए ओ  
एते गुणसंज्ञका भवन्ति ॥ २४ आरैऔ वृद्धिः २४ ॥ आ आर  
ऐ औ एते वृद्धिसंज्ञा भवन्ति ॥ २५ अन्त्यस्वरादिष्टिः २५ ॥ अन्त्यो  
यः स्वरस्तदादिवर्णष्टिसंज्ञो भवति ॥ २६ अन्त्यात्पूर्वं उपधा २६ ॥  
अन्त्याद्वर्णमात्रात्पूर्वो यः स उपधासंज्ञो भवति ॥ २७ असं-  
योगादिपरो ह्रस्वो लघुः २७ ॥ २८ विसर्गानुस्वारसंयोगपरो  
दीर्घश्च गुरुः २८ ॥ २९ मुखनासिकाभ्यामुच्चार्यमाणो वर्णो-  
ऽनुनासिकः २९ ॥ ३० मुखेनोच्चार्यमाणो निरनुनासिकः  
३० ॥ ३१ अः इति विसर्जनीयः ३१ ॥ ३२ वर्णशिरोवि-  
न्दुरनुस्वारः ३२ ॥ अं अः इति अचः परावनुस्वारविसर्गौ ।  
[ कस्य पुनः किं स्थानमित्यपेक्षायां ] अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः ।  
इचुयशानां तालु । ऋदुरषाणां मूर्धा । लतुलसानां दन्ताः । उपू-  
ध्मानीयानामोष्ठौ । जमङ्गणानां नासिका च । एदैतोः कण्ठतालु ।

टिप्प०—१ वर्णान्ते स्थानाङ्गशः । २ संधिकार्यवर्जनम् । ३ मध्ये स्वरै रहिता हसाः  
केवलव्यञ्जनानि । ४ क ख ग घ ङ इति प्रत्येकमेते स्वीयपञ्चकग्राहकाः ।  
५ अकारस्वरसहितवर्णानां मध्ये । ६ आदिशब्देन संयोगविसर्गानुस्वाराः ।

ओदौतोः कण्ठोष्ठम् । वकारस्य दन्तोष्ठम् । जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् ।  
नासिकाऽनुस्वारस्य । ✕ क ✕ ख इति कखाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृशो  
जिह्वामूलीयः । ✕ प ✕ फ इति पफाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृश उप-  
ध्मानीयः । शषसहा ऊष्माणः । कादयो मावसानाः स्पर्शाः ।  
यरलवा अन्तस्थाः ॥

### बालबोधार्थं वर्णोद्भवस्थानकोष्टकम् ।

| अ    | इ    | ऋ      | लृ    | उ     | ज      | ए            | ओ            | च      | ✕क      | —       |
|------|------|--------|-------|-------|--------|--------------|--------------|--------|---------|---------|
| क    | ख    | ट      | त     | प     | म      | ऐ            | औ            |        |         |         |
| ख    | छ    | ठ      | थ     | फ     | ळ      |              |              |        |         |         |
| ग    | ज    | ड      | द     | ब     | ण      | संध्यक्षराणि | संध्यक्षराणि |        |         |         |
| घ    | झ    | ढ      | ध     | भ     | न      |              |              |        |         |         |
| ङ    | ञ    | ण      | न     | म     |        |              |              |        |         | अनु.    |
| ह    | (य)  | र      | ल     | ✕प    |        |              |              |        |         |         |
| :    | श    | ष      | स     |       |        |              |              |        |         |         |
| कंठः | तालु | मूर्धा | दंताः | ओष्ठौ | नासिका | कं. ता.      | कं. ओ.       | दं. ओ. | जि. मू. | नासिका. |

हकारं पञ्चमैर्युक्तमन्तःस्थाभिश्च संयुतम् ।

औरस्यं तं विजानीयात्कण्ठ्यमाहुरसंयुतम् ॥ ५ ॥

अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा ।

जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च ॥ ६ ॥

गजकुम्भाकृतिर्वर्ण ऋवर्णः स प्रकीर्तितः ।

एवं वर्णा द्विपञ्चाशन्मातृकायामुदाहृताः ॥ ७ ॥ .

टिप्प०-१ पञ्चमैः अन्तःस्थाभिरित्यत्र वैदिकप्रयोगात् पञ्चभिः अन्तःस्थैश्चेति  
ज्ञेयम् । 'पञ्चभिर्युक्तं' इत्यपि कश्चित्पाठः ।

## आभ्यन्तरबाह्यप्रत्यक्षज्ञानार्थकं कोष्टकम् ।

| आभ्यन्तर<br>प्रत्यक्षाः | स्पृष्टाः                                |                                   |                                | ईषत्स्पृष्टाः                | ईषद्विद्युताः               | विद्युताः                          | संयुतः                          |
|-------------------------|--|-----------------------------------|--------------------------------|------------------------------|-----------------------------|------------------------------------|---------------------------------|
| संज्ञाः                 | स्पर्शाः                                 |                                   |                                | अन्तःस्थाः                   | ऊष्माणः                     | खरा<br>उदात्तानुदा-<br>त्तस्वरिताः |                                 |
| व्यञ्जनानि खराश्च       | क ख<br>प फ<br>च छ<br>ट ठ<br>त थ          | ग ङ<br>ब ज<br>ज म<br>ङ ण<br>द न   | घ<br>भ<br>झ<br>ढ<br>ध          | य<br>व<br>र<br>ल             | श<br>ष<br>स<br>ह            | अ इ ए<br>उ ओ<br>ऋ ऐ<br>ऌ औ         | अ<br>इ<br>उ<br>ऋ<br>ऐ<br>ऌ<br>औ |
| बाह्यप्रत्यक्षाः        | अ.प्रा.म.प्रा.<br>विवार<br>श्वास<br>अघोष | अल्प.प्रा.<br>संवार<br>नाद<br>घोष | म.प्रा.<br>संवार<br>नाद<br>घोष | अल्प.<br>संवार<br>नाद<br>घोष | म.<br>विवार<br>श्वास<br>घोष | प्रा.<br>सं.<br>ना.<br>धो.         | अल्प.<br>संवार<br>नाद<br>घोष    |

वर्णग्रहणे सर्वर्णग्रहणम् । कारग्रहणे केवलग्रहणम् । तपरकरणं तावन्मात्रार्थम् ॥

इति संज्ञाप्रकरणम् ॥ १ ॥

## स्वरसंधिः २

अथाधुना स्वरसंधिरभिधीयते ॥ दधि आनय इति स्थिते । (वर्णग्रहणे सर्वर्णग्रहणं कारग्रहणे केवलग्रहणं तपरग्रहणे तावन्मात्रग्रहणमिति शिष्टसंकेतः । 'तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य' । सप्तमीनिर्देशेन विधीयमानं कार्यं वर्णान्तरेणाव्यवहितस्य पूर्वस्य बोध्यम् । अतो वृत्तौ परे इति व्याचष्टे । एवमन्यत्रापि ज्ञेयम्) ॥ ३३ इ यं स्वरे १ ॥ इवर्णो यत्वमापद्यते स्वरे परे । दध् य् आनय इति तावद्भवति

टिप्प०-१ धनुराकारान्तस्थो विषयः परिभाषायामपेक्षितोऽप्यत्र प्राकरणिकत्वाच्चिवेक्षितः । २ सवृत्तिकं पाणिनीयं सूत्रमिदम् ।

॥ ३४ हसेऽर्हसः २ ॥ स्वरात्परो रेफहकारवर्जितो हसो हसे परे द्विर्भवति । [ स्वरे परे इति वक्तव्यम् ] ( तेन धकारस्व न पुनर्द्वित्वम् ) इति धकारस्य द्वित्वम् ॥ ३५ झमे जबाः ३ ॥ झसानां झमे परे जबा भवन्ति । इति पूर्वधकारस्य दकारः सवर्णत्वात् । 'वर्ग्यो वर्गेण सवर्णः' इति वचनात् । [ यथासंख्यं वा वक्तव्यम् ] । दद् ध् य् आनव इति सिद्धम् । पश्चात् ॥ ३६ स्वरहीनं परेण संयोज्यम् ४ ॥ श्लिष्टोच्चारणं कर्तव्यम् । दध्यानय ॥

तक्रं न रोचतेऽस्माकं दुग्धं च मधुरायते ।

अन्नप्ररोचनार्थाय दध्यानय वरानने ॥ ८ ॥

दधि न श्रूयते कर्णे घृतं स्वप्ने न दृश्यते ।

मुग्धे दुग्धस्य का वार्ता तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ॥ ९ ॥

कृतस्य कारणं नास्ति मृतस्य मरणं न हि ।

पिष्टस्य पेपणं नास्ति द्रितये त्रितयं न हि ॥ १० ॥

गौरी अत्र इति स्थिते । 'इ यं स्वरे' ( सू० ३३ ) गौरि य् अत्र तावद्भवति । यत्वे कृते अर्ह इति विशेषणान्न रेफस्य द्वित्वं किंतु ॥

३७ राद्यपो द्विः ५ ॥ स्वरपूर्वाद्रेफात्परो यपो द्विर्भवति । इति यपस्य द्वित्वम् । गौरि य् य् अत्र—'स्वरहीनं परेण संयोज्यम्' ( सू० ३६ ) ॥

तुम्बिका तृणकाष्ठं च तैलं जलसमागमे ।

ऊर्ध्वस्थानं समायान्ति रेफाणामीदृशी गतिः ॥ ११ ॥

जैलतुम्बिकान्यायेन रेफस्योर्ध्वगमनम् ॥

टिप्प०-१ 'दुग्धं वा मधुरं प्रिये । अन्नस्य रोचनार्थाय' इत्यपि पाठः । २ यथा जळे पतिता तुम्बी नित्यं जलोपरि तिष्ठति तद्वत् ।

रेफः स्वरपरं वर्णं दृष्ट्वारोहति तच्छिरः ।

पुरः स्थितं यदा पश्येदधः संक्रमते स्वरम् ॥ १२ ॥

गौर्यत्र । स्वर इत्यनुवर्तते । एवमन्यत्रापि यत्र न सूत्राक्षरैः कार्यसिद्धिस्तत्र सर्वत्र सूत्रान्तरात्पदान्तरानुवृत्तिर्ज्ञातव्या ग्रन्थभूयस्त्वभ्यान्नास्माभिलिख्यते ॥ ३८ उ वम् ६ ॥ उवर्णो वत्वमापद्यते खरे परे । 'हसेऽर्हसः' (सू० ३४) । 'झमे जवाः' (सू० ३५) मधु अत्र—मध्वत्र । मधु अरिः—मध्वरिः । बधू आसनं—बध्वासनम् ॥ ३९ ऋ रम् ७ ॥ ऋवर्णो रत्वमापद्यते खरे परे । पितृ अर्थः—पित्रर्थः । मातृ अर्थः—मात्रर्थः ॥ ४० लृ लम् ८ ॥ लृवर्णो लत्वमापद्यते खरे परे । लृ अनुबन्धः—लनुबन्धः । लृ आकृतिः—लाकृतिः ॥ ४१ ए अय् ९ ॥ एकारो अय् भवति खरे परे । ने अनं—नयनम् ॥ ४२ ओ अव् १० ॥ ओकारो अव् भवति खरे परे । भो अति—भवति । [ गवादे-रवर्णागमोऽक्षादौ वक्तव्यः ] गो अक्षः—गवाक्षः । गो इन्द्रः—गवेन्द्रः ॥ ४३ अ इ ए ११ ॥ अवर्ण इवर्णे परे सह ए भवति । गो अग्रं—गवाग्रम् । गो अजिनं—गवाजिनम् । 'अ इ ए' (सू० ४३) ॥ ४४ ए ऐ ऐ १२ ॥ अवर्ण एकारे ऐकारे च परे सह ऐकारो भवति । स्व ईरिणी खैरिणी । प्रकृतिप्रत्यययोर्मध्ये प्रत्ययाश्रितं कार्यमादौ स्यात् । नित्यानित्ययोर्मध्ये नित्यविधिर्वलवान् ॥ ४५ उ ओ १३ ॥ अवर्ण उवर्णे परे सह ओ भवति ॥ ४६ ओ औ औ १४ ॥ अवर्ण ओकारे औकारे च परे सह औकारो भवति । अक्ष ऊहिनी-अक्षौहिणी । प्र ऊढः—प्रौढः ॥ इति गवादयः ॥ अविहितलक्षण-प्रयोगो गवादौ द्रष्टव्यः ॥

टिप्पणी—१ गव इन्द्र इति स्थिते' इत्यत्र क्वचित् पाठः. २ सा सेनाऽक्षौहिणी नाम सागाष्टैकद्विकै २१८७० गजैः । रथैश्चैभि-२१८७० हयैश्चित्रैः ६५६१० पथैश्च १०९३५० पदातिभिः, इत्यक्षौहिणीपरिमाणम् ।



गवाजश्च गवेन्द्रश्च गवाग्रं च गवाजिनम् ।

स्वैरमक्षौहिणी प्रौढ एते प्रोक्ता गवादयः ॥ १३ ॥

[ कचित्स्वरवचकारः ] । यथाऽध्वपरिमाणे गो यूतिः गव्यूतिः क्रोशयुगलम् । अन्यथाध्वनः परिमाणाभावे गवां मिश्रीभावो गोयूतिः ॥ ४७ ऐ आय् १५ ॥ ऐकार आय् भवति स्वरे परे । नै अकः नायकः ॥ ४८ औ आव् १६ ॥ औकार आव् भवति स्वरे परे । तौ इह ताविह ॥ ४९ खोर्लोपश्च वा पदान्ते १७ ॥ पदान्ते स्थितानामयादीनां यकारवकारयोर्लोपश्च वा भवति । ते आगताः—त आगताः तयागताः । तस्मै एतत्—तस्मा एतत्—तस्मायेतत् । पटो इह—पट इह—पटविह । तौ इमौ—ता इमौ, ताविमौ । तस्मै आसनं—तस्मा आसनम्—तस्मायासनम् । असौ इन्दुः—असा इन्दुः—असाविन्दुः ॥ ५० लोपशि पुनर्न संधिः १८ ॥ छन्दसि तु भवति । हे सखे इति—हे सखेति—हे सखयिति ॥ ५१ एदोतोऽन्तः १९ ॥ पदान्ते स्थितादेकारादोकाराच्च परस्याकारस्य लोपो भवति । ते अत्र—तेऽत्र । पटो अत्र पटोऽत्र ॥ ५२ सवर्णे दीर्घः सह २० ॥ सवर्णस्य सवर्णे परे सह दीर्घो भवति । श्रद्धा अत्र—श्रद्धात्र ॥

सामान्यशास्त्रतो नूनं विशेषो बलवान्भवेत् ।

परेण पूर्वबाधो वा प्रायशो दृश्यतामिह ॥ १४ ॥

अदीर्घो दीर्घतां याति नास्ति दीर्घस्य दीर्घता ।

पूर्वदीर्घस्वरं दृष्ट्वा परलोपो विधीयते ॥ १५ ॥

दधि इह दधीह । मधु उदकं—मधूदकम् । भानु उदयः—भानूदयः । पितृ ऋणं—पितृणम् ।

टिप्प०—१ बहुव्यापकं सामान्यम् । २ अल्पव्यापको विशेषः । ३ प्रायशो बाहुल्येन ।

‘अ इ ए’ ( सू० ४३ ) । तव इदं तवेदम् । मम इदं ममेदम् । सर्वविधिभ्यो लोपविधिर्बलवान् ॥ ५३ हलादेरीषादौ टेलोपो वक्तव्यः २१ ॥ [ कचित्तदादिवर्णाभावे केवलस्वरस्यापि टिसंज्ञा वक्तव्या ] । हल ईषा—हलीषा, लाङ्गल ईषा—लाङ्गलीषा, मनस ईषा—मनीषा । शक अन्धुः—शकन्धुः, कर्क अन्धुः—कर्कन्धुः, कुल अटा—कुलटा, सीमन् अन्तः—सीमन्तः केशवेशे । अन्यत्र,—सीमान्तः । पतत् अञ्जलिः—पतञ्जलिः । सार अङ्गः—सारङ्गः पशु-प्रक्षिणोः । अन्यत्र,—साराङ्गः ॥

हलीषा लाङ्गलीषा च मनीषाद्यौ तथैव च ।

शकन्धुरथ कर्कन्धुः सीमन्तः कुलटा तथा ॥ १६ ॥

पतञ्जलिश्च सारङ्ग एते प्रोक्ता हलादयः ॥ १७ ॥

५४ ओमाडावपि २२ ॥ अवर्णात्परौ ओमाडौ टिलोपनिमित्तौ स्तः । अब ओम् अद्योम् । शिव आ इहि—शिवेहि ॥ ५५ ओमि नित्यम् २३ ॥ ओमि परे नित्यमवर्णस्य लोपो भवति । स्वर ओम्—स्वरोम् । ‘उओ’ ( सू० ४५ ) गङ्गा उदकं—गङ्गोदकम् ॥ ५६ ऋ अर् २४ ॥ अवर्ण ऋवर्णे परे सह अर् भवति । तव ऋद्धिः—तवर्द्धिः । राद्यपो द्विः ( सू० ३७ ) ॥ ५७ कचिदार् २५ ॥ अवर्ण ऋवर्णे परे सह कचिदार् भवति । ऋण ऋणं—ऋणार्णम् । शीत ऋतः—शीतार्तः ॥ ५८ ऋते च तृतीयासमास एवाऽऽर् २६ ॥ अन्यत्र परमर्तः ॥ ५९ उपसर्गादवर्णान्तादृकारादौ धातौ आर् भवति २७ ॥ उपार्च्छति । प्रार्च्छति ॥ ६० ऋकारादौ नामधातौ वा २८ ॥

टिप्प०—१ ओंकारे । २ प्रवत्सतरकम्बलवसनाणदशानामृणे । ऋणशब्दे परे एभ्यः कचिदार् भवति । प्रऋणं प्रार्णमित्यादि ॥

उपार्षभीयति-उपर्षभीयति-प्रार्षभीयति ॥ ६१ ऋकारादौ आर्  
नेति वाच्यम् २९ ॥ उपऋकारीयति,—उपर्कारीयति ॥ ६२ लृ  
अल् ३० ॥ अवर्णं लृवर्णे परे सह अल् भवति । तव लृकारः—  
तवलृकारः ॥ ६३ ऋलृवर्णयोः सावर्ण्यं वक्तव्यम् ३१ ॥ ऋलृवर्ण-  
स्थानिकत्वाद्द्वयोरपि सावर्ण्यं वाच्यम् । होतृ लृकारः—होतृकारः,—  
होत्लृकारः । परि अङ्कः । ‘इ यं स्वरे’ (सू० ३३) । ‘राद्यपो द्विः’  
(सू० ३७) पर्यङ्कः—पत्यङ्कः ॥

रलयोर्दलयोश्चैव शसयोर्बवयोस्तथा ।

वदन्त्येषां च सावर्ण्यमलङ्कारविदो जनाः ॥ १८ ॥

‘ए ऐ ऐ’ (सू० ४४) अवर्ण एकारे ऐकारे च परे सह ऐकारो  
भवति । तव एषा—तवैषा । तव ऐश्वर्यं—तवैश्वर्यम् । ‘ओ औ  
औ’ (सू० ४६) अवर्ण ओकारे औकारे च परे सह औकारो  
भवति । तव ओदनः—तवौदनः, तव औन्नत्यं—तवौन्नत्यम् ॥ ६४  
ओष्ठोत्वोर्वौ ३२ ॥ अवर्णस्य ओष्ठोत्वोः परयोः समासे सति सह  
वा ओ भवति । बिम्ब ओष्ठः—बिम्बोष्ठः,—बिम्बौष्ठः । स्थूल ओतुः—  
स्थूलोतुः, स्थूलौतुः । समासे किम् ? । तव ओष्ठः—तवौष्ठः ॥

इति स्वरसंधिप्रक्रिया ॥ २ ॥

### प्रकृतिभावः ३

अथ प्रकृतिभाव उच्यते । प्रकृतेर्ययास्थितस्य रूपस्य भवनं प्रकृति-  
भावः ॥ ६५ नामी १ ॥ अदसोऽमी संधिं न प्राप्नोति । अमी आदित्याः ॥  
६६ य्वे द्वित्वे २ ॥ ई च ऊ च ए च । य्वे द्वित्वे । ईकारान्त ऊकारान्त  
एकारान्तश्च शब्दो द्वित्वे वर्तमानः संधिं न प्राप्नोति, मणीवादिवर्ज्यम् ।  
अमी अत्र । पटू अत्र । माले आनय । मणी इव मणीव ॥

मणीवोष्टस्य लम्बेते प्रियौ वत्सतरौ मम ।

हियमाणौ तु तौ दम्यौ मकिस्तरेदमब्रवीत् ॥ १९ ॥

रोदसी इव—रोदसीव । दंपती इव—दंपतीव । जंपती इव—जंपतीव ।  
जायापती इव—जायापतीव ॥ ६७ औ निपातः ३ ॥ आ च ओ  
च अ च इ च उ च ऋ च लृ च ए च ऐ च ओ च औ । आ ओ  
इति पृथक् पदं वा निपातः । आकारनिपातः ओकारनिपात एकस्वरश्च  
संधिं न प्राप्नोति । आ एवं मन्यसे । नो अत्र स्थातव्यम् । उ उत्तिष्ठ ।  
इ इन्द्रं पश्य । अ अपेहि । आग्रहणादाडो न निषेधः; तथा चोक्तम्—

ईषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाभिविधौ च यः ।

एतमातं डितं विद्याद्वाक्यस्मरणयोरडित् ॥ २० ॥

ओत्तमैरेक्षसे न त्वामामृतादेन्द्रतोऽखिलैः ।

आ एवं सर्ववेदार्थ आ एवं सद्रचो हरेः ॥ २१ ॥

अहो आहो उताहो च नो हो हहो अथो इमे ।

मिथोयुक्ताश्च ओदन्ता निपाता अष्टधा मताः ॥ २२ ॥

६८ फुतः ४ ॥ फुतः संधिं न प्राप्नोति । देवदत्त ३ एहि ।  
देवदत्त ३ अत्र गौश्वरति ॥ ६९ दूरादाह्वाने च टेः फुतः ५ ॥  
दूरादाह्वाने गाने रोदने विचारे गम्यमाने च टेः फुतो भवति ।  
दूरादित्यत्र चकारग्रहणाद्धा तातेतीत्यादौ संधिः स्यात् ॥ ७० हैहयोः  
स्वरे संधिर्न वक्तव्यः ६ ॥ हे अनङ्गन् ॥ ७१ ऋतौ समानो  
वा ७ ॥ ऋतौ परे समानः संधिं न प्राप्नोति वा । हिम ऋतुः  
—हिमर्तुः—हिमऋतुः ॥

इति प्रकृतिभावप्रक्रिया ॥ ३ ॥

## व्यञ्जनसंधिः ४

अथ व्यञ्जनकार्यमुच्यते ॥ ७२ चपा अवे जबाः १ ॥ पदान्ते  
वर्तमानाश्चपा जबा भवन्ति अवे परे । पट् अत्र-षडत्र । वाक्  
यथा-वाग्यथा । ककुप् ऐन्द्री-ककुवैन्द्री ॥ ७३ जमे जमा वा २ ॥  
पदान्ते वर्तमानाश्चपा जमे परे जमा वा भवन्ति । वाक् मात्रं-  
वाङ्मात्रम्-वाङ्मात्रम् । षट् मम-षण्मम-षड्मम ॥ ७४ मयटि  
नित्यं वाच्यम् ३ ॥ चित् मयं-चिन्मयम् । प्रत्यये,-जमो नित्यमिति  
केचित् । तेन वाङ्मात्रमित्येकमेव रूपं स्यात् ॥ ७५ चपाच्छः शः  
४ ॥ चपादुत्तरस्य शकारस्य छो वा भवति अवे परे । वाक् शूरः-वाक्-  
छूरः-वाक्शूरः ॥ ७६ हो झभाः ५ ॥ चपादुत्तरस्य हकारस्य झभा वा  
भवन्ति । नन्वेकस्य हकारस्य झभाः प्राप्ताः केन क्रमेण भवन्ति ? ।  
अत्रोच्यते,-यद्वर्गगश्चपस्तद्वर्गगश्चतुर्थो भवति । तत् हविः-तद्धविः-  
तद्हविः । वाक् हरिः-वाग्हरिः-वाग्हरिः । ककुप्हासः-ककुब्हासः-  
ककुब्हासः ॥ ७७ स्तोः शुभिः शुः ६ ॥ स्तोः सकारस्य तवर्गस्य  
च शकारेण चवर्गेण च योगे शकार-चवर्गौ यथासंख्येन भवतः । सू  
च तुश्च स्तुस्तस्य स्तोः । समाहारे द्वन्द्वे एकत्वम् । 'छन्दोवत्सूत्राणि'  
इति वचनात्तुपुंसकस्य पुंस्त्वम् । श् च चवश्च श्ववस्तैः शुभिः । चुशब्दे  
चवर्गस्थवर्णापेक्षया बहुवचनम् ॥

अकृत्वा सप्तमीमेतां तृतीयामकरोदिला ।

ततः शुभिः शुः पूर्वेण संनिपातः परेण वा ॥ २३ ॥

कस् चरति-कश्चरति । कस् शूरः-कश्शूरः । तत् चित्रं-तच्चित्रम् ।  
तत् शास्त्रं-तच्छास्त्रम् ॥ ७८ न शात् ७ ॥ शकारादुत्तरस्य तवर्गस्य

मणीवोष्टस्य लम्बेते प्रियौ वत्सतरौ मम ।

हियमाणौ तु तौ दम्प्यौ मकिस्तत्रेदमब्रवीत् ॥ १९ ॥

रोदसी इव—रोदसीव । दंपती इव—दंपतीव । जंपती इव—जंपतीव ।  
जायापती इव—जायापतीव ॥ ६७ औ निपातः ३ ॥ आ च ओ  
च अ च इ च उ च ऋ च लृ च ए च ऐ च ओ च औ । आ ओ  
इति पृथक् पदं वा निपातः । आकारनिपातः ओकारनिपात एकस्वरश्च  
संधिं न प्राप्नोति । आ एवं मन्यसे । नो अत्र स्थातव्यम् । उ उत्तिष्ठ ।  
इ इन्द्रं पश्य । अ अपेहि । आग्रहणादाडो न निषेधः; तथा चोक्तम्—  
ईषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाभिविधौ च यः ।

एतमातं डितं विद्याद्वाक्यस्मरणयोरडित् ॥ २० ॥

ओत्तमैरेक्षसे न त्वामामृतादेन्द्रतोऽखिलैः ।

आ एवं सर्ववेदार्थ आ एवं सद्रचो हरेः ॥ २१ ॥

अहो आहो उताहो च नो हो हहो अथो इमे ।

मिथौषुक्ताश्च ओदन्ता निपाता अष्टधा मताः ॥ २२ ॥

६८ प्लुतः ४ ॥ प्लुतः संधिं न प्राप्नोति । देवदत्त ३ एहि ।  
देवदत्त ३ अत्र गौश्वरति ॥ ६९ दूरादाह्वाने च टेः प्लुतः ५ ॥  
दूरादाह्वाने गाने रोदने विचारे गम्यमाने च टेः प्लुतो भवति ।  
दूरादित्यत्र चकारग्रहणाद्धा तातेतीत्यादौ संधिः स्यात् ॥ ७० हैहयोः  
स्वरे संधिर्न वक्तव्यः ६ ॥ हे अनङ्गन् ॥ ७१ ऋतौ समानो  
वा ७ ॥ ऋतौ परे समानः संधिं न प्राप्नोति वा । हिम ऋतुः  
—हिमर्तुः—हिमऋतुः ॥

इति प्रकृतिभावप्रक्रिया ॥ ३ ॥

## व्यञ्जनसंधिः ४

अथ व्यञ्जनकार्यमुच्यते ॥ ७२ चपा अवे जबाः १ ॥ पदान्ते  
वर्तमानाश्चपा जबा भवन्ति अवे परे । षट् अत्र-षडत्र । वाक्  
यथा-वाग्यथा । ककुप् ऐन्द्री-ककुबैन्द्री ॥ ७३ जमे जमा वा २ ॥  
पदान्ते वर्तमानाश्चपा जमे परे जमा वा भवन्ति । वाक् मात्रं-  
वाङ्मात्रम्-वाग्मात्रम् । षट् मम-षण्मम-षड्मम ॥ ७४ मयटि  
नित्यं वाच्यम् ३ ॥ चित् मयं-चिन्मयम् । प्रत्यये,-जमो नित्यमिति  
केचित् । तेन वाङ्मात्रमित्येकमेव रूपं स्यात् ॥ ७५ चपाच्छः शः  
४ ॥ चपादुत्तरस्य शकारस्य छो वा भवति अवे परे । वाक् शूरः-वाक्-  
छूरः-वाक्शूरः ॥ ७६ हो झभाः ५ ॥ चपादुत्तरस्य हकारस्य झभा वा  
भवन्ति । नन्वेकस्य हकारस्य झभाः प्राप्ताः केन क्रमेण भवन्ति ? ।  
अत्रोच्यते,-यद्वर्गगश्चपस्तद्वर्गगश्चतुर्थो भवति । तत् हविः-तद्वविः-  
तद्हविः । वाक् हरिः-वाग्हरिः-वाग्हरिः । ककुप्हासः-ककुब्हासः-  
ककुब्हासः ॥ ७७ स्तोः श्रुभिः श्रुः ६ ॥ स्तोः सकारस्य तवर्गस्य  
च शकारेण चवर्गेण च योगे शकार-चवर्गौ यथासंख्येन भवतः । स  
च तुश्च स्तुस्तस्य स्तोः । समाहारे द्वन्द्वे एकत्वम् । 'छन्दोवत्सूत्राणि'  
इति वचनान्नपुंसकस्य पुंस्त्वम् । श् च चवश्च श्ववस्तैः श्रुभिः । चुशब्दे  
चवर्गस्थवर्णापेक्षया बहुवचनम् ॥

अकृत्वा सप्तमीमेतां तृतीयामकरोदिला ।

ततः श्रुभिः श्रुः पूर्वेण संनिपातः परेण वा ॥ २३ ॥

कस् चरति-कश्चरति । कस् शूरः-कश्शूरः । तत् चित्रं-तच्चित्रम् ।  
तत् शास्त्रं-तच्छास्त्रम् ॥ ७८ न शात् ७ ॥ शकारादुत्तरस्य तवर्गस्य

चुत्वं न भवति । विश्वः । प्रश्नः ॥ ७९ षुभिः षुः ८ ॥ स्तोः  
 सकारस्य तवर्गस्य च षकारेण टवर्गेण च योगे षकार-टवर्गौ यथा-  
 संख्येन भवतः । कस् षष्ठः-कष्णष्ठः । कस् टीकते-कष्टीकते । तत्  
 टीकते-तट्टीकते । तत् टीका-तट्टीका । षुभिरिति बहुवचनात्कचित्प-  
 कारटवर्गयोगं विनापि षुत्वम् । अग्निष्टोमः ॥ ८० तोर्लि लः ९ ॥  
 तवर्गस्य लकारे परे लकारो भवति । तत् लुनाति-तल्लुनाति ।  
 भवान् लिखति-भवाँल्लिखति ॥ ८१ अन्तस्था द्विप्रभेदाः १० ॥  
 रेफवर्जिता यवलाः सानुनासिका निरनुनासिकाश्च । तत्र सानु-  
 नासिक एव नकारस्य लकारो भवति ॥ ८२ न षि ११ ॥ षकारे  
 परे तवर्गस्य षुत्वं न भवति । भवान् षष्ठः-भवान्षष्ठः ॥ ८३  
 टोरन्त्यात् १२ ॥ पदान्ते वर्तमानाद्ववर्गात्परस्य स्तोः षुत्वं न  
 भवति । षट् नरः-षण्णरः । षट् सीदन्ति-षट्सीदन्ति ॥ ८४ न  
 सक् छते १३ ॥ नान्तस्य पदस्य छते परे सगागमो भवति ॥  
 ८५ टित्कितावाद्यन्तयोर्वक्तव्यौ १४ ॥ टित्त्वादादौ कित्त्वादान्ते ।  
 राजन् चित्रं-राजंश्चित्रम् । भवान् तनोति-भवांस्तनोति ॥ ८६ शे  
 चग्वा १५ ॥ नान्तस्य पदस्य शे परे वा चगागमो भवति । भवान्  
 शूरः-भवाञ्छूरः, भवाञ्छूरः, भवाञ्श्शूरः, भवाञ्शूरः ॥ ८७ ङ्णो  
 ह्रस्वाद्धिः स्वरे १६ ॥ ङकार-णकार-नकारा ह्रस्वादुत्तरा द्विर्भवन्ति स्वरे  
 परे पदान्ते । प्रत्यङ् इदं-प्रत्यङ्ङिदम् । सुगण् इह-सुगण्णिह । राजन्  
 इह-राजन्निह । राजन् इदं-राजन्निदम् ॥ ८८ छः १७ ॥ ह्रस्वादुत्तरश्छ-  
 कारो द्विर्भवति ॥ ८९ खसे चपा झसानाम् १८ ॥ झसानां खसे परे  
 चपा भवन्ति । तव छत्रं-तवच्छत्रम् ॥ ९० दीर्वादपि च वक्तव्यः



१९ ॥ दीर्घादुत्तरश्छकारो द्विर्भवति । म्लेछः-म्लेच्छः । ह्रीछः-  
 ह्रीच्छः ॥ ९१ अपिशब्दादीर्घात्पदान्ताद्वेति वक्तव्यम् २० ॥  
 लक्ष्मीछाया-लक्ष्मीच्छाया ॥ ९२ आङ्गाङ्भ्यां च वक्तव्यम्  
 २१ ॥ आच्छादयति । माच्छिदत् ॥ ९३ मोऽनुस्वारः २२ ॥  
 पदान्ते वर्तमानस्य मकारस्यानुस्वारो भवति ह्रसे परे पदान्ते च ।  
 तम् हसति-तं हसति । पटुम् वृथा-पटुं वृथा । कौमारास्त्ववसानेप्यनु-  
 स्वारमिच्छन्ति ॥ ९४ अवसाने वा २३ ॥ अवसाने मकारस्यानुस्वारो  
 वा भवति । देवं-देवम् ॥ ९५ नश्चापदान्ते झसे २४ ॥ नकारस्य  
 मकारस्य चापदान्ते वर्तमानस्यानुस्वारो भवति झसे परे । यशान्सि-  
 यशांसि । पयान् सि-पयांसि । कम् सः-कंसः । पुम् भ्यां-पुंभ्याम् ।  
 आकम् स्यते-आकंस्यते ॥ ९६ जमा यपेऽस्य वा २५ ॥ अनु-  
 स्वारस्य जमा वा भवन्ति यपे परे । नन्वेकस्यानुस्वारस्य पञ्च जमाः  
 प्राप्ताः केन क्रमेण भवन्ति ? । अस्य यपस्य सवर्णाः । शांतः-शान्तः ॥  
 ९७ वा पदान्ते २६ ॥ पदान्ते वर्तमानस्यानुस्वारस्य जमा वा  
 भवन्ति यपे परे । तं करोति-तङ्करोति । तं तनोति-तन्तनोति । तं  
 जानाति-तज्जानाति ॥ ९८ वर्गे वर्गान्तः २७ ॥ वर्गे परे वर्गान्तो  
 भवति । वर्गाभावे पररूपं स्यात् । सम् यंता-सँय्यन्ता । यकारस्या-  
 न्यसवर्णाभावेऽपि यकारस्य यकार एव सवर्णः । सं वत्सरः-सँव-  
 त्सरः । यं लोकं-यँलोकम् ॥ ९९ मनयवलपरे हकारेऽनुस्वारस्य  
 ते यथाक्रमं भवन्ति २८ ॥ किं हल्यति-किम्हल्यति । किं ह्रुते-  
 किँह्रुते । किं ह्यः-किँय्ह्यः । किं हल्यति-किँह्ल्यति ।  
 किं ह्रादयति-किँह्रादयति ॥ १०० ङणोः कुक्कुट्वा शरि २९ ॥  
 ङकारणकारयोः शषसे परे कुक्कुट्वागमौ वा स्तः । प्राङ् षष्ठः

प्राङ्पष्ठः-प्राङ्पष्ठः । सुगण् पष्ठः-सुगण्पष्ठः सुगण्पष्ठः ॥ १०१  
 सः खरे ३० ॥ अनुस्वारस्य मकारो भवति खरे परे । किं अस्ति—  
 किमस्ति ॥ १०२ ँछन्दसि ३१ ॥ अनुस्वारश्छन्दसि ँकारमापद्यते  
 शषसहरेफेषु परतः । चतुस्त्रिंशद्वाजिनः । समयजूंषि ॥ वयं  
 सोम । सिं ह्यसि । देवानां राजा ॥ १०३ तकारो लचटवर्गेषु  
 पररूपमापद्यते ३२ ॥ वित् ठलः-विठलः ॥

इति व्यञ्जनसंधिप्रक्रिया ॥ ४ ॥

### विसर्गसंधिः ५

अथ विसर्गसंधिर्निगद्यते ॥ १०४ विसर्जनीयस्य सः १ ॥  
 विसर्जनीयस्य सकारो भवति खसे परे । कः तनोति-कस्तनोति ॥  
 १०५ शषसे वा २ ॥ विसर्जनीयस्य वा सकारो भवति शषसे परे ।  
 कः शेते-कश्शेते ॥ कः षण्डः-कष्ण्डः । कः साधुः-कस्साधुः ॥  
 १०६ कुप्पोः ँकः पौ वा ३ ॥ विसर्जनीयस्य कवर्गपवर्गसंबन्धिनि  
 खसे परे ँ कः पौ वा भवतः । कपावुच्चारणार्थं । कः करोति—  
 कः करोति । कः खनति-कः खनति । कः पचति-कः पचति ।  
 कः पठति—कः पठति । कः फलति-कः फलति ॥ १०७  
 वाचस्पत्यादयः संज्ञाशब्दा निपातनात्साधवः ४ ॥ वाचस्पतिः,  
 बृहस्पतिः, कारस्करः, पारस्करः, भास्करः, तस्करः, हरिश्चन्द्रः । तद्बृहतोः  
 करपत्योश्चौरदेवतयोः सुट् तलोपश्च । इत्यादि ॥ १०८ अहो  
 रोऽरात्रिषु ५ ॥ अहो विसर्जनीयस्य पदान्ते रो भवति रात्र्यादि-  
 वजितेषु परतः । अहः पतिः-अहर्पतिः । अहः गणः-अहर्गणः ।  
 अहः अन्न-अहरन्न । अरात्रिष्विति विशेषणादहोरात्रम् । अहः  
 रूपं-अहोरूपम् । अहः स्थन्तरं-अहोरथन्तरम् । रूपरात्रिरथन्तरेषु

न रेफ इत्यादि ॥ १०९ अतोऽत्युः ६ ॥ अकारात्परस्य उकारो भवत्यति परतः । 'एदोतोऽतः' (सू० ५१) कः अर्थः—कोऽर्थः ॥ ११० हवे ७ ॥ अकारात्परस्य विसर्जनीयस्य उकारो भवति हवे परे । कः गतः—को गतः । देवः याति—देवो याति । मनः रथः—मनोरथः ॥ १११ आदवे लोपश् ८ ॥ अवर्णात्परस्य विसर्जनीयस्य लोपश् भवत्यवे परे । देवाः अत्र—देवा अत्र ॥ वाताः वाताः—वाता वाताः ॥ ११२ खरे यत्वं वा ९ ॥ अवर्णात्परस्य विसर्जनीयस्य यत्वं वा भवति खरे परे । देवाः अत्र—देवा अत्र—देवायत्र ॥ ११३ भोसः १० ॥ भोस् भगोस् अधोस् इत्येतस्मात्परस्य विसर्जनीयस्य लोपश् भवत्यवे परे । भोः एहि—भो एहि । भगोः नमस्ते—भगो नमस्ते । अधोः याहि—अधो याहि ॥ ११४ नामिनो रः ११ ॥ नामिनः परस्य विसर्जनीयस्य रेफो भवत्यवे परे । अग्निः अत्र—अग्निरत्र । पटुः यजते—पटुर्यजते ॥ ११५ रेफप्रकृतिकस्य खपे वा १२ ॥ नामिनः परस्य रेफप्रकृतिकस्य विसर्जनीयस्य खपे परे वा रेफो भवति । गीः पतिः—गीर्पतिः—गीःपतिः । धूः पतिः—धूर्पतिः—धूःपतिः ॥ ११६ रः १३ ॥ रेफसंबन्धिनो विसर्जनीयस्य रेफो भवति अवे परे । प्रातः अत्र—प्रातरत्र । अन्तः गतः—अन्तर्गतः ॥ ११७ रि लोपो दीर्घश्च १४ ॥ रेफस्य रेफे परे लोपो भवति, पूर्वस्य च दीर्घः । पुनः रमते—पुना रमते । शुक्तिः रूप्यात्मना भाति—शुक्ती रूप्यात्मना भाति ॥ ११८ सैषाद्भस्ते १५ ॥ सशब्दादेशशब्दाच्च

टिप्प०—१ अवर्णेत्यनेन अकार आकारश्च गृह्यते तत्र पूर्वसूत्रेण आकारस्य व्यवस्थितत्वादाकार एवात्र धिष्यते तेन आकारात्परस्य विसर्जनीयस्य लोपश् भवत्यवे पर इत्येव सिद्धम् ।

परस्य विसर्जनीयस्य लोपश् भवति हसे परे । सः चरति—स चरति ।  
एषः हसति—एष हसति । सैषादिति संहितासमासे कृतेऽघटमाना सा  
सैष दाशरथी राम इत्यादौ पादपूरणे संध्यर्था ज्ञेया ॥

सैष दाशरथी रामः सैष राजा युधिष्ठिरः ।

सैष कर्णो महात्यागी सैष भीमो महाबलः ॥ २४ ॥

११९ कचिन्नामिनोऽवे लोपश् १६ ॥ नामिनः परस्य विसर्जनी-  
यस्य लोपश् भवति कचिदवे परे । भूमिः आददे—भूम्याददे ॥

यदुक्तं लौकिकायेह तद्वेदे बहुलं भवेत् ।

सेमां भूम्याददे सोषामित्यादीनामदुष्टता ॥ २५ ॥

क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव ।

विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति ॥ २६ ॥

वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ ।

धातोस्तदर्थान्तिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥ २७ ॥

वर्णागमो गवेन्द्रादौ सिंहे वर्णविपर्ययः ।

षोडशादौ विकारः स्याद्वर्णनाशः पृषोदरे ॥ २८ ॥

वर्णविकारनाशाभ्यां धातोरन्तिशयेन यः ।

योगः स उच्यते प्राज्ञैर्मयूरभ्रमरादिषु ॥ २९ ॥

वित्कम्भनेन—विस्कम्भनेन । शुनः शेषं चित्—शुनश्चिच्छेपम् । पृषत्  
उदरं—पृषोदरम् ॥ १२० आत्स्वसयोरुः १७ ॥ आकारे स्वसे च

टिप्प०—१ स एष इत्यत्र सैषेत्यष्टाक्षरपदार्था संहिता । २ अनिश्चितविभजन-  
तया । ३ विकल्पः । ४ वैदिकप्रयोगम् । ५ अन्यस्मिन्कर्णेऽन्यस्योच्चारणम् । यथा हिसि-  
न्नातोर्हिसशब्दे प्राप्ते सिंह इति । ६ पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम् । पृषोदरादीनि  
शब्दस्वरूपाणि द्विष्टैर्यथोच्चारितानि तथैव साधूनि । यथा वारिवाहको बलाहकः ।

परे विसर्जनीयस्य सः उः कचिद्भवति । गूढः आत्मा ॥

इति विसर्गसंधिप्रक्रिया ॥ ५ ॥

### स्वरान्ताः पुंलिङ्गाः ६

अथ विभक्तिर्विभाव्यते । सा द्विधा—स्यादिस्त्यादिश्च ॥ १२१  
विभक्त्यन्तं पदम् १ ॥ तत्र स्यादिविभक्तिर्नाम्नो योज्यते ॥ १२२  
अविभक्ति नाम २ ॥ विभक्तिरहितं धातुवर्जितं चार्थवच्छब्दरूपं  
नामोच्यते । कृत्तद्धितसमासाश्च प्रातिपदिकसंज्ञा इति केचित् ॥  
१२३ तस्मात् ३ ॥ तस्मान्नाम्नः पराः स्यादयः सप्त विभक्तयो भव-  
न्ति । तत्राप्यर्थमात्रैकत्वविवक्षायां प्रथमैकवचनं सि ॥

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---------|-----------|----------|
| १ सि    | औ         | जस्      |
| २ अम्   | औ         | शस्      |
| ३ टा    | भ्याम्    | मिस्     |
| ४ डे    | भ्याम्    | भ्यस्    |
| ५ ङसि   | भ्याम्    | भ्यस्    |
| ६ ङम्   | ओस्       | आम्      |
| ७ ङि    | ओस्       | सुप्     |

( तस्मान्नाम्नः पराः स्यादयः सप्त विभक्तयो भवन्ति, तत्रा-  
प्यर्थमात्रैकत्वविवक्षायां प्रथमैकवचनं सि । ) अकारान्तः पुंलिङ्गो देव-  
शब्दः । देव सि इति स्थिते । इकार उच्चारणार्थः, सेरिति विशे-  
षणार्थश्च । १२४ स्त्रोर्विसर्गः ४ ॥ सकाररेफयोर्विसर्जनीयादेशो  
भवत्यधातो रसे पदान्ते च । चकारात्पदान्ते उभयोर्धातुनाम्नोः ।  
देवः । द्वित्वविवक्षायां औ । 'ओ औ औ' ( सू० ४६ ) देवौ ।  
बहुत्वविवक्षायां देव जस् इति स्थिते । जकारो जसीति विशेषः-

णार्थः । जकारस्येत्संज्ञायां तस्य लोपः । देव अस् इति स्थिते । दीर्घविसर्गौ । देवाः ॥ १२५ अकाराजसोऽसुक् क्वचिद्वक्तव्यश्छन्दसि ५ ॥ कित्वादन्ते । देवासः । ब्राह्मणासः । द्वितीयैकवचने देव अम् इति स्थिते ॥ १२६ अमृशसोरस्य ६ ॥ समानादुत्तरयो-  
रमृशसोरकारस्य लोपो भवत्यधातोः । देवम् । पूर्ववत् देवौ । बहुत्वविव-  
क्षायां देव शस् इति स्थिते । शकारोऽनुबन्धः 'शसि' (सू० १२८) इति विशेषणार्थः ॥ १२७ सो नः पुंसः ७ ॥ पुंलिङ्गात्समानादु-  
त्तरस्य शसः सकारस्य नकारादेशो भवति ॥ १२८ शसि ८ ॥ शसि परे पूर्वस्य दीर्घो भवति ॥ १२९ यदादेशस्तद्वद्भवति ९ ॥ देवान् । तृतीयैकवचने देव टा इति स्थिते । टकारोऽनुबन्धः 'टेन' (सू० १३०) इति विशेषणार्थः ॥ १३० टेन १० ॥ अकारा-  
त्परष्टा इन भवति । 'अ इ ए' (सू० ४३) देवेन ॥ १३१ आङ्घ्रि ११ ॥ अकार आ भवति भकारे परे । देवाभ्याम् । देव भिस् इति स्थिते ॥ १३२ भ्यः १२ ॥ अकारात्परस्य भिसो भकारस्याकारो भवति । 'अ इ ए' (सू० ४३) वृद्धिविसर्जनीयौ । देवैः ॥ १३३ अकारस्य भिसि छन्दस्येकारो वक्तव्यः १३ ॥ देवेभिः । कर्णेभिः । चतुर्थ्येकवचने देव डे इति स्थिते । डकारो डित्का-  
र्यार्थः सर्वत्र ॥ १३४ डे अक् १४ ॥ अकारात्परस्य डे इत्येतस्या-  
गागमो भवति । कित्वादन्ते । 'ए अय्' (सू० ४१) सवर्णे दीर्घः । देवाय, देवाभ्याम् ॥ १३५ ए स्मि बहुत्वे १५ ॥ अकारस्य षत्वं भवति सकारे भकारे च परे बहुत्वे सति । देवेभ्यः । पञ्च-  
म्येकवचने देव ङस् इति स्थिते । इकारः प्रत्ययभेदज्ञापनार्थः ।

टिप्प० १- उचरितप्रध्वंसो ह्यनुबन्धः । २ आ अत् भि इति त्रीणि पदानि ।  
केचित्तु- 'अङ्घ्रि' इत्येव पठन्ति ।

१३६ ङसिरत् १६ ॥ अकारात्परो ङसिरत् भवति । देवात् ।  
 देवाभ्याम् । देवेभ्यः । षष्ठ्येकवचने देव ङस् इति स्थिते ॥  
 १३७ ङस्य १७ ॥ अकारात्परो ङस् स्यो भवति । देवस्य ॥  
 १३८ ओसि १८ ॥ अकारस्य ओसि परे एत्वं भवति । 'ए अय्'  
 (सू० ४१) देवयोः ॥ १३९ नुडामः १९ ॥ समानात्परस्यामो  
 नुडागमो भवति । टित्वादादौ । उकार उच्चारणार्थः ॥ १४० नामि  
 २० ॥ नामि परे पूर्वस्य दीर्घो भवति । देवानाम् । सप्तम्येकवचने  
 देव ङि इति स्थिते । 'अ इ ए' (सू० ४३) देवे, देवयोः ।  
 बहुत्वविवक्षायां देव सुप् इति स्थिते पकारः पित्कार्यार्थः । (पका-  
 रस्येत्संज्ञायां लोपः) इत्येत्वे कृते । 'ए स्मि बहुत्वे' (सू० १३५) ॥  
 १४१ किलात्षः सः कृतस्य २१ ॥ कवर्गादिलाच्च प्रत्याहारा-  
 दुत्तरस्य केनचित्सूत्रेण कृतस्य सकारस्य षकारादेशो भवति । अन्ते  
 स्थितस्य तु न भवति । देवेषु ॥ १४२ आमन्नणे सिधिः २२ ॥  
 आमन्नणमाभिमुखीकरणं तस्मिन्नर्थे विहितः सिधिसंज्ञो भवति ॥  
 १४३ समानाद्वेलोपोऽधातोः २३ ॥ समानादुत्तरस्य धेलोपो  
 भवत्यधातोः । ह्रस्वात्समानादुत्तरस्येति ज्ञेयम् ॥ १४४ आभिमु-  
 ख्याभिव्यक्तये हेशब्दस्य प्राक् प्रयोगः २४ ॥ हे देव, हे  
 देवौ, हे देवाः ॥ एवं घट-पट-स्तम्भ-कुम्भादयोऽप्यकारान्ताः  
 पुंलिङ्गाः । अकारान्तानामपि सर्वादीनां तु विशेषः । सर्व-विश्व-  
 उभ-उभय-अन्य-अन्यतर-इतर-उतर-उतम-कतर-कतम-सम-सिम-नेम-  
 एक-पूर्व-पर-अवर-दक्षिण-उत्तर-अपर-अधर-स्वर्-अन्तर्-त्यद्-तद्-यद्-  
 एतद्-इदम्-अदस्-द्वि-किम्-युष्मत्-अस्मत्-भवत् । एते सर्वादय-  
 स्त्रिलिङ्गाः । तत्र पुंलिङ्गे रूपनयः । अकारान्तः सर्वशब्दः ।  
 सर्वः, सर्वौ ॥ १४५ जसी २५ ॥ सर्वादेरकारान्तात्परो जस्

ई भवति (गुरुः शिञ्च सर्वस्य वक्तव्यः) । ‘अ इ ए’ (सू० ४३) सर्वे । सर्वम्, सर्वौ, सर्वान् । पूर्ववत्प्रक्रिया ॥ १४६ ऋर्नो णोऽनन्ते २६ ॥ षकाररेफञ्जवर्णेभ्यः परस्य नकारस्य णकारादेशो भवति । अन्ते स्थितस्य न भवति । तेन सर्वानित्यादि ॥ १४७ अवकुप्वन्तरेऽपि २७ ॥ अवप्रत्याहारेण कवर्गेण पवर्गेण च मध्ये व्यवधानेऽपि भवति नान्येन । सर्वेण, सर्वाभ्याम्, सर्वैः । चतुर्थ्येकवचने सर्वे ङे इति स्थिते ॥ १४८ सर्वादेः स्मट् २८ ॥ सर्वादेरकारान्तात्परस्य चतुर्थ्येकवचनस्य स्मडागमो भवति । टकारः स्थाननियमार्थः । ‘ए ऐ ऐ’ (सू० ४४) सर्वस्मै, सर्वाभ्याम्, सर्वेभ्यः । पञ्चम्येकवचने सर्व अत् इति स्थिते ॥ १४९ अतः २९ ॥ सर्वादेरकारान्तात्परस्यातः स्मडागमो भवति दीर्घः । सर्वस्मात्, सर्वाभ्याम्, सर्वेभ्यः । सर्वस्य, सर्वयोः ॥ १५० सुडामः ३० ॥ सर्वादेरवर्णान्तात्परस्यामः सुडागमो भवति । सर्वेषाम् । सप्तम्येकवचने सर्वे ङि इति स्थिते ॥ १५१ ङि सिन् ३१ ॥ सर्वादेरकारान्तात्परो ङि सिन् भवति । सर्वस्मिन्, सर्वयोः, सर्वेषु । हे सर्व, हे सर्वौ, हे सर्वे—इत्यादि ॥ एवं विश्वादीनामेकशब्दपर्यन्तानां सर्वशब्दवद्रूपं ज्ञेयम् ॥ डतरडतमौ विहाय तौ प्रत्ययौ ततस्तदन्ताः शब्दा ग्राह्याः । तथैव विश्वशब्दः । विश्वः, विश्वौ, विश्वे—इत्यादि ॥ उभशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः । उभौ २, उभाभ्याम् ३, उभयोः २, हे उभौ ॥ उभयशब्दस्य द्विवचनाभावादेकवचनबहुवचने भवतः । उभयः, उभये । उभयम्, उभयान् । उभयेन,

टिप्प०-१ स्मडादिप्रत्ययेषु टकारः सर्वत्र स्थाननियमार्थः । २ ‘एस्मि बहुत्वे सू० १३५’ इत्यकारस्येत्वम् ‘क्लितात्षः सः कृतस्य’ (सू० ३४१) इति षत्वम् । ३ आभिमुख्याभिव्यक्तये संबुद्धौ सर्वत्र द्वेशब्दस्य प्राक्प्रयोगः ‘सू० १४४’ ।



उभयैः, उभयस्यै, उभयेभ्यः । उभयस्मात्, उभयेभ्यः । उभयस्य, उभये-  
षाम् । उभयस्मिन्, उभयेषु । हे उभय, हे उभये ॥ अन्यः, अन्यौ, अन्ये ।  
इत्यादि ॥ इतरः, इतरौ, इतरे-इत्यादि । कतरः, कतरौ, कतरे-  
इत्यादि ॥ एवमेकशब्दपर्यन्तानां रूपं ज्ञेयम् ॥ पूर्वादीनां तु विशेषः ।  
पूर्वः, पूर्वौ ॥ १५२ पूर्वादीनां तु नवानां जस ईकारो वा  
वक्तव्यः ३२ ॥ पूर्वे-पूर्वाः । पूर्वम्, पूर्वौ, पूर्वान् । पूर्वेण, पूर्वाभ्याम्,  
पूर्वैः । पूर्वस्यै, पूर्वाभ्याम्, पूर्वेभ्यः ॥ १५३ पूर्वादिभ्यो नवभ्यो  
ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ वा वक्तव्यौ ३३ ॥ पूर्वस्मात्-पूर्वात् ।  
पूर्वाभ्याम्, पूर्वेभ्यः । पूर्वस्य, पूर्वयोः, पूर्वेषाम् । पूर्वस्मिन्-पूर्वे, पूर्वयोः,  
पूर्वेषु । हे पूर्व-हे पूर्वौ, हे पूर्वे-हे पूर्वाः ॥ एवं परशब्दः । परः,  
परौ, परे-पराः-इत्यादि ॥ एवमन्तरशब्दपर्यन्तानां रूपं ज्ञेयम् ॥

सर्वादिः सर्वनामाख्यो न चेद्गौणोऽथवाभिधा ॥ ३० ॥

पूर्वादिश्च व्यवस्थायां समोऽतुल्येऽन्तरोऽपुः ।

परिधाने बहिर्योगे स्त्रोऽर्थज्ञात्यन्यवाच्यपि ॥ ३१ ॥

१५४ प्रथमचरमतयायडल्पाधकतिपयनेमानां जसि वा ३४ ॥  
प्रथमः, प्रथमौ, प्रथमे-प्रथमाः । चरमः, चरमौ, चरमे-चरमाः ॥ शेषं  
देववत् । नेमे-नेमाः ॥ शेषं सर्ववत् । तयायटौ प्रत्ययौ, ततस्तदन्ताः  
शब्दा ग्राह्याः । तयप्रत्ययान्तो द्वितयशब्दः । द्वितयः, द्वितयौ,  
द्वितये-द्वितयाः । एवं त्रितयशब्दः ॥ अयट्प्रत्ययान्तो द्वयः त्रयश्च ॥  
एवं नेमपर्यन्तानां रूपं ज्ञेयम् ॥ [ तीयस्य सर्ववद्रूपं ङित्सु वा वक्त-  
व्यम् ] । द्वितीयः, द्वितीयौ, द्वितीयाः । द्वितीयं, द्वितीयौ, द्वितीयान् ।

टिप्प०-१ स्वाभिधेयापेक्षावधिनियमो व्यवस्था । व्यवस्थायां किम् ? दक्षिणा  
गायकाः, कुशला इत्यर्थः ।

द्वितीयेन, द्वितीयाभ्याम् ; द्वितीयैः । द्वितीयस्यै-द्वितीयाय, द्वितीयाभ्याम्, द्वितीयेभ्यः । द्वितीयस्मात्-द्वितीयात्, द्वितीयाभ्याम्, द्वितीयेभ्यः । द्वितीयस्य, द्वितीययोः, द्वितीयानाम् । द्वितीयस्मिन्-द्वितीये, द्वितीययोः, द्वितीयेषु । हे द्वितीय, हे द्वितीयौ, हे द्वितीयाः । एवं तृतीयः ॥ अकारान्तः पुंलिङ्गो मासशब्दः ॥ १५५ मासस्यालोपो वा ३५ ॥ मासशब्दस्याकारस्य लोपो वा भवति सर्वासु विभक्तिषु परतः इत्येके ॥ १५६ ह्रसेपः सेर्लोपः ३६ ॥ हसान्तादीबन्ताच्च परस्य सेर्लोपो भवति । माः-मासः, मासौ-मासौ, मासः, मासाः । मासं-मासम्, मासौ-मासौ, मासः-मासान् । मासा-मासेन । 'स्त्रोर्विसर्गः' ( सू० १२४ ) 'आदवे लोपश्च' ( सू० १११ ) माभ्यां-मासाभ्याम्, माभिः-मासैः । मासे-मासाय, माभ्यां मासाभ्याम्, माभ्यः-मासेभ्यः । मासः-मासात्, माभ्यां-मासाभ्याम्, माभ्यः-मासेभ्यः । मासः-मासस्य, मासोः-मासयोः, मासां-मासानाम् । मासि-मासे, मासोः-मासयोः, मास्तु-मासेषु । हे माः-हे मास, हे मासौ-हे मासौ, हे मासः-हे मासाः ॥ आकारान्तः पुंलिङ्गः सोमपाशब्दः । सोमपाः, सोमपौ, सोमपाः । सोमपाम्, सोमपौ ॥ १५७ आतो धातोर्लोपः ३७ ॥ धातुसंबन्धिन आकारस्य लोपो भवति शसादौ स्वरे परे । सोमपः । क्तिबन्ता धातवो यद्यपि शब्दत्वं प्राप्तास्तथापि धातुत्वं न जहति । सोमपा, सोमपाभ्याम्, सोमपाभिः । सोमपे, सोमपाभ्याम्, सोमपाभ्यः । सोमपः, सोमपाभ्याम्, सोमपाभ्यः । सोमपः, सोमपोः, सोमपाम् । सोमपि, सोमपोः, सोमपासु । अधातोरिति विशेषणाद्धेर्लोपो नास्ति । हे सोमपाः, हे सोमपौ, हे सोमपाः ॥ एवं क्रीलरूपा, शङ्खध्मा-मधुपा-विश्वपा-धनदा-वर्चोदाप्रभृतयः ॥

क्षीरे पुष्परसे तोये मये मण्डे घृते स्रजि ।

सप्तस्वर्थेषु कीलालं कथयन्ति मनीषिणः ॥ ३२ ॥

आकारान्तो हाहाशब्दः । हाहाः, हाहौ, हाहाः । हाहाम्, हाहौ, हाहान् । आदन्ताच्छसो नत्वाभाव इत्येके । तेन हाहाः । 'सवर्णे दीर्घः सह' (सू० ५२) हाहा, हाहाभ्याम्, हाहाभिः । 'ए ऐ ऐ' (सू० ४४) हाहै, हाहाभ्याम्, हाहाभ्यः । हाहाः, हाहाभ्याम्, हाहाभ्यः । हाहाः, हाहौः । 'आकारान्तेषु आबन्तानामेव नुडागमो नान्येषाम्' इति नियमात् । 'सवर्णे दीर्घः सह' (सू० ५२) हाहाम् । हाहे, हाहौः, हाहासु । हे हाहाः, हे हाहौ, हे हाहाः ॥ तथैव ह्रह्रशब्दः ॥ इकारान्तः पुंलिङ्गो हरिशब्दः । तत्र प्रथमैकवचने हरि सि इति स्थिते । 'स्रोर्विसर्गः' (सू० १२४) हरिः ॥ १५८ औ यू ३८ ॥ इकारान्तादुकारान्ताच्च परस्य औकारो यू आपद्यते ई ऊ भवतः । हरी । हरि जस् इति स्थिते ॥ १५९ ए ओ जसि ३९ ॥ इकारान्तस्य उकारान्तस्य च जसि परे एकार ओकारश्च भवति । 'ए अय्' (सू० ४१) हरयः ॥ १६० धौ ४० ॥ इकारान्तस्य उकारान्तस्य च धिविषये एकार ओकारश्च भवति । हे हरे, हे हरी, हे हरयः । हरिम्, हरी, हरीन् ॥ १६१ टा नाऽस्त्रियाम् ४१ ॥ इकारान्तादुकारान्ताच्च परश्च ना भवति अस्त्रियाम् । हरिणा, हरिभ्याम्, हरिभिः ॥ १६२ ङिति ४२ ॥ इकारान्तस्य उकारान्तस्य च ङिति परे एकार ओकारश्च भवति । 'ए अय्' (सू० ४१) हरये, हरिभ्याम्, हरिभ्यः ॥ १६३ ङस्य ४३ ॥ एदुञ्यां परस्य ङसिङ्सोरकारस्य लोपो भवति । हरेः, हरिभ्याम्, हरिभ्यः । हरेः, हर्बोः, हरीणाम् ॥ १६४ डेरौ ङित् ४४ ॥ इदुञ्यामुत्तरस्य डेरौ भवति स च ङित् । ङित्त्वाट्टिलोपः ॥ १६५ ङिति टेः ४५ ॥

डिति परे टेल्लोपो भवति । हरौः, हर्योः, हरिषु ॥ एवं अग्नि-गिरि-रवि-  
 कविप्रभृतयः पुंलिङ्गाः ॥ उकारान्ताश्च विष्णु-वायु-भानुप्रभृतयोऽप्येतै-  
 रेव सूत्रैः सिद्ध्यन्ति । भानुः, भानू, भानवः । भानुस्, भानू, भानून् ।  
 भानुना, भानुभ्याम्, भानुभिः । भानवे, भानुभ्याम्, भानुभ्यः । भानोः,  
 भानुभ्याम्, भानुभ्यः । भानोः, भान्वोः, भानूनाम् । भानौ, भान्वोः,  
 भानुषु । हे भानो, हे भानू, हे भानवः—इत्यादि ॥ एवं विष्णु-वायु-  
 प्रभृतयः । इकारान्तस्यापि सखिशब्दस्य भेदः । सखि सि इति स्थिते ॥  
 १६६ सेर्डाऽधेः ४६ ॥ सखिशब्दस्य 'सेरधेर्डा' भवति । डित्वा-  
 ढिलोपः । सखा । १६७ ऐ सख्युः ४७ ॥ सखिशब्दस्यैकारादेशो  
 भवति धिवर्जितेषु पञ्चसु परेषु ॥ १६८ षष्ठीनिर्दिष्टस्यादेशस्तद-  
 न्तस्य ज्ञेयः ४८ ॥ आयादेशः । सखायौ ॥ १६९ द्विवचनस्या  
 वा छन्दसि ४९ ॥ द्विवचनस्यौकारश्छन्दस्याकारमापद्यते । सखाया-  
 सखायः, सखायम्, सखायौ, सखीन् ॥ सखि टा इति स्थिते । १७०  
 सखिपत्योरिक् ५० ॥ सखि-पतिशब्दयोरिगागमो भवति टाडेडिषु  
 परतः दीर्घत्वान्न न भवति । सख्या । ऋषिप्रयोगसिद्ध्यर्थमाह ॥ १७१  
 आगमजमनित्यम् ५१ ॥ आगमजं कार्यमनित्यं स्यात् वा छन्दसि ।  
 सखिना, सखिभ्याम्, सखिभिः । सख्ये, सखिभ्याम्, सखिभ्यः ॥  
 १७२ ऋङ्ङे ५२ ॥ सखि-पतिशब्दयोर्ऋगागमो भवति डसिङ्सो-  
 र्ङकारे परे । सख्यु अस् इति स्थिते ॥ १७३ ऋतो ङ उः ५३ ॥  
 ऋकारान्तात्परस्य डसिङ्सोरकारस्य उकारो भवति स च डित् ।  
 डित्वाढिलोपः । सख्युः, सखिभ्याम्, सखिभ्यः । सख्युः, सख्योः,  
 सखीनाम् । सप्तम्येकवचने 'ङेरौ डित्' इत्यौकारे कृते सखिपत्यो-  
 रिगागमः । सख्यौ, सख्योः, सखिषु । अधेरिति विशेषणादेकारो-

ऽधिविषये । हे सखे, हे सखायौ, हे सखायः । पतिशब्दस्य भेदः ।  
 स इत्थम्—पतिशब्दस्य प्रथमाद्वितीययोर्हरिशब्दवत्प्रक्रिया । पतिः,  
 पती, पतयः । पतिम्, पती, पतीन् । तृतीयादौ तु सखिशब्दवत्प्रक्रिया ।  
 पत्या-पतिना, पतिभ्याम्, पतिभिः । पत्ये, पतिभ्याम्, पतिभ्यः ।  
 पत्युः, पतिभ्याम्, पतिभ्यः । पत्युः, पत्योः, पतीनाम् । पत्यौ, पत्योः,  
 पतिषु । हे पते, हे पती, हे पतयः ॥ १७४ पतिरसमास एव सखि-  
 शब्दवद्वक्तव्यः ५४ ॥ टादौ खरे, षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा । 'सीतायाः  
 पतये नमः' इत्यादिप्रयोगदर्शनात् । ततः समासान्तस्य नादयो  
 भवन्ति । प्रजापतिना, प्रजापतये । श्रीपतिना, श्रीपतये इत्यादि ॥  
 द्विशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः । द्वि औ इति स्थिते ॥ १७५ त्यदादेष्टेरः  
 स्यादौ ५५ ॥ त्यदादेष्टेरकारो भवति स्यादौ परे । द्वौ, द्वौ, द्वाभ्याम्,  
 द्वाभ्याम्, द्वाभ्याम्, द्वयोः, द्वयोः ॥ त्रिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः ।  
 त्रि अस् इति स्थिते । 'ए ओ जसि' (सू० १५९) त्रयः, 'त्रीन्, त्रिभिः,  
 त्रिभ्यः, त्रिभ्यः ॥ त्रि आम् इति स्थिते । १७६ त्रेरयङ् ५६ ॥ त्रिशब्द-  
 स्यायङादेशो भवति नामि परे ॥ ङकारोऽन्त्यादेशार्थः ॥ १७७ ङिद-  
 न्त्यस्य वक्तव्यः ५७ ॥ त्रयाणाम् । त्रिषु ॥ कतिशब्दो नित्यं बहुवच-  
 नान्तस्त्रिषु लिङ्गेषु सरूपः । कति जस् इति स्थिते ॥ १७८ डतेश्च  
 ५८ ॥ डत्यन्तात्परयोर्जश्शसोर्लुक् भवति ॥ १७९ लुकि न त-  
 न्निमित्तम् ५९ ॥ लुकि जाते सति तन्निमित्तं कार्यं न स्यात् । कति,  
 कति, कतिभिः, कतिभ्यः, कतिभ्यः, कतीनाम्, कतिषु । हे कति ॥  
 ईकारान्तः पुंलिङ्गः सुश्रीशब्दः । सुश्रीः ॥ १८० य्वोर्धातोरियुवौ  
 खरे ६० ॥ धातोरिकारोकारयोरियुवौ भवतः खरे परे । सुंश्रियौ,

सुश्रियः । सुश्रियम्, सुश्रियौ, सुश्रियः । सुश्रिया, सुश्रीभ्याम्, सुश्रीभिः ।  
 सुश्रिये, सुश्रीभ्याम्, सुश्रीभ्यः । सुश्रियः, सुश्रीभ्याम्, सुश्रीभ्यः । सुश्रियः,  
 सुश्रियोः, सुश्रियाम् । सुश्रियि, सुश्रियोः, सुश्रीषु । हे सुश्रीः, हे सुश्रियौ,  
 हे सुश्रियः ॥ तथैव सुधीशब्दः । सुष्ठु ध्यायतीति सुधीः, सुधियौ, सुधियः ।  
 सुधियम्—इत्यादि ॥ एवमूकारान्तः स्वयम्भूशब्दः । स्वयं भवतीति  
 स्वयम्भूः, स्वयम्भुवौ, स्वयम्भुवः । स्वयम्भुवम्, स्वयम्भुवौ, स्वयम्भुवः ।  
 स्वयम्भुवा, स्वयम्भूभ्याम्, स्वयम्भूभिः । स्वयम्भुवे, स्वयम्भूभ्यां, स्वयम्भू-  
 भ्यः । स्वयम्भुवः, स्वयम्भूभ्याम्, स्वयम्भूभ्यः । स्वयम्भुवः, स्वयम्भुवोः,  
 स्वयम्भुवाम् । स्वयम्भुवि, स्वयम्भुवोः, स्वयम्भूषु । हे स्वयम्भूः,  
 हे स्वयम्भुवौ, हे स्वयम्भुवः—इत्यादि ॥ सेनानीशब्दस्याविशेषो हसादौ ।  
 खरादौ तु विशेषः । अधिपतिः ॥ १८१ यवौ वा ६१ ॥ धातो-  
 रवयवसंयोगः पूर्वो यस्मादीकारादूकाराच्च नास्ति, तदन्तस्थानेकस्वरस्य  
 कारकाव्ययपूर्वस्यैकस्वरस्य च धातोरीकारस्य उकारस्य च यकारवकारौ  
 भवतः स्वरे परे वर्षाभू-पुनर्भूव्यतिरिक्तभूशब्द-सुधीशब्दौ वर्जयित्वा ।  
 बाग्रहणादियं विवक्षा । सेनानीः, सेनान्यौ, सेनान्यः । सेनान्यम्, सेनान्यौ,  
 सेनान्यः । सेनान्या, सेनानीभ्याम्, सेनानीभिः । सेनान्ये, सेनानीभ्याम्,  
 सेनानीभ्यः । सेनान्यः, सेनानीभ्याम्, सेनानीभ्यः । सेनान्यः, सेना-  
 न्योः ॥ १८२ सेनान्यादीनां वामो नुङ्क्त्वयः ६२ ॥ सेनानीनाम्—  
 सेनान्याम् । सेनानी ङि इति स्थिते ॥ १८३ आम् डेर्नियश्च ६३ ॥  
 आबन्तादीबन्तान्नीशब्दाच्चोत्तरस्य डेरामादेशो भवति । सेनान्याम्,  
 सेनान्योः, सेनानीषु । हे सेनानीः, हे सेनान्यौ, हे सेनान्यः ॥ एवं

टिप्प०-१ सुष्ठु ध्यायति तत्त्वमिति सुधीः । २ स्वयमेव भवतीति स्वयम्भूः ।

३ सेनां नयतीति सेनानीः । ४ 'आम्डेः' 'नियः' इति पृथक्सूत्रद्वयं चन्द्रिकासंमतम् ।

ग्रामणीप्रभृतयः । एवमूकारान्तो यवल्लशब्दः । यवल्लः, यवल्लौ, यवल्लवः । यवल्लवम्, यवल्लौ, यवल्लवः । यवल्ला, यवल्लभ्याम्, यवल्लभिः । यवल्ले, यवल्लभ्याम्, यवल्लभ्यः । यवल्लवः, यवल्लभ्याम्, यवल्लभ्यः । यवल्लवः, यवल्लोः, यवल्लनाम्, यवल्लवाम्—यवल्लि, यवल्लोः, यवल्लषु । हे यवल्लः, हे यवल्लौ, हे यवल्लवः ॥ एवं वर्षाभू-पुनर्भूप्रभृतयः ॥ संयोगपूर्वस्य तु सुश्रियौ कटप्रुवौ ॥ एकस्वरे तु नियौ लुवौ ॥ कारकाव्ययपूर्वत्वाभावे तु परमनियौ । धात्ववयवसंयोगपूर्वकारोकारयोरेव न य्वौ । तेन उन्यौ ॥ नाम्नश्च कृता समास इति कृत्समास एव । तद्व्यतिरिक्ते समासे तु न य्वौ । तेन कुषियौ इति । बहुव्रीहौ तु इयुवौ स्तः ॥ ईकारान्तो वातप्रमीशब्दः । वातप्रमीः, वातप्रम्यौ, वातप्रम्यः । वातप्रमीम्, वातप्रम्यौ, वातप्रमीन् । वातप्रम्या, वातप्रमीभ्याम्, वातप्रमीभिः । वातप्रम्ये, वातप्रमीभ्याम्, वातप्रमीभ्यः । वातप्रम्यः, वातप्रमीभ्याम्, वातप्रमीभ्यः । वातप्रम्यः, वातप्रम्योः, वातप्रम्याम् । वातप्रमी, वातप्रम्योः, वातप्रमीषु । हे वातप्रमीः, हे वातप्रम्यौ, हे वातप्रम्यः ॥

अभि वातप्रमीमाहुः शसि वातप्रमीनिति ।

डौ तु वातप्रमी शेषं ग्रामणीसदृशं भवेत् ॥ ३३ ॥

तथैवोकारान्तो ह्रह्रशब्दः । ह्रह्रः, ह्रह्रौ, ह्रह्रः, ह्रह्रम्, ह्रह्रौ, ह्रह्रन् । ह्रह्रा, ह्रह्रभ्याम्, ह्रह्रभिः—इत्यादि ॥ ऋकारान्तः पितृशब्दः । पितृ सि इति स्थिते ॥ १८४ सेरा ६४ ॥ ऋकारान्तात्परस्य सेरा भवति स च डित् । डित्वाङ्लोपः । पिता ॥ १८५ अर् पञ्चसु ६५ ॥ ऋकारस्याद् भवति पञ्चसु स्यादिषु परेषु । पितरौ, पितरः । पितरम्, पितरौ, पितृन् । ‘ऋ रम्’ (सू० ३९) मित्रा, पितृभ्याम्, पितृभिः । मित्रे, पितृभ्याम्, पितृभ्यः । ‘ऋतो ङ उः’ (सू० १७३)

टिप्प०-१ अर्धं वातपूर्वो माङ् धातुः; वातं प्रमिमीते इति वातप्रमीरौगधिकः ।

पितुः, पितृभ्याम्, पितृभ्यः । पितुः, पित्रोः, पितृणाम् ॥ १८६ डौ  
 ६६ ॥ ऋकारस्याद् भवति डौ परे । पितरि, पित्रोः, पितृषु । पितृ  
 धि इति स्थिते ॥ १८७ धेरर् ६७ ॥ ऋकारान्तात्परस्य धेरद्  
 भवति स च डित् । डित्त्वाङ्लिलोपः । हे पितः, हे पितरौ, हे पितरः ॥  
 एवं जामातृ-भ्रात्रादयः ॥ एवं नृशब्दः । 'सेरा' (सू० १८४) ना,  
 नरौ, नरः । नरम्, नरौ, नृन् । त्रा, नृभ्याम्, नृभिः । त्रे, नृभ्याम्,  
 नृभ्यः । 'ऋतो ङ उः' (सू० १७३) नुः, नृभ्याम्, नृभ्यः ।  
 नुः, त्रोः ॥ १८८ नुर्वा नामि दीर्घः ६८ ॥ नृशब्दस्य नामि  
 परे पूर्वस्य दीर्घो वा भवति । नृणां-नृणाम् । 'डौ' (सू० १८६)  
 नरि, त्रोः, नृषु । हे नः, हे नरौ, हे नरः ॥ कर्तृशब्दस्य पञ्चसु  
 विशेषः ॥ १८९ स्तुरार् ६९ ॥ सकारतृप्रत्ययसंबन्धिन ऋकार-  
 स्याऽऽद् भवति पञ्चसु परेषु । कर्तार् सि इति स्थिते । यदादेश-  
 स्तद्वद्भवति । 'सेरा' (सू० १८४) डित्त्वाङ्लिलोपः । कर्ता, कर्तारौ,  
 कर्तारः । कर्तारम्, कर्तारौ, कर्तृन् । कर्त्रा, कर्तृभ्याम्, कर्तृभिः ।  
 कर्त्रे, कर्तृभ्याम्, कर्तृभ्यः । 'ऋतो ङ उः' (सू० १७३) कर्तुः, कर्तृभ्याम्,  
 कर्तृभ्यः । कर्तुः, कर्त्रोः, कर्तृणाम् । कर्तरि, कर्त्रोः, कर्तृषु । 'धेरर्'  
 (सू० १८७) हे कर्तः, हे कर्तारौ, हे कर्तारः । इत्यादि पूर्ववत्प्रक्रिया ॥  
 एवं नष्टृ-होतृ-क्षत्तृ-धातृ-गोप्तृ-प्रशास्तृ-पोतृ-उद्गातृप्रभृतयः ॥

स्वसा नप्ता च नेष्टा च त्वष्टा कर्ता तथैव च ।

होता पोता प्रशास्ता च ह्यष्टौ स्वस्रादयः स्मृताः ॥ ३४ ॥

१९० उकारान्तस्यापि क्रोष्टृशब्दस्य पञ्चस्वधिषु तृप्रत्यया-  
 न्तता वा वक्तव्या ७० ॥ क्रोष्टृ सि इति स्थिते । 'स्तुरार्' (सू०  
 १८९) 'सेरा' (सू० १८४) क्रोष्टा, क्रोष्टारौ, क्रोष्टारः । क्रोष्टा-



रम्, क्रोष्टारौ । शसि तृप्रत्ययवद्भावाभावात् क्रोष्टून् । अमि शसि तृप्रत्ययवद्भावो वेति केचित् । क्रोष्टुम्, क्रोष्टून् ॥ १९१ तृतीयादौ खरादौ तृप्रत्ययान्तता वा वक्तव्या ७१ ॥ क्रोष्टा-क्रोष्टुना, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभिः । क्रोष्ट्रे-क्रोष्टवे, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभ्यः । क्रोष्टुः-क्रोष्टोः, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभ्यः । क्रोष्टुः-क्रोष्टोः, क्रोष्टोः-क्रोष्टोः । कृतौ-कृतप्रसङ्गी यो विधिः स नित्यः । नित्यानित्ययोर्मध्ये नित्यविधिर्बलवान् । इति प्रथमं नुडागमे कृते खरादित्वाभावात् तृप्रत्ययवद्भावो न भवति । क्रोष्टूनाम् । क्रोष्टरि-क्रोष्टौ, क्रोष्टोः-क्रोष्टोः, क्रोष्टुषु । अधिष्विति विशेषणात् हे क्रोष्टो, हे क्रोष्टारौ, हे क्रोष्टारः । ऋकारान्ता लकारान्ता एकारान्ताश्चाप्रसिद्धाः । कौमारास्तृप्रत्ययान्तस्य कुशेर्धातोः पृथग्रपमाहुः । अप्रसिद्धा इति वृद्धव्यवहारे न त्वमिधानादौ । तेन 'एर्विष्णुरविमारुते' इत्येकाक्षरमालायां तथा अनेकार्थमञ्जर्याम् ।

ऋदैत्यमातरि स्याददैव्यामस्तु लतान्तरे ।

वाय्वादित्ये महीध्रे च विष्णावेऽपि प्रकीर्तितौ ॥ ३५ ॥

अत्र ऋकारस्य खरादौ । 'ऋरम्' (सू० ३९) ऋः, रौ, रः । ऋम्, रौ, ऋन् । रा, ऋभ्याम्, ऋभिः । हे ऋः, हे रौ, हे रः-इत्यादि ॥ लृवर्णस्य सावर्ण्यात्पितृशब्दवत्प्रक्रिया । आ, अलौ, अलः । अलम्, अलौ, लृन् । ला, लृभ्याम्, लृभिः । ले, लृभ्याम्, लृभ्यः । उः, लृभ्याम्, लृभ्यः । उः, लोः, लृणाम् । लि, लोः, लृषु । हे अः, हे अलौ, हे अलः ॥ इति लृशब्दरूपाणि ॥ ॥ एकारान्तस्य तु उद्यंश्चासौ एः रविश्चेति विग्रहे विभक्तिलोपे च कृते उद्यदेः इति समस्तं नाम । उद्यदेः, उद्यदयौ, उद्यदयः । हे उद्यदेः, हे उद्यदयौ, हे उद्यदयः । समानत्वाभावाच्च

टिप्पणी-१ तृप्रत्ययेन तुल्यं तृप्रत्ययवत् । तस्य भावस्तस्यभावः । २ तृतीया आदिर्यस्य । ३ यः कृतेऽपि भवति अकृतेऽपि भवति स कृताकृतप्रसङ्गी ।

धिलोपः । उद्यदयम्, उद्यदयौ, उद्यदयः । उद्यदया, उद्यदेभ्याम्, उद्यदेभिः । उद्यदये, उद्यदेभ्याम्, उद्यदेभ्यः । उद्यदेः, उद्यदेभ्याम्, उद्यदेभ्यः । उद्यदेः । 'ङस्य' ( सू० १६३ ) इत्यकारलोपः । उद्यदयोः, उद्यदयाम् । उद्यदयि, उद्यदयोः, उद्यदेषु । ऐकारान्तः पुंलिङ्गः सुरैशब्दः ॥ १९२ रै स्मि ७२ ॥ रैशब्दस्याकारादेशो भवति सकारभकारादौ विभक्तौ परतः । सुराः, सुरायौ । खरादौ सर्वत्रायादेशः । सुरायः । सुरायम्, सुरायौ, सुरायः । सुराया, सुराभ्याम्, सुराभिः । सुराये, सुराभ्याम्, सुराभ्यः । सुरायः, सुराभ्याम्, सुराभ्यः । सुरायः, सुरायोः, सुरायाम् । सुरायि, सुरायोः, सुरासु । हे सुराः, हे सुरायौ, हे सुरायः ॥ एवं रैशब्दः ॥ ओकारान्तः पुंलिङ्गो गोशब्दः । गो सि इति स्थिते ॥ १९३ ओरौ ७३ ॥ ओकारस्यौकारादेशो भवति पञ्चसु आदिषु परेषु । गौः । 'औ आव्' ( सू० ४८ ) गावौ, गावः ॥ १९४ आम् शसि ७४ ॥ ओकारस्यात्वं भवति अमि शसि च परे । गाम् । 'औ आव्' ( सू० ४८ ) गावौ, गाः । गवा, गोभ्याम्, गोभिः । गवे, गोभ्याम्, गोभ्यः । 'ङस्य' ( सू० १६३ ) इत्यकारलोपः । गोः, गोभ्याम्, गोभ्यः । गोः, गवोः, गवाम् ॥ १९५ अन्ते गोराम् छन्दसि ७५ ॥ ऋगन्ते वर्तमानस्य गोशब्दस्यामो नुडागमो भवति । गोनाम् । गवि, गवोः, गोषु । हे गौः, हे गावौ, हे गावः । औकारान्तः पुंलिङ्गो ग्लौशब्दः । तस्य हसादावविशेषः । खरादौ आवादेशः । ग्लौः, ग्लौवौ, ग्लौवः । हे ग्लौ, हे ग्लौवौ, हे ग्लौवः । ग्लौवम्, ग्लौवौ, ग्लौवः । ग्लौवा, ग्लौभ्याम्, ग्लौभिः । ग्लौवे, ग्लौभ्याम्, ग्लौभ्यः । ग्लौवः, ग्लौभ्याम्, ग्लौभ्यः । ग्लौवः, ग्लौवोः, ग्लौवाम् । ग्लौवि, ग्लौवोः, ग्लौवुः—इत्यादि ॥ इति खरान्ताः पुंलिङ्गाः ॥ ६ ॥

टिप्प०—१ सुष्ठु शोभनं राः इव्यं यस्य स सुराः । २ ग्लौशब्दः । 'ग्लौर्मृगाङ्गः कलानिधिः' ।

### खरान्ताः स्त्रीलिङ्गाः ७

अथ खरान्ताः स्त्रीलिङ्गाः प्रदर्श्यन्ते । तत्र आबन्तस्त्रीलिङ्गो गङ्गाशब्दः । गङ्गा सि इति स्थिते ॥ १९६ आपः १ ॥ आबन्तात्परस्य सेलोपो भवति । गङ्गा ॥ १९७ औरी २ ॥ आबन्तात्पर औरीकारमापद्यते । 'अ इ ए' (सू० ४३) गङ्गे, गङ्गाः ॥ १९८ धिरिः ३ ॥ आबन्तात्परो धिरिर्भवति । हे गङ्गे, हे गङ्गे, हे गङ्गाः । गङ्गाम्, गङ्गे, गङ्गाः ॥ १९९ टौसोरे ४ ॥ आबन्तस्य टौसोः परयोरेत्वं भवति ॥ 'ए अय्' (सू० ४१ ॥) गङ्गया, गङ्गाभ्याम्, गङ्गामिः ॥ २०० ङितां यद् ५ ॥ आबन्तात्परेषां ङेङ्सिङ्सङ्ङि इत्येतेषां ङितां वचनानां यडागमो भवति । टकारः स्थाननियमार्थः ॥ गङ्गायै, गङ्गाभ्याम्, गङ्गाभ्यः । गङ्गायाः, गङ्गाभ्याम्, गङ्गाभ्यः । गङ्गायाः, गङ्गयोः, गङ्गानाम् । 'आम्हेर्नियश्च' (सू० १८३) गङ्गायाम्, गङ्गयोः, गङ्गासु ॥ एवं अम्बा-अक्का-अल्लाप्रभृतयः । अम्बा, अम्बे, अम्बाः । शेषं गङ्गावत् ॥ २०१ अम्बादीनां धौ ह्रस्वः ६ ॥ अम्बादीनां धौ परे ह्रस्वो भवति ॥ हे अम्ब, हे अम्बे, हे अम्बाः ॥ यथा अम्बा शब्दो द्विस्वरो मात्रार्थः एवं ये द्विस्वरा मात्रार्थास्तेषां धौ परे ह्रस्वता स्यात् । हे अक्क, हे अक्के, हे अक्काः ॥ हे अल्ल, हे अल्ले, हे अल्लाः ॥ अम्बादीनामिति कोऽर्थः ? । अम्बावाचकानां जननीवाचकानां द्विस्वराणां शब्दानां धौ परे ह्रस्वो भवति ॥ २०२ डलकवतीनां न ७ ॥ डलकवतीनां अम्बादीनां धौ परे ह्रस्वो न भवति । असंयोगा डलका ग्राह्याः । असंयोगा इति किम् ? । हे अम्बाडे, हे अम्बाले, हे अम्बिके ॥ एवं श्रद्धा-मेधा-विद्या-शाला-माला-हेला-दोलाप्रभृतयः ॥ सर्वादीनां तु ङित्सु विशेषः ॥ २०३ आबतः स्त्रियाम् ८ ॥ अकारान्तान्नाम्नः स्त्रियां वर्तमानादाप् प्रत्ययो भवति । सर्वा, सर्वे, सर्वाः । सर्वा, सर्वे, सर्वाः ।

सर्वया, सर्वाभ्याम्, सर्वाभिः । सर्वा ङे इति स्थिते ॥ २०४ यटोच्च  
 ९ ॥ आबन्तात्सर्वादेः परस्य यटः सुडागमो भवति पूर्वस्य चापो-  
 ऽकारो भवति । सर्वस्यै, सर्वाभ्याम्, सर्वाभ्यः । सर्वस्याः, सर्वाभ्याम्,  
 सर्वाभ्यः । सर्वस्याः, सर्वयोः, सर्वासाम् । ( आमः । आबन्तात्सर्वादेः  
 परस्यामः सुडागमो भवति ) 'आम्हेर्नियश्च' ( सू० १८३ ) सर्वस्याम्,  
 सर्वयोः, सर्वासु । हे सर्वे, हे सर्वे, हे सर्वाः ॥ एवं विश्वादीनां सर्वा-  
 शब्दवद्रूपं ज्ञेयम् ॥ उभयशब्दस्य द्विवचनटावविषयत्वादभ्यत्र प्रयोगः  
 कर्तव्यः । नदीशब्दवद्रूपं ज्ञेयम् । द्वितीया-तृतीयाशब्दयोस्तु ङित्सु  
 वा सर्वाशब्दवद्रूपं ज्ञेयम् ॥ प्रथमादयो गङ्गाशब्दवत् ॥ द्वयी-त्रयी-द्वितयी-  
 त्रितयी-कतिपयीशब्दास्तु नदीवत् ॥ सोमपाः पूर्ववत् । जराशब्दस्य  
 भेदः ॥ आकारान्तो जराशब्दः ॥ २०५ जरायाः स्वरादौ जरस्वा  
 वक्तव्यः १० ॥ जर आप् इति स्थिते । दीर्घः । 'आपः' ( सू० १९६ )  
 इति सेर्लोपः । जरा, जरसौ-जरे, जरसः-जराः । जरसं-जराम्, जरसौ-जरे,  
 जरसः-जराः । जरसा-जरया, जराभ्याम्, जराभिः । जरसे-जरायै,  
 जराभ्याम्, जराभ्यः । जरसः-जरायाः, जराभ्याम्, जराभ्यः । जरसः-  
 जरायाः, जरसोः-जरयोः, जरसां-जराणाम् । जरसि-जरायाम्, जरसोः-  
 जरयोः, जरासु । हे-जरे हे जरसौ-हे जरे, हे जरसः-हे जराः । तदन्तविधिर-  
 त्रेष्यते । एकदेशविकृतमनन्यवद्भवतीति न्यायात् । केचिद्वादाविनं  
 अत आच्चेतीच्छन्ति । जरसः स्वरादौ निर्जरस्यापि भवति । निर्जरः,  
 निर्जरसौ-निर्जरौ, निर्जरसः-निर्जराः । निर्जरसम्-निर्जरम्, निर्जरसौ-निर्जरौ,  
 निर्जरसः-निर्जरान् । निर्जरसिना-निर्जरसा-निर्जरेण, निर्जराभ्याम् ॥  
 २०६ भिस् ऐस् वक्तव्यः ११ ॥ निर्जरसैः-निर्जरैः । निर्जरसे-  
 निर्जराय, निर्जराभ्याम्, निर्जरेभ्यः । निर्जरसः-निर्जरसात्-निर्जरात्,  
 निर्जराभ्याम्, निर्जरेभ्यः । निर्जरसः-निर्जरस्य, निर्जरसोः-निर्जरयोः,

निर्जरसाम्-निर्जराणाम् । निर्जरसि-निर्जरे, निर्जरसोः-निर्जरयोः, निर्जरेषु । हे निर्जर, हे निर्जरसौ-हे निर्जरौ, हे निर्जरसः, हे निर्जराः ॥ इकारान्तः स्त्रीलिङ्गो बुद्धिशब्दः । तस्य प्रथमाद्वितीययोः हरिशब्दवत्प्रक्रिया । बुद्धिः । 'औ यू' (सू० १५८) बुद्धी, बुद्धयः । हे बुद्धे, हे बुद्धी, हे बुद्धयः । बुद्धिम्, बुद्धी, बुद्धीः । स्त्रीलिङ्गत्वान्नत्वाभावो विशेषः । पुंस इति विशेषणात्स्त्रियां शसः सकारस्य नकारादेशो न भवति । बुद्ध्या, बुद्धिभ्याम्, बुद्धिभिः ॥ २०७ इदुद्ध्याम् १२ ॥ स्त्रियां वर्तमानाभ्यामिकारोकाराभ्यां परेषां ङितां वचनानां वा अडागमो भवति ॥ 'इयं स्वरे' (सू० ३३) 'ए ऐ ऐ' (सू० ४४) बुद्ध्यै । 'ङिति' (सू० १६२) 'ए अय्' (सू० ४१) । बुद्धये, बुद्धिभ्याम्, बुद्धिभ्यः । बुद्ध्याः । 'ङस्य' (सू० १६३) बुद्धेः, बुद्धिभ्यां, बुद्धिभ्यः । बुद्ध्याः बुद्धेः, बुद्ध्योः, बुद्धीनाम् ॥ २०८ स्त्रियां य्योः १३ ॥ स्त्रियां इश्च उश्च यू तयोः । इवर्णान्तादुवर्णान्ताच्च स्त्रियां वर्तमानात्परस्य डेरामादेशो भवति ॥ बुद्ध्याम् । अडागमाभावे आमोऽप्यभावः । 'ङेरौ ङित्' (सू० १६४) बुद्धौ, बुद्ध्योः, बुद्धिषु ॥ एवं मति-भूति-धृति-कान्ति-गति-रुचिप्रभृतयः ॥ एवं धेनु-रज्जु-तनुप्रभृतयोऽप्युकारान्ताः स्त्रीलिङ्गा एतैरेव सूत्रैः सिद्ध्यन्ति ॥ धेनुः, धेनू, धेनवः । धेनुम्, धेनू, धेनूः । स्त्रीलिङ्गत्वान्नत्वाभावः धेन्वा, धेनुभ्याम्, धेनुभिः । धेन्वै-धेनवे, धेनुभ्याम्, धेनुभ्यः । धेन्वाः-धेनोः, धेनुभ्याम्, धेनुभ्यः । धेन्वाः-धेनोः, धेन्वोः, धेनूनाम् । धेन्वाम्-धेनौ, धेन्वोः, धेनुषु । हे धेनो, हे धेनू, हे धेनवः ॥ ईबन्तः स्त्रीलिङ्गो नदीशब्दः ॥ 'हसे पः सेर्लोपः' (सू० १५६) नदी, नद्यौ, नद्यः । नदीम्, नद्यौ, नदीः । नद्या, नदीभ्याम्, नदीभिः ॥ २०९ ङितामद् १४ ॥ स्त्रियां वर्तमानादीकारान्तादूकारान्ताच्च परेषां ङितां वचना-नामडागमो भवति ॥ नद्यै, नदीभ्याम्, नदीभ्यः । नद्याः, नदीभ्याम्,

नदीभ्यः । नद्याः, नद्योः, नदीनाम् । नद्याम्, नद्योः, नदीषु ॥ २१०  
 धौ ह्रस्वः १५ ॥ इयुव्स्थानवर्जितयोरधात्वोरीदूतोः स्त्रीशब्दस्य च  
 स्त्रियां धौ परे ह्रस्वो भवति ॥ हे नदि, हे नद्यौ, हे नद्यः ॥ ह्रस्वविधि-  
 सामर्थ्यान्न गुणः ॥ एवं गौरी-गौतमी-मही-सरस्वती-ब्रह्माणी-कुमारी-  
 मधुमतीप्रभृतयः ॥ गौरी, गौर्यौ, गौर्यः । हे गौरि, हे गौर्यौ, हे गौर्यः ।  
 गौरीम्, गौर्यौ, गौरीः—इत्यादि ॥ गौतमी, गौतम्यौ, गौतम्यः । हे गौ-  
 तमि ॥ सरस्वती, सरस्वत्यौ, सरस्वत्यः । हे सरस्वति ॥ ब्रह्माणी, ब्रह्मा-  
 ण्यौ, ब्रह्माण्यः । हे ब्रह्माणि ॥ कुमारी, कुमार्यौ, कुमार्यः । हे कुमारि ॥  
 मधुमती, मधुमत्यौ, मधुमत्यः । हे मधुमति ॥ इत्यादि ॥ २११ क्रोष्टुः  
 स्त्रियां तृवद्भावः स्यात् १६ ॥ तेन क्रोष्टी, क्रोष्ट्यौ, क्रोष्ट्यः ।  
 क्रोष्टीम् । शेषं नदीवत् । हे क्रोष्टि, हे क्रोष्ट्यौ, हे क्रोष्ट्यः—इत्यादि ॥  
 ईकारान्तो लक्ष्मीशब्दः । लक्ष्मीशब्दस्येवन्तत्वाभावात्सेर्लोपो नास्ति ।  
 लक्ष्मीः, लक्ष्म्यौ, लक्ष्म्यः । लक्ष्मीम्, लक्ष्म्यौ, लक्ष्मीः । शेषं नदीवत् ।  
 हे लक्ष्मि, हे लक्ष्म्यौ, हे लक्ष्म्यः ॥ स्त्रीशब्दस्येवन्तत्वात्सेर्लोपोऽस्ति ।  
 स्त्री ॥ २१२ स्त्रीभ्रुवोः १७ ॥ स्त्रीशब्दस्य भ्रूशब्दस्य च इयुवौ  
 भवतः स्वरे परे । स्त्रियौ, स्त्रियः । हे स्त्रि, हे स्त्रियौ, हे स्त्रियः ॥ २१३  
 वाम् शसि १८ ॥ स्त्रीशब्दस्य अमि शसि च परे वा इय् भवति ॥  
 स्त्रियं-स्त्रीम्, स्त्रियौ, स्त्रियः-स्त्रीः । स्त्रिया, स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभिः । स्त्रियैः,  
 स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभ्यः । स्त्रियाः-स्त्रियः, स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभ्यः । स्त्रियाः-स्त्रियः,  
 स्त्रियोः, स्त्रीणाम् । स्त्रियाम्, स्त्रियोः, स्त्रीषु—इत्यादि ॥ श्रीशब्दस्य भेदः ।  
 ईकारान्तः श्रीशब्दः ॥ श्रयन्ते जना यां इति श्रीः । ‘य्वोर्धातो-रि-  
 युवौ स्वरे’ ( सू० १८० ) श्रियौ, श्रियः । श्रियम्, श्रियौ, श्रियः ।  
 श्रिया, श्रीभ्याम्, श्रीभिः ॥ २१४ वेयुवः १९ ॥ इयुवन्तात्स्त्रियां  
 वर्तमानात्परेषां ङितां वचनानां वा अडागमो भवति, न तु स्त्री-

शब्दस्य विकल्पेन । श्रियै-श्रिये, श्रीभ्याम्, श्रीभ्यः । श्रियाः-श्रियः, श्रीभ्याम् श्रीभ्यः । श्रियाः-श्रियः, श्रियोः, श्रियाम् । [ श्यादीनां वामो नुट् वक्तव्यः ] । श्रीणाम्-श्रियाम् । अडागमाभावे अमोऽप्य-भावः । श्रियि, श्रियोः, श्रीषु । हे श्रीः, हे श्रियः ॥ एवं धी-हीप्रभृतयो-ऽप्यनीबन्ताः ॥ धीः, धियौ, धियः । हे धीः, हे धियौ, हे धियः । हीः, हियौ, हियः । हे हीः ॥

अवीलक्ष्मीतरीतत्रीधीहीश्रीणामुदाहृतः ।

सप्तानामेव शब्दानां सेर्लोपो न कदाचन ॥ ३६ ॥

एवं भूशब्दो भूशब्दश्च । भूः, भुवौ, भुवः । भुवम्, भुवौ, भुवः । भुवा, भूभ्याम्, भूमिः । भुवै-भुवे, भूभ्याम्, भूभ्यः । भुवाः-भुवः, भूभ्याम्, भूभ्यः । भुवाः-भुवः, भुवोः, भुवां-भूनाम् । भुवां-भुवि, भुवोः, भूषु । हे भूः, हे भुवौ, हे भुवः ॥ एवं भ्रूशब्दः । भ्रूः, भ्रुवौ, भ्रवः । भ्रुवम्, भ्रुवौ, भ्रुवः । भ्रुवा, भ्रूभ्याम्, भ्रूमिः । भ्रुवै-भ्रुवे, भ्रूभ्याम्, भ्रूभ्यः । भ्रुवाः-भ्रुवः, भ्रूभ्याम्, भ्रूभ्यः । भ्रुवाः-भ्रुवः, भ्रुवोः, भ्रुवां-भ्रूणाम् । भ्रुवां-भ्रुवि, भ्रुवोः, भ्रूषु । हे भ्रूः, हे भ्रुवौ, हे भ्रुवः ॥ एवं सुभ्रू-शब्दः । सुभ्रूः, सुभ्रुवौ, सुभ्रुवः । सुभ्रूशब्दस्य घौ ह्रस्व इति केचित् । हे सुभ्रूः-हे सुभ्रु, हे सुभ्रुवौ, हे सुभ्रुवः ॥ वधू-जम्बवादीनां तु नदीवद्रूपं ज्ञेयम् । वधूः, वध्वौ, वध्वः । हे वधु, हे वध्वौ, हे वध्वः । शेषं नदीवत् । एवं जम्बूः, जम्ब्वौ, जम्ब्वः । हे जम्बु-इत्यादि ॥ ऋकारान्तो मातृ-शब्दस्तस्य पितृवःप्रक्रिया । 'सेरा' ( सू० १८४ ) माता, मातरौ, मातरः । मातरम्, मातरौ । स्त्रीलिङ्गत्वाच्छसि मातृः । नत्वाभावो विशेषः । शसीति दीर्घत्वम् । हे मातः, हे मातरौ, हे मातरः-इत्यादि ॥ खसृशब्दस्य कर्तृशब्दवत्प्रक्रिया । खसा, खसारौ, खसारः । खसारम्, खसारौ । 'शसि' ( सू० १२८ ) खसृः । हे खसः, हे खसारौ, हे ख-

सारः ॥ रैशब्दस्य सुरैशब्दवत्प्रक्रिया । राः, रायौ, रायः । हे राः ॥  
 गोशब्दस्तु पूर्ववत् ॥ नौशब्दस्य ग्लौशब्दवत्प्रक्रिया । नौः, नावौ,  
 नावः । हे नौः, हे नावौ, हे नावः ॥ ॥ इति स्वरान्तस्त्रीलिङ्गप्रक्रिया ॥ ७ ॥

### स्वरान्ता नपुंसकलिङ्गाः ८

अथ स्वरान्ता नपुंसकलिङ्गाः प्रदर्श्यन्ते ॥ तत्राकारान्तः कुल-  
 शब्दः । तस्य प्रथमाद्वितीयैकवचने ॥ २१५ अतोऽम् १ ॥ अतः  
 अम् । अकारान्तान्नपुंसकलिङ्गात्परयोः स्यमोरम् भवत्यधौ । अमो  
 ग्रहणं लुग्यावृत्त्यर्थम् । ‘अम्शसोरस्य’ (सू० १२६) कुलम् ॥  
 २१६ ईमौ २ ॥ नपुंसकलिङ्गात्पर औ ईकारमापद्यते । ‘अ इ ए’  
 (सू० ४३) कुले ॥ २१७ जश्शसोः शिः ३ ॥ नपुंसकलिङ्गा-  
 त्परयोर्जश्शसोः शिर्भवति । शकारः सर्वादेशार्थः ॥ २१८ गुरुः  
 शिच्च सर्वस्य वक्तव्यः ४ ॥ षष्ठीनिर्दिष्टस्येत्यस्यापवादः ॥ २१९  
 नुमयमः ५ ॥ नुम् अयमः । नपुंसकस्य नुमागमो भवति शौ परे ।  
 यमप्रत्याहारान्तस्य न भवति ॥ २२० मिदन्त्यात्स्वरात्परो वक्तव्यः  
 ६ ॥ उकार उच्चारणार्थः । मकारः स्थाननियमार्थः ॥ २२१ नोप-  
 धायाः ७ ॥ नः उपधायाः । नान्तस्योपधाया दीर्घो भवति शौ परे  
 धिवर्जितेषु पञ्चसु परेषु नामि च ॥ नोपधाया इत्यत्र छन्दसि तु  
 भवतीति नियमात्संधिः ॥ ‘छन्दोवत्सूत्राणि भवन्ति’ इति वचनात् ।  
 कुलानि । पुनरपि—कुलम्, कुले, कुलानि । शेषं देववत् । कुलेन,  
 कुलाभ्याम्, कुलैः । कुलाय, कुलाभ्याम्, कुलेभ्यः । कुलात्, कुला-  
 भ्याम्, कुलेभ्यः । कुलस्य, कुलयोः, कुलानाम् । कुले, कुलयोः,  
 कुलेषु । हे कुल, हे कुले, हे कुलानि ॥ एवं मूल-फल-पत्र-पुष्प-कुण्ड-कुटु-  
 म्बादयः ॥ सर्वादीनामकारान्तानामन्यादिपञ्चशब्दव्यतिरिक्तानां



प्रथमा-द्वितीययोः कुलशब्दवत्प्रक्रिया । सर्वं, सर्वे, सर्वाणि । पुनरप्ये-  
वम् । शेषं पूर्ववत् । सर्वेण, सर्वाभ्याम्, सर्वैः । सर्वस्मै, सर्वाभ्याम्,  
सर्वेभ्यः । सर्वस्मात्, सर्वाभ्याम्, सर्वेभ्यः । सर्वस्य, सर्वयोः, सर्वेषाम् ।  
सर्वस्मिन्, सर्वयोः, सर्वेषु । हे सर्व, हे सर्वे, हे सर्वाणि ॥ अन्यादीनां  
पञ्चानां विशेषोऽस्ति । अन्य सि इति स्थिते ॥ २२२ इत्वन्यादेः ८ ॥  
शु अन्यदेः । अन्यादेर्गणात्परयोः स्यमोः श्चतुर्भवति । शकारः  
सर्वादेशार्थः । उकार उच्चारणार्थः । 'वाऽवसाने' (सू० २४०)  
इति पक्षे दत्वमपि भवति । अन्यत्-अन्यद्, अन्ये, अन्यानि ।  
पुनरप्येवम् । शेषं सर्ववत् ॥ अन्यतरत्-अन्यतरद्, अन्यतरे,  
अन्यतराणि ॥ इतरत्-इतरद्, इतरे, इतराणि ॥ कतरत्-कतरद्, कतरे,  
कतराणि ॥ कतमत्-कतमद्, कतमे, कतमानि । शेषं सर्ववद्भूपम् ॥  
प्रथमादयः कुलवत् । प्रथमं, प्रथमे, प्रथमानि ॥ आकारान्तो नपुंसक-  
लिङ्गः सोमपाशब्दः । सोमपा सि इति स्थिते ॥ २२३ नपुंसकस्य ९ ॥  
नपुंसकस्य ह्रस्वो भवति सर्वासु विभक्तिषु परतः । 'अतोऽम्' (सू० २१५)  
सोमपं, सोमपे, सोमपानि । हे सोमप । शेषं कुलवत् ॥ इकारान्तो-  
ऽस्थिशब्दः ॥ २२४ नपुंसकात्स्यमोर्लुक् १० ॥ नपुंसकलिङ्गात्परयोः  
स्यमोर्लुग्भवति । अस्थि ॥ २२५ नामिनः खरे ११ ॥ नाम्यन्तस्य  
नपुंसकस्य नुमागमो भवति विभक्तिखरे परे । 'ईमौ' (सू० २१६)  
अस्थिनी, अस्थीनि । पुनरप्येवम् ॥ २२६ अच्चाश्नां शसादौ  
१२ ॥ अत् चेत्यव्ययम् । अश्नां अस्थ्यादीनां शसादौ नुमागमो  
भवति पूर्वस्य इकारस्य चाकारादेशो भवति शसादौ खरे परे ॥  
शस् आदिर्यस्य सः शसादिः टादिः । शसादावित्यतद्गुणसंविज्ञानो  
बहुव्रीहिः । यथा चित्रगुर्बहुधनः ॥ २२७ अल्लोपः खरेऽम्बयु-  
क्ताच्छसादौ १३ ॥ नान्तस्योपधाया अकारस्य लोपो भवति

शसादौ खरे परे तद्धिते ईपि ईकारे च । मकारवकारान्तसंयोगा-  
दुत्तरस्य न भवति । अम्बयुक्ताच्छसादावित्यत्र तद्गुणसंविज्ञानो  
बहुव्रीहिः । लम्बकर्ण इतिवत् । अतः शसोऽपि हरणम् ॥ अस्श्ना,  
अस्थिभ्याम्, अस्थिमिः । अस्श्ने, अस्थिभ्याम्, अस्थिभ्यः । अस्श्नः,  
अस्थिभ्याम्, अस्थिभ्यः । अस्श्नः, अस्श्नोः, अस्श्नाम् ॥ २२८  
वेङ्घ्योः १४ ॥ वेत्यव्ययम् । नान्तस्योपधाया इङ्घ्योः परयोर्वा  
अकारस्य लोपो भवति ॥ अस्श्नि-अस्थनि, अस्श्नोः, अस्थिषु ॥ २२९  
य्वृणां नपुंसके धौ वा गुणो वक्तव्यः १५ ॥ इश्च उश्च ऋश्च  
तेषां य्वृणाम् । उक्तं हि,—

संबोधने तूशनसस्त्रिरूपं, सान्तं तथा नान्तमथाप्यदन्तम् ।

माध्यन्दिनिर्वष्टि गुणं त्विगन्ते, नपुंसके व्याघ्रपदां वरिष्ठः ॥३७॥

‘इउण् ऋलृक्’ इति पाणिनीयानामिकूप्रत्याहारः । हे अस्थे,  
हे अस्थि, हे अस्थिनी, हे अस्थीनि ॥ एवं दधि-सक्थ्यक्षिप्रभृतयः शब्दाः ॥  
इकारान्तो नपुंसकलिङ्गो वारिशब्दः । वारि, वारिणी, वारीणि ।  
पुनरप्येवम् । वारिणा, वारिभ्याम्, वारिमिः । वारिणे, वारिभ्याम्, वारि-  
भ्यः । वारिणः, वारिभ्याम्, वारिभ्यः । वारिणः, वारिणोः, वारीणाम् ।  
वारिणि, वारिणोः, वारिषु । हे वारे-हे वारि, हे वारिणी, हे वारीणि ॥  
२३० नपुंसकस्य १६ ॥ नपुंसकस्य ह्रस्वो भवति खरादौ ॥  
‘नामिनः खरे’ (सू० १२५) इति इति नुमागमः । ग्रामणि, ग्रामणिनी,  
ग्रामणीनि । पुनरप्येवम् ॥ २३१ टादावुक्तपुंस्कं पुंवद्वा १७ ॥  
उक्तपुस्कं नाम्यन्तं नपुंसकलिङ्गं टादौ खरे परे पुंवद्वा भवति ।

टिप्प०-१ ‘ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु’ पुल्लिङ्गतायामप्यत्र  
ग्रामणिशब्दे नपुंसकत्वाच्चेष्टकुलं गृह्यते ।

यन्निमित्तमुपादाय पुंसि शब्दः प्रवर्तते ।

नपुंसके तदेव स्यादुक्तपुंस्कं तदुच्यते ॥ ३८ ॥

एक एव हि यः शब्दस्त्रिषु लिङ्गेषु वर्तते ।

एकमेवार्थमाख्याति उक्तपुंस्कं तदुच्यते ॥ ३९ ॥

पीलुर्वृक्षः फलं पीलु पीलुने न तु पीलवे ।

वृक्षे निमित्तं पीलुत्वं तज्जत्वं तत्फले पुनः ॥ ४० ॥

ग्रामण्या-ग्रामणिना, ग्रामणिभ्याम्, ग्रामणिभिः । ग्रामण्ये-ग्रामणिने,  
ग्रामणिभ्याम्, ग्रामणिभ्यः । ग्रामण्यः-ग्रामणिनः, ग्रामणिभ्याम्, ग्राम-  
णिभ्यः । ग्रामण्यः-ग्रामणिनः, ग्रामण्योः-ग्रामणिनोः, ग्रामण्याम् ।  
नुमन्तस्यामि दीर्घः । ग्रामणीनाम् । ग्रामण्याम्-ग्रामणिनि, ग्राम-  
ण्योः-ग्रामणिनोः, ग्रामणिषु । हे ग्रामणे-हे ग्रामणि, हे ग्रामणिनी,  
हे ग्रामणीनि ॥ सोमपं कुलं । सोमपे, सोमपानि । पुनरप्येवम् ॥  
सोमपेन, सोमपाभ्याम्, सोमपैः-इत्यादि ॥ हे सोमप ॥ २३२ ह्रस्वा-  
देशे संध्यक्षराणामिकारोकारौ च वक्तव्यौ १८ ॥ सुष्ठु रायो यस्य  
तत् । सुरि, सुरिणी, सुरीणि । पुनरप्येवम् । सुरिणा-सुरया । हे सुरे-  
हे सुरि, हे सुरिणी, हे सुरीणि । ऐकारान्तो नपुंसकलिङ्गः अतिरैशब्दः ।  
रायमतिक्रान्तमतिरि कुलमिति विग्रहे ह्रस्वादेशे संध्यक्षराणामिदुतौ  
इति ह्रस्वत्वम् । वारिवत्प्रक्रिया । अतिरि, अतिरिणी, अतिरीणि ।  
पुनरप्येवम् । अतिरया-अतिरिणा, अतिराभ्याम्, अतिराभिः-इत्यादि ॥  
उकारान्तो नपुंसकलिङ्ग उपगुशब्दः । उपगता गावो यस्येति ।  
उपगु, उपगुनी, उपगूनि । पुनस्तद्वत् । तृतीयादौ खरे विकल्पः । उपगवा-  
उपगुना-इत्यादि अतिरिवत् । औकारान्तो अतिनौशब्दः । अतिनु,  
अतिनुनी, अतिनूनि इत्यादि ॥ उकारान्तो मधुशब्दः । तस्यापि  
खरादौ । 'नामिनः खरे' (सू० २२५) इत्यादिना नुमागमः ॥

मधु, मधुनी, मधूनि । पुनरप्येवम् । हे मधो-हे मधु-इत्यादि ॥  
 ऋकारान्तः कर्तृशब्दः । कर्तृ, कर्तृणी, कर्तृणि । पुनरप्येवम् ।  
 हे कर्तः-हे कर्तृ, हे कर्तृणी, हे कर्तृणि । कर्त्रा-कर्तृणा-इत्यादि ॥ शोभना  
 द्यौर्यस्य तत् सुद्यु, सुद्युनी, सुद्यूनि । हे सुद्यो-हे सुद्यु, हे ॥ सुद्युनी,  
 हे सुद्यूनि । सुद्युना-सुद्यवा । इत्यादि सर्वमुन्नेयम् ॥

इति खरान्तनपुंसकलिङ्गप्रक्रिया ॥ ८ ॥

### हसान्ताः पुंलिङ्गाः ९

अथ हसान्ताः पुंलिङ्गाः प्रदर्श्यन्ते । तत्र हकारान्तः अनडुह-  
 शब्दः । अनडुह् सि इति स्थिते ॥ २३३ पञ्चस्वनडुहः १ ॥  
 पञ्चसु वचनेष्वनडुह आमागमो भवति शौ च ॥ २३४ सावन-  
 डुहः २ ॥ अनडुहशब्दस्य सौ परे नुमागमो भवति ॥ २३५ संयो-  
 गान्तस्य लोपः ३ ॥ संयोगान्तस्य लोपो भवति रसे पदान्ते च ।  
 हसेपः 'सेर्लोपः' (सू० १५६) नुम्विधिसामर्थ्याद्वत्त्वाभावः ।  
 अनड्वान्, अनड्वाहौ, अनड्वाहः । अनड्वाहम्, अनड्वाहौ, अन-  
 डुहः । अनडुहा ॥ २३६ वसां रसे ४ ॥ वस् संस्  
 ध्वस् अस् अनडुह् इत्येतेषां रसे पदान्ते च दत्वं भवति ।  
 अनडुड्याम्, अनडुड्भिः, अनडुहे, अनडुड्याम्, अनडुड्यः । अनडुहः,  
 अनडुड्याम्, अनडुड्यः । अनडुहः, अनडुहोः, अनडुहाम् । अनडुहि,  
 अनडुहोः । 'खसे चपा झसानाम्' (सू० ८९) अनडुत्सु ॥ २३७  
 धावम् ५ ॥ अनडुहशब्दस्य धौ परे अमागमो भवति । हे अनड्वान्,  
 हे अतड्वाहौ, हे अनड्वाहः ॥ गोदुहशब्दस्य भेदः ॥ २३८ दादर्धः  
 ६ ॥ दादर्धातोर्हकारस्य घत्वं भवति धातोर्धसे परे नाम्नश्च रसे  
 पदान्ते च ॥ गोदुष् सि इति स्थिते ॥ २३९ आदिजबानां

झभान्तस्य झभाः स्ध्वोः ७ ॥ धातोर्झभान्तस्यादौ वर्तमानानां  
जबानां झभा भवन्ति सकारे ध्वशब्दे च परे नाम्नश्च रसे पदान्ते  
च ॥ २४० वाऽवसाने ८ ॥ अवसाने वर्तमानानां झसानां जबा-  
श्चपा वा भवन्ति ॥ २४१ विरामोऽवसानम् ९ ॥ वर्णानामभा-  
वोऽवसानसंज्ञः स्यात् । गोधुक्-गोधुग्, गोदुहौ, गोदुहः । गोदुहम्,  
गोदुहौ, गोदुहः । गोदुहा, भकारादौ । 'दादर्धः' (सू० २३८)  
इति घत्वे कृते । 'आदिजबानाम्' (सू० २३९) इत्यनेन दकारस्य  
घकारे कृते । 'झवे जाबाः' (सू० ३५) गोधुग्भ्याम्, गोधुग्भिः ।  
गोदुहे, गोधुग्भ्याम्, गोधुग्भ्यः । गोदुहः, गोधुग्भ्याम्, गोधुग्भ्यः ।  
गोदुहः, गोदुहोः, गोदुहाम् । गोदुहि, गोदुहोः । गोधुग् सुप् इति  
स्थिते । 'खसे चपा झसानाम्' (सू० ८९) इति ककारः । पश्चात् ।  
'क्विलात्षः सः कृतस्य' (सू० १४१) इति षत्वम् ॥ २४२ कषसं-  
योगे क्षः १० ॥ ककारषकारसंयोगे क्ष इत्यक्षरं भवति ॥ गोधुक्षु ।  
हे गोधुक्-हे गोधुग्, हे गोदुहौ, हे गोदुहः ॥ मधुलिह्शब्दस्य भेदः ॥  
२४३ हो ढः ११ ॥ हकारस्य ढत्वं भवति धातोर्ज्ञसे परे नाम्नश्च  
रसे पदान्ते च । 'वाऽवसाने' (सू० २४०) मधुलिङ्-मधुलिङ्, मधु-  
लिहौ, मधुलिहः । मधुलिहम्, मधुलिहौ, मधुलिहः । मधुलिहा, मधु-  
लिङ्भ्याम्, मधुलिङ्भिः । 'हो ढः' (सू० २४३) । 'खसे चपा  
झसानाम्' (सू० ८९) मधुलिङ्सु । हे मधुलिङ्-हे मधुलिङ्, हे मधु-  
लिहौ, हे मधुलिहः-इत्यादि ॥ मित्रद्रुह्शब्दस्य भेदः ॥ २४४ द्रुहा-  
दीनां घत्वढत्वे वा १२ ॥ द्रुह्-मुह्-सुह् इत्येतेषां हकारस्य  
घत्वढत्वे वा भवतः धातोर्ज्ञसे परे नाम्नश्च रसे पदान्ते च । 'वाऽव-  
साने' (सू० २४०) मित्रधुग्-मित्रधुक्-मित्रधुङ्-मित्रधुद्, मित्रद्रुहौ,

मित्रद्रुहः । मित्रद्रुहम्, मित्रद्रुहौ, मित्रद्रुहः । हे मित्रधुग्-हे मित्रधुक्,  
हे मित्रधुङ्-हे मित्रधुट् । मित्रद्रुहा, मित्रधुग्भ्याम्-मित्रधुङ्भ्याम्, मित्र-  
धुग्भिः-मित्रधुङ्भिः, मित्रधुङ्सु-मित्रधुक्षु-इत्यादि ॥ एवं तत्त्वमु-  
ह्शब्दः । तत्त्वे मुह्यतीति तत्त्वमुक्-तत्त्वमुग्-तत्त्वमुट्-तत्त्वमुङ्,  
तत्त्वमुहौ, तत्त्वमुहः । तत्त्वमुहम्, तत्त्वमुहौ, तत्त्वमुहः । हे तत्त्वमुक्-  
हे तत्त्वमुग्-हे तत्त्वमुङ्-हे तत्त्वमुट् । इत्यादि ॥ भारवाहशब्दस्य भेदः ।  
‘हो ढः’ ( सू० २४३ ) ‘वाऽवसाने’ ( सू० २४० ) भारवाट्-भारवाङ्,  
भारवाहौ । भारवाहः । भारवाहम्, भारवाहौ ॥ २४५ वाहो बौ  
शसादौ खरे १३ ॥ वाहः वः औ शसादौ खरे । वकारस्यौका-  
रादेशो भवति शसादौ खरे परे । भारौहः । भारौहा, भारवाङ्भ्याम्,  
भारवाङ्भिः ॥ २४६ श्वेतवाह-उक्थशास्-पुरोडाश-अवयाजां  
डस् रसे पदान्ते चेति वक्तव्यम् १४ ॥ डित्त्वाट्टिलोपः ।  
‘अत्वसोः सौ’ ( सू० २९४ ) श्वेतवाः, श्वेतवाहौ, श्वेतवाहः । श्वेत-  
वाहम्, श्वेतवाहौ, श्वेतवाहः । अत्र वाहो बौ शसादौ खरे वेति  
केचित् । श्वेतौहः । श्वेतौहा-श्वेतवाहा, श्वेतवोभ्याम्, श्वेत-  
वोभिः, श्वेतौहे-श्वेतवाहे, श्वेतवोभ्याम्, श्वेतवोभ्यः । श्वेतौहः-श्वेतवाहः,  
श्वेतवोभ्याम्, श्वेतवोभ्यः, श्वेतौहः-श्वेतवाहः, श्वेतौहोः-श्वेतवाहोः,  
श्वेतौहां-श्वेतवाहाम् । श्वेतौहि-श्वेतवाहि, श्वेतौहोः-श्वेतवाहोः, श्वेतवः-सु-  
श्वेतवस्सु ॥ अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्वैते कृतदीर्घाः संबुद्धौ  
निपात्यन्ते । चकारादुक्थशा इति केचित् । हे श्वेतवाः वेति केचित् ।  
हे श्वेतवः, हे श्वेतवाहौ, हे श्वेतवाहः । श्वेतमासनं वहतीति श्वेतवा,  
इति व्युत्पत्तिः ॥ उक्थशाः, उक्थशासौ, उक्थशासः । उक्थशासम्,  
उक्थशासौ, उक्थशासः । उक्थशासा, उक्थशोभ्याम्, उक्थशोभिः ।  
उक्थशासे, उक्थशोभ्याम्, उक्थशोभ्यः । उक्थशः-सु-उक्थशस्सु,

हे उक्थशाः-हे उक्थशः, हे उक्थशासौ, हे उक्थशासः,-इत्यादि ॥  
पुराडाः, पुरोडाशौ, पुरोडाशः । पुरोडाशम्, पुरोडाशौ, पुरोडाशः ।  
पुरोडाशा, पुरोडोभ्याम्, पुरोडोभिः । पुरोडाशे, पुरोडोभ्याम्, पुरोडोभ्यः,  
पुरोडःसु-पुरोडस्सु । हे पुरोडाः-पुरोडः, हे पुरोडाशौ, हे पुरोडाशः ॥  
अवयाः, अवयाजौ, अवयाजः । अवयाजम् । अवयाजौ, अवयाजः ।  
अवयाजा. अवयोभ्याम्, अवयोभिः । अवयाजे, अवयोभ्याम्, अव-  
योभ्यः । अवयःसु-अवयस्सु । हे अवयाः-हे अवयः, हे अवयाजौ हे अव-  
याजः ॥ तुरासाहशब्दस्य भेदः । 'हो ढः' (सू० २४३ ) ॥ २४७ सहेः  
षः साढि १५ ॥ सहेः सकारस्य षकारादेशो भवति साढि सति ।  
'वाञ्चसाने' (सू० २४० ) तुराषाद्-तुराषाड्, तुरासाहौ, तुरासाहः ।  
तुरासाहम्, तुरासाहौ, तुरासाहः । तुरासाहा, तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भिः ।  
तुरासाहे, तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भ्यः-इत्यादि ॥ हे तुराषाद्-हे तुरा-  
षाड्, हे तुरासाहौ, हे तुरासाहः ॥ रेफान्तश्चतुरशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः  
॥ २४८ चतुराम् शौ च १६ ॥ चतुरशब्दस्यामागमो भवति धिवर्जितेषु  
पञ्चसु परेषु शौ च परे । चत्वारः, चतुरः, चतुर्भिः, चतुर्भ्यः ॥ २४९  
रः संख्यायाः १७ ॥ रेफान्तसंख्यायाः परस्यामो नुडागमो भवति ॥  
णत्वद्वित्वे । चतुर्णाम् ॥ २५० रः सुपि १८ ॥ सप्तमीबहुवचने  
रोरेव विसर्जनीयो नान्यरेफस्य ॥ चतुर्षु । अत्र ज्ञापकं यक्चतुर्ष्विदं  
सूत्रम् । तदन्तविधिरत्रेप्यते । प्रियाश्चत्वारो यस्य सः प्रियचत्वाः,  
प्रियचत्वारौ, प्रियचत्वारः । प्रियचत्वारम्, प्रियचत्वारौ, प्रियचतुरः,  
प्रियचतुरा, प्रियचतुर्भ्याम्, प्रियचतुर्भिः । गौणत्वे नुट् नेप्यते ।  
प्रियचतुराम् । प्राधान्ये तु स्यादेव । परमचतुर्णाम् ॥ २५१  
धावम् १९ ॥ चतुरशब्दस्य धौ परे अमागमो भवति ॥ हे प्रिय-  
चत्वः, हे प्रियचत्वारौ, हे प्रियचत्वारः ॥ नकारान्तो राजन्शब्दः ।

राजन् सि इति स्थिते । 'नीपधायाः' ( सू० २२१ ) इति दीर्घः ।  
 'हसेपः' ( सू० १५६ ) ॥ २५२ नाम्नो नो लोपशधौ २० ॥  
 नाम्नः नः लोपश् अधौ । नाम्नो नकारस्यानागमजस्य लोपश् भवति  
 रसे पदान्ते चाधौ । चकारात्कचिन्नाम्नो नकारस्य लोपश्  
 न भवति । सुष्ठु हिनस्ति पापमिति सुहिन् ॥ राजा, राजानौ,  
 राजानः । राजानम्, राजानौ । 'अल्लोपः स्वरेऽम्बयुक्ताच्छसादौ'  
 ( सू० २२७ ) इत्युपधाया लोपः । 'स्तोः श्वभिः श्वुः' ( सू० ७७ )  
 इति नकारस्य अकारः ॥ २५३ जजोर्ज्ञः २१ ॥ जकारजकारसंयोगे  
 ज्ञ इत्यक्षरं भवति ॥ राज्ञः । राज्ञा, राजभ्याम् । योगानामुभयतः  
 संबन्धः । 'लोपशि पुनर्न संधिः' ( सू० ५० ) इति नियमात् ।  
 'आङ्गि' ( सू० १३१ ) इत्यात्वं न । राजभिः, राज्ञे, राजभ्याम्,  
 राजभ्यः । राज्ञः, राजभ्याम्, राजभ्यः । राज्ञः, राज्ञोः, राज्ञाम् ।  
 राज्ञि । वेङ्योः ( सू० २२८ ) राजनि, राज्ञोः, राजसु । अधाविति  
 विशेषणात् हे राजन्, हे राजानौ, हे राजानः ॥ एवं यज्वन्नात्मन्सुधर्मन्प्र-  
 भृतयः । यज्वा, यज्वानौ, यज्वानः । यज्वानम्, यज्वानौ, अम्बयु-  
 क्तादिति विशेषणादलोपो नास्ति । यज्वनः, यज्वना, यज्वभ्याम्,  
 यज्वभिः । यज्वने, यज्वभ्याम्, यज्वभ्यः । यज्वनः—इत्यादि ॥  
 हे यज्वन्, हे यज्वानौ, हे यज्वानः ॥ आत्मा, आत्मानौ, आत्मानः ।  
 आत्मानम्, आत्मानौ, आत्मनः । आत्मना, आत्मभ्याम्, आत्मभिः ।  
 इत्यादि ॥ हे आत्मन्, हे आत्मानौ हे आत्मानः ॥ सुधर्मा, सुधर्माणौ,  
 सुधर्माणः । सुधर्माणम्, सुधर्माणौ, सुधर्मणः । सुधर्मणा, सुधर्मभ्याम्,  
 सुधर्मभिः—इत्यादि ॥ हे सुधर्मन्, हे सुधर्माणौ, हे सुधर्माणः ॥ श्वन्-युवन्-  
 मघवन्शब्दानां पञ्चसु राजन्शब्दवत्प्रक्रिया । श्वा, श्वानौ, श्वानः ।  
 श्वानम्, श्वानौ ॥ २५४ श्वादेः २२ ॥ श्वादेर्वकार उत्वं प्राप्नोति



शसादौ खरे परे तद्धिते ईपि ईकारे च । खरं तु न भवति ॥  
 अत्र नियामकं पाणिनीयसूत्रम् । श्वयुवमघोनामतद्धिते । तेन माघ-  
 वनं भवति । शुनः । शुना, श्वभ्याम्, श्वभिः । शुने, श्वभ्याम्, श्वभ्यः ।  
 शुनः, श्वभ्याम्—इत्यादि ॥ हे श्वन्, हे श्वानौ, हे श्वानः ॥ युवा, युवानौ,  
 युवानः, । युवानम्, युवानौ । युवन्शब्दस्य तु वकारस्योत्वे कृते ।  
 'सवर्णे दीर्घः सह' (सू० ५२) यून्, यूना, युवभ्याम्, युवभिः ।  
 यूने, युवभ्याम्, युवभ्यः—इत्यादि । हे युवन्, हे युवानौ, हे युवानः ॥  
 मघवा, मघवानौ, मघवानः । मघवानम्, मघवानौ । मघवन्शब्दस्य  
 वकारस्योत्वे कृते । 'उ ओ' (सू० ४५) मघोनः । मघोना, मघव-  
 भ्याम्, मघवभिः । मघोने, मघवभ्याम्, मघवभ्यः—इत्यादि ॥ हे  
 मघवन्, हे मघवानौ, हे मघवानः ॥ २५५ मघवा बहुलम् २३ ॥ मघ-  
 वन्शब्दस्य वा तृ इत्यन्तादेशः स्यात् ॥ ऋकारो त्रिकार्यार्थः ।  
 बहुलग्रहणात्सर्वे विधयो व्यभिचरन्ति । 'त्रितो नुम्' (सू० २९२)  
 मघवान् । 'नश्चापदान्ते झसे' (सू० ९५) मघवन्तौ, मघवन्तः, ।  
 मघवन्तम्, मघवन्तौ, मघवतः । मघवता, मघवञ्चाम्, मघवद्भिः ।  
 मघवते, मघवञ्चाम्, मघवञ्चः—इत्यादि ॥ हे मघवन्, हे मघवन्तौ, हे  
 मघवन्तः ॥ 'स किल संयुगमूर्ध्नि सहायतां मघवतः प्रतिपद्य महा-  
 रथः ॥' इति प्रयोगदर्शनात् ॥ २५६ अर्वणस्त्रसावनजः २४ ॥  
 नञ्वर्जस्यार्वणस्तृ इत्यन्तादेशः स्यादसौ विभक्तौ परतः । अर्वा,  
 अर्वन्तौ, अर्वन्तः । अर्वन्तम्, अर्वन्तौ, अर्वतः । अर्वता, अर्वञ्चाम्,  
 अर्वद्भिः । अर्वते, अर्वञ्चाम्, अर्वञ्चः । इत्यादि ॥ हे अर्वन्, हे अर्वन्तौ हे  
 अर्वन्तः ॥ नञ्वर्जस्येति किम् ? । 'नोपधायाः' (सू० २२१) अनर्वा, अन-  
 र्वाणौ, अनर्वाणः । अनर्वाणम्, अनर्वाणौ, अनर्वणः । अनर्वणा, अनर्वभ्याम्,

अनर्वभिः । अनर्वसु—इत्यादि ॥ नकारान्तस्यापि पथिन्शब्दस्य  
 भेदः ॥ २५७ इतोऽत्यञ्चसु २५ ॥ इतः अत् पञ्चसु । पञ्चसु  
 स्यादिषु पथ्यादीनामिकारस्याकारो भवति ॥ २५८ थो नुट् २६ ॥  
 पथ्यादीनां थकारस्य नुडागमो भवति पञ्चसु स्यादिषु परेषु । पन् थन्  
 सि इति स्थिते ॥ २५९ आ सौ २७ ॥ आ सौ । पथ्यादीनां टेरात्वं  
 भवति सौ परे । पन्था, पन्थानौ, पन्थानः ॥ पन्थानं, पन्थानौ ॥ २६० पन्थां  
 टेः २८ ॥ पथ्यादीनां टेलोपो भवति शसादौ खरे परे तद्धिते ईपि ईकारे च ।  
 पथः । पथा, पथिभ्याम्, पथिभिः । पथे, पथिभ्याम्, पथिभ्यः । पथः,  
 पथिभ्याम्, पथिभ्यः । पथः, पथोः, पथाम् । पथि, पथोः, । नलोपः ।  
 ‘क्विलात्पः सः’ ( सू ० १४१ ) पथिषु । हे पन्थाः, हे पन्थानौ, हे  
 पन्थानः ॥ एवं मथिन्-ऋभुक्षिन्-प्रभृतयः । मन्थाः, मन्थानौ, मन्थानः ॥  
 ऋभुक्षाः, ऋभुक्षणौ, ऋभुक्षाणः—इत्यादि ॥ दण्डिन्शब्दस्य भेदः ॥  
 २६१ इनां शौ सौ २९ ॥ इन्-हन्-पूषन्-अर्यमन् इत्येतेषां शौ  
 सौ चाधौ परे उपधाया दीर्घो भवति । सिलोपनलोपौ । दण्डी,  
 दण्डिनौ, दण्डिनः । दण्डिनम्, दण्डिनौ, दण्डिनः । दण्डिना, दण्डि-  
 भ्याम्, दण्डिभिः । दण्डिने, दण्डिभ्याम्, दण्डिभ्यः । दण्डिषु ।  
 इत्यादि ॥ हे दण्डिन्, हे दण्डिनौ, हे दण्डिनः ॥ ब्रह्महा, ब्रह्महणौ,  
 ब्रह्महणः । ब्रह्महणम्, ब्रह्महणौ । ‘अलोपः खरे’ ( सू ० २२७ ) ॥  
 २६२ हनो घे ३० ॥ हनः घ् ने । हन्तेर्धातोर्हकारस्य घत्वं  
 भवति अव्यवधाने नकारे परे व्यवधाने जिति णिति च परे ॥  
 घसंयोगो णत्वनिषेधार्थः ॥ २६३ हन्तेरत्पूर्वस्य ३१ ॥ हन्तेरकार-  
 पूर्वस्यैव नस्य णत्वं स्यान्नान्यस्य ॥ ब्रह्मघ्नः । ब्रह्मघ्ना, ब्रह्महभ्याम्,  
 ब्रह्महभिः । ब्रह्मघ्ने, ब्रह्महभ्याम्, ब्रह्महभ्यः । ब्रह्मघ्नः, ब्रह्महभ्याम्,

ब्रह्महभ्यः । ब्रह्मन्नः, । ब्रह्मन्नोः, ब्रह्मन्नाम् । ब्रह्मन्नि-ब्रह्महणि, ब्रह्मन्नोः, ब्रह्महसु । हे ब्रह्महन्, हे ब्रह्महणौ, हे ब्रह्महणः ॥ पूषा, एवं पूषणौ, पूषणः । पूषणम्, पूषणौ, पूषणः । पूषणा, पूषभ्याम्, पूषभिः । पूषणे, पूषभ्याम्, पूषभ्यः । पूषणः, पूषभ्याम्, पूषभ्यः । पूषणः, पूषणोः, पूषणाम् । पूषणि-पूषणि । डौ टिलोपो वेति, केचित् । पूषि, पूषणोः, पूषसु । हे पूषन्, हे पूषणौ, हे पूषणः ॥ एवं अर्यमा, अर्यमणौ, अर्यमणः । अर्यमणम्, अर्यमणौ, अर्यमणः । अर्यमणा, अर्यमभ्याम्, अर्यमभिः—इत्यादि ॥ हे अर्यमन्, हे अर्यमणौ, हे अर्यमणः । संख्याशब्दाः पञ्चनप्रभृतयो बहुवचनान्तास्त्रिषु सरूपाः । पञ्चन् जस् इति स्थिते ॥ २६४ जश्श-सोर्लुक् ३२ ॥ षकारनकारान्तसंख्यायाः परयोर्जस्शसोर्लुग्भवति ॥ २६५ लुकि न तन्निमित्तम् ३३ ॥ लुकि सति तन्निमित्तं कार्यं न स्यात् ॥ 'तेन नोपधायाः' (सू० २२१) इति दीर्घत्वं न । पञ्च, पञ्च, पञ्चभिः, पञ्चभ्यः, पञ्चभ्यः ॥ २६६ णः ३४ ॥ षकारनकारान्तसंख्यायाः परस्यामो नुडागमो भवति ॥ 'नोपधायाः' (सू० २२१) 'नाम्नो नो लोपशधौ' (सू० २३४) पञ्चानाम्, पञ्चसु । एवं सप्तन्-नवन्-दशन्प्रभृतयः ॥ अष्टन्शब्दस्य भेदः ॥ २६७ अष्टनो डौ वा ३५ ॥ अष्टन्शब्दात्परयोर्जस्शसोर्वा डौ भवति । डित्वा-ट्टिलोपः । अष्टौ, अष्टौ, अष्ट, अष्ट ॥ २६८ वासु ३६ ॥ वा आ आसु । अष्टन्शब्दस्य आसु विभक्तिषु परासु वा टेरात्वं भवति । अष्टभिः-अष्टाभिः । अष्टभ्यः-अष्टाभ्यः । अष्टभ्यः-अष्टाभ्यः । अष्टा-नाम् । अष्टसु-अष्टासु । गौणत्वेऽपि आत्वं जश्शसोर्लुक्त्वं वेत्येके । प्रियाष्टा-प्रियाष्टाः, प्रियाष्टानौ-प्रियाष्टौ, प्रियाष्टानः, प्रियाष्टौ-प्रियाष्टाः, प्रियाष्टानं-प्रियाष्टाम्, प्रियाष्टानौ, प्रियाष्टौ, प्रियाष्टः, प्रियाष्टौ-प्रियाष्टान्, प्रियाष्टा-प्रियाष्टा, प्रियाष्टाभ्यां प्रियाष्टभ्याम्, प्रियाष्टाभिः-प्रियाष्टभिः ।

प्रियाष्ट्रे-प्रियाष्ट्रे, प्रियाष्टाभ्यां-प्रियाष्टभ्याम्, प्रियाष्टाभ्यः-प्रियाष्टभ्यः ।  
 प्रियाष्ट्रः-प्रियाष्ट्राः, प्रियाष्टाभ्यां-प्रियाष्टभ्याम्, प्रियाष्टाभ्यः-प्रिया-  
 ष्टभ्यः । प्रियाष्ट्रः-प्रियाष्ट्राः, प्रियाष्ट्रोः-प्रियाष्ट्रोः, प्रियाष्ट्रां-प्रिया-  
 ष्ट्राम् । प्रियाष्ट्रि-प्रियाष्ट्रि-प्रियाष्ट्रे, प्रियाष्ट्रोः-प्रियाष्ट्रोः, प्रियाष्ट्रासु-  
 प्रियाष्टसु । हे प्रियाष्टन् हे प्रियाष्टा, हे प्रियाष्टानौ-हे प्रियाष्टौ, हे प्रिया-  
 ष्टानः-हे प्रियाष्टाः ॥

जसि त्रीण्येव रूपाणि शसि त्रीण्येव वै पुनः ।

डावपि त्रीणि रूपाणि शेषे द्वे द्वे प्रियाष्टनः ॥ ४१ ॥

मकारान्त इदमशब्दः ॥ २६९ इदमोऽयं पुंसि ३७ इदमः  
 अयम् पुंसि । इदमशब्दस्य पुंसि विषये अयमादेशो भवति सिस-  
 हितस्य ॥ अयम् । द्विवचनादौ 'त्यदादेष्टेः' (सू० १७५) इति  
 सर्वत्राकारः । इद औ इति स्थिते ॥ २७० दस्य मः ३८ ॥  
 त्यदादीनां दकारस्य मत्वं भवति स्यादौ परे ॥ 'ओ औ औ' (सू०  
 ४६) इमौ । सर्वादित्वात् 'जसी' (१४५) इमे । त्यादीनां घेर-  
 भावः । इमम्, इमौ, इमान् ॥ २७१ अन टौसोः ३९ ॥ अन  
 टौसोः । इदमोऽनादेशो भवति टौसोः परयोः कृत्स्नस्य ॥ 'टेन'  
 (सू० १३०) अनेन ॥ २७२ स्म्यः ४० । स्मि अः । इदमः  
 सकारे भकारे च परे अकारादेशो भवति कृत्स्नस्य ॥ त्यदादित्वा-  
 दत्वसिद्धौ पुनरत्वविधानं सर्वादेशार्थम् । तदाह कृत्स्नस्येति । 'अङ्गिः'  
 (सू० १३१) इत्यात्वम् । आभ्याम् ॥ २७३ भिस्भिस् ४१ ॥  
 इदमदसोर्भिस् भिसेव भवति ॥ तेन भकारस्य अत्वं न । 'एस्मि  
 बहुत्वे' (सू० १३५) एभिः । इदम् डे इति स्थिते त्यदादेष्टेरः स्यादौ  
 (सू० २७५) 'सर्वादेः सट्' (सू० १४८) 'स्म्यः' (सू० १७२) असौ,  
 आभ्याम्, एभ्यः । 'ङ्सिरत्' (सू० १३६) अतः (सू० १४०)

अस्मात्, आभ्याम्, एभ्यः । 'डस्य' (सू० १३७) अस्य । 'अन टौसोः' (सू० २७१) 'ओसि' (सू० १३८) 'ए अय्' (सू० ४१) अनयोः । 'सुडामः' (सू० १५०) 'स्म्यः' (सू० २७२) 'एस्मि बहुत्वे' (सू० १३५) 'किञात्' (सू० १४१) एषाम् । 'डि सिन्' (सू० १५१) अस्मिन्, अनयोः, एषु ॥ त्यदादीनां संबोधनाभावः ॥ २७४ इदमोऽप्यन्वादेशे द्वितीयाटौस्वेनादेशो वक्तव्यः ४२ ॥ उक्तस्य पुनर्भाषणमन्वादेशः ॥ एनं, एनौ, एनान् । एनेन । एतयोः-एनयोः ॥ प्रशाम्शब्दस्य भेदः ॥ २७५ मो नो धातोः ४३ ॥ धातोर्मकारस्य नकारादेशो भवति रसे पदान्ते च । प्रशान्, प्रशामौ, प्रशामः । हे प्रशान्, हे प्रशामौ, हे प्रशामः । प्रशामम्, प्रशामौ, प्रशामः । प्रशामा, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भिः—इत्यादि ॥ किंशब्दस्य भेदः । 'किंशब्दस्य त्यदादेष्टेरः स्यादौ' (सू० २७५) इति सर्वत्राकारे कृते सर्वशब्दवद्रूपं ज्ञेयम् ॥ कः, कौ, के । कम्, कौ, कान् । केन, काभ्याम्, कैः । कसौ, काभ्याम्, केभ्यः—इत्यादि ॥ धकारान्तस्तत्त्वबुद् शब्दः । तस्य रसे पदान्ते च । आदिजवानां ज्ञभान्तस्य ज्ञभाः 'स्वोः' (सू० २३९) 'हसे पः सेर्लोपः' (सू० १५६) 'वाऽवसाने' (सू० २४०) तत्त्वभुत्-तत्त्वभुद्, तत्त्वबुधौ, तत्त्वबुधः । तत्त्वबुधम्, तत्त्वबुधौ, तत्त्वबुधः । तत्त्वबुधा, तत्त्वबुध्यम्, तत्त्वबुद्धिः—इत्यादि । हे तत्त्वबुत्-हे तत्त्वबुद् हे तत्त्वबुधौ, हे तत्त्वबुधः ॥ जकारान्तः सम्राजशब्दः ॥ २७६ छश-षराजादेः षः ४४ ॥ छकारान्तस्य शकारान्तस्य षकारान्तस्य च राज्यज्जृज्मृज्भ्राजादेश्च षकारो भवति धातोर्ज्ञेसे परे नाम्नश्च रसे पदान्ते च ॥ षस्य षत्वं ङत्वंनिषेवार्थम् । तेन आख्यातादौ तु ङत्वं नास्ति—द्वेष्टीत्यादौ ॥ २७७ षो ङः ४५ ॥ षः ङः । षका-रस्य ङत्वं भवति धातोर्ज्ञेसे परे नाम्नश्च रसे पदान्ते च । 'वाऽवसाने

(सू० २४०) ॥ २७८ मो रांजि समः कौ ४६ ॥ किवन्ते राजतौ परे समो मस्य म एव स्यात् ॥ तेनानुस्वाराभावः । सम्राड्-सम्राट्, सम्राजौ, सम्राजः । सम्राजम्, सम्राजौ, सम्राजः । सम्राजा, सम्राड्भ्याम्, सम्राड्भिः—इत्यादि ॥ सम्राट्सु ॥ हे सम्राट्-हे सम्राड्, हे सम्राजौ, हे सम्राजः । २७९ युजेरसमासे ४७ ॥ युजेः सुटि नुम् स्यादसमासे ॥ २८० किन्न्रत्ययस्य कुः ४८ ॥ किन्नन्तस्य धातोः क्ववर्गान्तादेशः स्यादसमासे श्लि पदान्ते च । प्रत्ययशब्देन प्रत्ययान्तस्य ग्रहणम् । युङ् । अनुस्वारपरसवर्णौ । युञ्जौ युञ्जः । युञ्जम्, युञ्जौ, युजः, । युजा, युग्भ्याम्, युग्भिः । युजे, युग्भ्याम्, युग्म्यः । 'चोः कुः' (सू० २८५) 'स्वसे चपा०' (सू० ८९) 'क्लिप्त' (सू० १४१) 'कषसंयोगे क्षः' (सू० २४२) युक्षु । हे युङ्, हे युञ्जौ, हे युञ्जः—इत्यादि ॥ असमासे किम्? । अश्वयुक्-अश्वयुग्, अश्वयुजौ, अश्वयुजः । अश्वयुजम्, अश्वयुजौ, अश्वयुजः । अश्वयुजा, अश्वयुग्भ्याम्, अश्वयुग्भिः—इत्यादि ॥ समाध्यर्थस्य युजेर्न नुम् । युक् । समाधि-मानित्यर्थः ॥ दकारान्तो द्विपादशब्दः । द्विपात्-द्विपाद्, द्विपादौ, द्विपादः । द्विपादम्, द्विपादौ ॥ २८१ पादः पत् ४९ ॥ पाद्-शब्दस्य पदादेशः स्याच्छसादौ स्वरे परे तद्धिते ईपि ईकारे च ॥ द्विपदः । द्विपदा, द्विपाज्याम्, द्विपाद्विः ॥ द्विपदे, द्विपाज्याम्, द्विपाज्यः—इत्यादि ॥ हे द्विपात्-हे द्विपाद्, हे द्विपादौ, हे द्विपादः ॥ दकारान्तास्त्यद्-तद्-यद्-एतद्-शब्दाः ॥ त्यद्-सि इति स्थिते ॥ २८२ स्तः ५० ॥ सू तः । त्यदादेस्तकारस्य सत्वं भवति सौ परे ॥ स्यः, त्यौ, त्ये । त्यम्, त्यौ, त्यान् । त्येन, त्याभ्याम्, त्यैः । त्यसै, त्याभ्याम्, त्येम्यः ।

टिप्पणी—१ पाणिनीयान्यतश्चत्वारि सूत्राणि प्राक्षिप्तान्यत्रेत्यनुमितिः प्राचीनतम-पुस्तकेष्वप्यस्मादेवायम् ।

त्यस्मात्, त्याभ्याम्, त्येभ्यः । त्यस्य, त्ययोः, त्येषाम् । त्यस्मिन्, त्ययोः, त्येषु ॥ सः, तौ, ते । तम्, तौ, तान् । तेन्, ताभ्याम्, तैः । तस्मै इत्यादि ॥ यः, यौ, ये । यम्, यौ, यान् । येन, याभ्याम्, यैः । यस्मै-इत्यादि । एषः, एतौ, एते ॥ २८३ एतदोऽन्वादेशे द्वितीयाटौःस्वेनो वा वक्तव्यः ५१ ॥ उक्तस्य पुनर्भाषणमन्वादेशः । एतं-एनम्, एतौ-एनौ, एतान्-एनान् । एतेन-एनेन, एताभ्याम्, एतैः । एतस्मै, एताभ्याम्, एतेभ्यः । एतस्मात्, एताभ्याम्, एतेभ्यः । एतस्य, एतयोः-एनयोः, एतेषाम् । एतस्मिन्, एतयोः-एनयोः, एतेषु ॥ एतेन व्याकरणमधीतमेनं छन्दोऽध्यापय ॥ छकारान्तस्तत्त्वप्राङ्शब्दः 'छशषराजादेः षः' (सू० २७६) 'वाऽवसाने' (सू० २४०) तत्त्वप्राट्-तत्त्वप्राङ्, तत्त्वप्राछौ, तत्त्वप्राछः । तत्त्वप्राङ्म्, तत्त्वप्राछौ, तत्त्वप्राछः । तत्त्वप्राछा । 'छशषराजादेः षः' (सू० २७६) 'षो ङः' (सू० २४७) तत्त्वप्राङ्भ्याम्, तत्त्वप्राङ्भिः । तत्त्वप्राछे, तत्त्वप्राङ्भ्याम्, तत्त्वप्राङ्भ्यः । तत्त्वप्राछः, तत्त्वप्राङ्भ्याम्, तत्त्वप्राङ्भ्यः । तत्त्वप्राछः, तत्त्वप्राछोः, तत्त्वप्राछाम् । तत्त्वप्राछि, तत्त्वप्राछोः, तत्त्वप्राट्पु ॥ थकारान्तोऽग्निमथ्शब्दः । 'वाऽवसाने' (सू० २४०) अग्निमत्-अग्निमद्, अग्निमथौ, अग्निमथः । अग्निमथम्, अग्निमथौ, अग्निमथः । अग्निमथा, अग्निमथ्याम्, अग्निमद्भिः-इत्यादि ॥ हे अग्निमत्-हे अग्निमद्, हे अग्निमथौ, हे अग्निमथः ॥ चकारान्तः प्रत्यञ्शब्दः ॥ २८४ अञ्चः पञ्चसु नुमागमो वक्तव्यः ५२ ॥ २८५ चोः कुः ५३ ॥ चवर्गस्य कवर्गादेशो भवति धातोर्ज्ञप्ते परे नाम्नश्च रसे पदान्ते च यथासंख्येन ॥ 'स्तोः श्रुभिः श्रुः' (सू० ७७) 'संयोगान्तस्य लोपः' (सू० २३५) प्रत्यङ्, प्रत्यञ्चौ, प्रत्यञ्चः । प्रत्यञ्चम्, प्रत्यञ्चौ ॥ २८६ अञ्चेर्दीर्घश्च ५४ ॥ अञ्चतेरकारस्य लोपो भवति पूर्वस्य च दीर्घः शसादौ खरे परे तद्धिते प्रत्यये ईपि ईकारे

च ॥ प्रतीचः । निमिचाभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः । प्रतीचा । 'चोः कुः'  
 ( सू० २८५ ) प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भिः । प्रतीचे प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भ्यः ।  
 प्रत्यक्षु । हे प्रत्यङ्, हे प्रत्यञ्चौ, हे प्रत्यञ्चः ॥ २८७ नाञ्चेः पूजायाम् ५५ ॥  
 पूजार्थस्याञ्चतेरुपधाभूतस्य नस्य लोपो न स्यात् । अलुप्तनकारत्वान्न  
 नुम् । 'किन्प्रत्ययस्य कुः' ( सू० २८० ) 'संयोगान्तस्य लोपः'  
 ( सू० २३५ ) । प्रत्यङ्, प्रत्यञ्चौ, प्रत्यञ्चः । प्रत्यञ्चम्, प्रत्यञ्चौ ।  
 नलोपाभावादकारस्यालोपः । प्रत्यञ्चः, प्रत्यञ्चा । प्रत्यङ्भ्याम्, प्रत्यङ्भिः ।  
 इत्यादि ॥ 'ङोः कुक् टुक् वा शरि' ( सू० १८० ) प्रत्यङ्क्षु-प्रत्य-  
 ङ्षु ॥ एवं तिर्यच्शब्दः । तिर्यङ्, तिर्यञ्चौ, तिर्यञ्चः । तिर्यञ्चम्,  
 तिर्यञ्चौ ॥ २८८ तिरश्चादयः ५६ ॥ तिरश्चादयः शब्दा निपात्य-  
 न्ते शसादौ स्वरे परे तद्धिते ईपि ईकारे च ॥ तिरश्चः । तिरश्चा  
 तिर्यग्भ्याम्, तिर्यग्भिः । तिर्यक्षु । हे तिर्यङ्, हे तिर्यञ्चौ-हे तिर्यञ्चः ॥  
 २८९ विष्वादेर्वयोश्च टेरेद्यञ्चतौ वप्रत्यये ५७ ॥ अनयोः सर्व-  
 नाम्नश्च टेरेद्यादेशः स्याद्वप्रत्ययान्तेऽञ्चतौ परे ॥ अमुं अञ्चतीति  
 विग्रहे ॥ अदसष्टेरद्यादेशः ॥ २९० अदसोऽसेर्दादुं दो मः ५८ ॥  
 अदसोऽसान्तस्य दात्परस्य उदूतौ स्तो दस्य च मः स्यात् । अदमु-  
 यङ् अमुद्यङ् अमुमुयङ् अदद्यङ् ॥

परतः केचिदिच्छन्ति केचिदिच्छन्ति पूर्वतः ।

उभयोः केचिदिच्छन्ति केचिदिच्छन्ति नोभयोः ॥ ४२ ॥

विष्वाद्यम् देवद्यम् ॥ उदङ्, उदञ्चौ, उदञ्चः । उदञ्चम्, उदञ्चौ ॥  
 २९१ उद ईत् ५९ ॥ उच्छब्दात्परस्य लुप्तनकारस्याञ्चतेरकारस्ये-  
 कारादेशो भवति शसादौ स्वरे परे तद्धिते ईपि ईकारे च । उदीचः ।  
 उदीचा, उदग्भ्याम्, उदग्भिः । उदक्षु । हे उदङ्, हे उदञ्चौ, हे उदञ्चः ॥



एवं सम्यच्शब्दः । सम्यङ्, सम्यञ्चौ, सम्यञ्चः । सम्यञ्चम्, सम्यञ्चौ, समीचः । समीचा-इत्यादि ॥ ककारान्तो मरुच्छब्दः । 'हसे पः सेर्लोपः' (सू० १५६) 'वाऽवसाने' (सू० २४०) मरुत्-मरुद्, मरुतौ, मरुतः । मरुतम्, मरुतौ, मरुतः । मरुता, मरुद्ध्याम्, मरुद्धिः-इत्यादि ॥ हे मरुत्-हे मरुद्, हे मरुतौ, हे मरुतः ॥ एवं अग्निचित्प्रभृतयः ॥ अग्निचित् अग्निचिद्, अग्निचितौ, अग्निचितः । हे अग्निचित्-हे अग्निचिद्, हे अग्निचितौ, हे अग्निचितः ॥ तकारान्त उकारानुबन्धो महच्छब्दः ॥ २९२ त्रितो नुम् ६० ॥ उश्च ऋश्च वृ । वृ इत् यस्य सः त्रित् तस्य त्रितः नुम् । उकारानुबन्धस्य ऋकारानुबन्धस्य च नुमागमो भवति पुंसि पञ्चसु परेषु ॥ २९३ न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौ च ६१ ॥ नृच सूच अपृच महांश्च एतेषां समाहारः न्सम्महतः, तस्य न्सम्महतः अधौ दीर्घः शौ चेत्यन्वयः । न्सन्तस्याप्शब्दस्य महच्छब्दस्य च दीर्घो भवति पञ्चसु परेषु धिवर्जितेषु शौ च परे ॥ 'संयोगान्तस्य लोपः' (सू० २३५) महान् । 'नश्चापदान्ते झसे' (सू० ९५) महान्तौ, महान्तः । महान्तम्, महान्तौ, महतः । महता, महद्ध्याम्, महद्धिः । महते, महद्ध्याम्, महद्ध्यः-इत्यादि । हे महन्, हे महान्तौ, हे महान्तः । न्सन्तस्येत्यागमजनकाग्युक्तसान्तस्य ज्ञेयम् । तेन कंसशब्दस्य क्विबन्तस्य न दीर्घः । 'संयोगान्तस्य लोपः' (सू० २३५) कन्, कंसौ, कंसः । कंसम्, कंसौ, कंसः । कंसा, कन्भ्याम्, कन्भिः । कन्सु । हे कन् ॥ शोभना आपो यस्मिन्नसौ स्वाप्-स्वाब्, स्वापौ, स्वापः ॥ स्वाम्पि तडागानि ॥ तकारान्त उकारानुबन्धो भवच्छब्दः । 'वृतो नुम्' (सू० २९२) इति नुमागमः ॥ २९४ अत्वसोः सौ ६२ ॥ अत्वसोः सौ इति धातोर्नेष्यते । अत्वन्तस्यासन्तस्य च दीर्घो भवति धिवर्जिते सौ परे । 'संयोगान्तस्य' (सू० २३१) 'हसे पः' (सू० १५६) भवान्, भवन्तौ,

भवन्तः । भवन्तम्, भवन्तौ, भवतः । भवता, भवञ्चाम्, भवद्भिः । भवते,  
भवञ्चाम्, भवञ्चः । भवतः, भवञ्चाम्, भवञ्चः । भवतः, भवतोः,  
भवताम् । भवति । भवतोः, भवत्सु । हे भवन्, हे भवन्तौ, हे भवन्तः ॥  
असन्तस्येत्यसुप्रत्ययान्तस्येति विवक्षितम्, । तेन पिण्डं ग्रसतीति  
पिण्डग्रः, पिण्डग्रसौ, पिण्डग्रसः । पिण्डग्रसम्, पिण्डग्रसौ, पिण्डग्रसः—  
इत्यादि ॥ ऋकारानुबन्धस्य भवत्शब्दस्य नुगागम एव । अत्वन्त-  
त्वाभावाच्च दीर्घः । 'वृतो नुम्' (सू० २९२) 'संयोगान्तस्य लोपः'  
(सू० २३५) भवन्, भवन्तौ, भवन्तः । भवन्तम्, भवन्तौ,  
भवतः । भवता, भवञ्चाम्, भवद्भिः । भवत्सु—इत्यादि ॥ हे भवन्, हे  
भवन्तौ, हे भवन्तः ॥ एवं पचन्शब्दः । पचन्, पचन्तौ, पचन्तः ।  
पचन्तम्, पचन्तौ, पचतः । पचत्सु—इत्यादि ॥ हे पचन्, हे पचन्तौ,  
हे पचन्तः ॥ २९५ द्विरुक्तानां जक्षादीनां च शतुर्नुम्प्रतिषेधः  
पुंलिङ्गे नित्यं वक्तव्यो नपुंसके वा शौ च ६३ ॥ दधत्-दधद्,  
दधतौ, दधतः । दधतम्, दधतौ, दधतः । दधता, दधञ्चाम्, दधद्भिः—  
इत्यादि ॥ नपुंसके,—दधत्-दधद्, दधति-दधती, दधन्ति । जक्ष जागृ  
दारिद्रा शास् दीधी वेवी चकास् एते जक्षादयः ॥ शकारान्तो  
विश्वशब्दः । 'छशषराजादेः षः' (सू० २७६) इति षत्वम् । 'षो  
ङः' (सू० २७७) इति ङत्वम् । 'वाऽवसाने' (सू० २४०) चपा  
जवाश्च । विद्-विड्, विशौ, विशः । विशम्, विशौ, विशः । विशा,  
विड्भ्याम्, विड्भिः । विद्सु—इत्यादि ॥ हे विद्, हे विड्, हे विशौ,  
हे विशः ॥ षकारान्तः षष्शब्दो नित्यं बहुवचनान्तस्त्रिषु सरूपः ।  
षष् जस् इति स्थिते । 'जस्शसोर्लृक्' (सू० २६४) 'षो ङः'  
(सू० २७७) 'वाऽवसाने' (सू० २४०) षट्-षड्, षट्भिः, षड्भ्यः,  
षड्भ्यः । 'ष्णः' (सू० २६६) इति नुद् । 'षो ङः' (सू० २७७)

षड् नाम् इति स्थिते ॥ २९६ इणः ६४ ॥ इ णः । संख्यासं-  
 बन्धिनो डकारस्य णत्वं भवति नामि परे ॥ 'ष्टुभिः षुः' (सू० ७९)  
 षण्णाम् । कचिदपदान्तेऽपि पदान्तताश्रयणीया । षषू सु इति स्थिते ।  
 'षो डः' (सू० २७७) 'खसे चपा' (सू० ८९) इति टकारे कृते ।  
 षट्सु इत्यत्र । 'ष्टुभिः षुः' (सू० ७९) इति सकारस्य षत्वे प्राप्ते  
 पदान्तताश्रयणीया । 'टोरन्त्यात्' (सू० ८३) इति घृत्वनिषेधः ॥  
 २९७ दोषाम् ६५ ॥ दोष्सजुष्आशिष्हविष्प्रभृतीनां षकारस्य  
 रेफो भवति रसे पदान्ते च ॥ 'हसे पः' (सू० १५६) 'स्रोर्विसर्गः'  
 (सू० १२४) दोः, दोषौ, दोषः । दोषम्, दोषौ । [शसादौ स्वरे परे  
 नान्तता वा वक्तव्या ।] दोष्णः-दोषः । दोष्णा-दोषा, दोर्भ्या-दोष-  
 भ्याम्, दोर्भिः-दोषभिः । दोष्णे-दोषे, दोर्भ्या-दोषभ्याम्, दोर्भ्यः-  
 दोषभ्यः । दोष्णः-दोषः दोर्भ्या-दोषभ्याम्, दोर्भ्यः-दोषभ्यः ।  
 दोष्णः-दोषः, दोष्णोः-दोषोः, दोष्णाम्-दोषां । 'वेङ्ग्योः' (सू० २२८)  
 दोष्णि-दोषणि-दोषि, दोष्णोः-दोषोः । दोष्सु इति स्थिते । 'दोषाम्'  
 (सू० २९७) इति विसर्गः । 'शषसे वा' (सू० १०५) इति  
 सत्वे कृते । 'क्लितात्' (सू० १४१) इति षत्वे रम् । नुम् विसर्ज-  
 नीयशस्यव्यवधानेऽपि क्लितादिति सस्य षत्वं वाच्यम् । कृताकृतप्रसङ्गी  
 यो विधिः स नित्यः । दोष्बु-दोःषु-दोषसु । हे दोः, हे दोषौ,  
 हे दोषः ॥ सप्तमीबहुवचने कृत्रिमत्वाद्विसर्गः ॥ एवं सजुष्शब्दः ॥  
 २९८ सजुषाशिषो रसे पदान्ते च दीर्घो वक्तव्यः ६६ ॥ 'व्यो-  
 र्विहसे' (सू० ३१५) इति सिद्धे इदं न वक्तव्यम् । अथवा  
 तस्यैवेदं सूचकम् । 'दोषाम्' (सू० २९७) । सजूः, सजुषौ, सजुषः ।  
 सजुषम्, सजुषौ, सजुषः । सजुषा, सजूर्भ्याम्, सजूर्भिः । सजूष्बु-सजूःषु-  
 इत्यादि । हे सजूः, हे सजुषौ, हे सजुषः ॥ सकारान्तः पुंसशब्दः ।

पुंस् सि इति स्थिते ॥ २९९ पुंसोऽसुङ् ६७ ॥ पुंश्चब्दस्य असु-  
ङादेशो भवति पुंसि पञ्चसु परेषु शौ च ॥ ङकारोऽन्त्यादेशार्थः ।  
उकारो नुम्बिधानार्थः ॥

रेफः स्वरपरं वर्णं दृष्ट्वाऽऽरोहति तच्छिरः ।

पुरः स्थितं यदा पश्येदधः संक्रमते स्वरम् ॥ ४३ ॥

अनुस्वारो नमस्यैव यावत्तद्देशयोगतः ।

मूर्ध्नि सङ्गं लभेत्तावन्नेक्षते पुरतः स्वरम् ॥ ४४ ॥

‘मः स्वरे’ (सू० १०१) पुमस् सि इति स्थिते । ‘व्रितो नुम्’  
(सू० २९२) ॥ ‘न्सम्महतः’ (सू० २९३) इति दीर्घः । ‘संयो-  
गान्तस्य लोपः’ (सू० २३५) ‘ह्रसेपः सेर्लोपः’ (सू० १५६)  
पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः । पुमांसम्, पुमांसौ, पुंसः । पुंसा । पुंसि,  
पुंसोः । पुंस् सु इति स्थिते ॥ ३०० असंभवे पुंसः कक्सौ ६८ ॥  
असंभव इति कोऽर्थः ? । वेदान्तैकवेद्यस्य परमात्मनो बहुत्वासंभवे  
वाच्ये सति पुंश्चब्दस्य कगागमो भवति सुपि परे ॥ ककारः  
कित्कार्यार्थः । अकार उच्चारणार्थः ॥ ३०१ स्कोराद्योश्च ६९ ॥  
संयोगाद्योः सकारककारयोर्लोपो भवति धातोर्ज्ञे परे नाम्नाश्च रसे  
पदान्ते च ॥ ‘क्विलात्’ (सू० १४१) इति सस्य षत्वम् । ‘कष-  
संयोगे क्षः’ (सू० २४२) पुंक्षु ॥ ननु पुंक्ष्वित्यत्र मकार एव  
संयोगादिर्न सकारस्तर्हि कथं लोपः ? । पुंक्षु अत्र ‘स्कोराद्योश्च’ (सू०  
३०१) इत्यनेन संयोगाद्यस्य लोपे प्राप्ते मकारस्यैव लोपो भवेन्न तु  
सकारस्य । आदित्वाभावात् । संयोगाद्यस्तु पुंस् इत्यत्र शिरसि  
मकार एव । तस्मादादित्वं द्विविधम्—मुख्यमापेक्षिकं च । अत्र  
सत्यादित्वमापेक्षिकम् । पुंस् क इत्यत्र ककारापेक्षया सकार आदिः  
सकारापेक्षया मकार आदिरिति सकारस्यैव लोपः । हे पुमन्, हे पु-

मांसौ, हे पुमांसः ॥ एवं विद्वसृशब्दः । विद्वान्, विद्वांसौ, विद्वांसः ।  
 विद्वांसम्, विद्वांसौ ॥ ३०२ वसोर्व उः ७० ॥ वसोः संबन्धी  
 वकार उत्वं प्राप्नोति शसादौ स्वरे परे तद्धिते ईपि ईकारे च ॥  
 विदुषः । विदुषा । 'वसां रसे' (सू० २३६) इति दत्वम् । विद्व-  
 ञ्याम्, विद्वद्भिः । विदुषे, विद्वञ्चाम्, विद्वञ्च्यः । विद्वत्सु । हे विद्वन्-  
 इत्यादि ॥ तद्धिते वैदुष्यम् ॥ एवं तस्थिवस्प्रभृतयः । तस्थिवान्,  
 तस्थिवांसौ, तस्थिवांसः । तस्थिवांसम्, तस्थिवांसौ । निमित्ताभावे  
 नैमित्तिकस्याप्यभावः । इटो वकारमुद्दिश्य प्राप्तत्वाद्वस्योत्वे तन्निवृत्तिः ।  
 'आतोऽनपि' (सू० ८०३) इत्यालोपः । तस्थुषः । तस्थुषा, तस्थि-  
 वञ्चाम्, तस्थिवद्भिः । तस्थिवत्सु-इत्यादि । हे तस्थिवन्, हे तस्थि-  
 वांसौ, हे तस्थिवांसः ॥ सकारान्तः शुश्रुवस्शब्दः । शुश्रुवान्, शुश्रु-  
 वांसौ, शुश्रुवांसः । शुश्रुवांसम्, शुश्रुवांसौ । शुश्रुवस् शस् इति  
 स्थिते । 'वसोर्व उः' (सू० ३०२) 'व्योर्धातोरियुवौ स्वरे' (सू० १८०)  
 स्वरहीनं परेण संयोज्यम् । (सू० ३६) 'क्लितात्' (सू० १४१)  
 इति षत्वम् । शुश्रुवुषः । शुश्रुवुषा । 'वसां रसे' (सू० २३६)  
 'स्वसे चपा' (सू० ८९) शुश्रुवत्सु । हे शुश्रुवन्, हे शुश्रुवांसौ,  
 हे शुश्रुवांसः ॥ एवं पेचिवान्, पेचिवांसौ, पेचिवांसः । पेचिवांसम्,  
 पेचिवांसौ । शसि वस्योत्वे कृते यदागमत्वादिङ्गलोपः । पेचुषः ।  
 पेचुषा, पेचिवञ्चाम्-इत्यादि ॥ सकारान्तो जग्मिवस्शब्दः । जग्मि-  
 वान्, जग्मिवांसौ, जग्मिवांसः । जग्मिवांसम्, जग्मिवांसौ । इटः ककार-  
 मुद्दिश्य प्राप्तत्वाद्वस्योत्वे कृते इटोऽपि निवृत्तिः । 'गमां स्वरे' (सू०  
 ७८०) इत्यनेन उपधालोपः । जग्मुषः । जग्मुषा, जग्मिवञ्चाम् ।  
 जग्मिवत्सु-इत्यादि ॥ जगन्वान्, जगन्वांसौ, जगन्वांसः । जगन्वां-  
 सम्, जगन्वांसौ । शसि वस्योत्वे कृते वकारनिमित्तस्य । 'भोनो धातोः'

(सू० ५२) इति नकारस्यापि मकारः । 'गमां खरे' (सू० ७८७) इति उपधालोपः । जम्मुषः । जम्मुषा, जगन्वञ्चाम्—इत्यादि । एवं जघन्वान्, जघन्वासौ, जघन्वांसः । जघन्वांसम्, जघन्वासौ, जघ्नुषः । जघ्नुषा, जघन्वञ्चाम्—इत्यादि ॥ सकारान्तः सुवचस्शब्दः । 'अत्वसोः सौ' (सू० २९४) सुवचाः, सुवचसौ, सुवचसः । सुवचसम्, सुवचसौ—इत्यादि ॥ हे सुवचः, हे सुवचसौ, हे सुवचसः ॥ एवं चन्द्रमसप्रभृतयः । 'अत्वसोः सौ' (सू० २९४) 'हसेपः सेलोपः' (सू० १५६) चन्द्रमाः, चन्द्रमसौ, चन्द्रमसः । चन्द्रमसम्, चन्द्रमसौ, चन्द्रमसः । चन्द्रमसा, चन्द्रमोभ्याम्, चन्द्रमोभिः । चन्द्रमस्सु-चन्द्रमः-सु । हे चन्द्रमः, हे चन्द्रमसौ, हे चन्द्रमसः—इत्यादि ॥ 'उशनस्' शब्दस्य भेदः ॥ ३०३ उशनसाम् ७१ ॥ उशनस्-पुरुदंशस्-अनेहस् इत्येतेषां सेरघेडा भवति ॥ डित्वाट्टिलोपः । उशना, उशनसौ, उशनसः । उशनसम्, उशनसौ, उशनसः । उशनसा, उशनोभ्याम्, उशनोभिः । उशनस्सु-उशनःसु—इत्यादि ॥ उशनसौ धौ नान्तताऽदन्तता वा चक्तव्या । हे उशनन्-हे उशन-हे उशनः, हे उशनसौ, हे उशनसः ॥ उभयविकल्पे रूपात्रयम् । संबोधने तूशनसस्त्रिरूपमिति वचनात् ॥ पुरुदंशा, पुरुदंशसौ, पुरुदंशसः—इत्यादि ॥ अनेहा, अनेहसौ, अनेहसः । अनेहसम् । हे अनेहः—इत्यादि ॥ 'अदस्' शब्दस्य भेदः । 'त्यादेष्टेः' (सू० १७५) इति सर्वत्राकारः । अद् सि इति स्थिते ॥ ३०४ सौ सः ७२ ॥ अदसो दकारस्य सौ परे सत्त्वं भवति ॥ ३०५ सेरौ ७३ ॥ अदसः सेरौकारादेशो भवति ॥ असौ । द्विवचने अदस् औ इति स्थिते ॥ ३०६ दस्य मः ७४ ॥ त्यदादीनां दकारस्य मत्त्वं भवति स्यादौ परे । 'ओ औ औ' (सू० ४६) अमौ इति स्थिते ॥ ३०७ माद् ७५ ॥ ऊश्च उश्च ऊ । अदसो

मकारात्परस्य ह्रस्वस्य ह्रस्व उकारादेशो भवति दीर्घस्य च दीर्घ उकारादेशो भवति ॥ अमू । बहुवचने सर्वादित्वात् 'जसी' (सू० १४५) 'दस्य मः' (सू० ३०६) 'अ इ ए' (सू० ४३) अमे इति स्थिते ॥ ३०८ एरी बहुत्वे ७६ ॥ एः ई बहुत्वे । बहुत्वे सति मकारात्परस्य अदस एकारस्य ईकारादेशो भवति ॥ अमी । ईकार-विधिसामर्थ्यान्न तूकारः । अमुम्, अमू, अमून् । मत्वोत्वे कृते । 'एानाऽस्त्रियाम्' (सू० १६१) अमुना, अमूभ्याम्, अमीभिः । अदस् ङे इति स्थिते । ङकारो ङित्कार्यार्थः । 'त्यादेष्टेरः स्यादौ' (सू० १७५) 'दस्य मः' (सू० ३०६) 'सर्वादेः स्मट्' (सू० १४८) 'मादू' (सू० ३०७) अमुष्मै, अमूभ्याम्, अमीभ्यः । 'त्यादेष्टेरः स्यादौ' (सू० १७५) 'दस्य मः' (सू० ३०५) 'ङसिरत्' (सू० १३६) 'अतः' (सू० १४९) 'सवर्णे दीर्घः' (सू० ५२) 'मादू' (सू० ३०७) अमुष्मात्, अमूभ्याम्, आभ्यः । 'ङस्य' (सू० १३७) 'मादू' (सू० ३०७) 'क्विलात्' (सू० १४१) अमुष्य, अमुयोः, अमीषाम् । अमुष्मिन्, अमुयोः, अमीषु ॥ ३०९ सामान्ये अदसः कः स्यादिवच्च ७७ ॥ सामान्येऽर्थे वाच्ये सति अदसशब्दात्परः कः प्रत्ययो भवति कः स्यादिवज्ज्ञेयः ॥ एकस्योच्चारणेन बह्वर्थो लभ्यते तत्सामान्यम् । 'त्यादेष्टेरः स्यादौ' (सू० २८७) 'दस्य मः' (सू० ३०६) 'मादू' (सू० ३०७) अमुकः, अमुकौ, अमुके । अमुकम्, अमुकौ, अमुकान् । अमुकेन, अमुकाभ्याम्, अमुकैः-इत्यादि ॥ शेषं सर्वशब्दवद्रूपं ज्ञेयम् । चकारात्सात्परस्योत्वम् । तेन त्यादेष्टेरः' (सू० १७५) 'सौ सः' (सू० ३४) 'मादू' (सू० ३०७) अमुकः । इत्यादि ॥ इत्यपि भवति ॥ इति हसान्तपुंलिङ्गप्रक्रिया ॥ ९ ॥

### हसान्ताः स्त्रीलिङ्गाः १०

अथ हसान्ताः स्त्रीलिङ्गाः प्रदर्श्यन्ते ॥ ॥ तत्र हकारान्त उपा-  
नहशब्दः ॥ ३१० नहो धः १ ॥ नहो हकारस्य धकारादेशो  
भवति धातोर्ज्ञसे परे नाम्नश्च रसे पदान्ते च ॥ 'वाऽवसाने' (सू०  
२४०) उपानत्-उपानद्, उपानहौ, उपानहः । 'खसे चपा ज्ञसा-  
नाम्' (सू० ८९) उपानत्सु । हे उपानत्-हे उपानद्, हे उपानहौ,  
हे उपानहः ॥ वकारान्तो दिव्शब्दः ॥ ३११ दिव औ २ ॥ दिवः  
औ । दिवो वकारस्य औकारादेशो भवति सौ परे ॥ 'इ यं खरे'  
(सू० ३३) द्यौः, दिवौ, दिवः । दिवम् ॥ ३१२ वामि ३ ॥  
दिवो वकारस्य वा आत्वं भवति अमि परे । द्याम् । दिवो, दिवः ।  
दिवा ॥ ३१३ उ रसे ४ ॥ उ रसे । दिवो वकारस्य उकारादेशो  
भवति रसे पदान्ते च ॥ द्युभ्याम्, द्युभिः । दिवे, द्युभ्याम्, द्युभ्यः ।  
दिवः, द्युषु । हे द्यौः, हे दिवौ, हे दिवः ॥ रेफान्तश्चतुरशब्दो बहुवच-  
नान्तः ॥ ३१४ त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृचत् ५ ॥ त्रिचतुरोः  
स्त्रियां तिसृचतसृ । ऋदित्यव्ययम् । स्त्रियां वर्तमानयोस्त्रिचतुरश-  
ब्दयोस्तिसृ चतसृ इत्येतावादेशौ भवतः । ऋकारश्च ऋचत् ॥ ततः  
'स्तुराद्' (सू० १८९) इत्याद् भवति । 'ऋ रम्' (सू० ४०) तिस्रः,  
तिस्रः, तिसृभिः, तिसृभ्यः, तिसृभ्यः ॥ ३१५ तिसृचतसृशब्दयो-  
र्नामि दीर्घत्वं न वक्तव्यम् ६ ॥ छन्दसि वा दीर्घत्वम् । तिसृगां-  
तिसृणाम् । तिसृषु ॥ चतस्रः, चतस्रः, चतसृभिः, चतसृभ्यः, चतसृभ्यः,  
चतसृणाम्-चतसृणाम्, चतसृषु ॥ स्त्रियामिति त्रिचतुरोर्बिशेषणस्त्रि-  
यां गौणयोर्नेतावादेशौ स्तः प्रियास्त्रयस्त्रीणि वा यस्याः सा प्रियत्रिः,  
प्रियत्री, प्रियत्रयः । बुद्धिवत् । यदा स्त्रियां मुख्यौ लिङ्गान्तरे गौणौ  
तदादेशौ स्त एव । प्रियास्तिस्रो यस्य सः प्रियतिसा । 'सेरा' (सू०



१८४) प्रियतिस्रौ, प्रियतिस्रः । प्रियतिस्रम्, प्रियतिस्रौ, प्रियतिस्रः । प्रियतिस्रा, प्रियतिस्रभ्याम्, प्रियतिस्रभिः । प्रियतिस्रषु ॥ क्लीबे प्रिया-  
स्तिस्रो यस्य तत्प्रियतिस्र, प्रियतिस्रणी, प्रियतिस्रणि ॥ एवं प्रियाश्च-  
तस्रो यस्य सः प्रियचतसा, प्रियचतस्रौ, प्रियचतस्रः ॥ क्लीबे । प्रिय-  
चतस्र, प्रियचतस्रणी, प्रियचतस्रणि ॥ रेफान्तो गिरशब्द ॥ ३१६  
खोर्विहसे ७ ॥ धातोरिकारोकारयोर्दीर्घो भवति रेफकारयोर्हसप-  
रयोः ॥ गीः, गिरौ, गिरः । गिरम्, गिरौ, गिरः । गिरा, गीर्भ्याम्,  
गीर्मिः । हे गीः, हे गिरौ, हे गिरः ॥ एवं पुरुषुरादयः ॥ धकारान्तः  
समिध्शब्दः । 'वाडवसाने' (सू० २४०) समित्-समिद्, समिधौ,  
समिधः । समिधम्, समिधौ, समिधः । समिधा, समिध्याम्, समिद्धिः ।  
'खसे चपा झसानाम्' (सू० ८९) समित्सु ॥ भकारान्तः ककुम्-  
शब्दः । 'वाडवसाने' (सू० २४०) ककुप्-ककुब्, ककुभौ, ककुभः ।  
ककुभम्, ककुभौ, ककुभः । ककुभा, ककुब्भ्याम्, ककुब्भिः । ककुप्सु ।  
हे ककुप्-हे ककुब्, हे ककुभौ हे ककुभः । दकारान्तास्त्यदादयः । 'त्यादे-  
ष्टेरः स्यादौ' (सू० १७५) इति सर्वत्राकारः । 'आबतः स्त्रियाम्'  
(सू० २०३) इति आप् । पकारः सिलोपार्थः । सवर्णदीर्घत्वे  
कृते स्त्रीलिङ्गे सर्वाशब्दवद्रूपं ज्ञेयम् ॥ 'स्तः' (सू० २५०) सा ।  
औरी (सू० १९७) 'अ इ ए' (सू० ४३) त्ये त्याः ॥ सा, ते,  
ताः ॥ या, ये, याः ॥ एषा, एते, एताः ॥ एतां-एनाम्, एते-एने, एताः-  
एनाः । एतया-एनया । एतयोः-एनयोः ॥ का, के, काः ॥ मका-  
रान्त इदम्शब्दः ॥ ३१७ इयं स्त्रियाम् ८ ॥ इदम्शब्दस्य स्त्रिया-  
मियं भवति सिसहितस्य । इयं, इमे, इमाः । इमां-एनाम्, इमे-एने,  
इमाः-एनाः । 'अन टौसोः' (सू० २७१) 'टौसोरे' (सू० १९९)

अनया, आभ्याम्, आभिः । इदम् डे इति स्थिते । 'त्यादेष्टेरः स्यादौ' (सू० २८७) । 'दस्य मः' (सू० २४०) । 'आबतः स्त्रियाम्' (सू० २०३) । 'ङितां यद्' (सू० २०१) । 'यटोच्च' (सू० २०४) । 'स्म्यः' (सू० २०२) । 'सवर्णे दीर्घः सह' (सू० ५२) । अस्यै, आभ्याम्, आभ्यः । अस्याः, अनयोः-एनयोः, आसाम् । 'आम्हेर्नियञ्च' (सू० १८३) अस्याम्, अनयोः-एनयोः, आसु । चकारान्तस्त्वच्शब्दः । 'चोः कुः' (सू० २८५) इति कुत्वम् । 'वाऽवसाने' (सू० २४०) त्वक्-त्वग्, त्वचौ, त्वचः । त्वचम्, त्वचौ, त्वचः । त्वचा, त्वग्भ्याम्, त्वग्भिः । 'चोः कुः' (सू० २८५) । 'क्लितात्' (सू० १४१) । 'कषसंयोगे क्षः' (सू० २४२) । त्वक्षु । हे त्वक्-हे त्वग्, हे त्वचौ, हे त्वचः । एवं ऋच्-वाच्प्रभृतयः । पकारान्तोऽप्शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः स्त्रीलिङ्गः । 'न्सम्महतोऽधौ दीर्घः शौ च' (सू० २९३) आपः-अपः ॥ ३१८ भिदपाम् ९ ॥ भिद् अपाम् । अबादीनां भकारे परे दत्वं भवति ॥ अद्भिः, अद्भ्यः, अद्भ्यः, अपाम्, अप्सु । हे आपः ॥ अबादीनामित्यादिग्रहणं गौणत्वेऽपि दत्वार्थम् । अप्शब्दस्य पञ्चसु यद्रूपं तत् स्वप्शब्दस्य रूपम् । अबादीनामित्यत्र अपः पाठे अप्शब्दस्यैव वक्तव्ये अपामित्यत्र बहुवचनात् अप् स्वप् बह्वाप् एते ग्राह्याः । स्वाप्ति तडागानि । बह्वाप्ति तडागानि । शोभना आपो यस्मिन् प्रदेशे स्वाप्, स्वापौ, स्वापः । हे स्वाप्—इत्यादि ॥ शकारान्तो दिश्शब्दः ॥ ३१९ दिशाम् १० ॥ दिश्-विश्-स्पृश् इत्यादीनां रसे पदान्ते च कुत्वं भवति ॥ दिश् विश् दृश् स्पृश् मृश् सृज् ऋत्विज् ददृक् उष्णिह् अश्नु युञ्ज् क्रुञ्च एते दिशामिति बहुवचनेन गृह्यन्ते । 'वाऽवसाने' (सू० २४०) दिक्-दिग्, दिशौ, दिशः । दिशम्, दिशौ, दिशः । दिशा, दिग्भ्याम्, दिग्भिः । दिशे । कुत्वम् ।

‘किलात्’ (सू० १४१) दिक्षु । हे दिक् हे दिग् ॥ दृक्-दृग्, दृशौ, दृशः ॥ स्पृक्-स्पृग्, स्पृशौ, स्पृशः ॥ सक्-सग्, सजौ, सजः ॥ ऋत्विक्-ऋत्विग्, ऋत्विजौ, ऋत्विजः ॥ ददृक्-ददृग्, ददृशौ, ददृक्षः ॥ दधृक्-दधृग्, दधृशौ, दधृक्षः ॥ उष्णिक्-उष्णिग्, उष्णिहौ, उष्णिहः । षकारान्तस्त्विषशब्दः । ‘षो डः’ (सू० २७७) ‘वाऽवसाने’ (सू० २४०) त्विद्-त्विङ्, त्विषौ, त्विषः । त्विषम्, त्विषौ, त्विषः । त्विषा, त्विङ्भ्याम्, त्विङ्भिः । त्विद्सु-त्विङ्सु । हे त्विद्-हे त्विङ्, हे त्विषौ, हे त्विषः ॥ ३२० सजुषाशिषो रसे पदान्ते च दीर्घो वक्तव्यः ११ ॥ सजूः, सजुषौ, सजुषः । आशीः, आशिषौ, आशिषः । आशिषम्, आशिषौ, आशिषः । आशिषा, आशीर्भ्याम्, आशीर्भिः—इत्यादि । आशीःषु-आशीषु । हे आशीः, हे आशिषौ, हे आशिषः ॥ स्त्रीलिङ्गस्यादसृशब्दस्य सौ न विशेषः । असौ । द्विवचनादौ ल्यादेष्टेरः स्यादौ (सू० १७५) अत्वे कृतेऽनन्तरम् । ‘आवतः स्त्रियाम्’ (सू० २०३) इत्याप् । ‘सर्वर्णे दीर्घः सह’ (सू० ५२) विभक्तिकार्यं प्राक् पश्चात् । ‘मादू’ (सू० ३०७) अमू, अमूः । अमूम्, अमू, अमूः । अमुया, अमूभ्याम्, अमूभिः । अमुष्यै, अमूभ्याम्, अमूभ्यः । अमुप्याः, अमूभ्याम्, अमूभ्यः । अमुप्याः, अमुयोः, अमूषाम् । अमुप्याम्, अमुयोः, अमूषु ॥ इति हसान्तस्त्रीलिङ्गप्रक्रिया ॥ १० ॥

### हसान्ता नपुंसकलिङ्गाः ११

अथ हसान्ता नपुंसकलिङ्गाः प्रदर्श्यन्ते ॥ तत्र रेफान्तो बाह्-शब्दः । ‘नपुंसकात्स्यमोर्लुक्’ (सू० २२४) रेफस्य विसर्गः । वाः । ‘ईमौ’ (सू० २१६) वारी । अयम् इति विशेषणानुज्ञा भवति ।

३१९) । 'नश्वापदान्ते झसे' (सू० ९५) जगन्ति । पुनरपि ॥  
 महत्-महद्, महती । 'न्सम्महतो' (सू० २९३) । 'नश्वापदान्ते  
 झसे' (सू० ९५) महान्ति । पुनरपि ॥ सकारान्ताः पयस्-वचस्-  
 तेजस्-यशस्प्रभृतयः ॥ पयः, पयसी । 'न्सम्महतो' (सू० २९३)  
 पयांसि । पुनरपि ॥ वचः, वचसी, वचांसि । पुनरपि ॥ यशः, यशसी,  
 यशांसि । पुनरपि ॥ तेजः, तेजसी, तेजांसि । पुनरपि इत्यादि ॥  
 अदस्शब्दस्य स्यमोर्लुकि कृते 'स्रोर्विसर्गः' (सू० १२४) अदः  
 द्विवचनादौ टेरत्वे कृते मत्वोत्वे च कृते । अमू । 'त्यादेष्टेरः स्यादौ'  
 (सू० २८७) । 'दस्य मः' (सू० ३०६) । 'जश्शसोः शिः'  
 (सू० २१७) । 'नुमयमः' (सू० ११९) 'नोपधायाः' (सू० २२१) ।  
 'मादू' (सू० ३०७) अमूनि । पुनरपि । अमुना । 'अङ्घ्रि' (सू० १३१) ।  
 'मादू' (सू० ३०७) अमूभ्याम् । 'एस्मि बहुत्वे' (सू० १३५) 'एरी  
 बहुत्वे' (सू० ३०८) अमीभिः । 'सर्वोदेः स्मद्' (सू० १४८) ।  
 'ए ऐ ऐ' (सू० ४४) 'मादू' (सू० ३०७) अमुष्मै, अमूभ्याम्,  
 अमीभ्यः । 'ङ्सिरत्' (सू० १३६) । 'अतः' (सू० १४९)  
 'सर्वर्णे दीर्घः सह' (सू० ५२) 'मादू' (सू० ३०७) अमुष्मात्,  
 अमूभ्याम्, अमीभ्यः । 'ङत्स्य' (सू० १३७) । 'मादू' (सू० ३०७)  
 अमुष्य । 'ओसि' (सू० १३८) । 'ए अय्' (सू० ४१) अमुयोः ।  
 'सुडामः' (सू० १५०) । 'एस्मि बहुत्वे' (सू० १३५) अमी-  
 षाम् । 'ङि स्मिन्' (सू० १५१) अमुष्मिन्, अमुयोः । 'एस्मि  
 बहुत्वे' (सू० १३५) । 'क्लिञ्जत्' (सू० १४१) अमीषु ॥

इति हसान्तनपुंसकलिङ्गप्रक्रिया ॥ ११ ॥

## युष्मदस्मत्प्रक्रिया १२

अथ युष्मदस्मदोः स्वरूपं निरूप्यते ॥ तयोश्च वाच्यलिङ्गत्वा-  
त्रिष्वपि लिङ्गेषु समानं रूपम् ॥ अव्ययान्यलिङ्गानि ॥ अलिङ्गे युष्म-  
दस्मदी ॥ ३२६ त्वमहं सिना १ । सिसहितयोर्युष्मदस्मदोस्त्वमह-  
मित्येतावादेशौ भवतो यथासंख्येन ॥ त्वम् । अहम् ॥ ३२७  
युवावौ द्विवचने २ ॥ युष्मदस्मदोर्द्विवचने परे युव आव  
इत्येतावादेशौ भवतः ॥ ३२८ आमौ ३ ॥ युष्मदस्मदोः पर औ  
आम् भवति । 'सर्वे दीर्घः सह' (सू० ५२) युवाम् । आवाम् ॥  
३२९ यूयं वयं जसा ४ ॥ जसा सहितयोर्युष्मदस्मदोर्यूयं वयमित्ये-  
तावादेशौ भवतः ॥ यूयम्, वयम् ॥ ३३० त्वन्मदेकत्वे ५ ॥ युष्म-  
दस्मदोः त्वन्मदित्येतावादेशौ भवत एकत्वे गम्यमाने ॥ ३३१  
आम्भौ ६ ॥ आ अम्भौ । युष्मदस्मदोष्टेरात्वं भवति अमि  
सकारे भिसि च परे ॥ 'अम्शसोरस्य' (सू० १२६) त्वाम्, माम् ।  
युवाम्, आवाम् । 'त्यदादष्टेरः स्यादौ' (सू० १७५) इत्यत्वे कृते शसि  
दीर्घत्वम् ॥ ३३२ शसो नो वक्तव्यः ७ ॥ युष्मान् । अस्मान् ।  
'त्वन्मदेकत्वे' (सू० ३३०) ॥ ३३३ ए टाड्योः ८ ॥ युष्मदस्म-  
दोष्टेरेत्वं भवति टा डि इत्येतयोः परयोः ॥ 'ए अय्' (सू० ४१)  
त्वया मया । 'युवावौ द्विवचने' (सू० ३२७) 'अङ्घ्रि' (सू० १३१)  
युवाभ्याम्, आवाभ्याम् । 'आम्भौ' (सू० ३३१) युष्माभिः, अस्माभिः ॥  
३३४ तुभ्यं मद्यं ड्या ९ ॥ ड्या सहितयोर्युष्मदस्मदोस्तुभ्यं मद्यं  
इत्येतावादेशौ भवतः ॥ तुभ्यम् । मद्यम् । युवाभ्याम्, आवाभ्याम् ॥  
३३५ भ्यस् इभ्यम् १० ॥ युष्मदस्मदोः परो भ्यस् इभ्यं भवति ।

शकारो भकारादेशव्यावृत्त्यर्थः । तेनात्वैत्वे न भवतः । 'त्यदादेष्टेः'  
 ( सू० १७५ ) युष्मभ्यम्, अस्मभ्यम् ॥ ३३३ ङसिभ्यसोः श्नुः  
 ११ ॥ पञ्चम्या ङसिभ्यसोः श्नुर्भवति । शकारः सर्वादेशार्थः ।  
 उकार उच्चारणार्थः । त्वत्, मत् । युवाभ्याम् । आवाभ्याम् । 'त्यदादेष्टेः'  
 ( सू० १७५ ) युष्मत्, अस्मत् ॥ ३३७ तवमम ङसा १२ ॥ ङसा  
 सहितयोर्युष्मदस्मदोस्तव मम इत्येतावादेशौ भवतः ॥ तव, मम ।  
 'युवावौ द्विवचने' ( सू० ३२७ ) 'ओसि' ( सू० १३८ ) । 'ए अयू'  
 ( सू० ४१ ) युवयोः, आवयोः ॥ ३३८ सामाकम् १३ ॥ युष्म-  
 दस्मदोः परः सामाकं भवति । 'त्यदादेष्टेः' ( सू० १७५ ) युष्माकम्,  
 अस्माकम् । 'त्वन्मदेकत्वे' ( सू० ३३० ) । 'ए टाङ्योः' ( सू० ३३३ )  
 'ए अयू' ( सू० ४१ ) त्वयि, मयि । युवयोः, आवयोः । 'आम्भौ'  
 ( सू० ३३० ) युष्मासु, अस्मासु ॥ अथानयोगौणत्वे रूपविशेषो  
 निरूप्यते ॥ यदा एकत्वे द्वित्वे च युष्मदस्मदी समासार्थस्तु अन्य-  
 संख्यस्तदा त्वन्मदोः युवावौ च भवतः । वैपरीत्ये तु न स्तः । सिज-  
 सङ्खेडस्सु परेषु ये आदेशास्ते सदा भवेयुः । तथा चोक्तं पाणिनीये—

समस्यमाने द्वेकत्ववाचिनी युष्मदस्मदी ।

समासार्थोऽन्यसंख्यश्चेद्युवावौ त्वन्मदावपि ॥ ४५ ॥

सुजैषङ्खेडस्सु परत आदेशाः स्युः सदैव ते ।

त्वाहौ यूयवयौ तुभ्यमह्यौ तवममावपि ॥ ४६ ॥

एते परत्वाद्वाधन्ते युवावौ विषये स्वके ।

त्वन्मदावपि बाधन्ते पूर्वविप्रतिषेधतः ॥ ४७ ॥

द्वेकसंख्यः समासार्थो बह्वर्थे युष्मदस्मदी ।

तयोरद्वेकतार्थत्वान्न युवावौ त्वमौ नच ॥ ४८ ॥

टिप्प०—१ स्तो युवां वौ त्वमावपि इति पाठः । २ सिजसङ्खे इति पाठः ।

३ त्वमावपि इत्यपि क्वचित्.

‘समासश्चान्वये नाम्नाम्’ (सू० ४६७) इति समाससंज्ञायाम् ।  
 अत्यादयः कान्ताद्यर्थे द्वितीयया ॥ कान्ताद्यर्थे अत्यादयो द्वितीयया  
 सह समस्यन्ते, स द्वितीयातत्पुरुषः समासो भवतीति ॥ त्वां मां वा  
 अतिक्रान्त इति विग्रहे । अतित्वम्, अत्यहम् । अतित्वाम्, अतिमाम् ।  
 अतियूयम्, अतिवयम् । अतित्वाम्, अतिमाम् । अतित्वाम्, अति-  
 माम् । अतित्वान्, अतिमान् । अतित्वया, अतिमया । अतित्वाभ्याम्,  
 अतिमाभ्याम् । अतित्वाभिः, अतिमाभिः । अतितुभ्यम्, अतिमह्यम् ।  
 अतित्वाभ्याम्, अतिमाभ्याम् । अतित्वभ्यम्, अतिमभ्यम् । अतित्वत्,  
 अतिमत् । अतित्वाभ्याम्, अतिमाभ्याम् । अतित्वत् । अतिमत् ।  
 अतितव, अतिमम । अतित्वयोः, अतिमयोः । अतित्वाकम्, अति-  
 माकम् । आमि टेरेत्वं केचिदिच्छन्ति । अतित्वयाम्, अतिमयाम् ।  
 अतित्वयि, अतिमयि । अतित्वयोः, अतिमयोः । अतित्वासु, अति-  
 मासु ॥ युवां आवां वा अतिक्रान्त इति विग्रहे । अत्र सिजसूडे-  
 ष्सु प्राग्वत् । औअम्औसु तुल्यम् । अतित्वम्, अत्यहम्, । अति-  
 युवाम्, अत्यावाम् । अतियूयम्, अतिवयम् । अतियुवाम्, अत्यावाम् ।  
 अतियुवाम्, अत्यावाम् । अतियुवान्, अत्यावान् । अतियुवया, अत्या-  
 वया । अतियुवाभ्याम्, अत्यावाभ्याम् । अतियुवाभिः, अत्यावाभिः ।  
 अतितुभ्यम्, अतिमह्यम् । अतियुवाभ्याम्, अत्यावाभ्याम् । अतियुव-  
 भ्याम्, अत्यावाभ्याम् । अतियुवत्, अत्यावत् । अतियुवाभ्याम्, अत्या-  
 वाभ्याम् । अतियुवत्, अत्यावत् । अतितव, अतिमम । अतियुवयोः,  
 अत्यावयोः । अतियुवाकम्, अत्यावाकम्, । (अतियुवयाम्, अत्यावयाम्,  
 इति केचित्) । अतियुवयि, अत्यावयि । अतियुवयोः, अत्यावयोः ।  
 अतियुवासु, अत्यावासु ॥ युष्मान्, अस्मान् वा अतिक्रान्त इति  
 विग्रहे । अतित्वम्, अत्यहम् । अतियुष्माम्, अत्यस्माम् । अति-

यूयम्, अतिवयम् । अतियुष्माम्, अत्यस्माम् । अतियुष्मान्, अत्यस्मान् । अतियुष्मया, अत्यस्मया । अतियुष्माभ्याम्, अत्यस्माभ्याम् । अतियुष्माभिः, अत्यस्माभिः । अतितुभ्यम् । अतिमह्यम् । अतियुष्माभ्याम्, अत्यस्माभ्याम् । अतियुष्मभ्यम्, अत्यस्मभ्यम् । अतियुष्मत्, अत्यस्मत् । अतियुष्माभ्याम्, अत्यस्माभ्याम् । अतियुष्मत्, अत्यस्मत् । अतितव, अतिमम । अतियुष्मयोः, अत्यस्मयोः । अतियुष्माकम्, अत्यस्माकम् । (अतियुष्मयाम्, अत्यस्मयाम् इति केचित्) अतियुष्मयि, अत्यस्मयि । अतियुष्मयोः, अत्यस्मयोः । अतियुष्मासु, अत्यस्मासु ॥ अनेनैव प्रकारेण सर्वमुन्नेयम् ॥ इति युष्मदस्मत्प्रक्रिया ॥ १२ ॥

### आदेशविशेषाः १३

अथानयोरादेशविशेषविधिर्निरूप्यते ॥ ३३९ युष्मदस्मदोः षष्ठी-चतुर्थीद्वितीयाभिस्तेमे वानौ वस्नसौ १ ॥ युष्मदस्मदोर्यथासंख्येनामी आदेशाः स्युः ॥ कीदृशयोः ? । षष्ठीचतुर्थी द्वितीयासहितयोः । सहितग्रहणाद्यवयोः पुत्रः युष्मत्पुत्रः । आवयोः पुत्रः अस्मत्पुत्र इत्यादौ विभक्तिलोपे कृते आदेशा नेति ज्ञेयम् । तत्रैकवचनेन सह तेमे भवतः । द्विवचनेन वानौ । बहुवचनेन वस्नसौ च ॥

स्वामी ते स समायातः स्वामी मे सांप्रतं गतः ।

नमस्ते भगवन् भूयो देहि मे मोक्षमव्ययम् ॥ ४९ ॥

स्वामी वां स जहासोच्चैर्दृष्ट्वा नौ दानयाचनाम् ।

राजा वां दास्यते दानं ज्ञानं नौ मधुसूदनः ॥ ५० ॥

टिप्प०-१ अत्र द्वितीयादिव्युत्क्रमनिर्देशात् प्रथमायामप्युक्तो भवतीति ज्ञेयम् । तथाहि रघुवंशे—‘एकं दृष्ट्वा धनुःपाणिं किं वो भीता व्यवस्थिताः’ इति । अत्र ‘यूयम्’ इत्यर्थे ‘वः’ इति प्रयोगः । वररुचिस्तु-तृतीयायामपि वः । वः कृतम्, युष्माभिः कृतमित्यर्थः । २ दानयातनाम् इति पाठः क्वचित् ।



देवो वामवताद्विष्णुर्नरकाच्चौ जनार्दनः ।

स्वामी वो बलवान् राजा स्वामी नोऽसौ जनार्दनः ॥ ५१ ॥

नमो वो ब्रह्मविज्ञेभ्यो ज्ञानं नो दीयतां धनम् ।

सानन्दान्वः प्रपश्यामः पश्यामो नः सुदुःखिनः ॥ ५२ ॥

३४० त्वामामा २ ॥ अमा सहितयोर्युष्मदस्मदोस्त्वा मा इत्ये-  
तावादेशौ भवतः ॥

पश्यामि त्वां मदालीढं पश्य मां मदभेदकम् ।

पश्यामि त्वा जगत्पूज्यं पश्य मा जगतांपतिम् ॥ ५३ ॥

३४१ नादौ ३ ॥ पादादौ वर्तमानयोर्युष्मदस्मदोर्नैते आदेशा  
भवन्ति ॥

मम स्वामी भवेत्कृष्णस्तव स्वामी महेश्वरः ।

तव मित्राणि यानि स्युर्मम मित्राणि तान्यपि ॥ ५४ ॥

तव ये शत्रवो राजन् मम तेऽप्यतिशत्रवः ।

संबोधनपदादग्रे न भवन्ति वसादयः ॥ ५५ ॥

अग्रे तव । देवास्मान्पाहि ॥ ३४२ पदात्परयोरनयोरेते आदेशा  
वक्तव्याः ४ ॥ त्वां पातु, मां पातु ॥ ३४३ एते आदेशा

अन्वादेशे नित्यमनन्वादेशे वा वक्तव्याः ५ ॥

यस्त्वं विश्वस्य जनकस्तस्मै ते विष्णवे नमः ।

अनन्वादेशे तु त्वं मे मम वा देवोऽसि ॥ ३४४ विद्यमानपूर्वा-  
त्प्रथमान्तात्परयोरनयोरन्वादेशेऽप्येते आदेशा वा वक्तव्याः ६

भक्तस्त्वमप्यहं तेन हरिस्त्वा त्रायते स मा ॥ ५६ ॥

३४५ अचाक्षुषज्ञानार्थधातूनां योगे नैते आदेशा वक्तव्याः ७ ॥

चेतसा त्वामीक्षते ध्यायति स्मरतीति वा ॥ चाक्षुषज्ञानार्थधातुयोगे  
तु भक्तस्त्वा पश्यति चक्षुषा । युक्तयुक्तेऽपि निषेधः । भक्तस्तव रूपं

ध्यायति, ध्यायते । रूपेण सह सम्बन्धाच्चात्नेन युक्तं रूपं तद्रूपेण युक्तस्य तवेत्यस्य युक्तयुक्तत्वात् ॥

संबोधनपदादग्रे न भवन्ति वसादयः ।

३४६ विशेष्यपूर्वं संबोधनेतरपूर्वं संबोधनं हित्वा अन्यस्मात्संबोधनात्परयोर्नैते आदेशा भवन्ति ८ ॥ इति केचित् ॥

देवास्मान्पाहि नृहरे विष्णोऽस्मान्पाहि सर्वतः ॥ ५७ ॥

विशेष्यपूर्वात् । हरे कृपालो नः पाहि । संबोधनेतरपूर्वात् । सर्वदा रक्ष देव नः ॥ ३४७ चादिभिश्च ९ ॥ चादिभिरपि योगे नैते आदेशा भवन्ति ॥

युवयोरावयोश्चेशो हरिर्मामेव रक्षतु ।

तुभ्यं मद्यं च देवेशो दद्याच्छं तुभ्यमेव च ॥ ५८ ॥

च वा ह अह एव । आदिशब्देनैते पञ्चैव गृह्यन्ते, नान्ये । ‘नचवाहहैवयोगे’ इति पाणिनीयवचनात् ॥ साक्षाद्योगेऽयं निषेधः । न पुनर्युक्तयुक्ते शिवो हरिश्च मे स्वामीत्यादौ ॥ ३४८ चादिर्निपातः १० ॥ च वा ह अह एव एवं नूनम् पृथक् विना नाना स्वस्ति अस्ति दोषा मृषा मिथ्या मिथस् अथो अथ ह्यम् श्वस् उच्चैस् नीचैस् स्वरः अन्तरः प्रातरः पुनरः भूयस् आहोस्वित् सह नम ऋते अन्तरेण अन्तरा नमस् अलम् कृतम् । अमानोनाः प्रतिषेधे । ईषत् किल खलु वै आरात् दूरात् भृशं यत् तत् । स्वराश्च ॥ इत्येवमादिर्गणो निपातसंज्ञो भवति । द्रव्यवचनो नेति ज्ञेयम् ॥ ३४९ तत्रादिर्विभक्त्यर्थे निपात्यते ११ ॥ तस्मिन्निति—तत्र । यस्मिन्निति—यत्र । कस्मिन्निति—कुत्र, कुद्, क । अस्मिन्निति—अत्र । तस्मिन्काले—तदा । यस्मिन्काले—यदा । कस्मिन्काले—कदा । अन्यस्मिन्काले—अन्यदा । सर्वस्मिन्काले—सर्वदा । तेन प्रकारेण—तथा । येन प्रकारेण—यथा ।

केन प्रकारेण—कथम् । अनेन प्रकारेण—इत्थम् । एवं सर्वथा, उभयथा, अन्यथा, अन्यतरथा, इतरथा । तस्मादिति—ततः । यस्मादिति—यतः । अस्मादिति—अतः । एवं कुतः, अमुतः, युष्मत्तः, अस्मत्तः, भवत्तः । सर्व-विभक्तिकस्तस् इत्येके । पूर्वतः, सर्वतः । पूर्वस्मिन्निति—पुरस्तात् । अधरस्मिन्निति—अधस्तात् । परस्मिन्निति—परेण-परस्तात् ॥ ३५० आहिच्च दूरे १२ ॥ दूरेऽर्थे वाच्ये सति आहिच् प्रत्ययो भवति । दक्षिणस्यां दिशि दूरे इति दक्षिणाहि वसन्ति चाण्डालाः । चकारा-दाच् । दक्षिणा ॥ ३५१ किमः सामान्ये चिदादिः १३ ॥ सर्वविभक्त्यन्तार्त्किशब्दात्सामान्येऽर्थे चित् चन च इत्येते प्रत्यया भवन्ति ॥ कश्चित्, कश्चन । कचित्, कचन ॥ ३५२ तदधीनकात्स्न्य-योर्वा सात् १४ ॥ तदधीनार्थे कात्स्न्यार्थे वा सात्प्रत्ययो भवति ॥ राज्ञोऽधीनं—राजसात् । सर्वं भस्म इति—भस्मसात् । अग्नेः अधीन-मिति—अग्निसात् ॥ सात्प्रत्ययस्य षत्वं नेच्छन्ति ॥ ३५३ ऊरुर्यङ्गी-करणे १५ ॥ ऊरीकृत्य, उररीकृत्य ॥ ३५४ सद्यादिः काले निपात्यते १६ ॥ सद्यः, अद्य, सपदि, अधुना, इदानीम्, सम्प्रति, साम्प्रतम्, पूर्वेषुः, परेषुः, आशु, शीघ्रम्, क्षिति, तूर्णम्, अपरेषुः, यहि, तर्हि, जोषम्, मौनम्, अन्येषुः ॥ ३५५ प्रादिरुपसर्गः १७ ॥ प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निस्, दुस्, दुस्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप, श्रत्, अन्तर्, आविस् । अयं गण उपसर्गसंज्ञकः ॥ ३५६ प्राग्धातोः १८ ॥ उपसर्गाः प्राग्धातोः प्रयोक्तव्याः ॥ ३५७ तदव्ययम् १९ ॥ तदिदं प्रादिचादिशब्द-रूपमव्ययसंज्ञं भवति ॥ ३५८ क्त्वाद्यन्तं च २० ॥ क्त्वाद्यन्तं शब्दरूपमव्ययसंज्ञं भवति ॥ क्त्वा, च्वि, क्यप्, तुम्, णम्, डाच्, वत्, आम्, घा, कृत्वम्, शस्, सु इत्यादि । कृत्वा, गत्वा, भूत्वा इत्यादि ।

प्रणम्य, कर्तुं, गातुं, दुःखाकरोति, घटवत्, कुतस्तराम् ॥ ३५९ अव्य-  
याद्विभक्तेर्लुक् २१ ॥ अव्ययात्परस्या विभक्तेर्लुग् भवति ॥ आप-  
श्चेति वक्तव्यम् ॥ ३६० न शब्दनिर्देशे २२ ॥ अव्ययानां शब्द-  
त्वेन रूपनिर्देशे सति विभक्तेरलुग्भवति । अव्ययानां च न लिङ्गा-  
दिनियमः । तदुक्तं च,—

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।

वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥ ५९ ॥

उक्तान्यलिङ्गान्यव्ययानि ॥ इति आदेशविशेषप्रक्रिया ॥ १३ ॥

### स्त्रीप्रत्ययप्रक्रिया १४

अधुना लिङ्गविशेषविजिज्ञापयिषया स्त्रीप्रत्ययाः प्रस्तूयन्ते ॥  
'आवतः स्त्रियाम्' (सू० २३०) जाया, माया, श्रद्धा, मेधा, धारा  
इत्यादि ॥ ३६१ अजादेश्चाप् वक्तव्यः १ ॥

अजाश्चाकोकिलाबालावत्सादौ त्रिफलादिके ।

ईवादेरपवादार्थमजादेर्ग्रहणं पृथक् ॥ ६० ॥

अजादेश्चेति चकारग्रहणात् 'शूद्रा कन्यका' इत्यादौ प्रथमवयोवाचक-  
त्वेन जातिवाचकत्वेन च ईप् प्राप्तः, सोऽजादित्वान्न भवतीति सूचि-  
तम् ॥ अजा, एडका, कोकिला, बाला, शूद्रा, गणिका इत्यादि ॥  
३६२ काप्यतः २ ॥ कापि इ अतः । स्त्रियां कापि परे पूर्वस्या-  
कारस्य इकारो भवति ॥ कन्यकादौ न भवति ॥ करोतीति—कारिका ।  
पचतीति—पाचिका । पठतीति—पाठिका ॥

“वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः ।

आपं चैव हस्तान्तानां यथा वाचा निशा दिशा ॥ ६१ ॥

अवगाह्य, वगाह्य । अपिहितम्, पिहितम् । अपिधानम्, पिधा-

नम् ॥ ३६३ ह्रस्वो वा स्त्रियाम् ३ ॥ आपि परे तरादौ च पूर्वस्य ह्रस्वो वा भवति ॥ तरतमरूपकल्पास्तरादयः । वेण्येव वेणीका-वेणीका । नद्येव नदिका-नदीका । अतिशयेन प्रशस्या इति श्रेयसी । अतिशयेन श्रेयसी इति श्रेयसितरा-श्रेयसीतरा ॥ ३६४ तरतः पूर्वस्य पुंवत् ४ ॥ श्रेयस्तरा । विदुषितरा-विदुषीतरा-विद्वत्तरा । भवतितरा-भवतीतरा-भवत्तरा । सतितरा-सतीतरा-सत्तरा । नौकादौ न भवति । नौका ॥ ३६५ आवन्तस्यानावन्तस्यापि कप्रत्यये परे बहुव्रीहौ वा ५ ॥ बहुमालकः-बहुमालकः । सुसोमपाकः-सुसोमपकः । वाग्रहणादेवेयं विवक्षा । निश्चीय पतन्त्यनेकेष्वर्थेष्विति निपाताः । निपातानामनेकार्थत्वात् । उक्तं हि—

निपाताश्चोपसगाश्च धातवश्चेति ते त्रयः ।

अनेकार्थाः स्मृताः सर्वे पाठस्तेषां निदर्शनम् ॥ ६२ ॥

३६६ नृण ईप् ६ ॥ नकारान्ताहकारान्तादणन्ताच्च स्त्रियामीप् प्रत्ययो भवति ॥ दण्डिनी, करिणी, मालिनी । [ ईपि राज्ञः अलोपो वक्तव्यः ] । राज्ञी । 'श्वादेः' (सू० २५४) शुनी, कर्त्री, हर्त्री, औप-गवी ॥ ३६७ यस्य लोपः ७ ॥ इश्च अश्च यः तस्य लोपो भवति स्वरे यकारे च परे ॥ विभक्तिस्वरं युप्रत्ययं च वर्जयित्वान्यस्मिन्स्वरे यकारे च परे इति ज्ञेयम् । तेन देवे वातायुः ऊर्णायुः इत्यत्र न भवति ॥ समासतद्धितस्त्रीप्रत्ययेष्वयं विधिर्वेदितव्यः ॥ ३६८ खस्त्रादीनामन्नन्तानां संख्यावाचिनां च नेप् वक्तव्यः ८ ॥

खसा तिस्रश्चतस्रश्च ननान्दा दुहिता तथा ।

याता मातेति समैते खस्त्रादय उदाहृताः ॥ ६३ ॥

खसा, दुहिता, सीमा, पञ्चेत्यादि ॥ ३६९ पादन्तात्स्त्रियामीप् वा वक्तव्यः ९ ॥ द्विपदी-द्विपात् ॥ ३७० ऋचि पादन्तादावेव

वक्तव्यो न ईप् १० ॥ 'पादः पद्' ( सू० २८१ ) द्विपदा ऋक् ॥  
 ३७१ अन्नन्ताद्बहुव्रीहेर्डाप् वा वाच्यः ११ ॥ बहुसीमा, बहुसीमे,  
 बहुसीमाः । पक्षे,—बहुसीमा, बहुसीमानौ, बहुसीमानः । बहुयज्वा, बहु-  
 यज्वे, बहुयज्वाः । पक्षे,—बहुयज्वा, बहुयज्वानौ, बहुयज्वानः ॥ ३७२  
 उपधालोपिनोऽन्नन्ताद्बहुव्रीहेरीप् वा १२ ॥ बहुराज्ञी, बहुराज्ञौ ॥  
 पक्षे डाप् । बहुराजा,—बहुराजे । डापोऽप्यभावे बहुराजा, बहुराजानौ ॥  
 ३७३ संख्यादेर्दाम्न ईप् १३ ॥ द्विदाम्नी ॥ ३७४ घृत्रितः १४ ॥  
 षकारटकारऋकारानुबन्धाच्च स्त्रियामीप् प्रत्ययो भवति ॥ ष् च द् च  
 उश्च ऋश्च एषां समाहारः घृवृ । घृवृ इत् यस्येति घृत्रित् । तस्मात्  
 घृत्रितः । ष् वराकी । द् कुरुचरी । उ गोमती । ऋ पचन्ती । पठन्ती ॥  
 ३७५ धातोरुदितो न १५ ॥ पर्णध्वत् । उखासत् ॥ ३७६ अप्य-  
 योरात्रित्यम् १६ ॥ अपप्रत्ययप्रत्ययसंबन्धिनोऽकारात्परस्य शतु-  
 नित्यं नुमागमो भवति ईकारे ईपि च परे ॥ ऋ । पचन्ती पठन्ती  
 दीव्यन्ती ॥ ३७७ वा दीपोः शतुः १७ ॥ अवर्णात्परस्य शतुर्वा  
 नुमागमो भवति ईकारे ईपि च परे ॥ नुदती—नुदन्ती ॥ ३७८  
 नदादेः १८ ॥ नदादेर्गणात्स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति । नदी, गौरी,  
 गौतमी । नदादिराकृतिगणः । तेन चतुर्थी, पञ्चमी, द्वादशी, पौर्ण-  
 मासी इत्यादि ॥ ३७९ ईप्यनडुहो वाम् वक्तव्यः १९ ॥ अन-  
 द्वाही-अनडुही ॥ ३८० हायनाद्वयसि च २० ॥ द्विहायनी, चतु-  
 र्हायणी ॥ ३८१ पुरुषाद्वा परिमाणे २१ ॥ द्विपुरुषी-द्विपुरुषा  
 वा परिखा ॥ ३८२ इन्द्रादेरानीप् च २२ ॥ इन्द्रादेर्गणात्स्त्रिया-  
 मानीप्प्रत्ययो भवति ॥ इन्द्रादेरित्यादिशब्दादिन्द्र-ब्रह्मन् रुद्र-भव-शर्व-  
 मृद-वरुणादयः । इन्द्राणी ॥ ३८३ ब्रह्मन्शब्दस्य नलोपो वाच्यः  
 २३ ॥ ब्रह्माणी, रुद्राणी, मृडानी, वरुणानी । चकारान्मातुलाचार्यसू-

र्योपाध्यायार्यक्षत्रियेभ्यो वा ॥ ३८४ अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे  
 २४ ॥ अर्याणी-अर्या ॥ ३८५ हिमारण्ययोर्महत्त्वे २५ ॥ मह-  
 द्विमं-हिमानी । महदरण्यम्-अरण्यानी ॥ ३८६ यवादोषे २६ ॥  
 दुष्टो यवो-यवानी ॥ ३८७ यवनाल्लिप्याम् २७ ॥ यवनानां लिपिः-  
 यवनानी ॥ ३८८ ईप्समाहारे गुणश्च २८ ॥ त्रयाणां समाहारः  
 त्रयी ॥ ३८९ पुंयोगे च २९ ॥ पुंयोगे च स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति ॥  
 शूद्रस्य भार्या-शूद्री । गणकी ॥ ३९० गोपालिकादीनां न ३० ॥  
 गोपालिका, पशुपालिका ॥ ३९१ सूर्यादेवतायां चाप् ३१ ॥  
 सूर्यस्य स्त्री देवता-सूर्या । अन्या,-सूरी ॥ ३९२ जातेरयोपधात् ३२ ॥  
 जातिवाचिनोऽयकारोपधादकारान्तास्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति ॥ अस्त्री-  
 विषयादिति वाच्यम् । तेन मक्षिका बलाका इत्यादौ न ॥ ३९३  
 गवयहयमुकयमत्स्यमनुष्याणां न निषेधः ३३ ॥ गवयी इत्यादि ।  
 शूकरी, हंसी, कुक्कुटी, ब्राह्मणी । अयकारोपधग्रहणात् क्षत्रिया, वैश्या ॥  
 ३९४ शूद्राज्जातौ न ३४ ॥ शूद्रस्य जातिः-शूद्रा ॥ ३९५ मह-  
 त्पूर्वात्तु ईप् ३५ ॥ महाशूद्री आभीरजातिः ॥ पुंयोगे च ॥ महा-  
 शूद्रस्य भार्या-महाशूद्री ॥ ३९६ प्रथमवयोवाचिनोऽत ईप् वक्तव्यः  
 ३६ ॥ कुमारी, किशोरी, कलभी ॥ कन्याशब्दान्न । प्रथमवयो-  
 ग्रहणाद्वृद्धा स्थविरा इत्यत्र न । वधूटी चिरण्टी इत्यत्र ईप् भवत्येव ॥  
 अद्ग्रहणाच्छिशुः ॥ ३९७ स्वाङ्गाद्वा ३७ ॥ स्वाङ्गवाचिनो वा स्त्रिया-  
 मीप्प्रत्ययो भवति ॥ सुमुखी-सुमुखा ॥ मृगाक्षी-मृगाक्षा ॥ तन्वङ्गी-  
 तन्वङ्गा ॥ सुष्ठु आसमन्तादङ्गं-स्वाङ्गम् ॥ स्वस्य प्राणिनो अङ्गं  
 स्वाङ्गमित्युक्तेऽङ्गाङ्गिभावेन ज्ञानादेरपि स्वाङ्गत्वं स्यात् । अतः  
 स्वाङ्गलक्षणमाह-

प्राणिस्थमद्रवं मूर्तं स्वाङ्गं स्यादविकारजम् ।

तत्र दृष्टमतत्स्थं चेत्स्थितं तद्वच्च तादृशि ॥ ६४ ॥

पूर्वार्धस्य प्रत्युदाहरणानि ॥ सुमुखा शाला अप्राणिस्थत्वात् ॥  
सुखेदा द्रवत्वात् ॥ सुज्ञाना अमूर्तत्वात् ॥ सुशोफा विकारजत्वात् ॥  
उत्तरार्धस्योदाहरणानि ॥ सुकेशी सुकेशा वा रथ्या । अप्राणिस्थस्यापि  
प्राणिनि दृष्टत्वात् ॥ सुस्तनी-सुस्तना वा प्रतिमा प्राणिवत्प्राणिस-  
दृशे स्थितत्वात् ॥ स्वाङ्गत्वेऽपि वाशब्दस्य व्यवस्थितत्वात् । ओष्ठा-  
दिषु विकल्पः । वदनादिषु च वक्तव्यः । बिम्बोष्ठी-बिम्बोष्ठा ॥  
चारुकर्णी-चारुकर्णा । समदन्ती-समदन्ता । पद्मवदना । मृगनयना ॥  
३९८ नखमुखयोश्च संज्ञायां नेप् ३८ ॥ शूर्पनखा । गौरमुखा ॥  
३९९ नासिकाशब्दात्केवलाभेप् ३९ ॥ नासिका ॥ ४०० कृदि-  
कारादक्तेरीप् वा वक्तव्यः ४० ॥ अङ्गुली-अङ्गुलिः ॥ धूली-धूलिः ॥  
आजी-आजिः ॥ अक्तेरिति विशेषणात्कृतिः । भूतिः ॥ ४०१  
ऐच्च मन्वादेः ४१ ॥ मन्वादेर्गणात्स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति ऐकारा-  
देशश्च ॥ चकारान्मनोष्टेरौ वा ॥ आदिशब्दान्मन्वमिवृषाकपिपूतक-  
तुकुसितकुसिदा ग्राह्याः ॥ मनोर्भार्या-मनायी-मनावी । अत्र विक-  
ल्पेन पक्षे मनुः ॥ अग्नेर्भार्या-अग्नायी ॥ पूताः क्रतवो यस्येति-पूत-  
क्रतुः । पूतक्रतोर्भार्या-पूतक्रतायी इत्यादि ॥ ४०२ पत्न्यादयः  
४२ ॥ पत्न्यादयः शब्दा निपात्यन्ते ॥ पाणिग्रहणकर्ता पतिः, तस्य  
स्त्री पत्नी ॥ भर्तृयोगे एव । अन्यत्र,—गवां पतिः स्त्री ॥ समानः  
पतिर्यस्याः सा—सपत्नी ॥ भर्तृयोगे एव ॥ अन्तर्वन्ती । अन्यत्र,—अन्त-  
र्वन्ती ॥ पतिवन्ती सभर्तृका । अन्या पतिमती । सखी, अशिखी,

१ 'अद्रवं मूर्तिमत्स्वाङ्गं प्राणिस्थमविकारजम् । अतत्स्थं तत्र दृष्टं च तेन  
चेत्तत्तथायुतम् ॥' कौ. पा.



अर्धजरती, युवती ॥ प्रथमं सूर्योऽञ्चति यस्यां सा—प्राची ॥ पश्चाद-  
ञ्चति यस्यां सा—प्रतीची ॥ उदीची ॥ नृशब्दस्य णीप्प्रत्ययो भवति ॥  
४०३ णीपि परे नुवृद्धिर्वाच्या ४३ ॥ नारी । दारशब्दो नित्यं  
बहुवचनान्तः पुंलिङ्गः । दाराः । दारान् । दारैः । दारेभ्यः ।  
दारैभ्यः । दाराणाम् । दारेषु । हे दाराः ॥ ४०४ वोर्गुणात् ४४ ॥  
उकारान्ताद्गुणवाचिनो वा स्त्रियामीप्प्रत्ययो भवति ॥ पट्ठी-पटुः ॥  
मृद्वी-मृदुः ॥ तन्वी-तनुः ॥ ४०५ खरुसंयोगोपधान्न ४५ ॥  
खरुः । पाण्डुः ॥ ४०६ उत ऊः ४६ ॥ उकारान्ताद्वा ऊप्रत्ययो  
भवति ॥ पङ्क्तुः-पङ्क्तूः ॥ वामोरुः-वामोरूः ॥ वाशब्दाद्रज्ज्वादौ न  
भवति । रज्जुः । घेनुः ॥ ४०७ यूनस्तिः ४७ ॥ युवन्शब्दा-  
स्त्रियां तिप्रत्ययो भवति । युवतिः ॥ एभ्यो नामत्वात्स्यादयः ॥  
आबन्तात् । आपः (सू० १९६) इति । ईबन्तात् हसेपः सेर्लोपः  
(सू० १५६) इति सिलोपः ॥ इति स्त्रीप्रत्ययप्रक्रिया ॥ १४ ॥

### कारकप्रक्रिया १५

अथ विभक्त्यर्थो निरूप्यते ॥ तत्र क्रियासिद्धयुपकारकं कार-  
कम् । तच्च षड्विधम्—

कर्ता कर्म च करणं संप्रदानं तथैव च

अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् ॥ ६५ ॥

उक्तानुक्ततया द्वेधा कारकाणि भवन्ति षट् ।

उक्ते तु प्रथमैव स्यादनुक्ते तु यथाक्रमम् ॥ ६६ ॥

तानि विभक्तिरित्यभिधीयन्ते ॥ ४०८ लिङ्गार्थे प्रथमा ०१ ॥  
धातुप्रत्ययातिरिक्तमर्थवच्छब्दरूपं लिङ्गं तस्यैवार्थे सन्मात्रे प्रथमा  
विभक्तिर्भवति ॥ लिङ्गार्थे प्रथमा । एतस्य सूत्रस्येमान्युदाहरणानि  
सा० व्या० ६

उच्चैः, नीचैः—इत्यादीनि ॥ सकलकारकभेदशून्यं वस्तु—सत्ता ॥  
लिङ्गादयोऽपि प्रथमार्था इति केचित् ॥ आदिशब्दाद्वचनपरि-  
माणमात्रेऽपि प्रथमा ॥ लिङ्गे,—कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम् ॥ वचने,—एकः,  
द्वौ, बहवः ॥ परिमाणे,—खारी, द्रोणः, आढकम् ॥

अष्टमुष्टि भवेत्किंचित्किंचिदष्टौ च पुष्कलम् ।

पुष्कलानि च चत्वारि आढकं परिकीर्तितम् ॥ ६७ ॥

चतुर्भिराढकैर्द्रोणः खारी षोडशभिश्च तैः ।

तत्सद्ब्रह्म ।

रविरिव राजते राजा, रोषात्कुमारी रोरुयते ।

बोभुज्यते भुवं भूपालः, प्रागास्तां रामलक्ष्मणौ ॥ ६८ ॥

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-

स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।

परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्य

निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥ ६९ ॥

कुमाराः शेरते खैरं रोरुयन्ते च नारकाः ।

जेगीयन्ते च गीतज्ञा मेग्रीयन्ते रुजार्दिताः ॥ ७० ॥

४०९ आमन्त्रणे च २ ॥ आमन्त्रणे अभिमुखीकरणे प्रथमा  
विभक्तिर्भवति ।

मां समुद्धर गोविन्द प्रसीद परमेश्वर ।

कुमारौ खैरमासाथां क्षमध्वं भो तपस्विनः ॥ ७१ ॥

४१० भोक्ष भगोस् अघोस् ३ ॥ एते शब्दा निपात्यन्ते  
धिविषये ॥ भवद्भगवदधवच्छब्दानां भोस् भगोस् अघोस् इत्येत-  
च्छब्दरूपत्रयं क्रमेण निपात्यते ॥

क्षमस्व भो दुराराध्य भगोस्तुभ्यं नमोऽस्तु ते ।

अधीष्व भो महाप्राज्ञ घातयाधोः स्वधस्मरम् ॥ ७२ ॥

४११ शेषाः कार्ये ४ ॥ कर्तृसाधनयोर्दानपात्रे विश्लेषावधौ संबन्ध-  
आधारभावयोः शेषा विभक्तयो द्वितीयाद्या एष्वर्थेषु भवन्ति । कार्ये  
कर्मकारके उत्पाद्ये आप्ये संस्कार्ये विकार्ये च द्वितीया विभक्ति-  
र्भवति ॥ ४१२ कर्तुरीप्सिततमं कर्म ५ ॥ कर्तुः क्रियया आमु-  
मिष्टतमं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात् ॥ हरिं भजति ॥ ४१३ तथा युक्तं  
चानीप्सितम् ६ ॥ ईप्सिततमवत्क्रियया युक्तमनीप्सितमपि कारकं  
कर्मसंज्ञं स्यात् ॥ तच्चानीप्सितं द्विविधम्—द्वेष्यमितरच्च ॥ विषं  
भुङ्क्ते । ग्रामं गच्छंस्तृणं स्पृशति ॥ तच्च कर्मकारकं चतुर्विधम्—  
उत्पाद्यं, आप्यं, संस्कार्यं, विकार्यं च ॥ उत्पत्त्यर्हमुत्पाद्यं, यदमूत्वा  
भावि तदुत्पाद्यं वा ॥ यत्सिद्धमेव प्राप्यते तदाप्यम् ॥ संस्कारो नाम  
प्राक्तनकर्मजो गुणः, कश्चिद्गुणातिशयो वा गुणाधानं मलापकर्षो वा  
इति चतुर्विधः संस्कारः । संस्कारमर्हतीति संस्कार्यम् ॥ विकारो  
नाम पूर्वावस्थापरित्यागेनावस्थान्तरप्राप्तिः ॥

कटं करोति कारुको रूपं पश्यति चाक्षुषः ।

राज्यं प्राप्नोति धर्मिष्ठः सोमं सुनोति सोमपाः ॥ ७३ ॥

कटादिकमुत्पाद्यादि चतुर्विधं कर्म ॥ गुणातिशयसंस्कार्यं यथा—  
व्रीहीन्यवान्वा प्रोक्षति । प्रोक्षणेन व्रीहिषु कश्चिद्गुणातिशयो जन्यते ॥  
गुणाधानमलापकर्षयोरुदाहरणम्—वस्त्रं रञ्जयति देवदत्तः । रजको  
वस्त्रं क्षालयति ॥

अभिसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु ।

द्वितीयाग्नेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ॥ ७४ ॥

अभितोग्रामं, सर्वतोग्रामं नदी बहति ॥ धिग्देवदत्तं, देवदत्तस्य

षिक् ॥ ४१४ उपर्यध्यधसः सामीप्ये ७ ॥ एषां द्वे स्तो देशतः  
 काल्तश्च सामीप्ये ॥ ४१५ तस्य परमाग्रेडितम् ८ ॥ द्विरुक्तस्य  
 परं रूपमाग्रेडितसंज्ञं स्यात् ॥ उपर्युपरि पुरोहितं याचकाः पतन्ति ॥  
 अधोऽधो नगरं निधानानि सन्ति ॥ ४१६ परितःसमयानिकषा-  
 हाप्रतियोगेऽपि ९ ॥ परितः कृष्णं गोपाः ॥ निकषा समया  
 सामीप्ये । समया ग्रामं उपवनानि वर्तन्ते ॥ निकषा ग्रामं निहतः  
 शत्रुः ॥ हा कृष्णाभक्तम्, तस्य शोच्यत इत्यर्थः ॥ बुभुक्षितं न  
 प्रतिभाति किञ्चित् ॥ ४१७ लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु  
 प्रतिपर्यनवः १० ॥ एष्वर्थेषु विषयभूतेषु प्रत्यादयः कर्मप्रवचनी-  
 यसंज्ञाः स्युः ॥ ४१८ कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ११ ॥ एतेन योगे  
 द्वितीया स्यात् ॥ लक्षणे,—वृक्षं प्रति परि अनु वा विद्योतते विद्युत् ॥  
 मागे,—लक्ष्मीर्हरिं प्रति परि अनु वा, हरेर्भाग इत्यर्थः ॥ वीप्सायाम्,—  
 वृक्षं वृक्षं प्रति परि अनु वा संचरति ॥ ४१९ कालाध्वनोनैरन्तर्ये  
 १२ ॥ अविच्छिन्नसंयोगत्वं नैरन्तर्यम् । कालाध्ववाचकशब्दानां नैर-  
 न्तर्येऽर्थे वाच्ये सति द्वितीया विभक्तिर्भवति । मासमधीते देवदत्तः ॥  
 क्रोशं पर्वतः ॥ नैरन्तर्ये किम् ? । मासस्य द्विरधीते ॥ क्रोशस्यैकदेशे  
 पर्वतः ॥ ४२० कर्तरि प्रधाने क्रियाश्रये साधने च १३ ॥ प्रधाने  
 कर्तरि क्रियासिद्ध्युपकारके करणेऽर्थे च तृतीया विभक्तिर्भवति ॥

क्रियायाः परिनिष्पत्तिर्यच्चापारादनन्तरम् ।

विवक्ष्यते यदा यत्र करणं तत्तदा स्मृतम् ॥ ७५ ॥

भिन्नः शरेण रामेण रावणो लोकरावणः ।

कराग्रेण विदीर्णोऽपि वानरैर्युध्यते पुनः ॥ ७६ ॥

४२१ प्रकृत्यादिभ्यः १४ ॥ प्रकृत्यादिभ्यः शब्देभ्यस्तृतीया  
 स्यात् ॥ प्रकृत्या चारुः ॥ प्रायेण अलसः ॥ सुखेन याति ॥ गोत्रेण

गार्ग्यः, गार्ग्योऽस्य गोत्रमित्यर्थः ॥ ४२२ दानपात्रे संप्रदान-  
कारके चतुर्थी १५ ॥ सम्यक् श्रेयोबुद्ध्या प्रदीयते यस्यै तत्संप्रदान-  
कारकम् ॥ वेदविदे गां ददाति ॥ अन्यत्र,—राज्ञो दण्डं ददाति ॥  
रजकस्य वस्त्रं ददाति ॥

ददाति दण्डं पुरुषो महीपते-

न चातिभक्त्या न च दानकाम्यया ।

यदीयते वासनया सुपात्रे

तत्संप्रदानं कथितं कवीन्द्रैः ॥ ७७ ॥

अनभिहिते इत्येव । दानीयो विप्रः ॥ कचित्सम्यक्श्रेयोबुद्ध्यभावेऽपि  
चतुर्थी ॥ 'व्याजेन रघवे करम्' इति महाकविप्रयोगदर्शनात् ॥ तच्च  
संप्रदानं त्रिविधम्—प्रेरकमनिराकर्तृनुमन्तृ चेति ॥

त्यागेन कर्मणा व्याप्तं प्रेरकं चानुमन्तृ च ।

अनिराकर्तृ चेत्येतत्संप्रदानं त्रिधा स्मृतम् ॥ ७८ ॥

देहीति प्रेरयति तत्प्रेरकम् ॥ यथा—बटवे भिक्षां ददाति । यत्तु  
'इदमहं ददामि' इत्युक्तेऽनुमन्यते 'ओम्' इत्याह तदनुमन्तृ ॥ यथा—  
शिष्यो गुरवे गां ददाति ॥ यत्तु नानुमन्यते न निराकरोति तदनिराकर्तृ ॥  
यथा—सूर्यायार्घ्यं ददाति ॥ ४२३ क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि  
संप्रदानम् १६ ॥ पत्ये शेते ॥ ४२४ विश्लेषावधौ पञ्चमी १७ ॥  
विश्लेषो विभागस्तत्र योऽवधिः स चलतया अचलतया वा विवक्षि-  
तस्तत्रापादाने पञ्चमी ॥ विश्लेषो नाम संयोगपूर्वको विभागः ॥  
आधाराधेययोर्मध्ये आधारत्वेन यो ज्ञायमानः सोऽवधिः ॥ आधी-  
यतेऽस्मिन्नसौ आधारः ॥ आधातुं योग्यः आधेयः ॥ धावतोऽधाद-  
पतत् ॥ भूभृतोऽवतरति गङ्गा ॥ ४२५ संबन्धे षष्ठी १८ ॥

मेघभेदकयोः श्लिष्टः संबन्धोऽन्योन्यमुच्यते ।

द्विष्टो यद्यपि संबन्धः षष्ठ्युत्पत्तिस्तु भेदकात् ॥ ७९ ॥

मेघं विशेष्यमित्याहुर्भेदकं तु विशेषणम् ।

विशेष्यं तु प्रधानं स्यादप्रधानं विशेषणम् ॥ ८० ॥

प्रधानाप्रधानयोर्मध्येऽप्रधाने षष्ठी ॥ क्रियान्वयि प्रधानम् ॥  
क्रियानन्वय्यप्रधानम् ॥

राज्ञः स पुरुषो ज्ञेयः पित्रोरेतत्प्रपूजनम् ।

गुरुणां वचनं पथ्यं कवीनां रसवद्वचः ॥ ८१ ॥

सेव्यसेवकभावसंबन्धः पूज्यपूजकभावसंबन्धो बोध्यबोधकभाव-  
संबन्धो वाच्यवाचकभावसंबन्ध इति संबन्धश्चतुर्विधः ॥ ४२६ आधारे  
सप्तमी १९ ॥ आधारो नामाधिकरणम् ॥ षड्विधमधिकरणम्—  
औपश्लेषिकं, सामीपिकमभिव्यापकं, वैषयिकं, नैमित्तिकमौपचारिकं  
चेति ॥ औपश्लेषिकं त्रिविधम्—एकदेशवृत्त्यभिव्याप्यवृत्ति व्यङ्ग्य-  
वृत्तीति केषांचिन्मतम् ॥

कटे शेते कुमारोऽसौ वटे गावः सुशेरते ।

तिलेषु विद्यते तैलं हृदि ब्रह्मामृतं परम् ॥ ८२ ॥

युद्धे संनह्यते धीरोऽङ्गुल्यग्रे करिणां शतम् ।

भूमृत्सु पादपाः सन्ति गङ्गायां वरवालुकाः ॥ ८३ ॥

४२७ भावे सप्तमी २० ॥ क्रियालक्षणं भावस्तत्रापि सप्तमी ॥  
प्रसिद्धक्रियया अप्रसिद्धक्रियाया लक्षणबोधनं भावः ॥ देवे वर्षति  
चौर आयातः ॥ पतत्यंशुमालिनि पतितोऽरातिः ॥ ४२८ विनास-  
हनमक्रतेनिर्धारणस्वाम्यादिभिश्च २१ ॥ एतैरपि योगे द्वितीयाद्या  
विभक्तयो भवन्ति ॥ विना पापं सर्वं फलति ॥ अन्तरेणा-  
क्षिणी जीवितेन किम् ॥ अन्तरा त्वां मां मध्वित्यादिपदाद्वाङ्म ॥

४२९ अधिशीङ्गस्थासां कर्म २२ ॥ अधिपूर्वाणामेषामाधारः कर्म-  
संज्ञः स्यात् ॥ अधिशेते अधितिष्ठति अध्यास्ते वा वैकुण्ठं हरिः ॥  
४३० अभिनिविशश्च २३ ॥ अभिनीत्येतत्संघातपूर्वस्य विशतेर्धातो-  
राधारः कर्मसंज्ञः स्यात् । ग्रामं अभिनिविशते ॥ ४३१ उपान्वध्या-  
ङ्गसः २४ ॥ उपादिपूर्वस्य वसतेराधारः कर्मसंज्ञः स्यात् ॥ आवसथ्यं  
आवसति उपवसति अनुवसति अधिवसति ॥ ४३२ सहादियोगे  
तृतीयाऽप्रधाने २५ ॥ सह सदृशं साकं सार्धं सममिति सहादयः ॥  
सह शिष्येणागतो गुरुः ॥ सदृशश्चैत्रो मैत्रेण ॥ साकं नयनाभ्यां श्लक्ष्णा  
दन्ताः ॥ सार्धं धनिना धृतः साधुः ॥ समं शिष्याभ्यामधीते ॥  
समं शिष्येण गुरुणा भुज्यते ॥ ४३३ अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे  
चतुर्थ्यर्थे तृतीया २६ ॥ दास्या संयच्छते कामुकः । धर्म्ये तु,-  
भार्यायै संयच्छति ॥ ४३४ वारणार्थयोगे तृतीया २७ ॥ अलं  
विवादेन ॥ ४३५ नमःस्वस्तिस्वाहास्वधालं वषड्योगे चतुर्थी  
२८ ॥ नमो नारायणाय । स्वस्ति राज्ञे । सोमाय स्वाहा । पितृभ्यः  
स्वधा । अलं मल्लो मल्लाय । वषट् इन्द्राय ॥ ४३६ रुच्यर्थानां  
प्रीयमाणः २९ ॥ रुच्यर्थानां धातूनां प्रयोगे प्रीयमाणोऽर्थः  
संप्रदानसंज्ञः स्यात् ॥ हरये रोचते भक्तिः ॥ ४३७ ऋतआदियोगे  
पञ्चमी ३० ॥ ऋते अन्यः आरात् इतरः, अञ्चूत्तरपदं दिग्वाचकः  
शब्दः, आहि आच् एते ऋतआदयः ॥ अन्यशब्देनान्यार्था गृह्यन्ते ॥  
ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ॥ अन्यो गृहाद्विहारः ॥ आराद्वानात् ॥ इतरो  
ग्रामात् ॥ ४३८ ऋतेयोगे द्वितीयापि ३१ ॥ ज्ञानं ऋते ॥ चकारा-  
द्विनादियोगे तृतीयापञ्चम्यौ स्तः ॥ विना ज्ञानात् । ज्ञानेन विना ॥  
४३९ यतश्च निर्धारणम् ३२ ॥ द्रव्यगुणक्रियाजातिभिः समुदाया-  
त्पृथक्करणं यतस्तत्र षष्ठी स्यात् ॥ भवतां मध्ये यौ दण्डौ सं आयातु ॥  
क्रियापराणां भगवदाराधकः श्रेष्ठः ॥ गवां कृष्णा गौः संपन्नक्षीरा ॥ एतेषां

क्षत्रियः शूरतमः । इतरमतेऽत्र सप्तम्यपि ॥ ४४० स्वाम्यादिभिश्च  
 ३३ ॥ स्वाम्यादिभिरपि योगे षष्ठीसप्तम्यौ स्तः ॥ गोषु स्वामी, गवां  
 स्वामी ॥ गवामधिपतिः, गोष्वधिपतिः ॥ ४४१ कर्तृकार्ययोरक्तादौ  
 कृति षष्ठी ३४ ॥ कर्तरि कार्ये च षष्ठीविभक्तिर्भवति क्तादिवर्जित-  
 कृदन्ते शब्दे प्रयुज्यमाने ॥ व्यासस्य कृतिः, व्यासकर्तृका कृतिरित्यर्थः ॥  
 भारतस्य श्रवणम् ॥ ४४२ उभयप्राप्तौ कर्मणि ३५ ॥ उभयोः  
 प्राप्त्यर्थस्मिन्कृति तत्र कर्मण्येव षष्ठी स्यात् ॥ चित्रं गवां दोहोऽगो-  
 पेन ॥ ४४३ स्मृतौ च कार्ये ३६ ॥ स्मृत्यर्थे धातौ प्रयुज्यमाने च  
 कार्ये षष्ठी भवति ॥ मातुः स्मरति मातरं स्मरतीत्यस्मिन्नर्थे ॥ चका-  
 राद्वितीयापि । मातरं स्मरति ॥ ४४४ न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थ-  
 तुनाम् ३७ ॥ एषां प्रयोगे षष्ठी न ॥ लदेशाः । कुर्वन् कुर्वाणः सृष्टि  
 हरिः ॥ उ, -हरिं दिदृक्षुः अलंकरिष्णुर्वा ॥ उक्, -दैत्यान्धातुको हरिः ॥  
 अव्ययम्, -जगत्सृष्ट्वा सुखं कर्तुम् ॥ निष्ठा, -विष्णुना हता दैत्याः ।  
 दैत्यान् हतवान् विष्णुः ॥ खलर्थः, -ईषत्करः प्रपञ्चो हरिणा ॥ तृन्, -  
 कर्ता लोकान् ॥ ४४५ हेतौ तृतीया पञ्चमी च वक्तव्या ३८ ॥  
 अनित्यः शब्दः कृतकत्वेन कृतकत्वाद्वा ॥ ४४६ भयहेतौ पञ्चमी  
 च वक्तव्या ३९ ॥ चौराद्विभेति ॥ व्याघ्रात्रस्यति ॥ विद्युत्पा-  
 ताच्चकितः ॥ ४४७ षष्ठी च हेतुप्रयोगे ४० ॥ हेतुप्रयोगे हेतौ द्योत्ये  
 षष्ठी स्यात् ॥ चकारात्सर्वादियोगे तृतीयापि ॥ अन्नस्य हेतोर्वसति ॥  
 कस्य हेतोर्नागतः । केन हेतुना वा नागतः ॥ ४४८ इत्थंभावे  
 तृतीया ४१ ॥ कंचित्प्रकारं प्राप्त इत्थंभावः ॥ ( अन्यस्यान्यत्रोप-  
 चारेण वर्तमानत्वमित्थंभावः, तस्मिन्नित्थंभावे तृतीयाविभक्तिर्भवति । )  
 शिष्यं पुत्रेण पश्यति ॥ संसारमसारेण पश्यति ॥ ४४९ येनाङ्गवि-

टिप्प०-१ 'स्मरतौ' इत्यपि पाठः । २ अस्याग्रे-तृत्यर्थानां करणे वा  
 षष्ठी । स्फुटार्थम् । फलैः फलानां वा तृप्तः ।' इत्यधिकं लभ्यते ।



कारः ४२ ॥ येन विकृतेनाङ्गेनाङ्गिनोऽङ्गविकारो लक्ष्यते तस्माद-  
ङ्गात्तृतीया विभक्तिर्भवति ॥ अक्षणा काणः ॥ पादेन खञ्जः । श्रवणेन  
बधिरः ॥ विकारो द्विविधः-न्यूनत्वाश्रित आधिक्याश्रितश्च ॥ मुखेन  
त्रिलोचनः ॥ वपुषा चतुर्भुजः ॥ ४५० जनिकर्तुः प्रकृतिः ४३ ॥  
जायमानस्य कार्यस्योपादानमपादानसंज्ञं भवति ॥ तत्रापादाने पञ्चमी ।  
यस्मात्प्रजाः प्रजायन्ते तद्ब्रह्मेति ॥ ४५१ आडादियोगे च ४४ ॥  
आडादियोगे पञ्चमीविभक्तिर्भवति ॥ आङ्मर्यादायामभिविधौ च ॥  
अपपरी वर्जने, एते आडादयः ॥ आ पाटलिपुत्रादृष्टो देवः ॥ आ  
बालेभ्यो हरिभक्तिः ॥ आदिशब्दात्परित्रिगतेभ्यो वृष्टो देवः ॥ अप  
त्रिगतेभ्यो वृष्टो देवः ॥ ( विद्यास्वीकारे ॥ आख्यातुः पञ्चमी स्यात् ।  
उपाध्यायादधीते । ) ४५२ तादर्थ्ये चतुर्थी वक्तव्या ४५ ॥

संयमाय श्रुतं धत्ते नरो धर्माय संयमम् ।

धर्मं मोक्षाय मेधावी धनं दानाय मुक्तये ॥ ८४ ॥

आशिषि चतुर्थी । राज्ञे चिरं सौभाग्यं भूयात् ॥ ४५३ क्रुध-  
द्रुहेर्ष्यास्त्रयार्थानां यं प्रति कोपः ४६ ॥ क्रुधाद्यर्थानां प्रयोगे यं  
प्रति कोपः स संप्रदानसंज्ञकः स्यात् ॥ हरये क्रुध्यति द्रुह्यति ईर्ष्यति  
असूयति ॥ द्रुहादयोऽपि कोपप्रभवा एव गृह्यन्ते ॥ ४५४ सोपस-  
र्गयोः क्रुधद्रुहोर्योगे द्वितीया वक्तव्या ४७ ॥ क्रूरमभिक्रुध्यति ॥  
मित्रमभिद्रुह्यति ॥ अपवादमारोपयति ॥ ४५५ क्यब्लोपे कर्मण्य-  
धिकरणे च पञ्चमी वक्तव्या ४८ ॥ हर्म्यात्प्रेक्षते, हर्म्यमारुह्य  
प्रेक्षत इत्यर्थः ॥ आसनात्प्रेक्षते, आसने उपविश्य प्रेक्षत इत्यर्थः ॥

क्यबर्थो दृश्यते यत्र क्यबन्तं नैव दृश्यते ।

तदेव हि क्यब्लोपित्वं ज्ञातव्यं च सदा बुधैः ॥ ८५ ॥

निमित्तात्कर्मयोगे सप्तमी च वक्तव्या ॥

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम् ।

केशेषु चमरीं हन्ति सीम्नि पुष्कलको हतः ॥ ८६ ॥

गुदमेद्रान्तरालाङ्गं सीमेति प्रोच्यते बुधैः ।

पुष्कलो मृगभेदः स्याद्वन्यः सौगन्ध्यहेतुकः ॥ ८७ ॥

४५६ विषये च ४९ ॥ तर्के चतुरः ॥ विषयो नामान्यत्र भावः ॥

४५७ षष्ठी सप्तम्यौ चानादरे ५० ॥ बहूनां कोशतां गतश्चौरः ॥

मातापित्रो रुदतोः प्रव्रजति पुत्रः ॥ बहुष्वसाधुषु वदत्स्वपि स्वयमार्यो याति

साधुमार्गेण ॥ बहुषु साधुषु वदत्स्वपि स्वयमनार्यो यात्यसाधुमार्गेण ॥

४५८ अन्योक्ते प्रथमा ५१ ॥ यदिदं कार्याद्यन्येनाख्यातेन कृता चोक्तं

भवति तदा प्रथमा प्रयोक्तव्या ॥ घटः क्रियते । घटः कार्यः ॥ प्राप्तं

उदकं यमिति प्राप्तोदको ग्रामः ॥ छन्दसि स्यादिः सर्वत्र ॥ दधि

जुहोतीत्यस्मिन्नर्थे दध्ना जुहोति ॥ पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिः ॥ व्रजतीर्विरेजुः ॥

कर्ता कर्म च करण संप्रदानं तथैव च ।

अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् ॥ ८८ ॥

द्वितीया कर्मणि ज्ञेया कर्तरि प्रथमा यदा ।

उक्तकर्तृप्रयोगोऽयं न तदा यक्प्रयुज्यते ॥ ८९ ॥

तृतीया कर्तरि यदा कर्मणि प्रथमा तदा ।

उक्तकर्मप्रयोगोऽयं न तदा परस्मैपदम् ॥ ९० ॥

४५९ स्वतन्त्रः कर्ता ५२ ॥ क्रियायां स्वातन्त्र्येण विवक्षितोऽर्थः

कर्ता स्यात् ॥ प्रधानीभूतधात्वर्थाश्रयः कर्ता ॥ ४६० साधकतमं करणम्

५३ ॥ क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात् ॥ ४६१ कर्तृकरण-

टिप्प०-१ अत्र 'भो पूजकाः । ब्रह्मणस्पतिः इति ब्रह्मणस्पतिं ब्रह्माणं पुनन्तु प्रक्षालयन्तु' इति द्वितीयां प्रथमा । २ अत्र 'व्रजन्त्यो गोप्यो विरेजुः' इति प्रथमाबहुवचनसंभवे द्वितीयाबहुवचनम् । 'नन्दालयं सबलयो व्रजतीर्विरेजुः' इति भागवते ( अ. ५ ) । ३ कर्तृत्यादिश्लोकत्रयं व्याकरणीयसामान्यनियमः ।

योस्तृतीया ५४ ॥ अनभिहिते कर्तरि करणे च तृतीया स्यात् ॥ ४६२  
अकथितं च ५५ ॥ अपादानादिविशेषैरविवक्षितं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात् ॥

दुह्याचपचदण्डरुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथमुषाम् ।

कर्मयुक्स्यादकथितं तथा स्यान्नीहकृष्वहाम् ॥ ९१ ॥

दुहादीनां द्वादशानां तथा नीप्रभृतीनां चतुर्णां कर्मणा यद्युज्यते  
तदेवाकथितं कर्मेति परिगणनं कर्तव्यमित्यर्थः ॥ गां दोग्धि पयः ॥  
बलि याचते वसुधाम् ॥ अविनीतं विनयं याचते ॥ तण्डुलानोदनं  
पचति ॥ गर्गान् शतं दण्डयति ॥ व्रजमवरुणद्वि गाम् ॥ माणवकं  
पन्थानं पृच्छति ॥ वृक्षमवचिनोति फलानि ॥ माणवकं धर्मं ब्रूते, शास्ति  
वा ॥ शतं जयति देवदत्तम् ॥ सुधां क्षीरनिधिं मश्नाति ॥ देवदत्तं  
शतं मुष्णाति ॥ ग्राममजां नयति हरति कर्षति वहति वा ॥ अर्थ-  
निबन्धनेयं संज्ञा ॥ बलिं भिक्षते वसुधाम् ॥ माणवकं धर्मं भाषते  
अभिधत्ते वक्तीत्यादि ॥ ४६३ अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो  
भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञः स्यादिति वाच्यम् ५६ ॥ कुरुन्स्व-  
पिति ॥ मासमास्ते ॥ गोदोहमास्ते ॥ क्रोशमास्ते ॥ ४६४ गतिबुद्धि-  
प्रत्यवसानार्थशब्दकर्मकर्मकाणामणि कर्ता स णौ ५७ ॥ गत्या-  
द्यर्थानां शब्दकर्मकाणामकर्मकाणां चाणौ यः कर्ता स णौ कर्म स्यात् ॥

शत्रूनगमयत्स्वर्गं वेदार्थं स्वानबोधयत् ।

आशयञ्चामृतं देवान्वेदमध्यापयद्विधिम् ॥ ९२ ॥

आसयत्सलिले पृथ्वीं यः स मे श्रीहरिर्गतिः ॥

गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहकृष्वहाम् ॥ ९३ ॥

बुद्धिभक्षार्थयोः शब्दकर्मकाणां निजेच्छया ।

प्रयोज्यकर्मण्यन्येषां प्यन्तानां लादभ्यो मताः ॥ ९४ ॥

गौर्दुह्यते पयः ॥ अजा ग्रामं नीयते ॥ बोध्यते माणवकं धर्मः

माणवको धर्ममिति वा ॥ देवदत्तो ग्रामं गम्यते ॥ अकर्मकाणां काला-  
दिकर्मणां च कर्मणि भावे च लकार इष्यते ॥ मासो मासं वा आ-  
स्यते देवदत्तेन ॥ णिजन्तात्तु प्रयोज्ये प्रत्ययः ॥ मासमास्यते माण-  
वकः ॥ ४६५ तत्प्रयोजको हेतुश्च ५८ ॥ कर्तुः प्रयोजकः  
कर्तृसंज्ञो हेतुसंज्ञश्च स्यात् ॥ स्वार्थं परित्यज्य अन्यार्थाभिधायित्व-  
मुपसर्जनत्वम् ॥ क्रियाजन्यफलशालित्वं कर्मत्वम् ॥ साक्षात्संबन्धेन  
क्रियान्वयित्वं मुख्यत्वम् ॥ परम्परासंबन्धेन क्रियान्वयित्वं गौणत्वम् ॥  
इति कारकप्रक्रिया संपूर्णा ॥ १५ ॥

### समासप्रकरणम् १६

अथार्थवद्विभक्तिविशिष्टानां पदानां समासो निरूप्यते ॥ ४६६  
समासश्चान्वये नाम्नाम् १ ॥ नाम्नामन्वययोग्यत्वे सत्येव समासो  
भवति ॥ चकारात्तद्धितोऽपि । ततो भार्या पुरुषस्येत्यादौ समासो न  
भवति ॥ स च षड्विधः—अव्ययीभावस्तत्पुरुषो द्वन्द्वो बहुव्रीहिः  
कर्मधारयो द्विगुश्चेति ॥ अव्ययस्य अव्ययेन वा भवनं सः अव्ययीभावः  
। १ । स एवाग्रिमः पुरुषः प्रधानं यस्यासौ तत्पुरुषः । २ । द्वन्द्वा-  
यते उभयपदार्थो येनासौ द्वन्द्वः । ३ । बहु समातिरिक्तं व्रीहिः  
प्रधानं यस्मिन्नसौ बहुव्रीहिः । ४ । कर्म भेदकं धारयतीति कर्मधा-  
रयः । ५ । द्वाभ्यां गच्छतीति द्विगुः । ६ । पूर्वपदप्रधानोऽव्ययी-  
भावः ॥ द्विगुतत्पुरुषौ परपदप्रधानौ ॥ द्वन्द्वकर्मधारयौ चोभयपदप्र-  
धानौ ॥ बहुव्रीहिरन्यपदप्रधानः ॥ यत्रानेकसमासप्राप्तिस्तत्र उभय-  
पदप्रधानो बलवान्; तस्य क्रियाभिसंबन्धात् ॥ इदमेकस्मिन्समसिते  
पदेऽनेकसमासप्राप्तिस्तद्विषयमिदम् ॥ निषादस्थपतिं याजयेदित्यत्र तत्पु-

टिप्प०-१ व्यस्तपदयोर्व्यस्तपदानां वैकत्र समसनं समासः । तद्धेदा अग्रे  
व्याख्याताः ।

रुषबहुव्रीहिकर्मधारयप्राप्तौ सत्यां निर्णयमाह ॥ 'समानाधिकरणव्य-  
धिकरणयोर्मध्ये समानाधिकरणो बलवान्' ॥ 'एकविभक्त्यन्तत्वमेका-  
र्थनिष्ठत्वं वा सामानाधिकरण्यम्' ॥ नीलं च तदुत्पलं च नीलोत्पलम् ॥  
भिन्नविभक्त्यन्तत्वं भिन्नार्थनिष्ठत्वं वा वैयधिकरण्यम् ॥ ऐकपद्यमैकस्वर्य-  
मेकविभक्तिकत्वं च समासप्रयोजनम् ॥ अधि स्त्री इति स्थिते ।  
स्त्रीशब्दाद्वितीयैकवचनम् । स्त्रियमधिकृत्य भवतीति विग्रहेऽन्वययो-  
ग्यार्थसमर्पकः पदसमुदायो विग्रहो वाक्यमिति यावत् ॥ ४६७  
कृते समासे अव्ययानां पूर्वनिपातो वक्तव्यः २ ॥ ४६८ पूर्वे-  
व्ययेऽव्ययीभावः ३ ॥ अव्यये पूर्वपदे सति योऽन्वयः सोऽव्ययी-  
भावसंज्ञकः समासो भवति ॥ इति समाससंज्ञायाम् ॥ ४६९ समास-  
प्रत्यययोः ४ ॥ समासे वर्तमानाया विभक्तेः प्रत्यये परे च विभ-  
क्तेर्लुग्भवति ॥ इत्यमो लुक् नामसंज्ञायां स्यादिविभक्तिर्भवति ॥ ४७० स  
नपुंसकम् ५ ॥ सोऽव्ययीभावः समासो नपुंसकलिङ्गो भवति । नपुं-  
सकत्वाद्भ्रस्वत्वम् ॥ ४७१ अव्ययीभावात् ६ ॥ अव्ययीभा-  
वात्परस्या विभक्तेर्लुग्भवति ॥ अधिस्त्रि गृहकार्यम् ॥ रायम-  
तिक्रान्तमतिरि कुलम् । नावमतिक्रान्तमतिनु जलम् ॥ ४७२  
अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया ७ ॥ क्रान्ताद्यर्थे वर्तमाना  
अत्यादयो द्वितीयया सह समस्यन्ते स तत्पुरुषसंज्ञकः समासो  
भवति ॥ ४७३ ह्रस्वादेशे संध्यक्षराणामिकारोकारौ च वक्तव्यौ  
८ ॥ ४७४ यथाऽसादृश्ये ९ ॥ यथाशब्दोऽसादृश्ये वर्तमानः  
समस्यते सोऽव्ययीभावः समासो भवति ॥ योग्यता वीर्यसौ पैदार्थानति-  
वृत्तिः सादृश्यं चेति यथार्थाः । शक्तिमनतिक्रम्य करौतीति यथाशक्ति  
करोति ॥ असादृश्ये किम् ? । यथा हरिस्तथा हरः ॥ कुम्भस्य समीप-

मिति विग्रहे समासादिपूर्ववत् । 'अव्ययीभावात्' ( सू० ४७१ ) इति प्राप्ते ॥ ४७२ अतोऽमनतः १० ॥ अकारान्तादव्ययीभावात्परस्य विभक्तेरम् भवति अतं वर्जयित्वा ॥ तथा च पाणिनीये ॥ 'नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः । अदन्तादव्ययीभावान्न सुपो लृक् तस्य पञ्चमीं विनामादेशः स्यात्' ॥ उपकुम्भं वर्तते ॥ ४७३ वा टाड्योः ११ ॥ टा ङि इत्येतयोर्वा अम् भवति ॥ 'अतोऽमनतः' ( सू० ४७५ ) वा टाड्योः । अत्र अत् टा ङि एतत्पञ्चम्यास्तृतीयासप्तम्योर्द्विवचनबहुवचनयोरप्युपलक्षणम् ॥ तेन द्विवचनबहुवचनयोरपि वा अम् भवति, न लृक् । पञ्चम्यास्तु अम्लुकोर्निषेधः । उपकुम्भेन कृतं उपकुम्भकृतम् । उपकुम्भं देहि । अनत इति विशेषणादुपकुम्भादानय । उपकुम्भं देशः । उपकुम्भं निधेहि । उपकुम्भे निधेहि ॥ ४७७ अवधारणार्थे यावति च १२ ॥ अवधारणार्थे यावच्छब्दे प्रयुज्यमाने अव्ययपूर्वपदाभावेऽपि योऽन्वयः सोऽव्ययीभावसंज्ञकः समासो भवति ॥ ४७८ यावदवधारणे १३ ॥ अवधारणार्थे यावच्छब्दो नित्यं समस्यते ॥ यावन्त्यमत्राणि तावतो ब्राह्मणानामश्रयस्वेति यावदमत्रम् ॥ ४७९ आङ्मर्यादाऽभिविध्योः १४ ॥ मर्यादायामभिविधौ च आङ् वा समस्यते ॥ पाटलिपुत्रं मर्यादीकृत्येत्यापाटलिपुत्रम् ॥ बालानभिव्याप्येत्याबालम् ॥ तेन विनेति मर्यादा ॥ तेन सहेत्यभिविधिः ॥ ४८० पारेमध्ये षष्ठ्या वा १५ ॥ पारमध्यशब्दौ षष्ठ्या वा समस्येते ॥ एदन्तौ निपातौ सूत्रात् ॥ ४८१ प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् १६ ॥ समासशब्दे प्रथमानिर्दिष्टमुपसर्जनसंज्ञं स्यात् ॥ ४८२ उपसर्जनं पूर्वम् १७ ॥ समासे उपसर्जनं प्राक् प्रयोज्यम् ॥ गङ्गायाः पारे इति पारेगङ्गं-गङ्गापारे ॥ गङ्गाया

मध्ये इति—मध्येगङ्गाम्गङ्गामध्ये । मक्षिकाणामभावो निर्मक्षिकं वर्तते ॥  
 ४८३ अमादौ तत्पुरुषः १८ ॥ द्वितीयाद्यन्ते पूर्वपदे सति यो-  
 ऽन्वयः स तत्पुरुषसंज्ञकः समासो भवति ॥ ४८४ द्वितीया  
 श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः १९ ॥ अन्वये सति समस्यते  
 स तत्पुरुषः । कृष्णं श्रितः—कृष्णश्रितः ॥ ग्रामं प्राप्नोति—ग्रामप्राप्तः ॥  
 अन्वये इति किम् ? । पश्य कृष्णं, श्रितस्त्वं साधून् ॥ दात्रेण छिन्नं  
 दात्रच्छिन्नम् ॥ यूपाय दारु—यूपदारु ॥ वृकेभ्यो भयं—वृकभयम् ॥  
 राज्ञः पुरुषो—राजपुरुषः ॥ अक्षेषु शौण्डः—अक्षशौण्डः ४८५  
 क्वचिदमाद्यन्तस्य परत्वम् २० ॥ अग्नौ आहित इति—आहिताग्निः ॥  
 पूर्वं भूत इति भूतपूर्वः ॥ ४८६ पिशाचादेः सभादीनां नपुंसकत्वं  
 वा २१ ॥ पिशाचानां सभा इति—पिशाचसभम्-पिशाचसभा ॥  
 गृहस्थूणं-गृहस्थूणा ॥ शशोर्णम्-शशोर्णा ॥ भिन्नपदे णत्वाभावस्तथापि  
 समासे सति क्वचिदैकपद्यं णत्वहेतुः । शराणां वनं शरवणम् ॥  
 आम्राणां वनम्—आम्रवणम् ॥ ४८७ संज्ञायां वा २२ ॥ त्रीणि नयनानि  
 यस्यासौ त्रिनयनः—त्रिणयनः ॥ ४८८ पानस्य वा २३ ॥ सुरायाः  
 पानं—सुरापानम्-सुरापानम् ॥ ४८९ नञि २४ ॥ नञि पूर्वपदे  
 सति योऽन्वयः स तत्पुरुषसंज्ञकः समासो भवति ॥ ४९० नञ् २५ ॥  
 नञ् सुबन्तेन समस्यते ॥ नञ् उभयार्थत्वं प्रसिद्धम् । तथा चोक्तं  
 वार्तिककारेण—

उभौ नञौ समाख्यातौ पर्युदासप्रसज्यकौ ।

पर्युदासः सदग्राही प्रसज्यस्तु निषेधकृत् ॥ ९५ ॥

प्राधान्यं तु विधेर्यत्र प्रतिषेधेऽप्रधानता ।

पर्युदासः स विज्ञेयो यत्रोत्तरपदेन नञ् ॥ ९६ ॥

अप्राधान्यं विधेर्यत्र प्रतिषेधे प्रधानता ।

प्रसज्यप्रतिषेधोऽयं क्रियया सह यत्र नञ् ॥ ९७ ॥

न ब्राह्मणोऽब्राह्मणः ॥ ४९१ ना २६ ॥ समासे सति नञोऽकारादेशो भवति । नाकादिवर्जम् ॥ ( नाक, नक्र, नग, तनून-पात्, नख, नपुंसक, नक्षत्र, नकुल, नासत्य, नमुचि, नर-इत्यादि । नाक, नमुचि, नकुल, नागर, नासिका, नमेरु, ननान्द, नभाग, नान्तरीय, नक्र, नख, नग, नद, नयाद, नवाद, नवेद, नासत्य, नापित, नहुष, नक्षत्र ) इत्येते नाकादयः केनचिद्गणिताः । उभयथापि नाकादौ न भवति ॥ ४९२ अन् स्वरे २७ ॥ समासे सति नञोऽनादेशो भवति स्वरे परे ॥ ४९३ अनादेशोऽपदान्तवद्वाच्यः २८ ॥ तेन झ्णः ( सू० ८७ ) इति न द्वित्वम् । अश्वादन्यो-अनश्वः ॥ धर्मविरुद्धो-अधर्मः ॥ ग्रहणस्या-भावो-अग्रहणम् ॥ तदन्यतद्विरुद्धतदभावेषु वर्तते ॥ तस्मादन्यः-तदन्यः । तेन विरुद्धः-तद्विरुद्धः । तस्य अभावस्तदभावः । तदन्यश्च तद्विरुद्धश्च तदभावश्च तदन्यतद्विरुद्धतदभावास्तेषु ( इति तत्पुरुषः । ) ॥ ४९४ चार्थे द्वन्द्वः २९ ॥ समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोगसमाहाराश्चार्थास्तेषु चार्थेषु द्वन्द्वः समासो भवति ॥ तत्रेश्वरं गुरुं च भजस्वेति प्रत्येकमेकक्रिया-संबन्धे समुच्चये समासो नास्ति । बटो भिक्षामटं गां चानयेति क्रमेण क्रियाद्वयसंबन्धेऽन्वाचये समासो नास्ति । नाम्नां परस्परमसंबन्धात् ॥ इतरेतरयोगे समाहारे चार्थे द्वन्द्वसमासो भवति ॥ ४९५ द्वन्द्वे-ऽल्पस्वरप्रधानेऽकारोकारान्तानां पूर्वनिपातो वक्तव्यः ३० ॥ पटुश्च गुप्तश्च पटुगुप्तौ ॥ इतरेतरयोगे द्विवचनम् । चकारस्योक्तार्थानामि-त्यप्रयोगः । अग्निश्च मारुतश्च-अग्निमारुतौ ॥ भोक्ता च भोग्यश्च-भोक्तृभोग्यौ ॥ धवश्च खदिरश्च-धवखदिरौ ॥ ४९६ देवताद्वन्द्वे

टिप्प०-१ नाकादिगण एवाग्रे धनुश्चिह्ने निहितः ।



पूर्वपदस्य च दीर्घो वक्तव्यः ३१ ॥ वाग्रहणात्कचित् भवत्यभिसार-  
सावित्वादौ ॥ इन्द्रश्च कृदस्पतिश्च-इन्द्राबृहस्पती ॥ ४९७ अग्रादेः  
सोमादीनां पत्वं वक्तव्यम् ३२ ॥ अग्निश्च सोमश्च-अग्नीषोमी ।  
सूर्याचन्द्रमसौ ॥ ४९८ एकवद्भावो वा समाहारे वक्तव्यः ३३ ॥  
समाहारस्यैकत्वात्समाहारे एकवद्भावः सिद्ध एव । तर्हि वाग्रहणं  
किमर्थम् ? ॥ वाग्रहणात्कचिद्वयोरपीतरेतरयोगे एकवचनं कचिद्वद्भाव-  
मितरेतरयोग एकवचनम् । शशाश्च कुशाश्च पलाशाश्च-शशकुश-  
पलाशाः-शशकुशपलाशम् ॥ ४९९ अन्यादीनां विभक्तिलोपे कर्म-  
व्यतिहारे पूर्वपदस्य सगागमो भवति ३४ ॥ अन्योन्यमेकक्रियाकरणं  
कर्मव्यतिहारः । अन्यश्च अन्यश्च अन्योन्यं विप्रा नमन्ति । परश्च  
परश्च परस्परम् । परस्परमित्यत्र कस्कादित्वाद्विसर्गोपध्मानीयाभावः ॥  
५०० एकत्वे द्विगुद्वन्द्वौ ३५ ॥ एकत्वे वर्तमानौ द्विगुद्वन्द्वौ नपुं-  
सकलिङ्गौ भवतः ॥ ५०१ संख्यापूर्वो द्विगुः ३६ ॥ संख्यापूर्वः  
सम्भासो द्विगुर्निगद्यते ॥ ५०२ समाहारेऽत ईप् द्विगुः ३७ ॥  
समाहारेऽर्थे द्विगुः समासो भवति ततोऽकारान्तादीप् प्रत्ययो भवति ॥  
५०३ पात्राद्यन्ततो द्विगुर्नेवन्तः ३८ ॥ पञ्चानां पात्राणां समा-  
हारः-पञ्चपात्रम् । द्विभुवनम् । त्रिभुवनम् । चतुष्पथम् । दशानां  
आमाणां समाहारः-दशग्रामी । पञ्चाग्रयः समाहृता इति-पञ्चाग्निः ।  
पञ्चानां गवां समाहारः-पञ्चगु । नपुंसकत्वाद्ब्रह्मत्वम् । त्रिफला  
रूढितः ॥ ५०४ बहुव्रीहिरन्यार्थे ३९ ॥ अन्यपदार्थप्रधानो यः  
समासः स बहुव्रीहिसंज्ञको भवति ॥ बहु धनं यस्य सः-बहुधनः ।  
अस्ति धनं यस्य सः-अस्तिधनः ॥ अव्ययत्वादस्य्यादीनां पूर्वनिपातः ।  
अन्यपदप्रधानस्याद्बहुव्रीहिः ॥ अन्तरङ्गं यस्यासौ-अन्तरङ्गः । बहिरङ्गः ।  
उच्चैर्मुखः ॥ ५०५ तेन सहेति तुल्ययोगे ४० ॥ सहेत्येतच्चाती-

यान्तेन समस्यते स तुल्ययोगवहुव्रीहिः ॥ ५०६ सहर्दः सादिः ४१ ॥  
 स्थादीनां सादिर्भवति ॥ पुत्रेण सह वर्तमानः—सपुत्रः ॥ सो वेति  
 केचित् ॥ सहपुत्रो वागतः । तुल्ययोगवचनं प्रायिकम् । कर्मणा सह  
 वर्तमानः—सकर्मकः । सलोमकः ॥ यस्य प्रधानस्यैकदेशो विशेषणतया  
 यत्र ज्ञायते स तद्गुणसंविज्ञानो बहुव्रीहिः । लम्बौ कर्णौ यस्य सः—  
 लम्बकर्णः ॥ ५०७ बहुव्रीहौ विशेषणसप्तम्यन्तयोः पूर्वनिपातो  
 वक्तव्यः ४२ ॥ धनं करे यस्य सः—करधनः । मतिः कृष्णे यस्य सः—  
 कृष्णमतिः । बुद्धिर्धर्मे यस्य सः—धर्मबुद्धिः । कण्ठे हारो यस्य सः—  
 कण्ठहारः । करे कङ्कणं यस्यासौ—करकङ्कणः । भुवने कीर्तिर्यस्यासौ—  
 भुवनकीर्तिः ॥ ५०८ प्रहरणार्थेभ्यः परे निष्ठासप्तम्यौ वक्तव्यौ ४३ ॥  
 ५०९ क्तवतू निष्ठा ४४ ॥ क्तवतू प्रत्ययौ निष्ठासंज्ञौ स्तः ॥  
 चक्रं पाणौ यस्य सः—चक्रपाणिः हरिः । दण्डः पाणौ यस्य सः—दण्ड-  
 पाणिः पुरुषः । उद्यतोऽसिर्येनासौ—अस्युद्यतः । उद्यतासिरित्यपि भवति ॥  
 ५१० प्रियादीनां वा ४५ ॥ प्रियगुडः—गुडप्रियः ॥ ५११ इन्द्रा-  
 दिभ्यश्च ४६ ॥ इन्द्रादिभ्यः शब्देभ्यः सप्तम्यन्तस्य पूर्वनिपातो न ॥  
 इन्दुः शेखरे यस्यासौ—इन्दुशेखरः । पद्मं नाभौ यस्य सः—पद्मनाभः ।  
 कपिष्वजः ॥ ५१२ प्रजामेधयोरसुक् ४७ ॥ नबूदुःसुभ्यः प्रजा-  
 मेधयोर्नित्यमसुक् स्याद्बहुव्रीहौ ॥ अप्रजाः । सुप्रजाः । दुष्प्रजाः ।  
 अमेधाः । दुर्मेधाः । सुमेधाः ॥ ५१३ धर्मादनिच् केवलात् ४८ ॥  
 केवलात्पूर्वपदात्परो यो धर्मशब्दस्तदन्ताद्बहुव्रीहेरनिच् प्रत्ययः स्यात् ॥  
 कल्याणधर्मा । सुधर्मा ॥ केवलात्किम् ? । परमः स्वो धर्मो यस्य सः—परमस्व-  
 धर्मः ॥ ५१४ जायाया निडादेशो बहुव्रीहौ वक्तव्यो यलोपश्च ४९ ॥  
 मूजानिः । लक्ष्मीजानिः ॥ ५१५ उत्पत्तिसुसुरभिभ्यो गन्धशब्द-

स्वेकारान्तादेशो बहुव्रीहौ वक्तव्यः ५० ॥ उद्गन्धिः । पूतिगन्धिः ।  
 सुगन्धिः । सुरभिगन्धिः ॥ ५१६ आगन्तुकस्यैकवचनान्तस्य वा  
 ५१ ॥ सुगन्धिः आपणः सुगन्धो वा ॥ ५१७ अल्पाख्यायां च  
 ५२ ॥ अल्पपर्यायो गन्धशब्दः ॥ सूपोऽल्पो यस्मिन् तत्सूपगन्धि  
 भोजनम् । घृतगन्धि ॥ वेति केचित् । सूपगन्धम् । घृतगन्धम् ॥  
 ५१८ उपमानाच्च ५३ ॥ पद्मस्येव गन्धो यस्येति-पद्मगन्धिः ॥  
 मतान्तरे विकल्पः ॥ ५१९ ऊधसोऽनङ् ५४ ॥ ऊधोन्ताद्बहु-  
 व्रीहेरनङादेशः स्यात्स्त्रियाम् ॥ कुण्डोघ्री गौः ॥ पुंसि तु कुण्डोघाः  
 गोगणः ॥ ५२० धनुषश्च ५५ ॥ शार्ङ्गं धनुर्यस्य सः-शार्ङ्गधन्वा ॥  
 ५२१ संज्ञायां वा ५६ ॥ शतधन्वा-शतधनुः ॥ ५२२ पुंवद्वा ५७ ॥  
 समासे सति समानाधिकरणे पूर्वस्य स्त्रीलिङ्गस्य पुंवद्वा भवति ॥  
 बाग्रहणात्कल्याणीप्रिय इत्यादौ न भवति ॥ पुंवद्वावादीबापोर्निवृत्तिः ।  
 रूपवती भार्या यस्य सः-रूपवद्भार्यः ॥ ५२३ अन्यार्थे ५८ ॥  
 स्त्रीलिङ्गस्यान्यार्थे वर्तमानस्य ह्रस्वो भवति ॥ ५२४ यच्चापि नित्व-  
 शसंतरादौ चारूप्ये ५९ ॥ एनीव आचरतीति-एनायते । पत्न्या-  
 दित्वात्तो न । पण्डितमानिनी । पट्ट्या भावः-पटुत्वम् । अल्पं देहीति  
 -अल्पशः । पटुतरा । पटुतमा । पटुकल्पा । पटुदेश्या । पटुदेशीया ।  
 अरूप्ये इति किम् ? । शुभ्रारूप्या ॥ ५२५ प्रियादौ न ६० ॥  
 प्रिया, भक्तिः, मनोज्ञा, सुभगा, दुर्मगा, क्षान्ता, कल्याणी, चपला,  
 वामना, सचिवा, समा, वामा, कान्ता, बाला, तनया, दुहिता, स्वसा  
 इति प्रियादयः । एषु परेषु भाषितपुंस्कस्य स्त्रीप्रत्ययान्तस्य न पुंवत् ॥  
 ५२६ उग्रप्रत्ययान्तस्य च न पुंवत् ६१ ॥ वामोरूप्यः ॥ ५२७  
 अभाषितपुंस्कस्य च न पुंवत् ६२ ॥ गुञ्जाभार्यः ॥ ५२८

कोषधपूरणीसंज्ञानां च न पुंवत् ६३ ॥ पाषाणीभार्यः । पञ्चमी-  
भार्यः । दत्ताभार्यः ॥ ५२९ जोतिवाचकांस्वाङ्गवाचकाद्य ईत्तद-  
न्तस्य न पुंवदमानिनि ६४ ॥ ब्राह्मणीभार्यः । सुकेशीभार्यः ॥  
अमानिनीति किम् ? । ब्राह्मणमानिनी ॥ ५३० युद्धजितरक्तविका-  
रार्थवर्जिततद्विद्वान्तस्य न पुंवत् ६५ ॥ मैथिलीजायः । युद्धजित-  
रक्तविकारार्थवर्जितेति किम् ? ॥ वैयाकरणभार्यः । कषायकन्धः ।  
हैममुद्रिकः । वाग्रहणादियं विवक्षा ॥ ५३१ गोः ६६ ॥ गोशब्द-  
स्यान्यार्थे वर्तमानस्य ह्रस्वो भवति ॥ पञ्च गावो यस्यासौ—पञ्चगुः ॥  
५३२ संख्यासु व्याघ्रादिपूर्वस्य पादशब्दस्याकारस्य लोपो  
वक्तव्यः ६७ ॥ सहस्रं पादा यस्यासौ—सहस्रपात् । व्याघ्रस्य पादाविव  
पादौ यस्यासौ—व्याघ्रपात् । शोभनौ पादौ यस्य सः—सुपात् । ‘पादः पत्’  
(सू० २८१) द्विपदः । द्विपदा । द्विपदी । त्रिपदी । नदादित्वादीप् ॥  
५३३ टाडकाः ६८ ॥ समासे सति ट अ ड क इत्येते प्रत्यया भवन्ति ॥

तश्च तत्पुरुषे ज्ञेय अकारो द्वन्द्व एव च ।

डकारस्तु बहुव्रीहौ ककारो नियमो मतः ॥ ९८ ॥

५३४ नो वा ६९ ॥ नान्तस्य पदस्य टेलोपो वा भवति स्वरे यकारे  
च परे ॥ अचिन्त्यो महिमा यस्य सः—अचिन्त्यमहिमः ॥ वाग्रहणा-  
त्कचिन्न भवति किंतूपधालोपश्च ॥ अहो मध्यं—मध्याह्नः । द्वयोरहोः  
समाहारः—व्यहः ॥ ५३५ रात्राह्वाहाः पुंसि ७० ॥ एते पुंसेव  
स्युः ॥ सर्वरात्रः । सर्वाह्नः । व्यहः । कवीनां राजा इति—कविराजः ।  
टकार ईवर्थः । कविराजी । ‘द्वितः’ (सू० ३७४) राज्ञां पू इति—  
राजपुंम् । अप्रत्ययः । वाक् च मनश्च—वाच्यमनसम् ॥ ‘घोः कुः’ (सू०  
२८५) ‘अमे अमा वा’ (सू० ७३) । दक्षिणस्यां दिशि पन्थाः इति—  
दक्षिणपथः । अहश्च रात्रिश्च—अहोरात्रम् । इमप्रत्ययः ॥ ५३६

अहोरात्रमित्यत्र नपुंसकत्वं वा वक्तव्यम् ५३६ ॥ अहोरात्रः पञ्च  
 च त्रयश्च-द्वित्राः । पञ्चषाः । बहुत्वविवक्षायां बहुवचनं जम् ।  
 बहवो राजानो यस्यां सा-बहुराजा नगरी । अत्र टिलोपे कृते ।  
 'आवतः क्रियाम्' (सू० २०३) इत्याप् । कप्रत्ययः । बहवः ब्राह्मणाः  
 कर्तारो यस्यासौ-बहुकर्तृको यागः ॥ ५३७ कर्मधारयस्तुल्यार्थे ७२ ॥  
 पदद्वयस्तुल्यार्थे एकार्थनिष्ठत्वे सति कर्मधारयसंज्ञकः समासो भवति ॥  
 नीलं च तदुत्पलं च-नीलोत्पलम् । रक्ता चासौ लता च-रक्तलता ॥  
 पुमांश्चासौ कोकिलश्च-पुंस्कोकिकः ॥ ५३८ पुंसः स्वप्ने ख्यावर्जिते  
 च अम्परे संयोगान्तस्यालोपो वक्तव्यः ७३ ॥ तेन पुंख्यानं  
 पुंक्षीरं भवति ॥ ५३९ नाम्नश्च कृता समासः ७४ ॥ प्रादेरुप-  
 सर्गस्य नाम्नश्च कृदन्तेन समासः, स तत्पुरुषसंज्ञको भवति ॥ चका-  
 रात्कुशब्दस्याव्ययस्य उरी-उररीशब्दयोश्चिवप्रत्ययान्तादेश्च कृदन्तेन  
 समासस्तत्पुरुषो भवति ॥ प्रकृष्टो वादः-प्रवादः । कुम्भकारः ।  
 'सहादेः सादिः' (सू० ५०६) । ( सहसंतिरसां सधिसमितिरयः ) ।  
 सह अञ्चतीति-सध्यङ् । समञ्चतीति-सम्यङ् । तिरः अञ्चतीति-तिर्यङ् ।  
 कचिन्न भवति । सह चरतीति-सहचरः ॥ ५४० कुगतिप्रादयः ७५ ॥  
 कुशब्दो गतिसंज्ञाः प्रादयश्च समर्थेनान्वये समस्यन्ते स तत्पुरुषः ॥  
 कुपुरुषः । कुत्सितमन्नं-कदन्नम् ॥ ५४१ कुत्सितेषदर्थयोः ७६ ॥  
 कुत्सितेषदर्थयोर्वर्तमानस्य कुशब्दस्य का कव कत् इत्येते आदेशा  
 भवन्ति, तत्पुरुषे न तु बहुव्रीहौ ॥ बहुव्रीहौ तु कुत्सिता विद्या यस्यासौ  
 -कुविद्यः । कुत्सिता उष्ट्रा यस्य सः-कूष्टः । कुत्सितः पुन्था यस्मिन्नसौ-  
 कुपथो देशः ॥ ५४२ काकवकदुष्णे ७७ ॥ उष्णशब्दे परे कुशब्दस्य  
 का कव कत् इत्येते आदेशा भवन्ति ॥ कु ईषदुष्णं-कोष्णम्-

कक्षोष्णम्-कदुष्णम् । कु ईषत् ख्वणं-काल्वणम् ॥ ५४३ पुरुषे वा

७८ ॥ पुरुषशब्दे परे कुशब्दस्य वा कादेशो भवति तत्पुरुषे ॥

विभाषा पुरुषे का स्यान्नियमेन हसे परे ।

अधि त्रिरथवदे कोः कत्काक्षे वा पुरुषे पथि ॥ ९९ ॥

ईषदर्थे च वाच्ये स्युरग्रावुष्णे काकत्कवाः ।

कुत्सितास्त्रयः-कत्रयः । कद्रथः । कद्रवः । काक्षः । कापथः ।

कुपथः । कुपुरुषः । कापुरुषः ॥ ५४४ षष उत्वं दधोर्ददौ ७९ ॥

षष उत्वं दत्तदशधासूत्तरपदादेः घृत्वं च घासु वा भवतीति वाच्यम् ॥

बहुवचनं जस् । 'जश्शसोर्लुक्' (सू० २६४) 'नाम्नो नो लोपशधौ'

(सू० २५२) षडभिरधिका दश-षोडश । षट्प्रकारमिति-षोढा ।

घासु वा वक्तव्यमिति विकल्पात् षस्योत्वाभावे । 'षो डः' (सू० २७७)

इति षस्य डत्वम् । षड्ढा । 'संख्यायाः प्रकारे धा' (सू० ६७३) ।

'अव्ययाद्विभक्तेर्लुक्' (सू० ३५९) षट् दन्ता यस्य इति विग्रहे,

विभक्तिलोपे कृते ५४५ दन्तस्य दत् ८० ॥ इति दन्तादेशो षोडन् ॥

५४६ तद्बृहतोः करपत्योश्चौरदेवतयोः सुट् तलोपश्च ८१ ॥

बृहतां पतिः-बृहस्पतिः । तत् करः-तस्करः ॥ ५४७ महतष्टेराकारो

भवति समानाधिकरणे ८२ ॥ महांश्चासौ ईश्वरश्च-महेश्वरः ॥

५४८ दिवो द्यावा ८३ ॥ दिवूशब्दस्य द्यावादेशो भवति ॥ द्यौश्च

भूमिश्च-द्यावाभूमी ॥ आकृतिगणोऽयम् ॥ सिद्धं शब्दाकारमुपलभ्य

तदनुसारेणादेशविधानं क्रियते यत्र स आकृतिगणः ॥ ५४९

अलुक् क्वचित् ८४ ॥ समासे तद्धिते कृदन्तेऽपि विभक्तेरलुग्भवति ॥

कृच्छ्रान्मुक्तः । अप्सु योनिर्यस्येति-अप्सुयोनिः । उरसि लोमानि

टिप्प०-१ यादृशी आकृतिराकारस्य प्रयोगस्य दृश्यते तादृश एव प्रयोगो  
निपात्यत इति स आकृतिगणः कथ्यते ।

यस्यासौ-उरसिलोमः । हृदि स्पृशतीति-हृदिस्पृक् । कण्ठेकालः ।  
वाचोयुक्तिः । दिशोदण्डः । पश्यतोहरः—इत्यादि ॥ ५५० समासे  
समानाधिकरणे शाकपार्थिवादीनां मध्यमपदलोपो वक्तव्यः ८५ ॥  
शाकप्रियश्चासौ पार्थिवश्च-शाकपार्थिवः । देवपूजकश्चासौ ब्राह्मणश्च  
-देवब्राह्मणः ॥ ५५१ आदेश्च द्वन्द्वे ८६ ॥ द्वन्द्वसमासे सति  
आदिपदस्य लोपो भवति ॥ माता च पिता च-पितरौ । दुहितृ  
च पुत्रश्च-पुत्रौ । श्वश्च श्वशुरश्च-श्वशुरौ ॥ ५५२ ऋतां द्वन्द्वे ८७ ॥  
ऋकारान्तानां द्वन्द्वसमासे सति पूर्वपदस्य वा आकारो वक्तव्यः ॥  
मातापितरौ ॥ ५५३ द्वन्द्वे सर्वादित्वं वा ८८ ॥ वर्णाश्च आश्रमाश्चेतरे  
च-वर्णाश्रमेतरे-वर्णाश्रमेतराः ॥ ५५४ वैयधिकरण्ये बहुव्रीहौ मध्यम-  
पदलोपो वक्तव्यः ८९ ॥ कुमुदस्य गन्ध इव गन्धो यस्यासौ-कुमुद-  
गन्धिः ॥ ५५५ उपमानाच्च ९० ॥ उपमानाद्वन्धशब्दस्येकारः  
स्यात् ॥ हंसस्य गमनमिव गमनं यस्याः सा-हंसगमना ॥ ५५६  
दिकसंख्ये संज्ञायाम् ९१ ॥ दिग्वाचकसंख्यावाचकशब्दावुत्तरपद-  
तुल्यार्थौ संज्ञायां समस्येते स तत्पुरुषः ॥ संज्ञायामिति पदेन नित्य-  
समासो दर्शितः ॥ अविग्रहो नित्यसमासः ॥ अन्यस्त्वस्वपदविग्रहोऽपि  
भवति ॥ विग्रहो द्विविधः । एकः स्वपदविग्रहः, एकोऽस्वपदविग्रहोऽपि  
भवति ॥ अस्वपदेन समासव्यतिरिक्तेनापि पदेन विग्रहो वाक्यं यत्र  
स नित्यः ॥ तेन लम्बौ कर्णौ यस्य सः-लम्बकर्णः ॥ दात्रेण छिन्न-  
मिति स्वपदविग्रहः ॥ अस्वपदविग्रहो नित्यः । यस्मिन्समासावबोधकं  
वाक्यं न तिष्ठति स नित्यः । दक्षिणाग्निः । सप्तग्रामः । इत्यादयो  
ज्ञेयाः ॥ इति समासप्रकरणम् ॥ १६ ॥

## तद्धितप्रत्ययान्तम् १७

यथ तद्धितो निरूप्यते ॥ ५५७ अपत्येऽण् १ ॥ नाम्नोऽप-  
त्येऽर्थेऽण्प्रत्ययो भवति ॥ उपगोरपत्यं पुमानिति त्रिग्रहे उपगोः अण्  
इति स्थिते । 'समासप्रत्यययोः' (सू० ४६९) इति षष्ठीलोपः । णकारो  
बुद्ध्यर्थं ईवर्थश्च ॥ ५५८ आदिस्वरस्य ङिति च वृद्धिः २ ॥  
स्वराणां मध्ये य आदिस्वरस्तस्य वृद्धिर्भवति ङिति णिति च तद्धिते  
परतः । उकारस्योकारो वृद्धिः ॥ ५५९ वोऽव्यस्यरे ३ ॥ उकारस्य ओका-  
रस्य च अव् भवति स्वरं यकारे च परे ॥ कृत्तद्धितसमासाश्चेति नाम-  
त्वम् । नामत्वात्स्यादयः । औपगवः । वसिष्ठस्यापत्यं—वासिष्ठः । गोतम-  
स्यापत्यं गौतमः । 'शिवादिभ्यश्च' इत्यण् वक्तव्यः । अन्यथा उजः प्राप्तिः ।  
शिवस्यापत्यं—शैवः । विदेहस्यापत्यं—वैदेहः ॥ ५६० ऋ उरणि ४ ॥  
मातृशब्दस्य ऋकारस्य उर् भवति अणि परे ॥ 'षो डः' (सू० २७७) ।  
'त्वन्मदेकत्वे' (सू० ३३१) इति सूत्रनिर्देशात्कचिदपदान्तेऽपि ज्ञसानां  
अमा एष्टव्याः । षण्णां मातृणामपत्यं—षाण्मातुरः ॥ तिसृणां मातृणाम-  
पत्यं—त्रैमातुरः । द्वयोर्मात्रोरपत्यं—द्वैमातुरः ॥ ५६१ अत इजन्नुषेः ५ ॥  
अकारान्तानाम्नोऽनृषिशब्दादपत्येऽर्थे इज्प्रत्ययो भवति ॥ 'यस्य लोपः'  
(सू० ३६७) देवदत्तस्यापत्यं—दैवदत्तिः । श्रीधरस्यापत्यं—श्रीधरिः ।  
दशरथस्यापत्यं—दाशरथिः । पौरन्दरिः । कचिद्विशिशब्दादपि भवति ॥  
तेन औद्दालकिः ॥ ५६२ बह्वादेश्च ६ ॥ बह्वादेः पर इज्प्रत्ययो  
भवत्यपत्येऽर्थे ॥ बहोरपत्यं बाह्विः । उपबिन्दोरपत्यम्—औपबिन्दविः ।  
कृष्णस्यापत्यं—कार्ष्णिः । उडुलोम्नोऽपत्यम्—औडुलोमिः । 'नो वा' (सू०  
५३४) अमिशर्मणोऽपत्यम्—आमिशर्मिः ॥ ५६३ ण्यायनणोयणीया  
गर्गनडात्रिस्त्रीपितृष्वसादेः ७ ॥ गर्गादिर्नडादेरज्यादेः स्त्रीलिङ्गा-  
त्पितृष्वसादेश्च ण्य ण्यायनण् एयण् णीय इत्येते प्रत्यया भवन्ति



अपत्येऽर्थे यथासंख्येन ॥ चकारापितृष्वसादेरियण् प्रत्ययो भवति ॥  
 गर्गस्यापत्यं-गार्ग्यः । वत्सस्यापत्यं-वात्स्यः । जमदग्नेरपत्यं-जामदग्न्यः ।  
 सोमस्यापत्यं-सौम्यः । नडस्यापत्यं-नाडायणः । चरस्यापत्यं-चारायणः ।  
 चन्द्रस्यापत्यं-चान्द्रायणः । 'अलुक् कचित्' (सू० ५४९) अमुष्या-  
 पत्यम्-आमुष्यायणः । 'यस्य लोपः' (सू० ३६७) अत्रेरपत्यम्-  
 आत्रेयः । मृकण्डस्यापत्यं-मार्कण्डेयः । कपेरपत्यं-कापेयः । गङ्गाया  
 अपत्यं-गाङ्गेयः । मङ्गा अपत्यं-माहेयः । कचित्स्त्रीलिङ्गादण् भवति ॥  
 मूमेरपत्यं-भौमः ॥ ५३४ मातृपितृभ्यां स्वसा ८ ॥ मातृपितृभ्यां  
 शब्दाभ्यां परस्य स्वसृशब्दस्य सकारस्य षकारः स्यात्समासे सति ॥  
 पितुः स्वसा-पितृष्वसा । पितृष्वसुरपत्यं-पैतृष्वस्त्रीयः । मातुः स्वसा-  
 मातृष्वसा । मातृष्वसुरपत्यं-मातृष्वस्त्रीयः ॥ ५६५ ढकि लोपः ९ ॥  
 मातृष्वसुरन्तस्य लोपः । स्याङ्कुकि ॥ अत एव ढक् ॥ ५६६ आयने-  
 यीनीयियः फट्सछां प्रत्ययादीनाम् १० ॥ प्रत्ययादिमू-  
 तानां फादीनां क्रमादायन्नादय आदेशाः स्युः ॥ आयन् एय् ईन्  
 ईय् इय् एते आयन्नादयः ॥ ५६७ किति च ११ ॥ किति  
 तद्धिते परे अचामादेरचो वृद्धिः स्यात् ॥ पैतृष्वसेयः ॥ ५६८  
 मातृष्वसुश्च १२ ॥ पितृष्वसुर्यदुक्तं तदस्यापि स्यात् ॥ मातृष्वसेयः ॥  
 ५६९ मातृपितृभ्यां पितरि डामहच् १३ ॥ आभ्यां परो डामहच्  
 प्रत्ययो भवति ॥ मातुः पिता-मातामहः ॥ पितुः पिता-पितामहः ॥  
 ५७० लुग्बहुत्वे क्वचित् १४ ॥ अपत्येऽर्थे उत्पन्नस्य प्रत्ययस्य बहु-  
 त्वे सति क्वचिदनृषिविषये ऋषिविषये च लुग्भवति ॥ गर्गस्यापत्यानि  
 पुमांसो-गर्गाः । बहुत्वविवक्षायां जस् । अत्रेरपत्यानि-अत्रयः 'ए औ  
 जसि' (सू० १५९) विदेहस्यापत्यानि-विदेहाः ॥ ५७१ भृग्वत्रि-  
 कुत्साङ्गिरोवसिष्ठनोतमदेशत्तुल्याख्यक्षत्रियेभ्यः परस्य प्रत्ययस्य

ह्युभवति १५ ॥ मृगवः । कुत्साः । वसिष्ठाः ॥ ५७२ देवतेद-  
 मर्थे १६ ॥ देवतार्थे इदमर्थे चोक्ताः प्रत्यया भवन्ति ॥ इन्द्रो देवता  
 यस्येति-ऐन्द्रं हविः । सोमो देवता यस्येति-सौम्यं हविः । देवदत्तार्थ-  
 सिदं-दैवदत्तं वस्त्रम् ॥ ५७३ कचिद्वयोः १७ ॥ कचित्पूर्वोत्तरप-  
 द्वादेरचो वृद्धिर्भवति ञिति णिति च तद्धिते परे ॥ अग्निमरुतौ  
 देवते यस्य तत्-आग्निमारुतं कर्म । सुष्टु हृदयं यस्यासौ-सुहृत् । सुहृदो  
 भावः-सौहार्दम् । अत्र भावेऽण् वक्तव्यः ॥ सुष्टु भावः-सौष्टवम् ।  
 अत्र सुष्टु अव्ययम् । एवमेव अव्ययं तिष्ठति । सुभगस्य भावः-सौभा-  
 ग्यम् ॥ ५७४ णितो वा १८ ॥ उक्ता वक्ष्यमाणाश्च प्रत्यया विष-  
 यान्तरे णितो वा भवन्ति ॥ अजो गौर्यस्यासौ-अजगुः शिवः ।  
 'गोः' (सू० ५३१) इति ह्रस्वः । 'व्योव्यस्वरे' (सू० ५५९) तत्सेदं  
 धनुराजगवं-अजगवं वा । कुमुदस्येव गन्धो यस्याः सा-कुमुदगन्धिः ।  
 तस्या अपत्यं स्त्री कौमुदगन्ध्या वा कुमुदगन्ध्या । 'आवतः स्त्रियाम्'  
 (सू० २०३) इत्याप् । श्वशुरस्यायं-श्वाशुर्यो ग्रामः । विष्णोरिदं-  
 वैष्णवम् । गोरिदं-गव्यम् । कुले भवं-कुल्यम् । तवेदं-त्वदीयम् ।  
 ममेदं-मदीयम् । अत्र णीयप्रत्ययो न णित् ॥ ५७५ चतुरश्च लोपो  
 ण्यणीययोः १९ ॥ चतुरशब्दस्य चकारस्य लोपो भवति ण्यणीययोः  
 प्रत्यययोः परतः ॥ ५७६ पूरणोऽर्थे ण्यणीयौ भवतः २० ॥ चतुर्ण  
 संख्यापूरकं तुर्य-तुरीयम् ॥ ५७७ अन्यस्य दक् २१ ॥ अन्य-  
 शब्दस्य दगागमो भवति णीयप्रत्यये परे ॥ अन्यस्येदम्-अन्यदीयम् ।  
 अर्धं जरद्यस्याः सा-र्धजरती । अर्धजरत्या इदम्-अर्धजरतीयम् ॥ ५७८  
 स्वपरयोः कक् २२ ॥ स्वकीयम् । परकीयम् ॥ ५७९ कारका-  
 त्क्रियायुक्ते २३ ॥ कारकादप्येते अणादयः प्रत्यया भवन्ति क्रिया-  
 युक्ते कर्तरि कर्मणि चाभिधेये ॥ कुङ्कुमेन रक्तं वस्त्रं-कौङ्कुमम् ।

मधुरायाः आगतो जातो वा-माथुरः । ग्रामे भवः-ग्राम्यः-ग्रामीणः ।  
 भुरं वहतीति-धुर्यः-धौरेयः ॥ ५८० केनेयेकाः २४ ॥ क ईन  
 इय इक एते प्रत्यया भवन्ति भवाद्यर्थेषु ॥ णित्वं चैषां चैकलिङ्गम् ।  
 कर्णाटे भवः कार्णाटकः-कर्णाटकः । ग्रामादागतस्तत्र जातो वा  
 ग्राम्यः-ग्रामीणः । 'अक्षेर्दीर्घश्च' (सू० २८६) सग्रीचि भवो वा  
 सग्रीचा युक्तः-सग्रीचीनः । समीचि भवो वा समीचा युक्तः-समी-  
 चीनः । 'तिरश्चादयो निपात्यन्ते' (सू० २८८) तिरश्चि भवो वा  
 तिरश्चा युक्तः-तिरश्चीनः । उदीचि भवो वा उदीचा युक्तः-उदीचीनः ॥  
 ५८१ यलोपश्च २५ ॥ कन्यादीनामन्त्ययकारस्य लोपो भवति  
 यकारे खरे परे । कन्यादीनामुपधायाः कचिद्यकारस्य लोपो भवति  
 खरे यकारे च तद्धिते परे । 'यस्य लोपः' (सू० ३६७) कन्यायां  
 भवः-कानीनः । पुष्येण युक्ता पौर्णमासी-पौषी ॥ ५८२ नक्षत्रा-  
 दण् वक्तव्यः २६ ॥ अणन्तादीप् । पौष्यां भवः-पौषीणः । चातु-  
 र्मास्यं व्रतमाचरतीति-चातुर्मासिकः ॥ ५८३ इयो वा २७ ॥ क्षत्र-  
 शब्दाद्वा इयप्रत्ययो भवति ॥ क्षतात्रायते इति-क्षत्रम् । क्षत्राद्या  
 निपात्यन्ते । क्षत्रे भवः-क्षत्रियः-क्षान्नः ॥ ५८४ क्षत्रशब्दादण्  
 वक्तव्यः २८ ॥ शुक्रो देवता यस्य तत्-शुक्रियम्-शौक्रम् । इन्द्रो  
 देवता यस्येति-ऐन्द्रं-इन्द्रियम् । अक्षैर्दीव्यतीति-आक्षिकः । तर्के चतुरः  
 -तार्किकः । शब्दे कुशलः-शाब्दिकः । वेदे भवा-वैदिकी । अत्रेकोऽ-  
 णक्कार्यम् ॥ ५८५ त्यतनौ २९ ॥ त्यश्च तनश्च त्यतनौ । किमादे-  
 रद्यादेर्भवाद्यर्थे त्यतनौ प्रत्ययौ भवतः ॥ कुत्र भवः-कुत्रत्यः । कुतो भवः-  
 कुतस्त्यः । अद्य भवः-अद्यतनः । तत्र भवः-तत्रत्यः । ततो भवः-सत-  
 स्त्यः । अत्र भवः-अत्रत्यः । अतो भवः-अतस्त्यः । सदा भवः-सदातनः ।

भोः भवः-भस्तनः । भो भवः-भस्तनः । पुरा भवः-पुरास्तनः । चिरं  
 भवः-चिरास्तनः । सायं सन्तः-सायंतनः । प्राहे भवः-प्राहेतनः ॥ ५८६  
 चिरादिभ्यस्तः ३० ॥ चिरपरुपरारिभ्यस्तो भवाद्यर्थे । चिरं भवः-  
 चिरलः ॥ परु भवः-परुलः । परारि भवः-परारिलः ॥ ५८७  
 स्वार्थेऽपि ३१ ॥ उच्चाः प्रत्ययः स्वार्थेऽपि भवन्ति ॥ देवदत्त एव  
 देवदत्तिकः । चत्वारो वर्णा एव-चातुर्वर्ण्यम् । चोर एव-चौरः ॥  
 ५८८ अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः ३२ ॥ अव्ययस्य सर्वादेश्या-  
 न्यस्वरात्पूर्वोऽकच्प्रत्ययो भवति ॥ उच्चैरेव-उच्चकैः । मीचैरेव-  
 मीचकैः । सर्व एव-सर्वकः । विश्व एव-विश्वकः । मया एव-मयका ।  
 त्वया एव-त्वयका । तदेव-तकत् । यदेव-यकत् । एतदेव-  
 एतकत् ॥ ५८९ अणीनयोर्युष्मदस्मदोस्तकादिः ३३ ॥ अण्  
 च ईनश्च अणीनौ, तयोः अणीनयोः प्रत्यययोः परतो युष्मदस्मदो-  
 स्तवकादय आदेशा भवन्ति ॥ आदिशब्दाच्चकममकयुष्माका-  
 साकाः । एकत्वे तवकममकौ । द्वित्वे बहुत्वे च युष्माकासाकौ ।  
 तवेदं-तावकम् । ममेदं-मामकम् । तवायं-तावकीनः । ममायं-माम-  
 कीनः । युवयोरयं-यौष्माकः । आवयोरयम्-आसाकः । युवयोरयं-  
 यौष्माकीणः । आवयोरयम्-आसाकीनः । युष्माकमयं-यौष्माकः ।  
 अस्माकमयम्-आसाकः । युष्माकमयं-यौष्माकीणः । अस्माकमयम्-  
 आसाकीनः ॥ ५९० वतुल्ये ३४ ॥ तुल्ये सादृश्येऽर्थे वतुप्रत्ययो  
 भवति ॥ चन्द्रेण तुल्यं-चन्द्रवन्मुखम् । घटेन तुल्यं-घटवदुदरम् ।  
 घटेन तुल्यं-पदवत्कन्वलम् ॥ ५९१ भावे तत्त्वयणः ३५ ॥ भावे  
 तत्त्वत्वं यण् च ते तत्त्वयणः । शब्दस्य प्रवृत्तिनिमित्तं भावः  
 तस्मिन्भावे तत्त्व यण् इत्येते प्रत्यया भवन्ति ॥ ब्राह्मणस्य भावः-  
 ब्राह्मणता । तान्तस्य नित्यं स्त्रीलिङ्गत्वाद्वाप् ॥ ५९२ समाहारे तां

च त्रेर्गुणश्च ३६ ॥ त्रयणां समाहारः-त्रेता । चकारात्समूहः प्रत्यया-  
न्तरमपि । तेन हस्तिनां समूहः-हास्तिकम् । धेनूनां समूहः-  
धेनुकम् । अत्र कप्रत्ययः । तस्य णित्वादादिवृद्धिः ॥ ५९३ अचि-  
त्तवाचकादिकः ३७ ॥ कवचानां समूहः-कावचिकम् । अवूपानां  
समूहः-आवूपिकम् । शङ्कुलीनां समूहः-शाङ्कुलिकम् ॥ ५९४ कव-  
चिन्शब्दादिकः ३८ ॥ कवचिनां समूहः-कावचिकम् ॥ ५९५  
गणिकाया ण्यः ३९ ॥ गणिकानां समूहः-गाणिक्यम् ॥ ५९६  
केदाराद्यञ् च ४० ॥ चकारादिकः । केदाराणां समूहः-कैदार्यम्-  
कैदारिकम् ॥ ५९७ युवत्यादेरण् ४१ ॥ युवतीनां समूहः-यौवतम् ।  
भिक्षाणां समूहः-भैक्षम् ॥ ५९८ पाशादिभ्यो यः ४२ ॥ स च  
स्त्रियाम् ॥ पाशानां समूहः-पाश्या । वातानां समूहः-वात्या । रथा-  
नां समूहो रथ्या । खलानां समूहः-खल्या ॥ ५९९ खलगोरथेभ्य  
इनित्रकट्याः ४३ ॥ इनिः खलिनी । रथानां समूहः-रथकट्या ।  
रथ्येत्यपि । गवां समूहः-गोत्रा । गव्येत्यादिप्रयोगा ऊह्याः । जनानां  
समूहः-जनता । ब्राह्मणस्य भावः-ब्राह्मणत्वम् । त्वयणन्तं नपुंसकम् ।  
ब्राह्मणस्य भावः-ब्राह्मण्यम् । सुमनसो भावः-सौमनस्यम् । सुभगस्य  
भावः-सौभाग्यम् । विदुषो भावः-वैदुष्यम् । 'वसोर्व उः' (सू०  
३०२) ॥ ६०० कर्मण्यपि यण् वक्तव्यः ४४ ॥ कर्मण्यपीत्य-  
पिशब्दात्साध्वर्थे यण् तस्य णित्वं न । सामनि साधुः-सामन्यः ।  
कर्मणि साधुः-कर्मण्यः । सभायां साधुः-सभ्यः । ब्राह्मणस्येदं कर्म-  
ब्राह्मण्यम् । राज्ञ इदं कर्म-राजन्यम्-राज्यम् । 'नो वा' (सू० ५३४)  
इति टेलोपः । अन्यत्रापि यण् प्रत्ययः ॥ ६०१ समानस्य वा स  
इत्यादेशः ४५ ॥ समाने उदरे शयितः-समानोदर्यः-सौदर्यः ।  
शतेन-श्रीतः-श्रुतः ॥ ६०२ लोहितादेर्हिदिमन् ४६ ॥ लोहित-

देर्गणाद्भावेऽर्थे इमन् प्रत्ययो भवति स इमन् डित्संज्ञो भवति ।  
 डित्त्वाड्डिलोपः ॥ लोहितस्य भावः—लोहितीमा । लोहितादेरिति अने-  
 कस्वरात् डित् वक्तव्यः । यत्र एकस्वरस्तत्र न डित् । लोहितादे-  
 रिमन् वैकल्पिकः । तेन लौहित्यम् । लोहितत्वम् । कालस्य भावः—  
 कालिमा । लघोर्भावः—लघिमा । अणोर्भावः—अणिमा । 'गुर्वादेः'  
 (सू० ६५६) इति गुरोर्ग्रादेशः । गुरोर्भावः—गरिमा । वरस्य  
 भावः—वरिमा ॥ ६०३ इमनि लोपः ४७ ॥ इमनि प्रत्यये परे  
 वकारस्य लोपो भवति ॥ स्थूलस्य भावः—स्थेमा । स्थूलस्य स्थवादेशः ॥  
 ६०४ ऋ र इमनि ४८ ॥ इमनि प्रत्यये परे हसादेर्लघोर्ऋकारस्य  
 रो भवति ॥ पृथोर्भावः—प्रथिमा । दृढस्य भावः—द्रढिमा । मृदोर्भावः—  
 म्रदिमा । भृशस्य भावः—भ्रशिमा । कृशस्य भावः—क्रशिमा । हसादि-  
 त्वाभावात् । ऋजोर्भावो ऋजिमा लघुत्वाभावात् । कृष्णस्य भावः  
 कृष्णिमा । संयोगपूर्वकत्वान्न लघुः । बहोर्भाव इति विग्रहे ॥ ६०५  
 बहोरिलोपो भू च बहोः ४९ ॥ बहोर्ऋतरेषामिमनादीनामिकारस्य  
 लोपो भवति बहोः स्थाने भू चादेशः ॥ भूमा ॥ ६०६ अस्त्यर्थे  
 मतुः ५० ॥ नाम्नो मतुः प्रत्ययो भवति अस्यास्मिन्वास्तीत्येतस्मिन्नर्थे ॥  
 उकारो नुम्बिधानार्थः । गौरस्यास्तीति—गोमान्-गोमती ॥ ६०७  
 फलबर्हरथेभ्य इनेनौ वा वक्तव्यौ ५१ ॥ फलमस्यास्तीति—  
 फलिनः—फली । बर्हमस्यास्तीति—बर्हिणः—बर्हि । रथोऽस्यास्तीति—रथि-  
 नः—रथी ॥ ६०८ बलवाताभ्यामूलः ५२ ॥ बलूलः । वातूलः ॥  
 ६०९ वातातिसाराभ्यां किन् ५३ ॥ वातकी । अतिसारकी ॥  
 ६१० ऊर्णाहंशुभंभ्यो युः ५४ ॥ अस्त्यर्थे ॥ ऊर्णायुः । अहंयुः ।  
 शुभंयुः ॥ ६११ अर्णःकेशयोर्वः ५५ ॥ अर्णसः सलोपश्च । अर्णवः ।  
 केशवः ॥ ६१२ शंकंभ्यां बभयुस्तितुतयसः ५६ ॥ आभ्यामेते

त्ययाः स्युरस्त्यर्थे ॥ शं विद्यते यस्यासौ-शंबः । शंभः । शंयुः ।  
 शंतिः । शंतुः । शंतः । शंयः । कं विद्यते यस्यासौ-कंबः । कंभः ।  
 कंयुः । कंतिः । कंतुः । कंतः । कंयः-इत्यादि ॥ ६१३ लोमा-  
 देभ्यः शः ५७ ॥ लोमशः ॥ ६१४ पामादेर्नः ५८ ॥ पामनः ।  
 पङ्गना ॥ ६१५ पिच्छादेरिलच् ५९ ॥ पिच्छिलः ॥ ६१६  
 फेनादिभ्य इलच् ६० ॥ फेनिलः ॥ ६१७ तुन्दिवलिचटिभ्यो  
 णः ६१ ॥ तुन्दिभः । वलिभः । चटिभः ॥ ६१८ कृष्यादिभ्यो  
 लच् दीर्घश्च ६२ ॥ कृषीवलः ॥ ६१९ प्रज्ञार्चाश्रद्धावृत्ति-  
 योऽण् ६३ ॥ प्रज्ञाऽस्यास्तीति-प्राज्ञः । आर्चः । श्राद्धः । वार्तः ॥  
 ६२० शृङ्गवृन्दाभ्यामारकच् ६४ ॥ प्रशस्तं शृङ्गमस्यास्तीति-  
 शृङ्गारकः । प्रशस्तं वृन्दमस्यास्तीति-वृन्दारकः ॥ ६२१ मध्वादे रः  
 ५ ॥ मधुरः । मुखरः । शुषिरः । रन्ध्रवानित्यर्थः । कुञ्जरः । कुञ्जो  
 स्तिहनुः ॥ ६२२ सिध्मादेर्लः ६६ ॥ सिध्माऽस्यास्तीति-सिध्मलः ।  
 चूडाऽस्यास्तीति-चूडालः ॥ ६२३ अङ्कौ च मत्वर्थे ६७ ॥ मत्वर्थे  
 अङ्कौ प्रत्ययौ भवतः ॥ वैजयन्ती पताका यस्यासौ-वैजयन्तः ।  
 या विद्यते यस्यासौ-मायिकः ॥ ६२४ मान्तोपधाद्वत्विनौ ६८ ॥  
 अन्तोपधात् वत्विनौ स्तः । मश्च अश्च मौ, अन्तश्च उपधा च  
 अन्तोपधे, मौ अन्तोपधे यस्यासौ मान्तोपधस्तस्माद्वत्विनौ । मकारान्ता-  
 कारोपधादकारान्तादकारोपधाच्च वत्विनौ प्रत्ययौ भवतः अस्त्यर्थे ॥  
 वोऽस्यास्तीति मधवान् ॥

श्रियां यशसि सौभाग्ये योनौ कान्तौ महिम्नि च ।

सूर्ये संज्ञाविशेषे च मृगाङ्केऽपि भगः स्मृतः ॥ १०० ॥

भगं भाग्यं विद्यते यस्यासौ भगवान् । लक्ष्मीरस्यास्तीति-लक्ष्मी-

चान् । पुत्रोऽस्यास्तीति-पुत्रवान् । धनमस्यास्तीति-धनवान्-धनी ।  
 छत्रमस्यास्तीति-छत्रवान्-छत्री । 'इनां शौ सौ' (सू० २६१)  
 दण्डो विद्यते यस्यासौ-दण्डवान्-दण्डी । क्षेत्रं विद्यते यस्यासौ-  
 क्षेत्रवान्-क्षेत्री । विद्याऽस्यास्तीति-विद्यावान् । दृषदो विद्यन्ते  
 यस्यासौ-दृषद्वान् । दृषद्वती भूमिः । 'ष्टितः' (सू० ३७४)  
 यशोऽस्यास्तीति-यशस्वान् । किं विद्यते यस्यासौ-किंवान् । कामो  
 विद्यते यस्यासौ-कामी । कृमयो विद्यन्ते यस्यासौ-कृमिवान् ।  
 शमोऽस्यास्तीति-शमी । दमोऽस्यास्तीति-दमी ॥ ६२५ तडिदादि-  
 भ्यश्च ६९ ॥ तडिदादिभ्यः शब्देभ्यो वतुप्रत्ययो भवति ॥  
 तडिद्विद्यते यस्यासौ-तडित्त्वान् । भानि नक्षत्राणि विद्यन्ते  
 यस्यासौ-भवान् । यशस्वान् । मरुद्विद्यते यस्यासौ-मरुत्त्वान् ॥  
 ६२६ तकारान्तस्य सकारान्तस्य हसादावस्त्यर्थे प्रत्यये परे  
 अपदान्तता वक्तव्या ७० ॥ यस्वरादौ प्रत्ययमात्रे परे सर्वेषामप-  
 दान्तता भवति, ईये परे पदान्तता । तेन भवदीयम् ॥ ६२७  
 एतत्किञ्चित्तद्धः परिमाणे वतुः ७१ ॥ एतत्किञ्चित्तद्धः शब्देभ्यः  
 परिमाणेऽर्थे वतुप्रत्ययो भवति ॥ ६२८ यत्तदोरा ७२ ॥ यत्तदो-  
 ष्टेरात्वं भवति वतौ परे ॥ यत्परिमाणमस्येति-यावान् । तावान् ॥  
 ६२९ किमः किर्यश्च ७३ ॥ किमशब्दस्य किरादेशो भवति,  
 वतोर्वकारस्य यकारादेशो भवति ॥ किं परिमाणमस्येति-कियान् ॥  
 ६३० आ इश्चैतदो वा ७४ ॥ एतदष्टेर्वा आत्वं भवति वतौ परे ॥  
 यस्मिन्पक्षे आत्वं न तस्मिन्पक्षे इशादेशः स्यात् ॥ शकारः सर्वा-  
 देशार्थः ॥ चकाराद्वतोर्वकारस्य यकारः ॥ एतत्परिमाणमस्येति-  
 एतावान् । इयान् ॥ वाशब्दोऽनुक्तसमुच्चयार्थः । तेन इदमो वतु-  
 प्रत्ययः । इदम इश चकाराद्वतोर्वकारस्य यश्चेति वाच्यम् । इदं



परिमाणं यस्य सः-इयान् । शकारः सर्वदेशार्थः ॥ ६३१ तुन्दा-  
 देरिलः ७५ ॥ तुन्दादेर्गणात् इलः प्रत्ययो भवति ॥ प्रशस्तं तुन्दं  
 यस्यासौ-तुन्दिलः । उदरिलः ॥ ६३२ औन्नत्ये दन्तादुरः ७६ ॥  
 औन्नत्येऽर्थे वाच्ये सति दन्तशब्दादुरः प्रत्ययो भवति ॥ उन्नता  
 दन्ता यस्यासौ-दन्तुरः ॥ ६३३ श्रद्धादेर्लुः ७७ ॥ श्रद्धा विद्यते  
 यस्यासौ-श्रद्धालुः । कृपा विद्यते यस्यासौ-कृपालुः । मायालुः ।  
 दयालुः ॥ ६३४ सिध्मादेर्लुः ७८ ॥ सिध्मलः । स्नेहिलः ॥ ६३५  
 अस्मायामेधास्त्रग्भ्योऽस्त्यर्थे विनिर्वक्तव्यः ७९ ॥ तपो विद्यते  
 यस्यासौ-तपस्वी । यशस्वी । मायावी । मेधावी । सक् विद्यते यस्यासौ-  
 सग्मी ॥ ६३६ वाचो ग्मिनिः ८० ॥ वाच्शब्दात् ग्मिनिः प्रत्ययो  
 भवति अस्त्यर्थे । ग्मिनो गकारो व्यवधानार्थः । 'तेन जमे जमा वा'  
 ( सू० ७३ ) इत्यस्याप्राप्तिः । प्रशस्ता वाक् विद्यते यस्यासौ-वाग्मी ॥  
 ६३७ एकादाकिनिच्चासहाये ८१ ॥ न विद्यते एकः सहायो  
 यस्य सः-एकाकी । स्त्री चेत् एकाकिनी ॥ ६३८ आलाटौ कुत्सित-  
 भापिणि ८२ ॥ कुत्सितभाषिण्यर्थे वाच्ये सति आलाटौ प्रत्ययौ  
 भवतः ॥ आलप्रत्ययो बहुभाषित्वे कुत्सितभाषित्वे च । आटप्रत्ययस्तु  
 केवलकुत्सितभाषित्वे ॥ कुत्सिता वाक् विद्यते यस्यासौ-वाचालः ।  
 एवं वाचाटः ॥ ६३९ लः समाहारप्रकृष्टयोः ८३ ॥ नाम्नः  
 समाहारप्रकृष्टयोर्विषये लः प्रत्ययो भवति ॥ क्लेशस्य समूहः,-  
 प्रकृष्टः क्लेशो वा-क्लेशलः ॥ ६४० ईषदपरिसमाप्तौ कल्पदेश्य-  
 देशीयाः ८४ ॥ ईषदपरिसमाप्तः सर्वज्ञ इति-सर्वज्ञकल्पः ।  
 ईषदपरिसमाप्तः पटुरिति-पटुदेश्यः । पटुदेशीयः । ईषदूनः कवि-  
 रिति-कविदेश्यः । कविदेशीयः ॥ ६४१ प्रशंसायां रूपः ८५ ॥  
 प्रशंसायां रूपः प्रत्ययो भवति ॥ प्रशस्तो वैयाकरणः-वैयाकरणरूपः ॥

६४२ कुत्सायां पाशः ८६ ॥ कुत्सायां वाच्यायां सत्यां पाशः  
 प्रत्ययो भवति ॥ कुत्सितो वैयाकरणः—वैयाकरणपाशः ॥ ६४३  
 भूतपूर्वे चरट् ८७ ॥ भूतपूर्वेष्वर्थे वाच्ये सति चरट् प्रत्ययो भवति ॥  
 पूर्वं भूत इति—भूतपूर्वः । पूर्वं भूत इति—भूतचरः । पूर्वं दृष्ट इति—  
 दृष्टचरः । स्त्री चेद्दृष्टचरी । 'ष्ठितः' (सू० ३७४) ॥ ६४४ प्राचुर्य-  
 विकारप्राधान्यादिषु मयट् प्रत्ययो भवति ८८ ॥ ६४५ गोः  
 पुरीषे च ८९ ॥ गोः पुरीषं—गोमयम् । अन्नं प्रचुरं यस्मिन्नसौ—अन्न-  
 मयो ञ्यज्ञः । मृदो विकारो—मृन्मयो घटः । स्त्री प्रधानं यस्यासौ  
 —स्त्रीमयो जारमः । आदिशब्दात्स्वरूपार्थे मयट् । अमृतस्वरूपोऽमृत-  
 मयः—चन्द्रः ॥ ६४६ तदधीते वेद वेत्यत्राण्वक्तव्यः ९० ॥  
 तदधीतेऽथवा वेद इत्यत्रार्थे द्वितीयान्ताच्चाप्नोऽण् वक्तव्यः । व्याक-  
 रणमधीते वेद वा—वैयाकरणः । द्वारि नियुक्तः—दौवारिकः । स्वस्ति  
 इत्याहासौ—सौवस्तिकः । न्यग्रोधस्येदं—नैयग्रोधम् ॥ ६४७ व्यासादेः  
 किः ९१ ॥ व्यासस्यापत्यं—वैयासकिः । वारुडकिः ॥ ६४८ सुधा-  
 तुरकङ् च ९२ ॥ सुधातुरिञ् स्यादकङादेशश्च ॥ सुधातुरपत्यं  
 —सौधातकिः । शोभनोऽश्वः—स्वश्वः । तं वेदेति—सौवश्वः । न्याये  
 कुशलः—नैयायिकः ॥ ६४९ न सन्धिद्योयुट् च ९३ ॥ सन्धिजौ  
 य्वौ सन्धिद्यौ, तयोः सन्धिजयोर्यकारवकारयोः संवन्धिनः स्वरस्य  
 वृद्धिर्न भवति; किंतु तयोर्युडागमो भवति, तेन इद् उद् इत्येतावा-  
 गमौ भवतः ॥ किं कृत्वा? वर्णविक्षेपं कृत्वा ॥ यकारात्पूर्वं इकारः ।  
 वकारात्पूर्वं उकारः । 'पश्चात्' आदिस्वरस्य जिगति च वृद्धिः (सू०  
 ५५८) ॥ ६५० चटकादैरण् ९४ ॥ चटकस्यापत्यं—चाटकैरः ॥  
 ६५१ कल्याण्यादीनामिनेयः ९५ ॥ कल्याण्या अपत्यं—काल्याणि-  
 नेयः ॥ ६५२ इतो जातार्थे ९६ ॥ जातार्थे इतः प्रत्ययो भवति ॥

लज्जा संजाता यस्यासौ-लज्जितः । त्रपा संजाता यस्यासौ-त्रपितः ।  
 क्षुधा संजाता यस्यासौ-क्षुधितः ॥ ६५३ तरतमेयस्विष्टाः प्रकर्षे ९७ ॥  
 अतिशयेऽर्थे तरः तमः इयसुः इष्टः इत्येते प्रत्यया भवन्ति ॥ अति-  
 शयेन कृष्णः-कृष्णतरः । अतिशयेन कृष्णः-कृष्णतमः । अतिशयेन  
 शुक्लः-शुक्लतरः । शुक्लतमः ॥ ६५४ ईयस्विष्टौ डिताविति वक्त-  
 व्यौ ९८ ॥ अतिशयेन लघुः-लघ्वीयान् । अतिशयेन लघुः-लघ्वीयसी ।  
 अतिशयेन लघुः-लघिष्ठः । अतिशयेन पापी इति-पापीयान् । अतिशयेन  
 पापिनी इति-पापीयसी । अतिशयेन पापी इति-पापिष्ठः ॥ ६५५ विन्-  
 मतुवतुत्प्रत्ययानां लोपश्च इष्टादौ ९९ ॥ मतिर्विद्यते यस्यासौ-मति-  
 मान् । अतिशयेन मतिमान् इति-मतिष्ठः । अतिशयेन मायावी इति-मा-  
 यिष्ठः । अतिशयेन धनवान् इति-धनिष्ठः । अतिशयेन कनीयान् इति-क-  
 निष्ठः ॥ ६५६ गुर्वादेरिष्टमेयस्सु गरादिष्वलोपश्च १०० ॥ इष्टमे-  
 यस्सु परतो गुर्वादेर्गरादिरादेशो भवति । टेरलोपः ॥ गुरोर्गरादेशः ।  
 अतिशयेन गुरुः-गरीयान्-गरीयसी-गरिष्ठः । गुरोर्भावः-गरिमा । प्रियस्य  
 प्रादेशः । अतिशयेन प्रिय इति-प्रेयान्-प्रेयसी-प्रेष्ठः । 'लोहितादेर्हिदि-  
 मन्' ( सू० ६०२ ) प्रेमा । स्थूलस्य स्थवादेशः । अतिशयेन स्थूलः  
 -स्थवीयान्-स्थवीयसी-स्थविष्ठः स्वेमा । म्यिरस्य स्थादेशः । स्थेयान्-  
 स्थेयसी-स्थेष्ठः-स्थेमा । बहुशब्दस्य बंधादेशः । अतिशयेन बहुः-बंधि-  
 यान्-बंधीयसी-बंधिष्ठः । तृप्रशब्दस्य त्रपादेशः । त्रपिष्ठः । ह्रस्वस्य  
 ह्रस्वादेशः ह्रसिष्ठः । वृद्धस्य वर्षादेशः । अतिशयेन वृद्धः-वर्षी-  
 यान्-वर्षीयसी-वर्षिष्ठः । अन्तिकवाटयोर्नेदसाधौ । अतिशयेन अन्तिकः-  
 नेदीयान्-नेदीयसी-नेदिष्ठः । अतिशयेन बाढः-साधीयान्-साधीयसी-  
 साधिष्ठः । दूरस्य द्वादेशः । अतिशयेन दूरः-दवीयान्-दवीयसी-दवि-  
 ष्ठः । युवन्शब्दस्य यवादेशः । अतिशयेन युवा-यवीयान्-यवीयसी-

यविष्ठः । अल्पस्य कनादेशः । अतिशयेन अल्पः—कनीयान्-कनीयसी-क-  
निष्ठः ॥ ६५७ ईलोपो ज्याशब्दादीयसः १०१ ॥ ज्याशब्दादि-  
यस ईकारस्य लोपो भवति ॥ वृद्धस्य ज्यादेशः । अतिशयेन वृद्ध  
इति—ज्यायान्-ज्यायसी-ज्येष्ठः-ज्येमा । उत्तमस्य वरादेशः । अतिशयेन  
उत्तम इति वरीयान्-वरीयसी-वरिष्ठः-वरिमा । दीर्घस्य द्राशदेशः ।  
अतिशयेन दीर्घ इति—द्रावीयान्-द्रावीयसी-द्राधिष्ठः-द्राधिमा । प्रशस्यस्य  
आदेशः । अतिशयेन प्रशस्यः—श्रेयान्-श्रेयसी-श्रेष्ठः-श्रेमा ॥ ६५८ बहो-  
रिष्ठे यिः १०२ ॥ बहुशब्दात्परस्य इष्ठे वर्तमानस्येकारस्य यिर्भवति  
ईयस ईकारस्य लोपश्च ॥ बहोर्भूरादेशः । अतिशयेन बहुरिति—भूयान्  
भूयसी-भूयिष्ठः-भूमा । क्षिप्रस्य क्षेपादेशः । अतिशयेन क्षिप्रः—क्षेपी-  
यान्-क्षेपीयसी-क्षेपिष्ठः । क्षुद्रस्य क्षोदादेशः । अतिशयेन क्षुद्रः—क्षोदी-  
यान्-क्षोदीयसी-क्षोदिष्ठः ॥ ६५९ किमोऽव्ययादाख्याताच्च तर-  
तमयोराभ्वक्तव्यः १०३ ॥ अतिशयेन कुतः—कुतस्तरां परमाणवः ।  
अतिशयेन कुत इति कुतस्तरां तेषामारम्भकत्वम् । उच्चैस्तरां गायति ।  
अतिशयेन उच्चैरिति उच्चैस्तमाम् । नीचैस्तराम्-नीचैस्तमाम् । किंतराम्-  
किंतमाम् । अतिशयेन पठति इति—पठतितराम् पठतितमाम् । अतिशयेन  
पचति इति—पचतितराम्-पचतितमाम् ॥ ६६० परिमाणे दघ्नादयः  
१०४ ॥ परिमाणेऽर्थे वाच्ये सति दघ्नद् द्वयसद् मात्रद् इत्येते प्र-  
त्यया भवन्ति ॥ जानु परिमाणं यस्य तत्—जानुदघ्नं जलम् । शिरः  
परिमाणं यस्य तत्—शिरोद्वयसम् । पुरुषः परिमाणं यस्य तत्—पुरुषमात्रं  
जलम् ॥ ६६१ द्वयोर्बहूनां चैकस्य निर्धारणे किमादिभ्यो डतर-  
डतमौ वक्तव्यौ १०५ ॥ कतरो भवतोर्मध्ये काण्वः ? । क इति  
कतरः । कतमो भवतां तान्निकः ? । क इति कतमः । भवतो  
यतरस्तार्किकस्ततर उद्ब्रूतात् । र्य इति यतरः । स इति ततरः ।

यतमः, ततमः ॥ ६६२ संख्येयविशेषावधारणे द्वित्रिभ्यां तीयः  
 १०६ ॥ द्वयोः संख्यापूरकः-द्वितीयः ॥ ६६३ त्रेः संप्रसारणं सख-  
 रस्य १०७ ॥ त्रयाणां संख्यापूरकः-तृतीयः ॥ ६६४ षट्चतुरोः  
 स्थद् १०८ ॥ षण्णां संख्यापूरकः-षष्ठः । 'ष्टुभिः ष्टुः' (सू० ७९) ॥  
 चतुर्णां संख्यापूरकः-चतुर्थः ॥ ६६५ पञ्चादेर्मद् १०९ ॥ पञ्चमः ।  
 सप्तमः । अष्टमः । नवमः । दशमः । इत्यादि ॥ ६६६ एकादशा-  
 देर्दः ११० ॥ ६६७ द्वित्र्यष्टैकानां द्वात्रयोष्टैकाः १११ ॥ प्राक्-  
 शतादनशीतिबहुव्रीहोरिति वक्तव्यम् ॥ एकेनाधिका दश एकादश ।  
 एकादशानां संख्यापूरक एकादशः-एकादशी । द्वादशः-द्वादशी ।  
 त्रयोदशः-त्रयोदशी । चतुर्दशः-चतुर्दशी । सप्तदशः-सप्तदशी ।  
 अष्टादशः-अष्टादशी ॥ ६६८ विंशत्यादेर्वा तमद् ११२ ॥ विंश-  
 तेः संख्यापूरकः विंशतितमः । पक्षे-॥ ६६९ विंशतेस्तिलोपः  
 ११३ ॥ विंशः ॥ ६७० चत्वारिंशदादौ वा ११४ ॥ द्विचत्वारिं-  
 शत्-द्वाचत्वारिंशत् । त्रिचत्वारिंशत्-त्रयश्चत्वारिंशत् । अष्टचत्वारिं-  
 शत्-अष्टाचत्वारिंशत् । अनशीतीति विशेषणाद्ब्रूयशीतिः । त्र्यशी-  
 तिः । अष्टाशीतिः ॥ ६७१ शतादेर्नित्यम् ११५ ॥ शततमः ॥  
 ६७२ कतिकतिपयाभ्यां थः ११६ ॥ कतिथः । कतिपयथः ॥  
 ६७३ संख्यायाः प्रकारे धा ११७ ॥ संख्यावाचकाच्छब्दात्प्रकारेऽर्थे  
 वाच्ये सति धाप्रत्ययो भवति ॥ द्विप्रकारं-द्विधा । त्रिप्रकारं-त्रिधा ।  
 चतुष्प्रकारं-चतुर्धा । पंचधा । षोढा ॥ ६७४ गुणोऽण् वा ११८ ॥  
 धाप्रत्ययान्तस्य शब्दस्य गुणो वा भवति अण् च वा भवति ॥ द्विप्र-  
 कारं-द्वेधा । त्रिप्रकारं-त्रेधा । धाप्रत्ययान्तात्स्वार्थेऽण् । द्विधा एव-  
 द्वैधम् । त्रैधम् ॥ ६७५ एकाद्व्यमुञ्वा ११९ ॥ ऐकध्यम् । एक-  
 धा ॥ ६७६ क्रियाया आवृत्तौ कृत्वसुच् १२० ॥ पञ्चवारान्

मुङ्क्ते इति-पञ्चकृत्वः । सप्तकृत्वः ॥ ६७७ द्वित्रिचतुर्भ्यः  
 सुः १२१ ॥ द्वित्रिचतुःशब्देभ्यः सुप्रत्ययो भवति ॥ द्विवारमिति  
 द्विः । त्रिवारमिति त्रिः । चतुः । द्विरुक्तम् । त्रिरुक्तम् ॥ ६७८  
 बह्वादेः कारकाच्छस्र १२२ ॥ बह्वादेः शब्दाच्छस्रप्रत्ययो भवति ॥  
 बहुवारानिति-बहुशः । अल्पशः । शतशः । सहस्रशः । लक्षशः ।  
 कोटिशः-इत्यादि । बहुशो धनं ददाति ॥ कारकात्किम् ? ॥ बहूनां  
 स्वामी ॥ ६७९ तयायटौ संख्याया अवयवे १२३ ॥ संख्याया  
 अवयवे वाच्ये सति तयायटौ प्रत्ययौ भवतः ॥ द्वौ अवयवौ यस्य  
 तत्-द्वितयम् । त्रितयम् । द्वौ अवयवौ यस्य तत्-द्वयम् । त्रयम् । चतु-  
 ष्ठी ॥ ६८० अल्पार्थे कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः १२४ ॥ अल्पा  
 कुटी इति कुटीरः । अल्पा शमी इति शमीरः । अल्पा शुण्डा इति  
 शुण्डारः ॥ ६८१ स्त्रीपुंसोर्नणस्त्रणौ १२५ ॥ स्त्रैणम् । पौंसम् ।  
 शेषा निपात्याः कत्यादयः । आदिशब्दात् या संख्या येषां ते-यति ।  
 सा संख्या येषां ते-सति । का संख्या येषां ते-कति । लोकाच्छेषस्य  
 सिद्धिः ॥

॥ इति सारस्वतव्याकरणे तद्धितप्रकरणम् ॥ १७ ॥

इति प्रथमा वृत्तिः समाप्ता ।



श्रीः

## तिङन्तप्रकरणम् ।

द्वितीया वृत्तिः ।

भ्वादिषु परस्मैपदिनः १

लक्ष्मीनृसिंहौ प्रणिपत्य काश्यां बुधांश्च पद्माकरभट्टमु-  
ख्यान् । सारस्वतीयां च तिवादिवृत्तिं क्रमाह्निखेयं  
गणपप्रसादात् ॥ १ ॥

अथाख्यातप्रक्रिया निरूप्यते ॥ ६८२ धातोः १ ॥ वक्ष्य-  
माणाः प्रत्यया धातोर्ज्ञेयाः ॥ ६८३ भ्वादिः २ ॥ भू सत्तायामि-  
त्यादिगणो धातुसंज्ञो भवति ॥ स च त्रिविधः—आत्मनेपदी पर-  
स्मैपद्युभयपदी चेति ॥ ६८४ आदनुदात्तङितः ३ ॥ अनुदात्तेतो  
ङितश्च धातोरादित्यात्मनेपदं भवति ॥ ६८५ जित्स्वरितेतश्च उभे  
४ ॥ जितः स्वरितेतश्च धातोरात्मनेपदपरस्मैपदे भवतः ॥ आत्म-  
गामि चेत्फलमात्मनेपदं, परगामि चेत्फलं परस्मैपदं प्रयोक्तव्यम् ।  
अन्वर्थानुगतार्थसंज्ञाबलत्वात् ॥ ६८६ परतोऽन्यत् ५ ॥ पूर्वोक्त-  
निमित्तविधुरादन्यस्माद्धातोः परस्मैपदं भवति ॥ ६८७ नव परस्मै-  
पदानि ६ ॥ तिवादीनामष्टादशसंख्याकानामाद्यानि नव वचनानि  
परस्मैपदसंज्ञानि भवन्ति । पराण्यात्मनेपदानि ॥ ६८८ वर्तमाने ७ ॥  
प्रारब्धापरिसमाप्तक्रियोपलक्षितः कालो वर्तमानस्तस्मिन्वर्तमानेऽभिधेये  
तिवादयः प्रत्यया भवन्ति [ अस्य तिवादेः पाणिनीयानां लुङिति संज्ञा । ] ॥  
तत्रैकवचनादीनि व्याक्रियन्ते ॥

टिप्प०—१ 'पराण्यात् पराण्यप्रेतनान्यात्मनेपदानि भवन्ति' इत्यपि पाठः  
कचित् ।

## ॥ परस्मैपदानि ॥

एकवचनानि । द्विवचनानि । बहुवचनानि ।

|        |      |     |       |
|--------|------|-----|-------|
| प्रथमः | तिप् | तस् | अन्ति |
| मध्यमः | सिप् | थस् | थ     |
| उत्तमः | मिप् | वस् | मस्   |

## ॥ आत्मनेपदानि ॥

|        |    |     |       |
|--------|----|-----|-------|
| प्रथमः | ते | आते | अन्ते |
| मध्यमः | से | आथे | ध्वे  |
| उत्तमः | ए  | वहे | महे   |

६८९ नाम्नि च युष्मदि चास्मदि च भागैः ८ ॥ नामादि-  
 षूपपदेषु प्राप्तेषु सत्सु त्रिभिर्भागैरेते प्रत्यया भवन्ति ( ते च त्रयो  
 भागा यथाक्रमं प्रथममध्यमोत्तमसंज्ञा भवन्ति । ) ॥ नाम्नि प्रयुज्यमाने  
 चशब्दादप्रयुज्यमानेऽपि प्रथमपुरुषः । युष्मदि मध्यमः ॥ तथैवास्-  
 द्युत्तमः । भू सत्तायाम् ॥ ६९० कर्तरि पं च ९ ॥ पं च परस्मैपदं कर्तरि  
 भवति ॥ चकारादात्मनेपदमपि ॥ तत्र भू इत्येतस्मात्परस्मैपदिनोऽ-  
 विवकरणात्कर्तरि तिबादयो योज्यन्ते ॥ तत्रैकत्वविवक्षायां प्रथमपुरु-  
 षैकवचने भू तिप् इति स्थिते । पकारः पित्कार्यार्थः ॥ ६९१  
 अप् कर्तरि १० ॥ धातोरप्प्रत्ययो भवति कर्तरि विहितेषु त्यादिषु  
 चतुर्षु दिप्पर्यन्तेषु परतः ॥ पकारो विकरणभेदज्ञापनार्थो गुणा-  
 र्थश्च ॥ प्रकृतिप्रत्ययान्तः पतति यः प्रत्ययः स विकरणः ॥ ६९२  
 गुणः ११ ॥ धातोरन्त्यभूतस्य नामिनो गुणो भवति, अवादेशश्च  
 भवति । द्व्यर्थविवक्षायां तस् ॥ ६९३ अपित्तादिर्ङित् १२ ॥  
 पकारेण तादिकं च विहायान्यः प्रत्ययो ङित्संज्ञो भवति ॥ अन्य  
 इति किम् ? इडाभायवर्जितो दशलकारान्तःपाती ङित् । आदि-

टिप्प०-१ आक्षीः प्रेरणार्थानद्यतनार्थलक्षणेषु चतुर्षु प्रत्ययगणेषु परेषु सत्सु  
 अप्रत्ययो भवतीत्यर्थः ।



शब्दात्सीसिग्रहणम् ॥ ६९४ कृत्यद्युसि १३ ॥ किते ङिति च परे धातोर्गुणो न भवति द्युसं वर्जयित्वा ॥ कृतद्विर्वचनादुसि परे तु गुणो भवति ॥ ततो ङित्वात्तसि गुणप्रतिषेधेऽप्यप्प्रत्ययनिमित्तो गुणो भवत्येव ॥ 'स्रोर्विसर्गः' (सू० १२४) भवतः । बहुवचनविवक्षायां भव अन्ति इति स्थिते ॥ ६९५ अदे १४ ॥ अकारस्य लोपो भवति अकारे एकारे च परे ॥ अदे इत्यत्र अकारैकारौ तिबादिप्रत्ययस्येत्यर्थः । भवन्ति । भवसि, भवथः, भवथ ॥ ६९६ ओमोरा १५ ॥ अकारस्य आत्वं भवति वकारे मकारे च परे । भवामि, भवावः, भवामः । स राजा धार्मिको भवति । त्वं साधुर्भवसि । अहमात्मविद्भवामि-इत्यादि ज्ञेयम् ॥ ६९७ अव्यवधानाच्च पुरुषविशेषः १६ ॥ यस्य क्रियापदेन व्यवधानं नास्ति ततः पुरुषविशेषः । अत्र व्यवधानं सूत्रस्थं ग्राह्यं, न तु वाक्यस्थम् । सूत्रक्रमेण पुरुषप्रयोगो भवति ॥ साधू स च त्वं च भवथः ॥ अहं त्वं स च पण्डिता भवामः । भूङ्प्राप्तौ आत्मनेपदी । तस्मात्तेप्रभृतीनि नव वचनानि प्रयोज्यानि । अब्गुणावः । भवते ॥ ६९८ आदाथ ई १७ ॥ आकारात्परस्य आथ्संबन्धिन आकारस्य ईकारो भवति ॥ भवेते, भवन्ते । भवसे, भवेध्वे, भवथे । 'अदे' (सू० ६९५) भवे, भवावहे, भवामहे । स श्रियं भवते ॥ ६९९ विधिसंभावनयोः १८ ॥ विधिः कर्तव्यार्थोपदेशः, संभावनं कल्पनमूहः, तत्र यादादयः प्रत्यया भवन्ति ॥ लिङिति चैषां संज्ञा पाणिनीयानाम् ॥

॥ परस्मैपदानि ॥

एकवचनानि । द्विवचनानि । बहुवचनानि ।

प्रथमः यात्

याताम्

युस्

|        |      |       |     |
|--------|------|-------|-----|
| मध्यमः | यास् | यातस् | यात |
| उत्तमः | याम् | याव   | याम |

### ॥ आत्मनेपदानि ॥

|        |       |         |        |
|--------|-------|---------|--------|
| प्रथमः | ईत    | ईयाताम् | ईरन्   |
| मध्यमः | ईथास् | ईयाथाम् | ईध्वम् |
| उत्तमः | ईय    | ईवहि    | ईमहि   |

७०० या ई १९ ॥ आकारात्परो या ई भवति ॥ 'अ इ ए'  
( सू० ४३ ) भवेत्, भवेताम् ॥ ७०१ युस इट् २० ॥ अकारा-  
त्परस्य युस इडागमो भवति ॥ भवेयुः । भवेः, भवेतम्, भवेत् ॥  
७०२ यामियम् २१ ॥ अकारात्परो यामियं भवति । भवेयम्,  
भवेव, भवेम । 'शिष्यो गुरुशुश्रूपको भवेत्' इति विधिः । भवेदसौ  
वेदपारगो ब्राह्मणत्वादिति संभावनम् । भवेत, भवेयाताम्, भवेरन् ।  
भवेथाः, भवेयाथाम्, भवेध्वम् । भवेय, भवेवहि, भवेमहि । 'अहं  
हरिभक्तिं भवेय' ॥ ७०३ आशीःप्रेरणयोः २२ ॥ अप्राप्तप्रार्थ-  
नमाशीः, परस्येष्टार्थाशंसनं वा । प्रेरणं प्रवर्तनम् । तत्र तुबादयः  
प्रत्यया भवन्ति ॥ एषां संज्ञा लोट् ॥

### ॥ परस्मैपदानि ॥

एकवचनानि । द्विवचनानि । बहुवचनानि ।

|        |       |      |       |
|--------|-------|------|-------|
| प्रथमः | तुप्  | ताम् | अन्तु |
| मध्यमः | हि    | तम्  | त     |
| उत्तमः | आनिप् | आवप् | आमप्  |

### ॥ आत्मनेपदानि ॥

|        |      |        |         |
|--------|------|--------|---------|
| प्रथमः | ताम् | आताम्  | अन्ताम् |
| मध्यमः | स्व  | आथाम्  | ध्वम्   |
| उत्तमः | ऐप्  | आवहैप् | आमहैप्  |

७०४ तुह्योस्तातड्डाशिषि वा वक्तव्यः २३ ॥ भवतु-  
भवतात्, भवताम्, भवन्तु ॥ ७०५ अतः २४ ॥ अकारात्परस्य  
हेर्लुग्भवति न तु तातडः ॥ तातडिति डित्करणं गुणवृद्धिप्रति-  
षेधार्थं न त्वन्त्यादेशार्थम् । भव-भवतात्, भवतम्, भवत । भवानि,  
भवाव, भवाम । आयुष्मान् भवतु भवान् । अध्ययनायोद्यतो भव  
सौम्य । भवताम्, भवेताम्, भवन्ताम् । भवस्व, भवेथाम्, भवध्वम् ।  
भवै, भवावहै, भवामहै । हरिं भवस्व स त्वम् ॥ ७०६ अनद्यतनेऽ-  
तीते २५ ॥ अतीताया रात्रेर्यामद्वयादर्वाग्यावदागामिन्याः प्रथम-  
यामद्वयं सोऽद्यतनः, ततोऽन्योऽनद्यतनः, तस्मिन्ननद्यतनेऽतीते काले  
दिवादयः प्रत्यया भवन्ति । एषां संज्ञा लङ् ।

### ॥ परस्मैपदानि ॥

एकवचनानि । द्विवचनानि । बहुवचनानि ।

|        |       |      |     |
|--------|-------|------|-----|
| प्रथमः | दिप्  | ताम् | अन् |
| मध्यमः | सिप्  | तम्  | त   |
| उत्तमः | अमिप् | व    | म   |

### ॥ आत्मनेपदानि ॥

|        |      |       |       |
|--------|------|-------|-------|
| प्रथमः | तम्  | आताम् | अन्त  |
| मध्यमः | थास् | आथाम् | ध्वम् |
| उत्तमः | ई    | वहि   | महि   |

दिसिमि इत्येतेषामिकार उच्चारणार्थः । ततो नकार इण्तन्यक-  
र्तरीति विशेषणार्थः । 'वाऽवसाने' (सू० २४०) इति दकारस्य  
तकारः ॥ ७०७ दिबादावद् २६ ॥ दिबादौ परे धातोरडागमो  
भवति ॥ अभवत्, अभवताम्, अभवन् । अभवः, अभवतम्, अभवत ।  
अभवम्, अभवाव, अभवाम । ह्योऽभवत्त्वपुत्रः । अभवत, अभवेताम्,

अभवन्त । अभवथाः, अभवेथाम्, अभवध्वम् । अभवे, अभवावहि,  
अभवामहि । स राज्यमभवत् ॥ ७०८ परोक्षे २७ ॥ धातोः परो-  
क्षेऽतीते काले णबादयः प्रत्यया भवन्ति ॥ एषां संज्ञा लिट् ॥

### ॥ परस्मपदानि ॥

एकवचनानि । द्विवचनानि । बहुवचनानि ।

|        |     |       |     |
|--------|-----|-------|-----|
| प्रथमः | णप् | अतुस् | उस् |
| मध्यमः | थप् | अथुस् | अ   |
| उत्तमः | णप् | व     | म   |

### ॥ आत्मनेपदानि ॥

|        |    |     |      |
|--------|----|-----|------|
| प्रथमः | ए  | आते | इरे  |
| मध्यमः | से | आथे | ध्वे |
| उत्तमः | ए  | वहे | महे  |

७०९ णादिः कित् २८ ॥ अपित् णादिः किङ्कवति ॥ ७१०  
द्विश्च २९ ॥ णबादिसंयोगे धातोर्द्विवचनम् ॥ ७११ सस्वरादि-  
द्विरद्विः ३० ॥ सस्वराद्योऽवयवोऽद्विरुक्तो द्विर्भवति ॥ भू भू णप्  
इति स्थिते । णकारो वृद्धर्थः । पकारः पित्कार्यार्थः ॥ ७१२ आ-  
भ्रोर्णादौ ३१ ॥ आ अश्च भूश्च आभवौ, तयोः पूर्वस्याकारस्य  
भूशब्दस्य च आकारो भवति णादौ सति ॥ ७१३ ह्रस्वः ३२ ॥  
पूर्वसंबन्धिनो दीर्घस्य ह्रस्वो भवति ॥ ७१४ झपानां जवचपाः  
३३ ॥ पूर्वसंबन्धिनां झपानां जबाश्चपाश्च भवन्ति ॥ झढघभानां  
जडदगबा भवन्ति ॥ खफछठथानां चटतकपा भवन्ति ॥ ७१५ भुवो  
बुक् ३४ ॥ भुवो बुगागमो भवति णादौ स्वरे परे ॥ बभूव, बभूवतुः,  
बभूवुः ॥ ७१६ क्रादेर्णादेः ३५ ॥ डुकृञ् करणे । सृ गतौ ।

डुभृञ् धारणपोषणयोः । वृञ् संवरणे । द्रुङ् गतौ । श्रु श्रवणे ।  
 स्तु प्रस्रवणे । घृञ् स्तुतौ । कृस्मृवृद्भुश्रुस्तु इत्येतस्मात्परस्य वसादे-  
 र्णादिर्गणस्येद् न भवत्यन्यस्माद्भवतीति नियमादनितोऽपीडागमः ।  
 'यदागमास्तद्गुणीभूतास्तद्गुणेन गृह्यन्ते' इति न्यायादिटोऽपि णबा-  
 द्यन्तत्वेन थपि वुक् । बभूविथ, बभूवथुः, बभूव । बभूव, बभूविव,  
 बभूविम । बलिर्बलवान् बभूव । बभूवे, बभूवाते, बभूविरे । बभू-  
 विषे, बभूवाथे ॥ ७१७ नामिनोऽचतुर्णां धो ढः ३६ ॥ नाम्य-  
 न्ताद्धातोरुत्तरस्य तिवादिचतुष्कव्यतिरिक्तस्य लिङो लुङ्लिटिश्च  
 धस्य ढो भवति ॥ अत्र सेटो हलद्वेति वक्तव्यम् ॥ बभूविध्वे-बभू-  
 विद्वे । बभूवे, बभूविवहे, बभूविमहे । रामो राज्यं बभूवे ॥ ७१८  
 आशिषि च ३७ ॥ धातोराशिषि यादादयो भवन्ति ॥ एषां संज्ञा लिङ् ॥

### ॥ परस्मैपदानि ॥

एकवचनानि । द्विवचनानि । बहुवचनानि ।

|        |       |          |        |
|--------|-------|----------|--------|
| प्रथमः | यात्  | यास्ताम् | यासुस् |
| मध्यमः | यास्  | यास्तम्  | यास्त  |
| उत्तमः | यासम् | यास्व    | यास्व  |

### ॥ आत्मनेपदानि ॥

|        |          |            |         |
|--------|----------|------------|---------|
| प्रथमः | सीष्ट    | सीयास्ताम् | सीरन्   |
| मध्यमः | सीष्ठास् | सीयास्थाम् | सीध्वम् |
| उत्तमः | सीय      | सीवहि      | सीमहि   |

७१९ आशीर्वादादेः पं किदिति वक्तव्यम् ३८ ॥ ततो  
 गुणाभावः । भूयात्, भूयास्ताम्, भूयासुः । भूयाः, भूयास्तम्, भूयास्त ।  
 भूयासम्, भूयास्व, भूयास्व । स श्रीमान् भूयात् । भू सीष्ट इति  
 स्थिते ॥ ७२० सिसतासीस्यपामिट् ३९ ॥ धातोः परेषां सि स

तासी स्यप् इत्येतेषामिडागमो भवति ॥ गुणावादेशौ । षत्वम् । भवि-  
षीष्ट, भविषीयास्ताम्, भविषीरन् । भविषीष्ठाः, भविषीयास्थाम्, भवि-  
षीध्वम् । सीव्यवधानेऽपि ढत्वम् । भविषीढ्वम् । भविषीय, भविषी-  
वहि, भविषीमहि । हरिभक्तिं भविषीष्ठाः ॥ ७२१ श्वस्तने ४० ॥  
श्व आगतेऽहि भाविन्यर्थे तादयो भवन्ति ॥ एषां संज्ञा लुट् ॥

### ॥ परस्मैपदानि ॥

एकवचनानि ।

द्विवचनानि ।

बहुवचनानि ।

|        |        |         |         |
|--------|--------|---------|---------|
| प्रथमः | ता     | तारौ    | तारस्   |
| मध्यमः | तासि   | तास्थम् | तास्थ   |
| उत्तमः | तास्मि | तास्वम् | तास्मस् |

### ॥ आत्मनेपदानि ॥

|        |      |         |         |
|--------|------|---------|---------|
| प्रथमः | ता   | तारौ    | तारस्   |
| मध्यमः | तासे | तासाथे  | ताध्वे  |
| उत्तमः | ताहे | तास्वहे | तास्महे |

इङ्गुणावः । भविता, भवितारौ, भवितारः । भवितासि, भवि-  
तास्थः, भवितास्थ । भवितास्मि, भवितास्वः, भवितास्मः । श्वस्ते हरिः  
प्रत्यक्षो भविता । भविता, भवितारौ, भवितारः । भवितासे, भविता-  
साथे, भविताध्वे । भविताहे, भवितास्वहे, भवितास्महे । श्वो हरिं  
भवितासे ॥ ७२२ त्यादौ भविष्यति स्यप् ४१ ॥ धातोर्भवि-  
ष्यति काले स्यप् प्रत्ययो भवति तिबादिष्वष्टादशसु परेषु ॥ अस्य  
संज्ञा लृट् ॥ भविष्यति, भविष्यतः, भविष्यन्ति । भविष्यसि, भवि-  
ष्यथः, भविष्यथ । भविष्यामि, भविष्यावः, भविष्यामः । कल्किर्धर्म-  
प्रवर्तको भविष्यति । भविष्यते, भविष्येते, भविष्यन्ते । भविष्यसे,

भविष्येथे, भविष्यध्वे । भविष्ये, भविष्यावहे, भविष्यामहे । सावर्णी  
 राज्यं भविष्यते ॥ ७२३ स्यप् क्रियातिक्रमे ४२ ॥ धातोः  
 क्रियाया अतिक्रमे कुतश्चिद्वैगुण्यादनिष्पत्तौ सत्यां दिवादिपरः स्यप्  
 प्रत्ययो भवति भविष्येऽर्थे कचिद्भूतेऽपि ॥ अस्य संज्ञा लङ् ॥  
 अडागमः । अभविष्यत्-अभविष्यद्, अभविष्यताम्, अभविष्यन् ।  
 अभविष्यः, अभविष्यतम्, अभविष्यत । अभविष्यम्, अभविष्याव,  
 अभविष्याम । यदि सुवृष्टिः सुगज्यं चाभविष्यत्तदा सुभिक्षमभवि-  
 ष्यत् । अभविष्यत, अभविष्येताम्, अभविष्यन्त । अभविष्यथाः,  
 अभविष्येथाम्, अभविष्यध्वम् । अभविष्ये, अभविष्यावहि, अभवि-  
 ष्यामहि । यद्यभविष्यत द्रव्यं भवांस्तदा रम्यमभविष्यत ॥ ७२४  
 भूते सिः ४३ ॥ धातोर्भूतमात्रे काले सिः प्रत्ययो भवति दिवादि-  
 परः ॥ अस्य संज्ञा लुङ् । इकारः सेरिति विशेषणार्थः । अभूस्  
 त् इति स्थिते ॥ ७२५ दादेः पे ४४ ॥ परस्मैपदे परे अपित्  
 दाधास्थेण्भूपिबतिभ्यः परस्य सेर्लोपो भवति ॥ ७२६ शाच्छासा-  
 घ्राघेटो वेति वक्तव्यम् ४५ ॥ ७२७ भुवः सिलोपो लुग्वच्यः  
 ४६ ॥ 'लुकि न तन्निमित्तम्' (सू० १७९) तेन गुणेऽवृद्धयो न ।  
 अभूत्, अभूताम् ॥ ७२८ भुवः सिलोपे स्वरे वुग्वक्तव्यः ४७ ॥  
 अभूवन् । अभूः, अभूतम्, अभूत । अभूवम्, अभूव, अभूम । अभू-  
 दृष्टिः । आत्मनेपदे । सिः इह गुणावौ पत्वं घृत्वं अट् । अभविष्ट,  
 अभविषाताम् ॥ ७२९ आतोऽन्तोऽदनतः ४८ ॥ आत आत्म-  
 नेपदस्यान्त इत्येतस्याद्भवति अकारादुत्तरस्य तु न भवति ॥ अभविषत ।  
 अभविष्ठाः, अभविषाथाम् ॥ ७३० ध्वे च सेर्लोपः ४९ ॥ ध्वे  
 परे सेर्लोपो भवति ॥ सस्य वा द इति केचित् । अभविध्वम्-अभ-  
 विद्वम् । अभविषि, अभविष्वहि, अभविष्महि । देवदत्तो राज्यम-

भविष्ट ॥ ७३१ माडि लुडेव वक्तव्यः ५० ॥ सर्वलकाराप-  
 चादः ॥ ७३२ मेटः ५१ ॥ माशब्दे प्रयुज्यमाने अटो लोपो  
 भवति ॥ मा हर्यभक्तो भवान् भूत् ॥ ७३३ स्मयोगे भूतार्थता  
 वक्तव्या ५२ ॥ ७३४ मास्मयोगे लङ् च ५३ ॥ मा स्म  
 भवत् । मा स्म भूत् । चिती संज्ञाने । इकार इदित्कार्यार्थः । पूर्वव-  
 त्तिवादयः । 'अप् कर्तरि' ( सू० ६९१ ) ॥ ७३५ उपधाया लघोः  
 ५४ ॥ धातोरुपधाया लघोर्नामिनो गुणो भवति ॥ चेतति, चेततः,  
 चेतन्ति १ ॥ चेतत्, चेतताम्, चेत्युः २ ॥ चेततु-चेततात्, चेत-  
 ताम्, चेतन्तु ३ ॥ अचेतत्, अचेतताम्, अचेतन् ४ ॥ द्वित्वम् ।  
 चिचेत । कित्वाद्गुणाभावः । चिचित्तुः, चिचितुः । चिचेतिथ, चि-  
 चित्तुः, चिचित । चिचेत, चिचितिव, चिचितिम ५ ॥ कित्वाद्गुणा-  
 भावः । चित्यात्, चित्यास्ताम्, चित्यासुः ६ ॥ चेतिता, चेतितारौ,  
 चेतितारः ७ ॥ चेतिप्यति, चेतिप्यतः, चेतिप्यन्ति ८ ॥ अचेति-  
 प्यत्, अचेतिप्यताम्, अचेतिप्यन् ९ ॥ चित् सित् इति स्थिते ।  
 'सिसता' ( सू० ७२० ) इतीट् ॥ ७३६ सेः ५५ ॥ सिशब्दा-  
 त्परयोर्दिस्योरिडागमो भवति ॥ ७३७ इट् ईटि ५६ ॥ इट् उत्त-  
 रस्य सेर्लोपो भवति ईटि परे ॥ अचेतीत्, अचेतिष्टाम् ॥ ७३८  
 स्याविदाः ५७ ॥ सेराकारान्ताद्विदश्चोत्तरस्यान् उत्स् भवति ॥  
 अचेतिषुः । अचेतीः, अचेतिष्टम्, अचेतिष्ट । अचेतिषम्, अचेतिष्व,  
 अचेतिष्म । च्युतिर् आसेचने । इस् अनुबन्ध इरितो वेति विशेष-  
 णार्थः । उच्चारितप्रध्वंसो ह्यनुबन्धः । च्योतति । च्योतेत् । च्यो-  
 ततु । अच्योतत् । च्युत् णप् द्वित्वम् ॥ ७३९ पूर्वस्य हसादिः  
 शेषः ५८ ॥ पूर्वस्यादिर्हस् शिष्यते अन्यो लुप्यते । चुच्योत, चु-  
 च्युततुः, चुच्युतुः । चुच्योतिथ, चुच्युतथुः, चुच्युत । चुच्योत, चुच्यु-



तिव, चुच्युतिम् । च्युत्यात् । च्योतिता । च्योतिष्यति । अच्योति-  
 प्यत् । अच्योतीत्, अच्योतिष्टाम्, अच्योतिषुः । अच्योतीः, अच्यो-  
 तिष्टम्, अच्योतिष्ट । अच्योतिषम्, अच्योतिष्व, अच्योतिष्म ॥  
 ७४० इरितो वा ५९ ॥ इरितो धातोर्वा ङः प्रत्ययो भवति दि-  
 बादिपरः परस्मैपदे । सेरपवादः । इकारो गुणप्रतिषेधार्थः । अच्यु-  
 तत्, अच्युतताम्, अच्युतन् । अच्युतः, अच्युततम्, अच्युतत ।  
 अच्युतम्, अच्युताव, अच्युताम । श्र्युतिर् क्षरणे । श्र्योतति ।  
 श्र्योतेत् । श्र्योततु । अश्र्योतत् । द्वित्वम् ॥ ७४१ शसात् खपाः  
 ६० । द्विर्वचने कृते यत्पूर्वरूपं तस्य शसादुत्तराः खपाः शिष्यन्ते  
 न शसाः ॥ इति चकारशेषः । चुश्च्योत, चुश्च्युततुः, चुश्च्युतुः ।  
 श्र्युत्यात् । श्र्योतिता । श्र्योतिष्यति । अश्र्योतिष्यत् । अश्र्युतत् ।  
 अश्र्योतीत् ॥ मन्थ विलोडने । मन्थति । मन्थेत् । मन्थतु । अमन्थत् ।  
 ममन्थ ॥ ७४२ नो लोपः ६१ ॥ धातोरुपधाभूतस्य नकारस्य  
 लोपो भवति किति ङिति च परे ॥ इत्युपधानकारलोपे प्राप्ते ॥  
 ७४३ ऋसंयोगात् णादेरकिञ्चं वाच्यम् ६२ ॥ तेन नलोपाभावः ।  
 ममन्थतुः, ममन्थुः । ममन्थिथ, ममन्थथुः, ममन्थ । ममन्थ, मम-  
 न्थिव, ममन्थिम ॥ ७४४ केचित्संयोगादेति वक्तव्यम् ६३ ॥  
 ममन्थतुः, ममन्थुः । 'नो लोपः' ( सू० ७४२ ) मथ्यात् । मन्थिता ।  
 मन्थिष्यति । अमन्थिष्यत् । अमन्थीत्, अमन्थिष्टाम्, अमन्थिषुः ।  
 पुथि लुथि मथि कुथि हिंसासंक्लेशनयोः ॥ ७४५ इदितो नुम्  
 ६४ ॥ इदितो धातोर्नुमागमो भवति ॥ कुन्थति । कुन्थेत् । कुन्थतु ।  
 अकुन्थत् । द्वित्वम् ॥ ७४६ कुहोश्चुः ६५ ॥ पूर्वसंबन्धिनोः  
 क्ववर्गहकारयोश्चत्वं भवति, वर्गचतुर्थो हस्य सवर्णः । चुकुन्थ, चुकु-  
 न्थतुः, चुकुन्थुः । चुकुन्थिथ, चुकुन्थथुः, चुकुन्थ । चुकुन्थ, चुकु-

न्थिव, चुकुन्थिम । लघूपधत्वाभावान्न गुणः ॥ ७४७ इदितो न-  
लोपाभावो वाच्यः ६६ ॥ कुन्ध्यात् । कुन्थिता । कुन्थिष्यति ।  
अकुन्थिष्यत् । अकुन्थीत्, अकुन्थिष्ठाम्, अकुन्थिषुः । पिधु गत्याम् ।  
उकार उच्चारणार्थः ॥ ७४८ आदेः णः स्तः ६७ ॥ षोपदेशस्य  
णोपदेशस्य च धातोरादौ वर्तमानयोः षकारणकारयोः सकार-  
नकारौ भवतः ॥

सेकसृप्सृस्तृसृज्स्तृस्त्यान्ये दन्त्याजन्तसादयः ।

एकाचः षोपदेशाः ष्वक्स्विद्स्वद्स्वञ्ज्स्वप्सिङः ॥ १ ॥

सेकृ गतौ । सृप्ल गतौ । सृ गतौ । स्तृ आच्छादने । सृज् विसर्गे । स्तृ  
छादने । स्तैश्चै शब्दसंघातयोः । एभ्योऽन्ये दन्त्याजन्तसादय एकाचः  
षोपदेशा दन्त्याजन्तसादयः । दन्ते भवो दन्त्यः, दन्त्यश्च अच्च दन्त्या-  
चौ, तौ अन्तौ यस्य स दन्त्याजन्तः, स चासौ सश्च दन्त्याजन्तसः, स  
आदिर्येषां ते दन्त्याजन्तसादयः । दन्त्यः केवलदन्त्यः न तु दन्तो-  
ष्ठजोऽपि; ष्वष्कादीनां पृथग्ग्रहणात् । ष्वष्क गतौ । जिष्विदा गात्रप्र-  
क्षरणे । स्वद् आस्वादने । स्वञ्ज् परिष्वङ्गे । जिष्वप् शये । सिङ्  
ईषद्धसने । एते षोपदेशाः ॥ णोपदेशास्त्वनर्द्नाटिनाथ्नाध्नन्द्-  
नक्नृनृतः ॥ नर्द गतौ । नट नर्तने । नाथ् नाध् याचजोपतापैश्व-  
र्याशीष्णु । टुनदि समृद्धौ । नक् नाशने । नृ नये । नृती गात्रवि-  
क्षेपे । एभ्योऽन्ये णोपदेशाः ॥

नकारजावनुस्वारपञ्चमौ झलि धातुषु ।

सकारजः शकारश्च षाट्त्वर्गस्तवर्गजः ॥ ३ ॥

७४९ नामधातुष्वैष्वक्छिवां षः सो नेति वाच्यम् ६८ ॥  
गुणः । सेधति । निपूर्वः ॥ ७५० प्रादेश्च तथा तौ सुनमाम्

६९ ॥ प्रादेरुपसर्गात्परेषां स्वादीनां नमादीनां च धातूनां सकारन-  
कारयोस्तौ पूर्वभाविनावेव षकारणकारौ भवतः षत्वणत्वनिमित्ते  
सति ॥ निषेधति । सेधेत् । सेधतु । अड्व्यवधानेऽपि षत्वम् । न्य-  
षेधत् । द्वित्वव्यवधानेऽपि षत्वम् । निषिषेध । सिषिधतुः, सिषि-  
धुः । सिषेधित् । सिध्यात् । सेधिता । सेधिष्यति । असेधिष्यत् ।  
असेधीत्, असेधिष्ठाम्, असेधिषुः । षिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च । ऊकार  
इङ्गिकल्पार्थः । सेधति । सेधेत् । सेधतु । असेधत् । सिषेध ।  
सिध्यात् ॥ ७५१ ऊदितो वा ७० ॥ ऊदितो धातोः परस्य वसा-  
देरिङ्गा भवति ॥ ७५२ स्मृतिस्मयतिधूञ् रधादीनामिङ्गा वक्त-  
व्यः ७१ ॥ स्मृ शब्दे । धूञ् प्राणिगर्भविमोचने । धूञ् प्रसवे ।  
धूञ् कम्पने । रध् हिंसायाम् । नश् अदर्शने । तृप् प्रीणने ।  
टप् हर्षविमोचनयोः । द्रुह् जिघांसायाम् । मुह् वैचित्ये । ण्णुह  
उद्गिरणे । स्निह् प्रीतौ । एते रधादयः । सेधिता । पक्षे ॥  
७५३ तथोर्धः ७२ ॥ दधाति विना ज्ञभान्ताद्धातोः पर-  
योस्तकारथकारयोर्धकारादेशो भवति ॥ 'ज्ञवे जवाः' (सू० ३५)  
सेद्धा । सेधिष्यति-सेत्स्यति । असेधिष्यत्-असेत्स्यत् । असेधीत्, असे-  
धिष्ठाम्, असेधिषुः । इडभावे ॥ ७५४ अनिटो नामिवतः ७३ ॥  
नामितोवऽनिटो धातोः परस्मैपदे परे सिप्रत्यये वृद्धिर्भवति ॥  
चपत्वम् । 'सेः' (सू० ७३६) असैत्सीत्, असैद्धाम् ॥ ७५५ प्रत्ययलोपे  
प्रत्ययलक्षणं कार्यं भवति ७४ ॥ ७५६ झसात् ७५ ॥ झसादुत्तरस्य  
सेर्लोपो भवति झसे परे ॥ असैत्सुः । असैत्सीः, असैद्धम्, असैद्ध ।  
असैत्सम्, असैत्स्व, असैत्स्म । खद स्थैर्ये हिंसायां च । खदति ।  
खदेत् । खदतु । अखदत् ॥ ७५७ अत उपधायाः ७६ ॥ धातो-  
रुपधाया अकारस्य वृद्धिर्भवति जिते णिति च परे ॥ चुत्वम् ।

चखाद, चखदतुः, चखदुः । चखदिथ, चखदथुः, चखद ॥ ७५८  
 णलुत्तमो वा णिद्वक्तव्यः ७७ ॥ चखाद-चखद, चखदिव, चख-  
 दिम । खद्यात् । खदिता । खदिष्यति । अखदिष्यत् ॥ ७५९  
 णित्पे ७८ ॥ परस्मैपदे परे सिर्णिङ्भवति । 'अत उपधायाः' (सू०  
 ७५७) इति वृद्धिः । अखादीत्, अखादिष्टाम्, अखादिषुः ॥ ७६०  
 हसादेर्लघ्वकारोपधस्य वा वृद्धिः सेटि सौ वाच्या ७९ ॥  
 अखदीत् । गद् व्यक्तायां वाचि । गदति ॥ ७६१ उपसर्गस्थान्नि-  
 मित्तान्नेर्गदादौ णत्वं वाच्यम् ८० ॥ 'गद् नद् पत् पद् स्था  
 अपित् दा धा मा सो हन् या वा द्रा प्सा वप् वह् चि शम् दिह्'  
 एते गदादयः । गद् व्यक्तायां वाचि । नद् अव्यक्ते शब्दे । पत्ल  
 पतने । पद् गतौ । घा गतिनिवृत्तौ । डुदाञ् दाने । डुधाञ् धारण-  
 पोषणयोः । माङ् माने । षोऽन्तकर्मणि । हन् हिंसागत्योः । या  
 प्रापणे । वा गतिगन्धनयोः । द्रा कुत्सायां गतौ च । प्सा भक्षणे ।  
 डुवप् बीजतन्तुसन्ताने । वह प्रापणे । चिञ् चयने । शम् उपशमे ।  
 दिह् उपचये । प्रणिगदति । गदेत् । गदतु । अगदत् । 'कुहोश्चुः'  
 (सू० ७४६) जगाद, जगदतुः जगदुः । जगदिथ, जगदथुः,  
 जगद । गद्यात् । गदिता । गदिष्यति । अगदिष्यत् । अगादीत्-अग-  
 दीत् । रद विलेखने । रदति । रदेत् । रदतु । अरदत्-रराद ॥  
 ७६२ लोपः पचां कित्ये चास्य ८१ ॥ पचादीनामनादेशादीनां  
 किति णादौ सति पूर्वस्य लोपः । असंयुक्तहसयोर्मध्यस्थस्याकारस्यै-  
 कारः ॥ रेदतुः, रेदुः ॥ ७६३ सेटि थपि एत्वपूर्वलोपौ वक्तव्यौ  
 ८२ ॥ रेदिथ, 'रेदथुः, रेद । रराद-ररद, रेदिव, रेदिम । रद्यात् ।  
 रदिता । रदिष्यति । अरदिष्यत् । अरादीत्, अरादिष्टाम्, अरादिषुः ।  
 अरदीत् । णद् अव्यक्ते शब्दे । 'आदेः णः स्तः' (सू० ७४८)

नदति । नदेत् । नदतु । अनदत् । प्रपूर्वः । 'प्रादेश्च' (सू० ७५०)  
 इति णत्वम् । प्रणदति । गदादित्वात् प्रणिनदति । ननाद, नेदतुः,  
 नेदुः । नेदिथ, नेदथुः, नेद । ननाद-ननद, नेदिव, नेदिम । नद्यात् ।  
 नदिता । नदिप्यति । अनदिप्यत् । अनादीत्, अनादिष्टाम्, अना-  
 दिषुः । अनदीत्, अनदिष्टाम् । अर्द् गतौ याचने च । अर्दति ।  
 अर्देत् । अर्दतु । आर्दत् । द्वित्वे कृते । 'आभ्वोर्णादौ' (सू० ७१२)  
 आ अर्द इति स्थिते ॥ ७६४ नुगशाम् ८३ ॥ अश्रोतेर्ऋकारादि-  
 धातूनां संयोगान्ताकारादिधातूनां च पूर्वस्य नुगागमो भवति णादौ  
 सति ॥ आनर्द, आनर्दतुः, आनर्दुः । आनर्दिथ, आनर्दथुः, आनर्द ।  
 आनर्द, आनर्दिव, आनर्दिम । अर्द्यात् । अर्दिता । अर्दिप्यति । आ-  
 र्दिप्यत् । आर्दीत्, आर्दिष्टाम्, आर्दिषुः । इदि परमैश्वर्ये । इन्दति ।  
 इन्देत् । इन्दतु ॥ ७६५ स्वरादेः ८४ ॥ स्वरादेर्धातोर्द्वितीयोऽ-  
 ङागमो भवति दिबादौ परे ॥ 'अ इ ए' (सू० ४३) 'ए ऐ ऐ' (सू०  
 ४४) ऐन्दत् । इन्द् णप् इति स्थिते ॥ ७६६ कासादिप्रत्यया-  
 दाम् कस्भूपरः ८५ ॥ कास्आस्दय् अय्नाम्यादिगुरुमद्भात्वने-  
 कस्वरधातुभ्यः प्रत्ययान्ताच्च णबादौ परे आम् प्रत्ययो भवति स च  
 कृ-अस्-भूपरः प्रयोक्तव्यः ॥ कास् दीप्तौ । आस् उपवेशने । दय्  
 दानगतिर्हिंसादानेषु । अय् गतौ ॥ एते कासादयः ॥ ७६७ विद्-  
 दरिद्राकाशकाशजागृउष एभ्यो वाम् ८६ ॥ विद् ज्ञाने । दरिद्रा  
 दुर्गतौ । काश विकचने । जागृ निद्राक्षये । उष दाहे । एते  
 विदादयः । इन्दां कृ णप् इति स्थिते । कृ इत्येतस्य द्वित्वम् ॥  
 ७६८ रः ८७ ॥ पूर्वसंबन्धिन ऋकारस्याकारो भवति ॥ चुत्वम् ॥  
 ७६९ धातोर्नामिनः ८८ ॥ धातोर्नन्त्यभूतस्य नामिनो वृद्धिर्भवति  
 ञिति णिति च परे । इन्दांचकार, इन्दांचक्रतुः, इन्दांचक्रुः । ऋदि-

त्वान्नेट् । इन्दांचकर्थ, इन्दांचकथुः, इन्दांचक । इन्दांचकार-इन्दांच-  
 कर, इन्दांचकृव, इन्दांचकृम । इन्दामास, इन्दामासतुः, इन्दामासुः ।  
 इन्दामासिथ । इन्दांबभूव । इन्धात् । इन्दिता । इन्दिष्यति ।  
 'स्वरादेः' (सू० ७६५) ऐन्दिष्यत् । ऐन्दीत्, ऐन्दिष्टाम्, ऐन्दिषुः ।  
 ऐन्दीः, ऐन्दिष्टम्, ऐन्दिष्ट । ऐन्दिषम्, ऐन्दिष्व, ऐन्दिष्म । णिदि  
 कुत्सायाम् । निन्दति ॥ ७७० निसनिक्षनिन्दामुपसर्गाण्णत्वं वा  
 वाच्यम् ८९ ॥ प्रणिन्दति-प्रनिन्दति । निन्देत् । निन्दतु । अनि-  
 न्दत् । निनिन्द । निन्धात् । निन्दिष्यति । अनिन्दिष्यत् । अनि-  
 न्दीत् । निक्ष् चुम्बने । प्रणिक्षति । निक्षेत् । निक्षतु । अनिक्षत् ।  
 निनिक्ष । निक्ष्यात् । निक्षिता । निक्षिप्यति । अनिक्षिप्यत् ।  
 अनिक्षीत् । उख गतौ । ओखति । ओखेत् । ओखतु । औखत् ।  
 द्वित्वे उपधागुणे च कृते ॥ ७७१ असवर्णे स्वरे पूर्वकारोकारयो-  
 रियुवौ वक्तव्यौ ९० ॥ उवोख । 'सवर्णे दीर्घः' (सू० ५२)  
 ऊखतुः, ऊखुः । उवोखिथ । उख्यात् । ओखिता । ओखिप्यति ।  
 औखिष्यत् । औखीत् । अञ्चु गतिपूजनयोः । अञ्चति । 'नुगशाम्'  
 (सू० ७६४) आनञ्च, आनञ्चतुः, आनञ्चुः ॥ ७७२ पूजाया-  
 मञ्चेर्नलोपाभावो वाच्यः ९१ ॥ अञ्च्यात् । गतौ तु अच्यात् ।  
 अञ्चिता । अञ्चिप्यति । आञ्चिप्यत् । आञ्चीत् । आच्छि आयामे ।  
 आञ्छति । आनाञ्छ । आञ्छतेर्नुगेति केचित् । आञ्छ ।  
 आञ्छात् । आञ्छिता । आञ्छिप्यति । आञ्छिष्यत् । आञ्छीत् ।  
 हूर्छा कौटिल्ये । 'य्वोर्विहसे' (सू० ३१६) इति दीर्घः । हूर्छति ।  
 'कुहोश्चुः' (सू० ७५६) वर्गचतुर्थो हस्य सवर्णः । 'ज्ञपानां जवचपाः'  
 (सू० ७१४) जुहूर्छ । अहूर्छीत् । वज गतौ । वजति । वजेत् ।  
 वजतु । अवजत् ॥ ७७३ शसददवादिगुणभूताकाराणां नैत्व

पूर्वलोपौ वक्तव्यौ ९२ ॥ शसु हिंसायाम् । ददं दाने । शशास,  
 शशसतुः । ददाद, दददतुः । ववाज, ववजतुः, ववजुः । ववजिथ ।  
 अवाजीत्-अवजीत् । व्रज गतौ । व्रजति । व्रजेत् । व्रजतु । अव्र-  
 जत् । वव्राज, वव्रजतुः, वव्रजुः । व्रज्यात् । व्रजिता । व्रजिष्यति ।  
 अव्रजिष्यत् ॥ ७७४ वदिव्रज्योः सौ नित्यं वृद्धिः ९३ ॥  
 अव्राजीत् । अज गतौ क्षेपणे च । अजति । अजेत् । अजतु ।  
 आजत् ॥ ७७५ अजेरार्धधातुके वी वक्तव्यः वसादौ वा ९४ ॥  
 एतच्च विभक्तिचतुष्टयं सार्वधातुकं परमार्धधातुकसंज्ञं पाणिनीया-  
 नाम् । द्वित्वम् वृद्धिः । विवाय ॥ ७७६ नुधातोः ९५ ॥  
 विकरणस्य नोर्धातोश्चैवर्णोर्वर्णयोरियुवौ भवतः स्वरे परे ॥  
 अनेकस्वरस्यासंयोगपूर्वस्य तु र्वौ ॥ विव्यतुः, विव्युः ॥ ७७७  
 स्वरान्ताभित्यानिटस्थपो वेट् ९६ ॥ विवयिथ-विवेथ, आजिथ,  
 विव्यथुः, विव्य । विवाय-विवय, विव्यिव-आजिव, विव्यिम-आ-  
 जिम । वीयात् ॥ ७७८ नैकस्वरादनुदात्तात् ९७ ॥ एकस्वरा-  
 द्धातोर्धातुपाठेऽनुदात्त इत्येवं पठितादिङागमो न भवति ॥

### ॥ अथानिट्कारिकाः ॥

अनिट्स्वरान्तो भवतीति दृश्यतामन्यांस्तु सेटः प्रवदन्ति  
 तद्विदः । अदन्तमृदन्तमृतां च वृङ् वृजौ श्विडीडिवर्णे-  
 ष्वथ शीङ्श्रियावपि ॥ ४ ॥ गणस्थमृदन्तमुतां च  
 रुस्तुवौ क्षुवं तथोर्णोतिमथो युणुक्षुवः । इति स्वरान्ता  
 निपुणैः समुच्चितास्ततो हसान्तानपि सन्निबोधत ॥ ५ ॥  
 शकिस्तु कान्तेष्वनिडेक इष्यते घसिश्च सान्तेषु वसिः  
 प्रसारणी । रभिश्च भान्तेष्वथ मैथुने यभिस्ततस्तृतीयो

लभिरेव नेतरे ॥ ६ ॥ यमिर्यमान्तेष्वनिडेक इष्यते  
 रमिर्दिवादावपि पठ्यते मनिः । नमिश्रतुर्थो हनिरेव  
 पञ्चमो गमिस्तु षष्ठः प्रतिषेधवाचिनाम् ॥ ७ ॥ दिहि-  
 र्दुहिर्मेहतरोहती वहिर्नहिस्तु षष्ठो दहतिस्तथा लिहिः ।  
 इमेऽनिटोऽष्टाविह मुक्तसंशया गणेषु हान्ताः प्रविभज्य  
 कीर्तिताः ॥ ८ ॥ दिशिं दशिं दंशिमथो मृशिं स्पृशिं  
 रिशिं रुशिं क्रोशतिमष्टमं विशिम् । लिशिं च शान्ता-  
 ननिटः पुरोगाः पठन्ति पाठेषु दशैव नेतरान् ॥ ९ ॥  
 रुधिः सराधिर्युधिबन्धिसाधयः क्रुधिः क्षुधिः शुध्यति-  
 बुध्यती व्यधिः । इमे तु धान्ता दश चानिटो मतास्ततः  
 परं सिद्ध्यतिरेव नेतरे ॥ १० ॥ शिपिं पिपिं शुष्यति-  
 पुष्यती त्विपिं श्लिपिं विपिं तुष्यतिदुष्यती द्विपिम् ।  
 इमान्दशैवोपदिशन्त्यनिङ्घ्रिधौ गणेषु पान्तान्कृषिकर्षती  
 तथा ॥ ११ ॥ तपिं तिपिं चापिमथो वपिं स्वपिं लुपिं  
 लिपिं तृप्यतिदृप्यती सृपिम् । स्वरेण नीचेन शपिं  
 छुपिं क्षिपिं प्रतीहि पान्तान् पठितांस्त्रयोदश ॥ १२ ॥  
 अदिं हदिं स्कन्दिभिदिच्छिदिक्षुदीन् शदिं सदिं खिद्य-  
 तिपद्यतिस्विदीन् । तुदिं नुदिं विद्यति विन्द इत्यपि  
 प्रतीहि दान्तान् दश पञ्च चानिटः ॥ १३ ॥ पचिं  
 वचिं विचिरिचिरञ्जिपृच्छतीन्निजिं सिचिं मुचिभजि-  
 भञ्जिभृज्जतीन् । त्यजिं यजिं युजिरुजिसञ्जिमज्जतीन्  
 भुजिं खजिं सृजिमृजी विद्ध्यनिट्स्वरान् ॥ १४ ॥  
 इत्यनिट्कारिकाः ॥



वेता-अजिता । वेप्यति-अजिप्यति । अवेप्यत् । आजिप्यत्-अवे-  
प्यत् । आजीत् । 'धातोर्नामिनः' ( सू० ७६९ ) 'सेः' ( सू० ७३६ )  
अवैषीत् । प्लुवम् । अवैष्टाम्, अवैषुः । क्षि क्षये । क्षयति । क्षयेत् ।  
क्षयतु । अक्षयत् । चिक्षाय । 'नुधातोः' ( सू० ७७६ ) चिक्षियतुः ॥  
७७९ ये ९८ ॥ अनपि ॥ अनपि यकारे पूर्वस्य दीर्घो भवति ॥  
क्षीयात् । क्षेता । क्षेप्यति । अक्षेप्यत् । 'धातोर्नामिनः' ( सू० ७६९ )  
अक्षैषीत्, अक्षैष्टाम्, अक्षैषुः । कटे वर्षावर्णयोः । कटति । कटेत् ।  
कटतु । अकटत् । चकाट ॥ ७८० ह्यन्तक्षणश्चसिजागृहसादिवर्ज  
सेटि सौ न वृद्धिः ९९ ॥ हसादय एकारेतः । अकटीत्, अक-  
टिष्टाम्, अकटिषुः । गुप् रक्षणे ॥ ७८१ आयः १०० ॥ गुप्-  
धूपविच्छिपणिपनिभ्यः स्वार्थे आयः प्रत्ययो भवति । अनपि तु  
वा ॥ उपधाया गुणः ॥ ७८२ स धातुः १०१ ॥ स यडादिप्रत्य-  
यान्तः शब्दो धातुसंज्ञो भवति ॥ धातुत्वात्तिवादयः । गोपायति ।  
गोपायेत् । गोपायतु । अगोपायत् । 'कासादिप्रत्ययादाम्' ( सू० ७६६ )  
गोपायांचकार । गोपायामास । गोपायांबभूव । जुगोप ॥ ७८३  
यतः १०२ ॥ यकारस्याकारस्य च लोपो भवत्यनपि ॥ गोपाय्यात्-  
गुप्यात् । गोपायिता-गोपिता । 'ऊदितो वा' ( सू० ७५१ ) गोप्ता ।  
गोपायिष्यति-गोपिष्यति-गोप्स्यति । अगोपायिष्यत्-अगोपिष्यत्-अ-  
गोप्स्यत् । अगोपायीत्-अगोपीत् । 'अनिटो नामिवतः' ( सू०  
७५४ ) अगौप्सीत् । 'ज्ञसात्' ( सू० ७५६ ) अगौप्ताम् । एवं धूप  
सन्तापे । धूपायति । धूपायांचकार । धूपायामास । धूपायांबभूव ।  
दुधूप । दीर्घोपधत्वान्न गुणः । तप सन्तापे । तपति । तपेत् । तप-  
तु । अतपत् । तताप, तेपतुः, तेषुः । तेषिथ ॥ ७८४ अत्वतो नि-  
त्यानिटस्थपो वेट् १०३ ॥ ततप्थ । तप्यात् । तप्ता । तप्स्यति ।

अतप्स्यत् । अताप्सीत् । क्रमु पादविक्षेपे ॥ ७८५ क्रमुभ्रमुत्रसि-  
 त्रुटिलष्भ्राश्रुभ्लाशो वा यः प्रत्ययो वक्तव्यः १०४ ॥ चतुर्षु ।  
 क्राम्यति ॥ ७८६ क्रमः पे चतुर्षु दीर्घता वक्तव्या १०५ ॥  
 क्रामति । क्राम्येत् । क्रामेत् । क्राम्यतु । क्रामतु । अक्राम्यत् । अक्रामत् ।  
 चक्राम । क्रम्यात् । क्रमिता । क्रमिष्यति । अक्रमिष्यत् । अक्रमी-  
 त् । यम उपरमे ॥ ७८७ गमां छः १०६ ॥ गम्यम् इषूणां छो  
 भवत्यपि ॥ यच्छति । यच्छेत् । यच्छतु । अयच्छत् । ययाम्, येम-  
 तुः, येमुः । येमिथ-ययन्थ । यम्यात् । यन्ता । यंस्यति । अयंस्यत् ॥  
 ७८८ आदन्तानां यमिरमिनमीनां सेरिट् सक् च पे वक्तव्यौ  
 १०७ ॥ अयंसीत्, अयंसिष्टाम्, अयंसिषुः । णमु प्रहृत्वे शब्दे च ।  
 नमति । नमेत् । नमतु । अनमत् । ननाम, नेमतुः, नेमुः । नेमिथ-  
 ननन्थ । नम्यात् । नन्ता । नंस्यति । अनंस्यत् । अनंसीत्, अनंसि-  
 ष्टाम्, अनंसिषुः । गल् ल गतौ । लृकारो लृट्कार्यार्थः । गच्छति ।  
 गच्छेत् । गच्छतु । अगच्छत् । जगाम ॥ ७८९ गमां स्वरे १०८ ॥  
 गम् हन् जन् खन् घम् एतेषामुपधाया लोपो भवति कृत्यङि स्वरे ॥  
 जग्मतुः, जग्मुः । जगमिथ-जगन्थ । गम्यात् । गन्ता ॥ ७९०  
 हनृतः स्यपः १०९ ॥ हन्तेर्ऋकारान्तात्स्यप इडागमो भवति गमेश्च  
 पे ॥ गमिष्यति । अगमिष्यत् ॥ ७९१ लिट्पुषादेर्ङः ११० ॥  
 लितो धातोः पुषादेर्द्युतादेश्च ङप्रत्ययो भवति दिवादौ परस्मैपदे ॥  
 सेरपवादः ॥ अङे इत्युक्तेर्नोपधालोपः ॥ अगमत्, अगमताम्, अग-  
 मन् । इषु इच्छायाम् । इच्छति । इच्छेत् । इच्छतु । ऐच्छत् ।  
 इयेष, ईषतुः, ईषुः । इयेषिथ । इष्यात् ॥ ७९२ इषुसहलुभरिष-  
 रुषामनपि तस्येद्वा वक्तव्यः १११ ॥ एषिता-एष्टा । एषिष्यति ।  
 ऐषिष्यत् । ऐषीत्, ऐषिष्टाम्, ऐषिषुः ॥ निफला विशरणे । फलति ।

फलेत् । फलतु । अफलत् । पफाल ॥ आदेशादित्वेनैत्वपूर्वलोपनि-  
षेधे प्राप्ते ॥ ७९३ तृफलभजत्रपां किति णादौ सेटि, थपि चैत्व-  
पूर्वलोपौ वक्तव्यौ ११२ ॥ 'फेलतुः, फेलुः । फेलिथ । फल्यात् ।  
फलिता । फलिष्यति । अफलिष्यत् । लघ्वकारोपधत्वेन वृद्धिविक-  
ल्पे प्राप्ते ॥ ७९४ लान्तस्याकारस्य सौ नित्यं वृद्धिर्वाच्या  
११३ ॥ अफालीत् । जि जये । जयति । जयेत् । जयतु । अज-  
यत् ॥ ७९५ सपरोक्षयोर्जेर्गिः ११४ ॥ सप्रत्यये परोक्षे च जि  
जय इति धातोर्गिरादेशो भवति ॥ जिगाय, जिग्यतुः, जिग्युः ।  
जिगयिथ-जिगेथ । जीयात् । जेता । जेप्यति । अजेप्यत् । अजै-  
षीत्, अजैष्टाम्, अजैषुः । कृष् विलेखने । कर्षति । कर्षेत् । कर्षतु ।  
अकर्षत् । चकर्ष । 'उपधाया लघोः' (सू० ७३५) चकृषतुः, चकृ-  
षुः । चकर्षिथ । कृष्यात् । गुणे कृते ॥ ७९६ रारो झसे दशाम्  
११५ ॥ दशसृजकृष्मृशतृप्दृप्सृपां झसे परे अरो रो भवति ॥  
रार इति तन्नोपात्तम् । तेन रा आरः र अरः । सकृदुच्चरितमने-  
कोपकारकं तन्नम् । ष्टुत्वम् । कृष्टा ॥ ७९७ कृषादीनां रो वा  
वक्तव्यः ११६ ॥ कर्षा । 'रारो झसे दशाम्' (सू० ७९६) ॥  
७९८ षढोः कः से ११७ ॥ धातोः षकारढकारयोः कत्वं भवति  
सकारे परे ॥ 'क्लिप्तः सः कृतस्य' (सू० १४१) 'कषसंयोगे क्षः'  
(सू० २४२) ऋक्ष्यति-कक्ष्यति । अकक्ष्यत्-अकक्ष्यत्-अकाक्षीत् ।  
'अनिटो नामिवतः' (सू० ७५४) अकाक्षीत् ॥ ७९९ कृषादीनां  
वा सिर्वक्तव्यः ११८ ॥ 'कृष् स्पृश् मृष् तृष् दृष्' एते कृषादयः  
तत्पक्षे ॥ ८०० दृशषान्तात्सक् ११९ ॥ हकारान्तात् शकारा-  
न्तात् षकारान्ताच्च नाम्युपधादविद्यमानेटो दिवादौ परे सक्प्रत्ययो  
भवति दृशं वर्जयित्वा ॥ सेरपवादः ॥ अकृक्षत्, अकृक्षताम्, अकृ-

क्षन् । रुष् हिंसायाम् । 'उपधाया लघोः' ( सू० ७३५ ) रोषति ।  
 रोषेत् । रोषतु । अरोषत् । रुरोष, रुरुषतुः, रुरुषुः । रुरोषिथ । रुष्यात् ।  
 रोषिता-रोष्टा । रोषिष्यति । अरोषिष्यत् । अरोषीत् । उष् दाहे । ओषति ।  
 ओषेत् । ओषतु । औषत् ॥ ८०१ उषविद्जागृणामाम्वा वक्तव्यः  
 १२० ॥ उषांचकार-उवोष । उवोषिथ । उष्यात् । उषिता ।  
 उषिष्यति । औषिष्यत् । औषीत् । मिह सेचने । मेहति । मेहेत् ।  
 मेहतु । अमेहत् । मिमेह, मिमिहतुः, मिमिहुः । मिमेहिथ । मिह्यात् ।  
 'हो ढः' ( सू० २४३ ) 'तथोर्धः' ( सू० ७५३ ) घृत्वम् ॥ ८०२ ढि  
 ढो लोपो दीर्घश्च १२१ ॥ ढकारस्य ढकारे परे लोपो भवति  
 पूर्वस्य च दीर्घः ॥ मेढा । मेक्ष्यति । अमेक्ष्यत् । 'हशषान्तात्सक्'  
 ( सू० ८०० ) 'हो ढः' ( सू० २४३ ) 'षढोः कः से' ( सू०  
 ७९८ ) अमिक्षत्, अमिक्षताम्, अमिक्षन् । दह् भस्मीकरणे ।  
 दहति । दहेत् । दहतु । अदहत् । ददाह, देहतुः, देहुः । देहिथ-  
 ददग्ध । दह्यात् । दग्धा । 'दादेर्धः' ( सू० २६८ ) 'आदिजवानां  
 ज्ञान्तस्य ज्ञमाः स्ध्वोः' ( सू० २३९ ) । 'खसे चपा०' ( सू० ८९ )  
 'किलात्पः सः कृतस्य' ( सू० १४१ ) । 'कषसंयोगे क्षः' ( सू० २४२ )  
 घक्ष्यति । अधक्षत् । अधाक्षीत् । 'ज्ञसात्' ( सू० ७५६ ) अदा-  
 ग्धाम्, अधाक्षुः । ग्लै ग्लै हर्षक्षये । आयादेशः । ग्लायति । ग्ला-  
 येत् । ग्लायतु । अग्लायत् ॥ ८०३ सन्ध्यक्षराणामा ११२ ॥  
 सन्ध्यक्षराणां धातूनामात्वं भवति अनपि विषये ॥ णप् । 'द्विश्च'  
 ( सू० ७१० ) 'ह्रस्वः' ( सू० ७४६ ) । 'पूर्वस्य हसादिः शेषः'  
 ( सू० ७३९ ) । 'कुहोश्चुः' ( सू० ७४६ ) ॥ ८०४ आतो णप्  
 डौ १२३ ॥ आकागन्ताद्धातोः परो णप् डौ भवति ॥ टिलोपः ।  
 जग्लौ ॥ ८०५ आतोऽनपि १२४ ॥ धातोराकारस्य लोपो भवति

अनपि किति ङिति स्वरे सेटि थपि च ॥ जग्लुः, जग्लुः । जग्लिथ-  
जग्लथ, जग्लथुः, जग्ल । जग्लौ, जग्लिव, जग्लिम ॥ ८०६ संयो-  
गादेरादन्तस्य किति यादादावेकारो वा वक्तव्यः १२५ ॥  
ग्लयात्-ग्लेयात् । ग्लता । ग्लास्यति । अग्लास्यत् । अग्लासीत्,  
अग्लासिष्टाम्, अग्लासिषुः । गै रै कै शब्दे । गायति । गायेत् ।  
गायतु । अगायत् । जगौ, जगतुः, जगुः ॥ ८०७ दादेरे १२६ ॥  
अपित्दाधामागैहाक्पिबसोस्थानामाकारस्यैकारो भवति आशीर्यादादौ  
परस्मैपदे परे ॥ गेयात् । गाता । गास्यति । अगास्यत् । अगासीत्,  
अगासिष्टाम्, अगासिषुः । छै शब्दसंघातयोः । सत्त्वनिषेधः ।  
छयति । छ्यायेत् । छ्यायतु । अछ्यायत् । 'सन्ध्यक्षराणामा' ( सू०  
८०३ ) 'शसात्स्वपाः' ( सू० ७४१ ) 'षाट्ठवर्गस्तवर्गजः' इति  
षकारे गते तकार एव । तष्ट्यौ । छ्यायात्-छ्येयात् । छ्याता ।  
छ्यास्यति । अछ्यास्यत् । अछ्यासीत् ॥ दैप् शोधने । दायति । दायेत् ।  
दायतु । अदायत् । ददौ । पित्त्वादेकाराभावः । दायात् । दाता ।  
दास्यति । अदास्यत् । अदासीत्, अदासिष्टाम्, अदासिषुः । पित्त्वा-  
त्सिलोपाभावः इत्यादि । धेद् पाने । ट ईवर्थः । धयति । धयेत् ।  
धयतु । अधयत् । दधौ । धेयात् । धाता । धास्यति । अधास्यत् ।  
वा सिलोपः । अधासीत्, अधासिष्टाम्, अधासिषुः । अधात्, अधा-  
ताम् । 'स्याविदः' ( सू० ७३८ ) ॥ ८०८ उस्यालोपः १२७ ॥  
उसि परे धातोराकारस्य लोपो भवति ॥ अधुः । धेटः सेरङ् ।  
धातोर्द्वित्वं वेति केचित् ॥ ८०९ आतोऽनपि १२८ ॥  
धातोराकारस्य लोपो भवति अनपि किति ङिति स्वरे सेटि थपि  
च ॥ अदधत्, अदधताम्, अदधन् । दृशिर् प्रेक्षणे ॥ ८१० दृशादेः  
पश्यादिः १२९ ॥ दृशादेर्धातोः पश्यादिरादेशो भवति चतुर्षु

परेषु ॥ 'दृश् ऋ भृ शद् सद पा घ्रा घ्मा स्था ज्ञा दाण्' एते  
दृशादयः । 'पश्य ऋच्छ घौ शीय सीद पिब जिघ्र धम तिष्ठ मन  
यच्छ' एते पश्यादयः । पश्यति । पश्येत् । पश्यतु । अपश्यत् ।  
ददर्श, ददृशतुः, ददृशुः । सृजिदृशोस्थपो वेद् । ददर्शिथ । 'गुणः'  
( सू० ६९२ ) 'रारो झसे दृशाम्' ( सू० ७९६ ) षत्वम् । घृत्वम् ।  
ददृष्ठ, ददृशथुः, ददृश । ददर्श, ददृशिव, ददृशिम । दृश्यात् । द्रष्टा ।  
द्रक्ष्यति । अद्रक्ष्यत् । 'अत उपधायाः' ( सू० ७५७ ) अद्राक्षीत् ।  
'झसात्' ( सू० ७५६ ) घृत्वम् । अद्राष्टाम्, अद्राक्षुः । पक्षे । 'हरितो  
वा' ( सू० ७४० ) दृशादेर्दे गुणः । अदर्शत्, अदर्शताम्, अदर्शन् ।  
रु गतौ । ऋच्छादेशः । ऋच्छति । ऋच्छेत् । ऋच्छतु । आच्छत् ।  
'रः' ( सू० ७६८ ) पश्चात् । 'ऋ अर्' ( सू० ५६ ) वृद्धिः । आर,  
आरतुः आरुः ॥ ८११ अत्यतिव्ययतीनां थपो नित्यमिद्  
१३० ॥ आरिथ, आरथुः, आर । आर, आरिव, आरिम ॥ ८१२  
गुणोर्तिसंयोगाद्योः १३१ ॥ अर्तेः संयोगादेर्ऋदन्तस्य च गुणो  
भवति यकि यङि किति णादावाशीर्यादादौ च ॥ अर्यात् । अर्ता ।  
'हनृतः स्यपः' ( सू० ७९० ) अरिष्यति । आरिष्यत् ॥ ८१३  
सर्तिशास्यतिभ्यो डो लुङि १३२ ॥ सेरपवादः । 'लित्पुषादेर्डः'  
( सू० ७९१ ) आरत्, आरताम्, आरन् । अर्तेर्वा डः । सेरपवादो  
लुङीति केचित् । आर्षीत् । सृ गतौ । धावादेशः । धावति ।  
शीघ्रगतावेव धावादेशः । सरति । ससार, सस्रतुः, सस्रुः । क्रादि-  
त्वात् ससर्थ, सस्रथुः, सस्र । ससार-ससर, सस्रव, सस्रम ॥ ८१४  
यादादौ १३३ ॥ ऋकारस्य रिडादेशो भवति यादादौ परस्मैपदे  
परे ॥ डकारो व्यवधानार्थः । 'तेन ये' ( सू० ७७९ ) इति न  
दीर्घः । स्त्रियात् । सर्ता । सरिष्यति । असरिष्यत् । पुषादित्वात्

ङः । असरत्, असरताम्, असरन् । शद्लृ शतने ॥ ८१५ शीया-  
देशे आत्मनेपदं वाच्यम् १३४ ॥ शीयते । शीयेत् । शीयताम् ।  
अशीयत । शशाद । 'लोपः पचाम्' (सू० ७६२) शेदतुः, शेदुः ।  
शेदिथ-शशत्थ । शद्यात् । शत्ता । शत्स्यति । अशत्स्यत् । लृदि-  
च्चात् ङः । अशदत् । षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु । सत्वम् ।  
सीदादेशः । सीदति । ससाद, सेदतुः, सेदुः । सेदिथ-ससत्थ ।  
सद्यात् । सत्ता । सत्स्यति । असत्स्यत् । असदत् । निपूर्वः । न्यष-  
दत् । पा पाने । पिबादेशः । पिबति । पिबेत् । पिबतु । अपिबत् ।  
पपौ, पपतुः, पपुः । पपिथ-पपाथ । 'दादेरे' (सू० ८०७) पेयात् ।  
पाता । पास्यति । अपास्यत् । 'दादेः पे' (सू० ७२५) अपात् ।  
प्रा गन्धोपादाने । जिघ्रादेशः । जिघ्रति । जिघ्रेत् । जिघ्रतु । अजि-  
घ्रत् । जघ्नौ, जघ्रतुः जघ्नुः । जिघ्रथ-जघ्राथ । प्रायात्-प्रेयात् ।  
प्राता । प्रास्यति । अप्रास्यत् । अप्रासीत् । अप्रात् । ध्मा शब्दा-  
ग्निसंयोगयोः । धमादेशः । धमति । धमेत् । धमतु । अधमत् ।  
दध्मौ । धमायात्-धमेयात् । धमाता । धमास्यति । अधमास्यत् ।  
अधमासीत् । ष्ठा गतिनिवृत्तौ । 'आदेः णः स्तः' (सू० ७४८)  
सकारे जाते निमित्ताभावेन ठस्य थः । तिष्ठादेशः । तिष्ठति ।  
तिष्ठेत् । तिष्ठतु । अतिष्ठत् । 'शसात्खपाः' (सू० ७४१) तस्थौ,  
तस्थतुः, तस्थुः, स्थेयात्-स्थायात् । स्थाता । स्थास्यति । अस्थास्यत् ।  
निपूर्वः । षत्वम् । न्यष्ठात् । ज्ञा अभ्यासे । मनादेशः । मनति ।  
मनेत् । मनतु । अमनत् । मन्नौ, मन्नतुः, मन्नुः । मन्निथ-मन्नाथ ।  
ज्ञायात्-ज्ञेयात् । ज्ञाता । ज्ञास्यति । अज्ञास्यत् । अज्ञासीत् । दाण्  
दाने । यच्छादेशः । यच्छति । यच्छेत् । यच्छतु । अयच्छत् ।  
ददौ, ददतुः, ददुः । 'दादेरे' (सू० ८०७) देयात् । दाता ।

दास्यति । अदास्यत् । अदात् । ह्रू कौटिल्ये । हरति । हरेत् । हरतु ।  
 अहरत् । जहार । 'गुणोर्तिसंयोगाद्योः' (सू० ८१२) जहरतुः,  
 जहरुः ॥ ८१६ ऋदन्तस्य थपो नेट् १३५ ॥ जहर्थ, जहरथुः,  
 जहर । जहार-जहर, जहरिव, जहरिम । हर्यात् । हर्ता । 'हनृतः स्यपः'  
 (सू० ७९०) हरिष्यति । अहरिष्यत् । वृद्धिः । अहार्षीत्, अहार्-  
 ष्यम् । स्कन्दिर गतिशोषणयोः । स्कन्दति । स्कन्देत् । स्कन्दतु ।  
 अस्कन्दत् । चस्कन्द, चस्कन्दतुः, चस्कन्दुः । चस्कन्दिथ ॥ ८१७  
 हसात्परस्य झसस्य सवर्णे झसे लोपो वाच्यः १३६ ॥ चस्कन्थ ।  
 'नो लोपः' (सू० ७४२) स्कद्यात् । स्कन्ता । स्कन्त्यति । अस्क-  
 न्त्यत् ॥ ८१८ सावनिटो नित्यं वृद्धिः १३७ ॥ णित्दविधान-  
 सामर्थ्यादनुपधाभूतस्याप्यतो वृद्धिः । अस्कान्त्सीत् । 'इरितो वा'  
 (सू० ७४०) अस्कदत् । तृ प्लवनतरणयोः । तरति । तरेत् ।  
 तरतु । अतरत् । कित्वाभावाद्गुणः ॥ ८१९ ऋसंयोगादेर्णादेर-  
 कित्वं वाच्यम् १३८ ॥ 'तृफलभजत्रपाम्' (सू० ७९३) इत्येत्व-  
 पूर्वलोपौ । ततार, तेरतुः, तेरुः । तेरिथ ॥ ८२० ऋत इट्  
 १३९ ॥ ऋकारस्य इट् भवति किति ङिति च परे ॥ 'य्वोर्विहसे'  
 (सू० ३१६) तीर्यात् ॥ ८२१ ईटो ग्रहाम् १४० ॥ ग्रहादी-  
 नामिदं इकारो भवति ॥ तरीता-तरिता । तरीष्यति-तरिष्यति ।  
 अतरीष्यत्-अतरिष्यत् । अतारीत्, अतारिष्टाम्, अतारिषुः ॥ ८२२  
 वृद्धिहेतौ साविटो न दीर्घो वाच्यः १४१ ॥ रञ्ज रागे । उभ-  
 यपदी ॥ ८२३ अपि रञ्जदंशषञ्जध्वञ्जाम् १४२ ॥ एषामनुस्वा-  
 रस्य लोपो भवत्यपि परे ॥ रजति । रजते । रजेत् । रजेत । रजतु ।  
 रजताम् । अरजत् । अरजत । ररञ्ज, ररञ्जतुः, ररञ्जुः । ररञ्जिथ-रर-  
 ङ्थ, ररञ्जथुः, ररञ्ज । ररञ्जे । रज्यात् । रङ्क्षीष्ट । रङ्क्ता । रङ्-



क्ष्यति । रङ्क्ष्यते । अरङ्क्ष्यत् । अरङ्क्ष्यत । अराङ्क्षीत् । 'चोः कुः'  
 (सू० २८५) 'खसे चपा०' (सू० ८९) षत्वम् । अराङ्क्षाम्,  
 अराङ्क्षुः । अरङ्क्ष, अरङ्क्षाताम्, अरङ्क्षत । दंश दंशने ।  
 दशति । दशेत् । दशतु । अदशत् । ददंश, ददंशतुः, ददंशुः ।  
 ददंशिथ-ददंष्ट, ददंशथुः । ददयात् । घृत्वम् । दंष्टा । दङ्क्ष्यति ।  
 अदङ्क्ष्यत् । 'णित्पे' (सू० ७५९) णित्वाट्टद्धिः । 'षढोः कःसे'  
 (सू० ७९८) अदाङ्क्षीत् । षञ्ज सञ्जे । सजति । सजेत् । स-  
 जतु । असजत् । ससञ्ज । ससञ्जिथ-ससङ्क्षथ । सज्यात् । सङ्क्षा ।  
 सङ्क्ष्यति । असङ्क्ष्यत् । असाङ्क्षीत्, असाङ्क्षाम्, असाङ्क्षुः ।  
 कित् रोगापनयने संशये च ॥ ८२४ गुब्भ्यः १४३ ॥ गुप् तिज्  
 कित् मान् बन्ध् दान् शान् एभ्यः स्वार्थे सः प्रत्ययो भवति ॥  
 धातोश्च द्वित्वम् ॥ 'कुहोश्चुः' (सू० ७४६) गुप्तिज्किञ्च्यः क्रमान्ति-  
 न्दाक्षमारोगापनयनेषु सः । तेन गोपति तेजति केतति । 'स धातुः'  
 (सू० ७८२) गुवादिभ्यः सस्येप्नेष्यते ॥ ८२५ नानिटि से  
 १४४ ॥ इङ्गजित्ते सप्रत्यये परे धातोर्गुणो न भवति ॥ तिप् ।  
 चिकित्सति । चिकित्सेत् । चिकित्सतु । अचिकित्सत् । चिकित्सां-  
 चकार-चिकित्सामास-चिकित्सांबन्व । चिकित्स्यात् । चिकित्सिता ।  
 चिकित्सिष्यति । अचिकित्सिष्यत् । अचिकित्सीत् । अचिकित्सि-  
 ष्टाम् । पत्ल पतने । पतति । पतेत् । पततु । अपतत् । पपात,  
 पेततुः, पेतुः । पत्यात् । पतिता । पतिष्यति । अपतिष्यत् । 'लित्पु-  
 षादेर्ङः' (सू० ७९१) ॥ ८२६ पतेर्ङे पुगागमो वाच्यः १४५ ॥  
 अपतत् । अमु चलने ॥ ८२७ शमां दीर्घः १४६ ॥ शमादीनां  
 दीर्घो भवति यकारे परे ॥ शम् दम् श्रम् अक्षम् क्रम् मद् एते  
 शमादयः । आभ्यति । अभति । आभ्येत्-अमेत् । आभ्यतु-अमतु ।

अभ्राम्यत्-अभ्रमत् । बभ्राम ॥ ८२८ फणादीनामेत्वपूर्वलोपौ  
वा वाच्यौ १४७ ॥

फणतिभ्राजिराजी च आशिभ्लाशी स्यमिखनी ।

भ्रमित्रसी जीर्यतिश्च दशैते तु फणादयः ॥ १५ ॥

भ्रेमतुः-बभ्रमतुः, भ्रेमुः-बभ्रमुः । भ्रेमिथ-बभ्रमिथ । भ्रम्यात् ।  
भ्रमिता । भ्रमिष्यति । अभ्रमिष्यत् । अभ्रमीत् । डुबम् उद्विरणे ।  
डु इत्संज्ञकः । वमति । वमेत् । वमतु । अवमत् । ववाम ॥ ८२९  
वम एत्वपूर्वलोपौ वा वाच्यौ १४८ ॥ वेमतुः-ववमतुः, वेमुः,  
ववमुः । वम्यात् । वमिता । वमिष्यति । अवमिष्यत् । अवमीत् ।  
फण गतौ । फणति । फणेत् । फणतु । अफणत् । पफाण, फेणतुः,  
फेणुः । फण्यात् । फणिता । फणिष्यति । अफणिष्यत् । अफाणी-  
त्-अफणीत् । खन स्यम् शब्दे । खनति । खनेत् । खनतु । अ-  
खनत् । सखान, खेनतुः, खेनुः । खन्यात् । खनिता । खनिष्यति ।  
अखनिष्यत् । अखानीत्-अखनीत् । वस निवासे । वसति । वसेत् ।  
वसतु । अवसत् । वस् णप् इति स्थिते । द्वित्वम् ॥ ८३० णवा-  
दौ पूर्वस्य १४९ ॥ णवादौ परे यजादीनां ग्रहादीनां च पूर्वस्य  
संप्रसारणं भवति । यकार-वकार-रेफाणामिकारोकारऋकारा भवन्ति ।  
सस्वरस्य संप्रसारणं दीर्घस्य दीर्घो ह्रस्वस्य ह्रस्वः ॥

गृहिज्यावयी व्यधिर्वष्टिर्विचतिर्वृश्चतिस्तथा ।

पृच्छतिभृञ्जतिश्चैव नवैते तु ग्रहादयः ॥ १६ ॥

पूर्ववकारस्योत्थे । 'अत उपधायाः' (सू० ७५७) उवास ।  
उवस् अतुस् इति स्थिते ॥ ८३१ यजां यवराणां य्वृतः संप्रसारणं  
किति १५० ॥ यजादीनां संप्रसारणं भवति किति परे ॥

यजिर्वपिर्वहिश्चैव वेज्रव्येजौ ह्वयतिः स्वपिः ॥

वद्वसी श्वयतिर्वक्तिरेकादश यजादयः ॥ १७ ॥

‘सवर्णे दीर्घः सह’ (सू० ५२) ॥ ८३२ घसादेः षः १५१ ॥  
 वसि-शासि-वसीनां सस्य षो भवति षत्वनिमित्ते सति ॥ ऊषतुः, ऊषुः ।  
 उवसिथ-उवस्थ । संप्रसारणम् । षत्वम् । उष्यात् । वस्ता ॥ ८३३  
 सस्तोऽनपि १५२ ॥ सकारस्य तकारो भवति अनपि सकारे ॥  
 वत्स्यति । अवत्स्यत् । वृद्धिः । अवात्सीत् । ‘झसात्’ (सू० ७५६)  
 ‘प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्’ इति न्यायात् । अवात्ताम्, अवात्सुः ।  
 वद व्यक्तायां वाचि । वदति । वदेत् । वदतु । अवदत् । उवाद,  
 ऊदतुः, ऊदुः । उवदिथ । उद्यात् । वदिता । वदिष्यति । अवदि-  
 प्यत् । अवादीत् । टुओश्चिर् गतिवृद्धोः । टुकारोकारौ कार्यार्थौ ।  
 इर् इत्संज्ञकः । श्वयति । श्वयेत् । श्वयतु । अश्वयत् ॥ ८३४  
 श्वयतेर्णादौ प्रथमं संप्रसारणं वा वक्तव्यम् १५३ ॥ ततो द्वित्वम् ।  
 शुशाव, शुशुवतुः, शुशुवुः । शुशविथ । संप्रसारणाभावपक्षे-शिश्वाय,  
 शिश्चियतुः, शिश्चियुः । शिश्चयिथ । संप्रसारणम् । ‘ये’ (सू० ७७९)  
 शूयात् । श्वयिता । श्वयिष्यति । अश्वयिष्यत् ॥ ८३५ श्वयतेः सौ  
 वृद्ध्यभावो वाच्यः १५४ ॥ अश्वयीत्, अश्वयिष्टाम्, अश्वयिषुः ।  
 ‘हरितो वा’ (सू० ७४०) ॥ ८३६ श्वयतेरिलोपो डे वक्तव्यः  
 १५५ ॥ अश्वत् ॥ ८३७ श्वयतेर्डे द्वित्वं वा १५६ ॥ अशिश्चि-  
 यत्-इत्यादि ॥ इति भ्वादिषु परस्मैपदिप्रक्रिया ॥ १ ॥

भ्वादिष्वात्मनेपदिनः २

अथ भ्वादिष्वात्मनेपदिप्रक्रिया ॥ एष वृद्धौ । अकार आत्मने-  
 पदार्थः । ततः पराणि तिबादिवचनानि । अप् कर्तरि । एधते ।

यिष्यते-पणिष्यते । अपणायिष्यत-अपणिष्यत । अपणायिष्ट-अप-  
 णिष्ट । एवं पन च । कमु कान्तौ ॥ ८४२ कमेः स्वार्थे जिः  
 प्रत्ययो वक्तव्यः ५ ॥ अनपि तु वा वृद्धिः । 'स धातुः' (सू० ७८२)  
 अपू गुणौ । अयादेशः । कामयते । कामयेत । कामयताम् । अका-  
 मयत । कामयांचक्रे-चकमे । कामयिषीष्ट-कमिषीष्ट । कामयिता-  
 कमिता । कामयिष्यते-कमिष्यते । अकामयिष्यत-अकमिष्यत ।  
 अकामित न् इति स्थिते ॥ ८४३ जेरङ्गद्विश्च ६ ॥ ज्यन्ताद्धा-  
 तोर्भूतेऽर्थे अङ्प्रत्ययो भवति दिवादौ परतः ॥ सेरपवादः ।  
 धातोश्च द्वित्वम् ॥ ८४४ जेः ७ ॥ इडागमवर्जिते अनपि विषये  
 जेर्लोपो भवति ॥ 'ह्रस्वः' (सू० ७१३) 'कुहोश्चुः' (सू० ७४६)  
 ८४५ अङि लघौ ह्रस्व उपधायाः ८ ॥ अङि सत्युपधाया ह्रस्वो  
 भवति पूर्वसंबन्धिनोऽकारस्येकारो भवति लघुनि धात्वक्षरे परे ॥  
 ८४६ लघोर्दीर्घः ९ ॥ अङि सति ह्रसादेर्लघोः पूर्वस्य दीर्घो भवति  
 लघुनि धात्वक्षरे परे ॥ अचीकमत, अचीकमेताम्, अचीकमन्त ॥  
 जेरभावपक्षे ॥ ८४७ कमेरङ्द्वित्वे वाच्ये १० ॥ ज्यन्तत्वाभावान्न  
 दीर्घेकारौ । अचकमत । अय गतौ । अयते । अयेत । अयताम् ।  
 आयत ॥ ८४८ परापूर्वेऽयतावुपसर्गरेफस्य लृत्वं वाच्यम् ११ ॥  
 पलायते । पलायेत । पलायताम् । अपलायत । अयांचक्रे । अया-  
 मास । अयांबभूव । अयिषीष्ट । अयिता । अयिष्यते । आयिष्यत ।  
 आयिष्ट । आयिषाताम् । आयिषत । आयिद्वं-आयिध्वम् । दय  
 दानगतिहिंसादानेषु । दयते । अयतिवत्प्रक्रिया । घट चेष्टायाम् ।  
 घटते । घटेत । धटताम् । अघटत । 'कुहोश्चुः' (सू० ७४६) जघटे ।  
 घटिषीष्ट । घटिता । घटिष्यते । अघटिष्यत । अघटिष्ट । ईह चेष्टायाम् ।  
 ईहते । ईहेत । ईहताम् । ऐहत । ईहांचक्रे । ईहिषीष्ट । ईहिता ।

ईहिष्यते । ऐहिष्यत । ऐहिष्ट ॥ काशङ् दीप्तौ ॥ 'काशते । काशेत । काशताम् । अकाशत । 'विद् दरिद्रा' ( सू० ७६७ ) काशांचक्रे । चकाशे । काशिषीष्ट । काशिता । काशिष्यते । अकाशिष्यत । अकाशिष्ट । कासृ शब्दकुत्सायाम् । कासते । कासेत । कासताम् । अकासत । कासांचक्रे । चकासे । कासिषीष्ट । कासिता । कासिष्यते । अकासिष्यत । अकासिष्ट । षिवृ सेवने । सत्वम् । सेवते । सेवेत । सेवताम् । असेवत । सिषेवे, सिषेवाते । सेविषीष्ट । सेविता । सेविष्यते । असेविष्यत । असेविष्ट । गाङ् गतौ । सवर्णदीर्घे कृते । आकारत्वात् । 'आतोऽन्तोदनतः' ( सू० ७२९ ) गाते, गाते, गाते । गेत, गाताम्, अगात । जगे, जगाते, जगिरे । गासीष्ट । गाता । गास्यते । अगास्यत । अगास्त । अगासाताम् । रुङ् गतौ भाषणे च । 'गुणः' ( सू० ६९२ ) रवते । रवेत । रवताम् । अरवत, अरवेताम् । अनेकस्वरत्वादसंयोगपूर्वत्वाच्चोकारस्य वत्वे प्राप्ते ॥ ८४९ नानप्योर्वः १२ ॥ अनपि विषये धातोरुवर्णस्य वत्त्वं न भवति ॥ तत उव् । 'नुधातोः' ( सू० ७७६ ) रुरुवे, रुरुवाते, रुरुविरे । रविषीष्ट । रविता । रविष्यते । अरविष्यत । अरविष्ट । देङ् पालने । दयते । दयेत । दयताम् । अदयत ॥ ८५० दयतेर्णादौ दिग्यादेशो द्वित्वाभावश्च वक्तव्यः १३ ॥ दिग्ये । 'संध्यक्षराणामा' ( सू० ८०३ ) दासीष्ट । दाता । दास्यते । अदास्यत ॥ ८५१ अपिद्वाधास्थामित्वं सेडित्वं आत्मनेपदे वाच्यम् १४ ॥ द्वित्वान्न गुणः ॥ ८५२ लोपो ह्रस्वाज्झसे १५ ॥ ह्रस्वादुत्तरस्य सेर्लोपो भवति झसे परे । अदित, अदिषाताम्, अदिषत । डीङ् विहायसा भ्रतौ । डयते । डयेत । डयताम् । अडयत । 'नुधातोः' ( सू० ७७६ ) डीङ्ये । डयिषीष्ट । डयिता । डयिष्यते । अडयिष्यत । अडयिष्ट ॥ दैङ् नैङ्

पालने । दायते । दायेत । दायताम् । अदायत ॥ ८५३ दैडो  
 णादौ दिग्यादेशो द्वित्वाभावश्च १६ ॥ दिग्ये । दासीष्ट । 'अपि-  
 द्वाधास्थामि—' (सू० ८५१) 'लोपो ह्रस्वाज्झसे' (सू० ८५२) अदित ।  
 तत्रे । अत्रास्त । द्युतङ् द्योतने । 'उपधाया लघोः' (सू० ७३५)  
 द्योतते । द्योतेत । द्योतताम् । अद्योतत ॥ ८५४ द्युतेः पूर्वस्य  
 संप्रसारणं वक्तव्यं णादौ परे १७ ॥ दिद्युते । द्योतिषीष्ट ।  
 द्योतिता द्योतिष्यते । अद्योतिष्यत-अद्योतिष्ट ॥ ८५५ द्युता-  
 दिभ्यो लुङि वा परस्मैपदं वाच्यम् १८ ॥ लिट्पुषादेर्ङः ।  
 (सू० ७९१) अद्युतत् । वृतुङ् वर्तने । वर्तते, वर्तेते, वर्तन्ते ।  
 वर्तताम् । अवर्तत । ववृते । वर्तिषीष्ट । वर्तिता । वर्तिष्यते ॥  
 ८५६ वृतादिभ्यः स्यप्स्योर्वा पं पेऽनित्त्वं च १९ ॥ 'वृतु वृधु  
 शृधु स्यन्दू कृपू' एते वृतादयः । वर्त्स्यति । अवर्त्स्यत् । अवर्तिष्ट ।  
 परस्मैपदपक्षे—'लिट्पुषादेर्ङः' (सू० ७९१) अवृतत् ॥ वृधङ् वृद्धौ ।  
 वर्धते । वर्धेत । वर्धताम् । अवर्धत । ववृधे । वर्धिषीष्ट । वर्धिता ।  
 अवर्धिष्यते । अवर्धिष्यत । वर्त्स्यति । अवर्त्स्यत् । अवधिष्ट । अवृ-  
 धत । शृधुङ् पर्दने । शर्धते । शर्धेत । शर्धताम् । अशर्धत । शशृ-  
 धे । शर्धिषीष्ट । शर्धिता । शर्धिष्यते । अशर्धिष्यत । अशर्धिष्ट ।  
 शर्त्स्यति । अशर्त्स्यत् । अशृधत् । स्यन्दू प्रस्रवणे । स्यन्दते ।  
 स्यन्देत । स्यन्दताम् । अस्यन्दत । सस्यन्दे । 'ऊदितो वा' (सू० ७५१)  
 स्यन्दिषीष्ट-स्यन्त्सीष्ट । स्यन्दिता-स्यन्ता । स्यन्दिष्यते-स्यन्त्स्यते ।  
 अस्यन्दिष्यत-अस्यन्त्स्यत । अस्यन्त्स्यत् । अस्यन्दिष्ट-अस्यन्त । पक्षे  
 अस्यदत् । कृपू-सामर्थ्ये । गुणः ॥ ८५७ कृपो रो लः २० ॥  
 कृपो रेफस्य लो भवति । ऋकारस्य लृकारो भवति ॥ कल्पते ।  
 कल्पेत । कल्पताम् । अकल्पत । चकृपे । कल्पिषीष्ट । इडभावपक्षे ।

८५८ सिस्थोः २१ ॥ उपधाया गुणो न भवति सिस्थोरनिटोः परतः ॥ कृप्सीष्ट । कल्पिता-कल्सा । कल्पिष्यते-कल्पस्यते । कल्पस्यति । अकल्पिष्यत-अकल्पस्यत । अकल्पिष्ट-अकृप्त, अकृप्साताम्, अकृप्सत । अकृपत् । व्यथ दुःस्वभयचलनयोः । व्यथते । व्यथेत । व्यथताम् । अव्यथत ॥ ८५९ व्यथतेर्णादौ पूर्वस्य संप्रसारणं वक्तव्यम् २२ ॥ विव्यथे । व्यथिषीष्ट । व्यथिता । व्यथिष्यते । अव्यथिष्यत-अव्यथिष्ट । रमु क्रीडायाम् । रमते । रमेत । रमताम् । अरमत ॥ ८६० व्याङ्-पर्युपेभ्यो रमः पम् २३ ॥ विरमति । आरमति । परिरमति । उपरमति । रेमे । रंसीष्ट । रन्ता । रंस्यते । अरंस्यत-अरंस्त, अरंसाताम्, अरंसत । विपूर्वः । 'आदन्तानाम्' ( सू० ७८८ ) इतीदृसकौ । व्यरंसीत् । व्यरंसिष्टाम् । जित्वरा संग्रमे । जिआवितौ । त्वरते । त्वरेत । त्वरताम् । अत्वरत । तत्तरे । त्वरिषीष्ट । त्वरिता । त्वरिष्यते । अत्वरिष्यत । अत्वरिष्ट । अत्वरिङ्-अत्वरिध्वम् । षह मर्षणे । सहते । सहेत । सहताम् । असहत । सेहे । सहिषीष्ट । सहिता । 'इषुसह' ( सू० ७९२ ) इति वेद् । 'होढः' ( सू० २४३ ) । 'तथोर्धः' ( सू० ७५३ ) घृत्वम् । ढलोपः ॥ ८६१ सहिवहोरोदवर्णस्य २४ ॥ सहिवहोरवर्णस्यौकारादेशो भवति ढलोपनिमित्ते ढकारे परे ॥ सोढा । सहिष्यते । असहिष्यत । असहिष्ट ॥ इति भ्वादि-प्वात्मनेपदिप्रक्रिया ॥ २ ॥

### • भ्वादिभूभयपदिनः ३

अथोभयपदिप्रक्रिया ॥ राजृ दीप्तौ । ऋकार ऋदित्कार्यार्थः । राजति, राजते । राजेत्, राजेत । राजतु, राजताम् । अराजत् । अराजत । रराज । फणादित्वादेत्वपूर्वलोपौ । रेजतुः-रराजतुः । रेजुः-

रराजुः । रेजे । राज्यात् । राजिषीष्ट । राजिता । राजिता ।  
 राजिष्यति । राजिष्यते । अराजिष्यत् । अराजिष्यत । अराजीत् । अरा-  
 जिष्ट । खन खनने । खनति । खनते । खनेत् । खनेत । खनतु । खन-  
 ताम् । अखनत् । अखनत । चखान । 'गमां खरे' (सू० ७८९) चखनतुः,  
 चख्नुः । चख्ने । खन्यात् ॥ ८६२ जनखनसनां कृति  
 ये आकारो वा वक्तव्यः १ ॥ खायात्-खनिषीष्ट । खनिता ।  
 खनिता । खनिष्यति । खनिष्यते । अखनिष्यत् । अखनिष्यत ।  
 अखानीत् । अखनीत् । अखनिष्ट । हजू हरणे । हरति । हरते ।  
 हरेत् । हरेत । हरतु । हरताम् । अहरत् । अहरत । जहार, जहतुः,  
 जहुः ॥ ८६३ ऋदन्तस्य थपो नेट् २ ॥ जहर्थ । जहे ।  
 यादादौ । हियात् ॥ ८६४ उः ३ ॥ ऋकारस्य गुणो न भवति  
 सिस्वोरनिटोः परतः ॥ हृषीष्ट । हर्ता २ । 'हनृतः स्यपः' (सू० ७९०)  
 हरिष्यति । हरिष्यते । अहरिष्यत् । अहर्षीत् । 'लोपो ह्रस्वाज्ज्ञसे'  
 (सू० ८५२) अहत, अहृषाताम्, अहृषत । गुह्र संवरणे ॥ ८६५  
 गुहेरुपधाया ऊद्गुणहेतौ खरे ४ ॥ गूहति । गूहते । जुगूह  
 जुगूहतुः । जुगूहिथ । जुगोढ । जुघुक्षे-जुगुहिषे । जुगुहिष्वे  
 जुगूद्धे । गूहिषीष्ट-घुक्षीष्ट । गूहिता-गोढा । गूहिष्यति-घोक्ष्यति ॥  
 ८६६ दुहृदिहृलिहृगुहृभ्यः सको लुग्व्वा यकारतकारयोराति ५ ॥  
 अगूढ-अघुक्षत ॥ ८६७ आति सकोऽकारलोपः खरे ६ ॥  
 अघुक्षाताम्, अघुक्षत । अगूढाः-अघुक्षथाः, अघुक्षथाम् । अघूढं-अघु-  
 क्षध्वम् । अघुक्षि-अगुहृहि । अघुक्षावहि, अगुहृहि-अघुक्षानहि । दान  
 आर्जवे । 'गुब्भ्यः' (सू० ८२४) 'यः से' (सू० ८४०) । 'माना-  
 दीनां पूर्वस्य दीर्घो वक्तव्यः' (सू० ८४१) दीदांसति-दीदां-  
 सते । दीदांसेत् । दीदांसेत । दीदांसतु । दीदांसताम् । अदीदांसत्-



अदीदांसत । दीदांसांचक्रे । दीदांसामास । दीदांसांबभूव । दीदांस्यात् ।  
 दीदांसिषीष्ट । दीदांसिता २ । दीदांसिष्यति । दीदांसिष्यते । अदी-  
 दांसिष्यत् । अदीदांसिष्यत । अदीदांसीत्, अदीदांसिष्ट । शान तेजने ।  
 शीशांसति-शीशांसते । दानवत् । भज सेवायाम् । भजति । भजते ।  
 भजेत् । भजेत । भजतु । भजताम् । अभजत् । अभजत । बभाज ।  
 'तृफलभज' (सू० ७९२) इत्येतत्पूर्वलोपौ । भेजतुः, भेजुः । भेजिथ-  
 बभक्थ । भेजे, भेजाते, भेजिरे । भज्यात् । भक्षीष्ट । भक्ता । भक्ता ।  
 भक्ष्यति । भक्ष्यते । अभक्ष्यत् । अभक्ष्यत । अभाक्षीत्, अभाक्ताम्,  
 अभाक्षुः । अभक्त, अभक्षाताम्, अभक्षत । डुपचष् पाके । डुकार-  
 षकारौ कार्यार्थौ । पचति । पचते । पचेत् । पचेत । पचतु । पचताम् ।  
 अपचत् । अपचत । पपाच, पेचतुः, पेचुः । पेचे । पच्यात् । पक्षीष्ट । पक्ता-  
 पक्ता । पक्ष्यति । पक्ष्यते । अपक्ष्यत् । अपक्ष्यत । अपाक्षीत् । अपक्त,  
 अपक्षाताम्, अपक्षत । अश्रु गतौ याचने च । आञ्चीत् । व्यय गतौ ।  
 बव्यये । अव्ययीत् । श्रिन् सेवायाम् । 'गुणः' (सू० ६९२) श्रयति ।  
 श्रयते । शिश्राय, शिश्रियतुः । शिश्रिये । श्रीयात् । श्रयिषीष्ट ।  
 श्रयिता । श्रयिता । श्रयिष्यति । श्रयिष्यते । अश्रयिष्यत् । अश्रयिष्यत ।  
 ८६८ स्तुश्रिद्रुवां सेरङ् धातोर्द्वित्वं च ७ ॥ अशिश्रियत् । अशि-  
 श्रियत । त्विष् दीप्तौ । त्वेषति । त्वेषते । तित्वेष । तित्विषे ।  
 त्विष्यात् । त्विषीष्ट । त्वेष्टा २ । त्वेक्ष्यति । त्वेक्ष्यते । अत्वक्ष्यत् ।  
 अत्वक्ष्यत । 'ह्रशषान्तात्सक्' (सू० ८००) अत्विक्षत ॥ ८६९  
 सस्यात्मनेपदे स्वरं टिलोपो वाच्यः ८ ॥ अकारलोपे कृते । 'आतोऽ-  
 न्तोदनतः' (सू० ७२९) अत्विक्षाताम्, अत्विक्षत । यज देवपूजा-  
 संगतिकरणदानेषु । यजति । यजते । यजेत् । यजेत । यजतु । यजताम् ।  
 अयजत् । अयजत । 'णबादौ पूर्वस्य' (सू० ८३०) इयाज । 'यजां

यवराणां य्वृतः संप्रसारणम्' (सू० ८३१) ईजतुः, ईजुः । इयजिथ । इयष्ट । ईजे । इज्यात् । यक्षीष्ट । यष्टा । यष्टा । यक्ष्यति । यक्ष्यते । अयक्ष्यत्-अयक्ष्यत । अयाक्षीत्, अयाष्टाम्, अयाक्षुः । अयष्ट, अयक्षाताम्, अयक्षत । अयष्टाः, अयक्षाथाम् ॥ ८७० ध्वे च सेर्लोपः ९ ॥ षत्वम् । 'श्वे जबाः' (सू० ३५) षुत्वम् । अय-  
 ङ्ङम् । अयक्षि, अयक्ष्वहि, अयक्षमहि, । दुवप् बीजतन्तुसन्ताने ।  
 दु इत् । वपति । वपेत् । उवाप, ऊपतुः, ऊपुः । उवपिथ-उवप्यथ ।  
 ऊपे । उप्यात् । वप्सीष्ट । वप्ता २ । वप्स्यति । वप्स्यते । अवप्स्यन् । अव-  
 प्स्यत । अवाप्सीत् । अवप्त । वह प्रापणे । वहति । वहते । उवाह,  
 ऊहतुः, ऊहुः । उवहिथ । 'हो ढः' (सू० २४३) । 'तथोर्ध्वः' (सू०  
 ७५३) । षुत्वम् । ढलोपः । 'सहिवहोरोदवर्णस्य' (सू० ८६१) ।  
 उवोढ । उव्हात् । वक्षीष्ट । वोढा २ । वक्ष्यति । वक्ष्यते । अवक्ष्यन् ।  
 अवक्ष्यत । अवाक्षीत् । अवोढाम् । अवोढ, अवक्षाताम्, अवक्षत । वेज्  
 तन्तुसन्ताने । वयति । वयते ॥ ८७१ वेजो णादौ संप्रसारणाभावो  
 वाच्यः १० ॥ 'सन्ध्यक्षराणाम्' (सू० ८०३) ववौ । वादित्वा-  
 न्नैत्वपूर्वलोपौ । ववतुः, ववुः । ववे ॥ ८७२ वेजो वय् णादौ वा  
 वक्तव्यः ११ ॥ उवाय ॥ ८७३ ग्रहां किति च १२ ॥ ग्रहा-  
 दीनां संप्रसारणं स्यात् किति डिति च परे ॥ इति संप्रसारणम् ।  
 यकारस्य संप्रसारणनिषेधः । ऊयतुः, ऊयुः । उवयिथ, ऊयथुः ।  
 ऊये, ऊयाते, ऊयिरे ॥ ८७४ वयो यस्य किति णादौ वो वा  
 वक्तव्यः १३ ॥ ऊवतुः, ऊवुः । ऊवे । ऊयात् । वासीष्ट । वाता-  
 वाता । वास्यति । वास्यते । अवास्यत् । अवास्यत । अवासी । 'आद-  
 न्तानाम्' (सू० ७८८) इति इदसकौ । अवासिष्टाम् । आवास्त ।  
 व्येज् संवरणे । व्ययति । व्ययते ॥ ८७५ व्येजो णादौ नात्वम्

१४ ॥ विव्याय, विव्यतुः, विव्युः ॥ ८७६ अस्यतिव्ययतीनां  
थपो नित्यमिष्ट १५ ॥ विव्ययिथ । विव्ये । वीयात् । व्यासीष्ट ।  
व्याता । व्याता । व्यास्यति । व्यास्यते । अव्यास्यत् । अव्यास्यत । अव्या-  
सीत् । अव्यास्त । हेञ् स्पर्धायाम् । ह्यति । ह्यते ॥ ८७७ अद्वि-  
रुक्तस्य ह्यतेः संप्रसारणं वक्तव्यम् १६ ॥ जुहाव, जुहुवतुः,  
जुहुवुः । जुहविथ-जुहोथ । जुहुवे, जुहुवाते, जुहुविरे । हूयात् ।  
ह्वासीष्ट । ह्वाता । ह्वास्यति । ह्वास्यते । अह्वास्यत् । अह्वास्यत ॥  
८७८ अस्यतिवक्तिख्यातिलिपिसिचिह्नयतीनां सेडो वा वाच्यः  
१७ ॥ अहृत, अह्रेताम्, अहन्त । अह्रास्त, अह्रासाताम्, अह्रासत ।  
ऋत जुगुप्सायां कृपायां च ॥ ८७९ ऋतेरीयङ् स्वार्थेऽनपि तु  
वा १८ ॥ ऋतीयते । ऋतीयांचक्रे । आनर्त । ऋतीयिष्यते ।  
आर्तीत् । आर्तीयिष्ट ॥

॥ इति भ्वादिषुभयपदिप्रक्रिया ॥ ३ ॥ इत्यन्विकरणा भ्वादयो  
धातवः ॥ ( इति प्रथमगणः । )

### अदादिषु परस्मैपदिनः ४ ॥

इदानीं लुग्विकरणाददादेर्गणात्कर्तरि तिबादयो वर्ण्यन्ते ॥ अद्  
भक्षणे । 'अप्कर्तरि' ( सू० ६९१ ) ॥ ८८० अदादेर्लुक् १ ॥  
अदादेर्गणादुत्पन्नस्यापो लुग्भवति ॥ 'स्वसे चपा झसानाम्' ( सू०  
८९ ) अत्ति, अत्तः, अदन्ति । अत्सि, अत्थः, अत्थ । अद्धि, अद्धः,  
अद्धः । अद्यात् । अत्तु-अत्तात्, अत्ताम्, अदन्तु ॥ ८८१ झसाद्धिर्हेः  
२ ॥ झसादुत्तरस्य हेर्धिर्भवति ॥ अद्धि-अत्तात्, अत्ताम्, अत्त । अदानि  
अदाव, अदाम ॥ ८८२ अदो दिस्योरडाग्नो वक्तव्यः ३ ॥  
आदत् । आदः ॥ ८८३ सिस्योरदेर्धस्लु लिटि तु वा ४ ॥

जघास । 'गमां खरे' ( सू० ७८९ ) । 'खसे चपा' ( सू० ८९ ) ।  
 'घसादेः षः' ( सू० ८३२ ) क्षः । जक्षतुः, जक्षुः । जघसिथ ।  
 पक्षे । आद, आदतुः, आदुः । आदिथ । अद्यात् । अत्ता । अत्स्यति ।  
 आत्स्यत् ॥ लृदिच्चादङ् । अघसत्, अघसताम्, अघसन् । प्सा  
 भक्षणे । प्साति, प्सातः, प्सान्ति । प्सायात्, प्सायाताम्, प्सायुः ।  
 प्सातु-प्सातात्, प्साताम्, प्सान्तु । अप्सात्, अप्साताम् ॥  
 ८८४ आदन्तविद्द्विषामन उस् वा वक्तव्यः ५ ॥ 'उस्यालोपः'  
 ( सू० ८०९ ) अप्सुः । अप्सात् । पप्सौ, पप्सतुः, पप्सुः । पप्सिथ-  
 पप्साथ । प्सेयात् । प्सायात् । प्साता । प्सास्यति । अप्सास्यत् ।  
 'आदन्तानाम्' ( सू० ७८८ ) इतीद्सकौ । अप्सासीत् अप्सासिष्टाम् ।  
 मा माने । माति । मायात् । मातु । अमात्, अमाताम्, अमुः ।  
 अमान् । ममौ । 'दादेरे' ( सू० ८०७ ) मेयात् । माता । मास्यति ।  
 अमास्यत् । अमासीत् । या प्रापणे । याति । यायात् । यातु ।  
 अयात्, अयाताम्, अयुः । अयान् । ययौ । यायात् । याता । यास्यति ।  
 अयास्यत् । अयासीत् । वा गतिगन्धनयोः । वातिवत् । रा दाने ।  
 तद्वत् । ला दानग्रहणयोः । लाति । ललौ । तद्वत् । द्रा कुत्सायां  
 गतौ च । द्राति । दद्रा । द्रायात् । द्रेयात् । द्राता । द्रास्यति ।  
 अद्रास्यत् । अद्रासीत् । ख्या प्रकथने । ख्याति । ख्यायात् ।  
 ख्यातु । अख्यात् । चख्यौ । ख्यायात् । ख्येयात् । ख्याता ।  
 ख्यास्यति । अख्यास्यत् । पुषादित्वात् डः । 'आतोऽनपि' ( सू० ८०५ )  
 अख्यत् । पा रक्षणे । पाति । पायात् । पातु । अपात् । पपौ ।  
 पाता । पास्यति । अपास्यत् । अपासीत् । भा दीप्तौ । भाति ।  
 बभौ । अभासीत् । ण्णा शौचे । स्नाति । सन्नौ । स्नायात् ।  
 स्नेयात् । अस्नासीत् । वश कान्तौ । 'छशषराजादेः षः' ( सू० २७६ )

इति । षत्वम् । घृत्वम् । वष्टि । 'ग्रहां कृति च' (सू० ८७३) उष्टः, उशन्ति । षत्वम् । 'षढोः कः से' (सू० ७९८) क्षः । वक्षि, उष्टः, उष्ट । वश्मि, उश्वः, उश्मः । उश्यात्, उश्याताम्, उश्युः । वष्टु, उष्टात्, उष्टाम्, उशन्तु । 'ज्ञसाद्वीर्हेः' (सू० ८८१) । 'ज्ञवे जबाः' (सू० ३५) घृत्वम् । उष्टि-उष्टात्, उष्टम्, उष्ट । वशानि, वशाव, वशाम् ॥ ८८५ दिस्योर्हसात् ६ ॥ हसादुत्तरयोर्दिप्सि-पोलोपो भवति ॥ षत्वम् । 'षो डः' । (सू० २७७) 'वाऽवसाने' (सू० २५०) अवद्-अवड् । संप्रसारणम् । अडागमः । 'उ ओ' (सू० ४५) 'ओ औ औ' (सू० ४६) औष्टाम्, औशन् । अवद्-अवड्, औष्टम्, औष्ट । अवशम्, औश्व, औश्म । उवाश, ऊशिव, ऊशिम । उश्यात्, उश्यास्ताम्, उश्यासुः । वशिता । वशिष्यति । अवशिष्यत् । अवाशीत् । हन् हिंसागलोः । हन्ति ॥ ८८६ लोपस्त्वनुदात्तनाम् ७ ॥ अनुदात्तानां तनादीनां च जमस्य लोपो भवति किति ङिति ज्ञसे परे ॥ तुशब्दात्कचिदज्ञसेऽपि क्यप्प्रत्य-यादौ जमस्य लोपः ॥

रमिर्यमिनमी हन्तिरनुदात्ता गमिर्मनिः ।

तनुः क्षण् क्षिण् ऋणुकृणू वनुर्वमुस्तनादयः ॥ १८ ॥

हतः । 'गमां खरे' (सू० ७८९) । 'हनो भ्रे' (सू० २६२) भ्रन्ति । हंसि, हथः, हथ । हन्मि, हन्वः, हन्मः । हन्यात्, हन्याताम्, हन्युः । हन्तु-हताद्वा, हताम्, भ्रन्तु ॥ ८८७ जहोधिशाधि ८ ॥ हन्तेर्ज-हिशब्दोऽस्तरेधिशब्दः शास्तेः शाधिशब्दो निपात्यते हिविषये ॥ जहि-हतात्, हतम्, हत । हनानि, हनाव, हनाम् । अहन्, अहताम्, अमन् । अहन्, अहतम्, अहत । अहनम्, अहन्व, अहन्म । 'हनो भ्रे' (सू० २६२) वृद्धिः । जघान, जघ्नतुः, जघ्नः ॥ ८८८ द्विरुक्तस्य

हन्तेऽपि घत्वं वाच्यम् ९ ॥ जघनिथ-जघन्थ, जघ्नथुः, जघ्न ।  
जघान-जघन, जघ्निव, जघ्निम ॥ ८८९ हन्तेः स्याशीर्यादादौ वधादे-  
शो वक्तव्यः १० ॥ वध्यात्, वध्यास्ताम्, वध्यासुः । हन्ता, हन्तारौ  
हन्तारः । ‘हनृतः स्यपः’ (सू० ७९०) हनिष्यति, हनिष्यतः, हनि-  
ष्यन्ति । अहनिष्यत्, अहनिष्यताम्, अहनिष्यन् ॥ ८९० जनिव-  
ध्योर्न वृद्धिः ११ ॥ वधादेशे कृते इट् । अवधीत्, अवधिष्टाम्,  
अवधिषुः । वधीः, अवधिष्टम्, अवधिष्ट । यु मिश्रणे । ‘गुणः’ (सू०  
६९२) ॥ ८९१ ओरौ १२ ॥ उकारस्याद्विरुक्तस्य औकारादेशो  
भवति पिति त्सि अबादौ विषये ॥ यौति, युतः । ‘न धातोः’ (सू०  
७७६) युवन्ति । यौषि, युथः, युथ । यौमि, युवः, युमः । युयात् ।  
यौतु-युतात्, युतम्, युवन्तु । युहि-युताता, युतम्, युत । यवानि,  
यवाव, यवाम । अयौत्, अयुताम्, अयुवन् । अयौः, अयुतम्, अयुत ।  
अयवम्, अयुव, अयुम, । ‘धातोर्नामिनः’ (सू० ७६९) युयाव । ‘नान-  
प्योर्वः’ (सू० ८४९) युयुवतुः, युयुवुः । युयविथ, युयवथुः । यूयात् ।  
यविता । यविष्यति । अयविष्यत् । अयावीत्, अयाविष्टाम्,  
अयाविषुः । तु गतिवृद्धिर्हिंसासु ॥ ८९२ तुरुनुस्तुभ्योऽद्विरुक्ते-  
भ्यो हसादीनां चतुर्णामीद्वा १३ ॥ तौति-तवीति, तुतः-तुवीतः,  
तुवन्ति । तौषि-तवीषि । तुथः-तुवीथः । तुथ-तुवीथ । तौमि-तवीमि ।  
तुयात्-तुवीयात् । तौतु-तवीतु । तुतात्-तुवीतात् । तुताम्-तुवीताम् ।  
तुवन्तु । तुहि-तुवीहि । अतौत्-अतवीत् । तुताव । तोता । तोप्यति ।  
अतोप्यत् । अतौषीत् । रु शब्दे । रौति-रवीति । रुतः-रुवीतः ।  
रुवन्ति । रौषि-रवीषि । रुयात्-रुवीयात् । रौतु-रवीतु । रुतात्-  
रुवीतात् । अरौत्-अरवीत् । अरुताम्-अरुवीताम्, अरुवन् । अरौः-  
अरवीः । रुराव, रुरुवतुः, रुरुवुः । रुरविथ । रुयात् । रोता ।

रोष्यति । अरोष्यत् । अरोषीत् । दु गतौ । भौवादिकः ।  
 दवति । दुयात् । दवतु । अदवत् । दुदाव । दूयात् । दोता । दो-  
 प्यति । अदोष्यत् । अदौषीत्, अदौष्टाम्, अदौषुः । णु स्तुतौ ।  
 'आदेः णः स्तः' (सू० ७४८) नौति-नवीति, नुतः-नुवीतः, नुवन्ति ।  
 नुनाव । नूयात् । नौता । नोष्यति । अनौष्यत् । अनौषीत् । दुक्षु  
 शब्दे । दु इत् । क्षौति, क्षुतः, क्षुवन्ति । क्षुयात् । क्षौतु । अक्षौत् ।  
 चुक्षाव, चुक्षुवतुः, चुक्षुवुः । क्षूयात् । क्षविता । क्षविष्यति । अक्ष-  
 विष्यत् । अक्षावीत् । क्ष्णु तेजने । क्षणौति, क्षणुतः, क्षणुवन्ति । क्षणु-  
 यात् । क्षणौतु । अक्षणौत् । चुक्षणाव । क्षणूयात् । क्षणविता ।  
 क्षणविष्यति । अक्षणविष्यत् । अक्षणावीत् । ण्णु प्रस्रवणे ।  
 स्त्रौति । स्त्रुयात् । स्त्रौतु । अस्त्रौत् । सुस्त्राव । स्त्रूयात् । स्त्रविता ।  
 स्त्रविष्यति । अस्त्रविष्यत् । अस्त्रावीत् । इण् गतौ । 'गुणः' (सू०  
 ६९२) एति । इतः ॥ ८९३ इणः किति खरे यो वक्तव्यः १४ ॥  
 यन्ति । एषि, इथः, इथ । एमि, इवः, इमः । इयात्, इयाताम्, इयुः ।  
 एतु-इताद्वा, इताम्, यन्तु । इहि-इतात्, इतम्, इत । अयानि, अयाव,  
 अयाम् । अडागमद्वयम् । ऐत्, ऐताम्, आयन् । ऐः, ऐतम्, ऐत ।  
 आयम्, ऐव, ऐम । द्वित्वम् । वृद्धिः पूर्वस्य इयादेशः । इयाय ॥  
 ८९४ इणः किति णादौ पूर्वस्य दीर्घो वक्तव्यः १५ ॥ ईयतुः,  
 ईयुः । इययिथ-इयेथ, ईयथुः, ईय । इयाय-इयय, ईयिव, ईयिम । 'ये'  
 (सू० ७७९) ईयात्, ईयास्ताम्, ईयासुः । एता । एष्यति । ऐष्यत् ।  
 'दादेः पे' (सू० ७२५) ॥ ८९५ इणिकोः सिलोपे गा वक्तव्यः  
 १६ ॥ अगात्, अगाताम्, अगुः । इक् स्मरणे । इडिर्कावध्युपसर्गतो न  
 व्यभिचरतः । अध्येति, अधीतः, अधियन्ति । अधीयात् । अध्येतु । अ-  
 ध्यैत्, अध्यैताम्, अध्यायन् । अधीयाय । अधीयात् । अध्येता । अध्ये-

प्यति । अध्यैष्यत् । अध्यगात् । इण्वत् । विद् ज्ञाने । 'उपधाया लघोः'  
 ( सू० ७३५ ) वेत्ति, वित्तः, विदन्ति । वेत्सि, वित्थः, वित्थ । वेष्मि,  
 विद्वः, विद्मः ॥ ८९६ विदो नवानां त्यादीनां णबादिर्वा १७ ॥  
 विद उत्तरेषां तिबादीनां नवानां णबादिर्नवको वा भवति ॥  
 वेद, विदतुः, विदुः । वेत्थ, विदथुः, विद । वेद, विद्व, विद्म ।  
 विद्यात् । वेत्तु-वित्तात्, वित्ताम्, विदन्तु । 'शसाद्धिर्हेः' ( सू० ८८१ )  
 विद्धि-वित्तात्, वित्तम्, वित्त । वेदानि, वेदाव, वेदाम । 'दिस्योर्हसात्'  
 ( सू० ८८५ ) अवेत्-अवेद्, अवित्ताम् । अन् उस् वा । अविदन्-  
 अविदुः ॥ ८९७ दः सः १८ ॥ दकारस्य वा सकारो भवति सि-  
 विषये ॥ अवेः-अवेत्, अवित्तम्, अवित्त । अवेदम्, अविद्व, अविद्म ।  
 विवेद, विविदतुः, विविदुः । विवेदिथ । पक्षे ॥ ८९८ आमि  
 विदेर्न गुणः १९ ॥ विदांचकार, विदामास, विदांबभूव । विद्यात्,  
 विद्यास्ताम् । वेदिता । वेदिष्यति । अवेदिष्यत् । अवेदीत्, अवेदिष्टाम्,  
 अवेदिषुः । अस् भुवि । अस्ति ॥ ८९९ नमसोऽस्य २० ॥ नम  
 इत्येतस्य विकरणस्यास् भुवीति धातोश्चाकारस्य लोपो भवति ङिति  
 परे ॥ स्तः, सन्ति ॥ ९०० सि सः २१ ॥ अस्तेः सकारस्य  
 लोपो भवति सकारे परे ॥ सि स इत्यत्र अस्तेः सलोपः सकारमात्रे  
 न तु पिति । तेन व्यतिसे । असि, स्थः, स्थ । अस्मि, स्वः, स्मः ।  
 स्यात्, स्याताम्, स्युः । अस्तु-स्तात्, स्ताम्, सन्तु । 'जह्वेधिशधि' ।  
 ( सू० ८८७ ) एधि-स्तात्, स्तम्, स्त । असानि, असाव, असाम ॥  
 ९०१ अस्तेरीट् २२ ॥ अस्तेः परयोर्दिस्योरीडागमो भवति ॥  
 आसीत् ॥ ९०२ लोपागमयोर्मध्ये आगमविधिर्बलवान् २३ ॥  
 आस्ताम्, आसन् । आसीः, आस्तम्, आस्त । आसम्, आस्व, आस् ॥  
 ९०३ अस्तेरनपि भू वक्तव्यः २४ ॥ बभूव । मृजूष शुद्धौ ॥



९०४ मृजेर्गुणनिमित्ते प्रत्यये परे वृद्धिर्वाच्या किति

खरे वा २५ ॥ षत्वम् । घृत्वम् ॥ ९०५ रात्सस्व २६ ॥ रेफादु-  
त्तरस्य सस्यैव लोपः स्यान्न त्वन्यस्य ॥ मार्ष्टि, मृष्टः, मृजन्ति-मार्जन्ति ।  
मार्क्षि, मृष्टम्, मृष्ट । मार्जिम, मृज्वः, मृज्मः । मृज्यात् । मार्ष्टु-मृष्टात्,  
मृष्टाः, मृजन्तु-मार्जन्तु । मृष्ट्वि-मृष्टात्, मृष्टम्, मृष्ट । मार्जानि, मार्जाव,  
मार्जाम । अमार्ष्ट-अमार्ष्ट, अमृष्टाम्-अमृजन्-अमार्जन् । अमार्ष्ट-अमार्ष्ट,  
अमृष्टम्-अमृष्ट । अमार्जम्, अमृज्व, अमृज्म । ममार्ज, ममृजतुः-ममार्जतुः,  
ममृजुः-ममार्जुः । ममार्जिथ-ममार्ष्ट, ममृजथुः-ममार्जथुः । मृज्यात् ।  
मार्जिता-मार्ष्टा । मार्जिष्यति-मार्क्ष्यति । अमार्जिष्यत्-अमार्क्ष्यत् ।  
अमार्जीत्, अमार्जिष्टाम्, अमार्जिषुः । अमार्क्षीत्, अमार्ष्टाम्,  
अमार्क्षुः । वच् परिभाषणे । वक्ति, वक्तः ॥ ९०६ नहि वचिरन्ति-  
परः प्रयोक्तव्यः किंतु वदन्तीत्युच्चारणीयम् २७ ॥ वदन्ति ।  
वक्षि, वक्थः, वक्थ । वच्मि, वच्चः, वच्मः । वच्यात् । वक्तु-वक्तात्,  
वक्ताम्, वचन्तु । वग्धि-वक्तात्, वक्तम्, वक्त । अवक्-अवग्, अवक्ताम्,  
अवचन् । अवक्-अवग्, अवक्तम्, अवक्त । अवचम्, अवच्च,  
अवच्म । 'णबादौ पूर्वस्य' ( सू० ८३० ) उवाच । 'यजां यवराणां  
य्वृतः संप्रसारणम्' ( सू० ८३१ ) ऊचतुः, ऊचुः । उवचिथ-उवक्थ,  
उच्यात् । वक्ता । वक्ष्यति । अवक्ष्यत् ॥ 'अस्यतिवक्ति' ( सू० ८७८ )  
इति डः ॥ ९०७ डे वचेरुमागमो वक्तव्यः २८ ॥ 'उ ओ'  
( सू० ४५ ) अवोचत्, अवोचताम्, अवोचन् । रुदिश् अश्रुविमोचने ॥  
९०८ रुदादेश्चतुर्णां ह्रसादेः २९ ॥ रुदादेः परेषां तिबादिचतुर्णां  
मध्ये हकारवसादेः प्रत्ययस्यद् भवति ॥

रोदितिः स्वपितिश्चैव श्वसितिः प्राणितिस्तथा ।

जक्षितिश्चैव विज्ञेयो रुदादिपञ्चको गणः ॥ १९ ॥

रोदिति, रुदितः, रुदन्ति । रोदिषि, रुदिथः, रुदिथ । रोदिमि, रुदिवः, रुदिमः । रुधात् । रोदितु-रुदितात्, रुदिताम्, रुदन्तु । रुदिहि-रुदितात्, रुदितम्, रुदित । रोदानि, रोदाव, रोदाम ॥ ९०९ रुदादेर्दिस्यो-  
रीडटौ च वक्तव्यौ ३० ॥ अरोदीत् । अरोदत् । रुरोद, रुरुदतुः । रुधात् । रोदिता । रोदिष्यति । अरोदिष्यत् । अरोदीत् । 'इरितो वा' (सू० ७४०) अरुदत् । जिष्वप् शये । जि इत् । स्व-  
पिति । स्वप्यात् । स्वपितु-स्वपितात् । अस्वपीत् । अस्वपत् । संप्र-  
सारणम् । सुष्वाप, सुषुपतुः, सुषुपुः । सुष्वपिथ-सुष्वप्यथ । सुप्यात् । स्वप्ता । स्वप्स्यति । अस्वप्स्यत् । अस्वाप्सीत्, अस्वाप्ताम्, अस्वाप्सुः ।  
श्वस् प्राणने । श्वसिति । श्वस्यात् । श्वसितु । अश्वसीत् । अश्वसत्, अश्वसताम्, अश्वसन् । शश्वास, शश्वसतुः, शश्वसुः । श्वस्यात् । श्वसि-  
ता । श्वसिष्यति । अश्वसिष्यत् । 'ह्यन्तक्षणे' (सू० ७८०) इति वृद्धभावः । अश्वसीत् । अन प्राणने ॥ ९१० अनिति ३१ ॥  
प्रपूर्वः । उपसर्गस्थानिमित्तादनितेर्नस्य णत्वं वाच्यम् ॥ प्राणिति ।  
अन्यात् । अनितु । आनीत् । आनत् । आन, आनतुः, आनुः ।  
अन्यात् । अनिष्यति । आनिष्यत् । आनीत्, आनिष्ठाम्, आनिषुः । जक्ष  
भक्षहसनयोः । जक्षिति, जक्षितः ॥ ९११ जक्षादेरन्तोऽन उस्  
३२ ॥ जक्षजागृदरिद्राशास्चकासृभ्यः परस्य अन्त अत् अन  
उस् भवति ॥ जक्षति । जक्षिषि । जक्ष्यात् । जक्षितु । अजक्षीत् ।  
अजक्षत् । जजक्ष । जक्ष्यात् । जक्षिता । जक्षिष्यति । अजक्षिष्यत् ।  
अजक्षीत् । जागृ निद्राक्षये । जागर्ति, जागृतः, जाग्रति ।  
जागर्षि । जागृयात् । जागर्तु-जागृतात्, जागृताम्, जाग्रतु । जागृहि-  
जागृतात्, जागृतम्, जागृत । जागराणि, जागराव, जागराम । 'गुणः'  
(सू० ६९२) । 'दिस्योर्हसात् (सू० ८८५) 'स्रोर्विसर्गः' (सू०

१२४ ) अजागः, अजागृताम् ॥ ९१२ उसि जागर्तेर्घातोर्गुणो  
वक्तव्यः ३३ ॥ अजागरुः । अजागः, अजागृतम्, अजागृत ।  
अजागरम्, अजागृव, अजागृम । जजागार ॥ ९१३ जागर्तेः  
किति गुणो वक्तव्यः ३४ ॥ जजागरतुः । जजागरुः । जजाग-  
रिथ, जजागरथुः, जजागर । जजागार-जजागर, जजागरिव, जजाग-  
रिम । 'विद्' ( सू० ७६७ ) इति पक्षे आम् । जागरांचकार । जाग-  
रामास । जागरांबभूव । जागर्यात् । जागरिता । जागरिष्यति ।  
अजागरिष्यत् । 'ह्यन्तक्षण' ( सू० ७८० ) इति न वृद्धिः । अजा-  
गरीत् । दरिद्रा दुर्गतौ । दरिद्राति ॥ ९१४ दरिद्रातेरिदालोपश्च  
ङिति ३५ ॥ दरिद्रातेराकारस्य लोपो भवति ङिति स्वरे परे  
इकारश्च ङिति हसे परे ॥ दरिद्रितः, दरिद्रति । दरिद्रासि, दरि-  
द्रिथः, दरिद्रिथ । दरिद्रामि, दरिद्रिवः, दरिद्रिमः । दरिद्रियात् ।  
दरिद्रातु-दरिद्रितात्, दरिद्रिताम्, दरिद्रितु । दरिद्राहि-दरिद्रितात्,  
दरिद्रितम्, दरिद्रित । दरिद्राणि, दरिद्राव, दरिद्राम । अदरिद्रात्,  
अदरिद्रिताम्, अदरिद्रुः । अदरिद्राः, अदरिद्रितम्, अदरिद्रित ।  
अदरिद्राम्, अदरिद्रिव, अदरिद्रिम ॥ ९१५ णप् वुण्सयुटो हित्वा  
अन्यस्मादरिद्रातेरनप्यालोपो लुङि वा ३६ ॥ ददरिद्रौ, ददरि-  
द्रतुः, ददरिद्रुः । ददरिद्रिथ, ददरिद्रथुः । पक्षे । दरिद्राञ्चकार ।  
दरिद्र्यात् । दरिद्रिता । दरिद्रिष्यति । अदरिद्रिष्यत् । अदरिद्रीत्,  
अदरिद्रिष्टाम्, अदरिद्रिषुः । पक्षे । अदरिद्रासीत्, अदरिद्रासिष्टाम्,  
अदरिद्रासिषुः । शास् अनुशिष्टौ । शास्ति ॥ ९१६ शासेरिः  
३७ ॥ क्तितीत्यनुवृत्तम् । शास्तेराकारस्येकारादेशो भवति किति ङिति  
हसे ङे च परे ॥ 'घसादेः षः' ( सू० ८३३ ) शिष्टः शासति ।  
शास्ति, शिष्टः, शिष्ट । शास्मि, शिष्वः, शिष्मः । शिष्यात् । शास्तु-

शिष्टात्, शिष्टाम्, शासतु । 'जङ्घेघिशिधि' (सू० ८८७) शाधि-  
 शिष्टात्, शिष्टम्, शिष्ट । शासानि, शासाव, शासाम ॥ ९१७ दिपि  
 सस्य तः सिपि वा ३८ ॥ दिपि परे सस्य तकारो भवति सिपि तु वा  
 भवति ॥ अशात्, अशिष्टाम्, अशासुः । अशात्-अशाः, अशिष्टम्,  
 अशिष्ट । अशासम्, अशिष्व, अशिष्म । शशास, शशासतुः,  
 शशासुः । शिष्यात् । शासिता । शासिष्यति । अशासिष्यत् ।  
 'लित्पुषादेर्हः' (सू० ७९१), 'शासेरिः' (सू० ९१६) अशिषत् ।  
 चकासु दीप्तौ । ऋ इत् । चकास्ति, चकास्तः, चकासति । चका-  
 स्यात् । चकास्तु-चकास्तात्, चकास्ताम्, चकासतु । 'झसाद्धिर्हः'  
 (सू० ८८१) ॥ ९१८ धौ सलोपो वाच्यः ३९ ॥ चकाधि-  
 चकास्तात्, चकास्तम्, चकास्त । अचकात्, अचकास्ताम्, अचकासुः ।  
 अचकात्-अचकाः । 'कासादिप्रत्ययादाम्' (सू० ७६६) चकासाञ्च-  
 कार । चकास्यात् । चकासिता । चकासिष्यति । अचकासिष्यत् ।  
 अचकासीत्, अचकासिष्टाम्, अचकासिषुः ॥ इत्यदादिषु परस्मैप-  
 दिप्रक्रिया ॥ ४ ॥

### अदादिष्वात्मनेपदिनः ५ ॥

अथात्मनेपदिप्रक्रिया ॥ चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि । इकार उच्चार-  
 गार्थः । ङकार आत्मनेपदार्थः । 'स्कोराद्योश्च' (सू० ३०१)  
 छुत्वम् । चष्टे, चक्षाते । 'आतोऽन्तोदनतः' (सू० ७२९) चक्षते ।  
 'षढोः कः से' (सू० ७९८) चक्षे, चक्षाथे, चङ्क्षे । चक्षे, चक्ष्वहे,  
 चक्ष्महे । चक्षीत् । चष्टाम् । अचष्ट, अचक्षाताम्, अचक्षत ॥ ९१९  
 चक्षिङोऽनपि ख्यात्कशाजौ णादौ वा वक्तव्यौ १ ॥ चख्यौ,  
 चख्यतुः, चख्युः । चक्षौ, चक्षतुः, चक्षुः । चचक्षे । ख्यायात्-

ख्येयात्-कशायात्, कशेयात् । ख्यासीष्ट-कशासीष्ट । ख्याता २ कशाता  
 २ । ख्यास्यति-ख्यास्यते । कशास्यति-कशास्यते । अख्यास्यत्-अख्या-  
 स्यत् । अकशास्यत्-अकशास्यत् । पुषादित्वाद् ङः । अस्यत् ॥ ९२०  
 अस्यतिवक्तिख्यातीनामात्मनेपदे सेढो वाच्यः २ ॥ अस्यत् ।  
 अकशासीत्, अकशास्ताम् । ईड स्तुतौ । 'खसे चपा झसानाम्'  
 (सू० ८९) ईष्टे, ईडाते, ईडते ॥ ९२१ ईडीशोः सध्वयोरिङ्-  
 क्तव्यः ३ ॥ ईडिषे, ईडाथे, ईडिध्वे । ईडे, ईड्वहे, ईडमहे । ईडीत ।  
 ईडाम् । ऐष्ट ॥ ९२२ लङो ध्वस्य नेट् ४ ॥ ऐड्वम् । ईडांचके ।  
 ईडिषीष्ट । ईडिता । ईडिष्यते । ऐडिष्यत् ऐडिष्ट । ईश ऐश्वर्ये ।  
 ईष्टे ईशिषे । ईशीत । ईष्टाम् । ऐष्ट । ईशाञ्चके । ईशिषीष्ट । ईशिता ।  
 ईशिष्यते । ऐशिष्यत् । ऐशिष्ट । आस् उपवेशने । आस्ते । आसीत् ।  
 आस्ताम् । आस्त । कासादित्वादाम् । आसाञ्चके । आसिषीष्ट । आसिता ।  
 आसिष्यते । आसिष्यत् । आसिष्ट । वस् आच्छादने । वस्ते ।  
 वसीत । अवसीष्ट । षूङ् प्राणिगर्भविमोचने । 'आदेः णः झः' (सू०  
 ७४८) सूते । सुवीत । सूताम् ॥ ९२३ सूतेः पिति गुणाभावो  
 वाच्यः ५ ॥ सुवै, सुवावहै, सुवामहै । असूत । सुषुवे । स्वरति  
 इति वेद् । सविषीष्ट-सोषीष्ट । सविता-सोता । सविष्यते-सोष्यते ।  
 असविष्यत्-असोष्यत् । असविष्ट-असोष्ट । शीङ् स्वप्ने ॥ ९२४  
 शीङः सर्वत्र गुणो भवत्यपि विषये ६ ॥ शेते, शयाते ॥ ९२५  
 शीङोऽस्तौ रुट् ७ ॥ शीङः परस्यादित्येतस्य रुडागमो भवति ॥  
 शेरते । शयीत । शेताम्, शयाताम्, शेरताम् । अशेत, अशयाताम्,  
 अशेरत् । शिष्ये, शिष्याते । शयिषीष्ट । शयिता । शयिष्यते ।  
 अशयिष्यत् । अशयिष्ट । इङ् अध्ययने । अधिपूर्वः । अधीते,  
 अधीयाते, अधीयते । अधीयीत । अधीताम्, अधीयाताम्, अधीयताम् ।

अध्यैत । इयादेशो कृते प्रश्नादङागमद्वयम् । अध्यैयाताम्, अध्यैयत ॥  
 ९२६ इङो णादौ गा वक्तव्यः ८ ॥ अधिजगे । अध्यैषीष्ट ।  
 अध्येता । अध्येष्यते । अध्यैष्यत ॥ ९२७ इङो वा गी सौ लुङि  
 च तत्परस्य प्रत्ययस्य डित्वं वाच्यम् ९ ॥ डित्वादुणो न । अध्य-  
 गीष्यत, अध्यगीष्येताम्, अध्यगीष्यन्त । अध्यैष्यत । अध्यगीष्ट,  
 अध्यगीषाताम्, अध्यगीषत । अध्यैष्ट, अध्यैषाताम्, अध्यैषत ॥ इत्य-  
 दादिष्वात्मनेपदिप्रक्रिया ॥ ५ ॥

### अदादिषूभयपदिनः ६ ॥

अथोभयपदिप्रक्रिया प्रदर्श्यते ॥ द्विषू अप्रीतौ । अकार उभ-  
 यपदार्थः । द्वेष्टि, द्विष्टे । द्विष्यात् । द्विषीत । द्वेष्टु-द्विष्टात्, द्वि-  
 ष्टाम् । अद्वेष्ट-अद्वेष्ट, अद्विष्टाम्, अद्विषुः । अद्विषन् । अद्विष्ट ।  
 दिद्वेष । दिद्विषे । द्विष्यात् । द्विषीष्ट । द्वेष्टा २ । द्वेक्ष्यति ।  
 द्वेक्ष्यते । अद्वेक्ष्यत् । अद्वेक्ष्यत । 'हशषान्तात्सक्' (सू० ८००)  
 अद्विष्यत्, अद्विष्यताम् ॥ ९२८ सस्यात्मनेपदे स्वरं टिलोपो  
 वाच्यः १ ॥ अद्विष्यताम्, अद्विष्यत । दुह् प्रपूरणे । 'दादेर्घः'  
 (सू० २३८) दोग्धि, दुग्धः, दुहन्ति । घोक्षि, दुग्धः, दुग्ध । दोक्षि,  
 दुह्मः, दुक्षः । दुग्धे । दुह्यात् । दुहीत । दोग्धु ॥ ९२९ हकारस्य  
 क्वचिज्ज्ञस्रभावो वाच्यः २ ॥ दुग्धि, दुग्धाम् । अधोक्-अधोग्,  
 अदुग्धाम्, अदुहन् । अदुग्ध । दुदोह । दुदुहे । दुह्यात् । धुक्षीष्ट ।  
 दोग्धा । दोग्धा । धोक्ष्यति । धोक्ष्यते । अधोक्ष्यत् । अधोक्ष्यत । अधु-  
 क्षत् । अधुक्षत ॥ 'दुह्दिह्लिह्गुह्भ्यः सको लुग्व्वा वकारतवर्गयोरिति'  
 (सू० ८६६) अदुग्ध, अधुक्षताम्, अधुक्षन्त । अधुग्धाः-अधुक्षथाः,  
 अधुक्षाथाम्, अधुग्व्वम्-अधुक्षध्वम् । अधुक्षावहि-अदुह्वहि, अधुक्षामहि ।

दिह उपचये । देग्धि । तद्वत् । लिह आस्वादाने । 'हो ढः' (सू० २४३) लेढि । तद्वत् । षुन् स्तुतौ । आदेः णः स्रः (सू० ७४८) 'ओरौ' (सू० ८९१) स्तौति-स्तुवीति, स्तुतः-स्तुवीतः, स्तुवन्ति । स्तुते-स्तुवीते । स्तुयात्-स्तुवीयात् । स्तौतु-स्तुवीतु, स्तुतात्-स्तुवीतात्, स्तुताम्-स्तुवीताम्, स्तुवन्तु । स्तुहि-स्तुवीतात्, अस्तौत्-अस्तवीत् अस्तुताम्-अस्तुवीताम्, अस्तुवन् । अस्तुत-अस्तु-वीत । तुष्टाव, तुष्टवतुः, तुष्टुवुः । क्रादित्वात्रेद् । तुष्टोथ, तुष्टुवथुः, तुष्टुवः । तुष्टाव, तुष्टुव, तुष्टुम् । तुष्टुवे । स्तुयात् । स्तोषीष्ट । स्तोता । स्तोता । स्तोष्यति । स्तोष्यते । अस्तोष्यत् । अस्तोष्यत ॥ ९३० स्तुसुधूनां पे सेरिङ् वक्तव्यः ३ ॥ अस्तावीत् । अस्तोष्ट । ब्रून् व्यक्तायां वाचि ॥ ९३१ अबादावीप्पिति त्स्मि ४ ॥ ब्रुव इकारः प्रत्ययो भवति तकारसकारमकारादौ पिति परे अबादौ विषये ॥ ब्रवीति, ब्रूतः, ब्रुवन्ति । ब्रवीषि, ब्रूथः ॥ ९३२ आहश्च पञ्चानाम् ५ ॥ ब्रुव उत्तरेषां तिबादीनां पञ्चानां णबादयः पञ्चादेशा भवन्ति ब्रुव आह-श्चादेशो भवति ॥ आह, आहतुः, आहुः ॥ ९३३ तस्ये ६ ॥ आहो हकारस्य तकारादेशो भवति थे परे ॥ आत्थ, आहथुः, ब्रूथ । ब्रवीमि, ब्रूवः, ब्रूमः । ब्रूयात्, ब्रवीत । ब्रवीतु, ब्रूताम् । अब्रवीत् । अब्रूत ॥ ९३४ ब्रुवो वचिः ७ ॥ ब्रुवो वचिरादेशो भवति अनपि विषये । इकार इत् । उदाच । ऊचे । अवोचत् । अवोचत । शेषस्य पूर्ववत्प्रक्रिया । ऊर्णुन् आच्छादाने ॥ ९३५ ऊर्णोतेर्वा वृद्धिः ८ ॥ हसादौ पिति ॥ ऊर्णोति-ऊर्णोति ॥ ९३६ ऊर्णोतेर्गुणो दिस्योः ९ ॥ वृद्धेरपवादः । और्णोत् । और्णोः ॥ ९३७ ऊर्णोतेराम्ना १० ॥ ९३८ स्वरादेः परः ११ ॥ स्वरादेर्धातोर्द्वितीयोऽवयवोऽद्विरुक्तः सस्वरो द्विर्भवति ॥ ९३९ स्वरात्पराः संयोगादयो नदरा द्विर्न १२ ॥

ऊर्णुनाव, ऊर्णुनवतुः ॥ ९४० ऊर्णोतेरिडादिः प्रत्ययो वा डित्  
 १३ ॥ ऊर्णुनविथ-ऊर्णुनविथ । ऊर्णुयात्, ऊर्णुविषीष्ट-ऊर्णुविषीष्ट ।  
 ऊर्णुविता-ऊर्णुविता ॥ ९४१ ऊर्णोतेर्वा वृद्धिः सौ परे १४ ॥ पक्षे  
 गुणः । और्णवीत्-और्णवीत्, और्णुवीत्-और्णुविष्ट-और्णुविष्ट ॥  
 इत्यदादिषूभयपदिप्रक्रिया ॥ ६ ॥ इति लुग्विकरणा अदादयो धातवः ॥  
 इति द्वितीयो गणः ॥

### जुहोत्यादिषु परस्मैपदिनः ७ ॥

अथ लुग्विकरणस्यापि जुहोत्यादिगणस्य विशेषः । हु दानादनयोः ॥  
 ९४२ ह्वादेर्द्विश्च १ ॥ हु इत्यादेर्गणानुत्पन्नस्यापो लुग्भवति, तस्मिन्  
 लुकि सति धातोर्द्विर्वचनम् ॥ 'कुहोश्चुः' (सू० ७४६) । 'गुणः'  
 (सू० ६९२) । जुहोति, जुहुतः ॥ ९४३ द्वेः २ ॥ द्विरुक्तादुत्तरस्यान्त  
 इत्येतस्याद्भवति । जुहति । जुहोषि, जुहुथः, जुहुथ । जुहोमि, जुहुवः,  
 जुहुमः । जुहुयात्, जुहुयाताम् । जुहोतु-जुहुतात्, जुहुताम्, जुह्वतु ॥  
 ९४४ हेर्धिः ३ ॥ जुहोतेरुत्तरस्य हेर्धिर्भवति ॥ जुहुधि । अजुहोत्,  
 अजुह्वताम् । अज्युसीत्युक्तेर्गुणः । [ अन उस् ॥ ] अजुहवुः । अजुहोः,  
 जुहहुतम्, अजुहुत । अजुहवम्, अजुहुव, अजुहुम । जुहाव, जुहुवतुः,  
 जुहुवुः । जुहविथ-जुहोथ ॥ ९४५ मीहुभृहीणाम्भ्वा वक्तव्यः  
 स लुग्वत् ४ ॥ लुकि सति धातोर्द्वित्वम् ॥ जुहवाञ्चकार । ह्रयात् ।  
 होता । होष्यति । अहोष्यत् । अहौषीत्, अहौष्टाम्, अहौषुः । जिमी  
 भये । जि इत् । बिमेति, बिमीतः ॥ ९४६ डिति हसे भिय इकारो  
 वा वक्तव्यः ५ ॥ सार्वधातुके । बिमितः, बिभ्यति । बिमीयात्-  
 बिभियात् । बिमेतुं, बिमितात्-बिमीतात्, बिमिताम्-बिमीताम् । अबिमेत्,  
 अबिमिताम्-अबिमीताम्, अबिभयुः । बिभाय । पक्षे आम् । बिभया-  
 ञ्चकार । मीयात् । मेता । मेप्यति । अमेप्यत् । अमैषीत् । द्वी



रुज्जायाम् । जिहेति, जिहीतः, जिहियति । जिहीयात् । जिहेतु ।  
 अजिहेत्, अजिहीताम्, अजिह्युः । जिहाय, जिहियतुः, जिहियुः ।  
 जिहियांचकार । हीयात् । हेता । हेप्यति । अहेप्यत् । अहैषीत् ॥  
 पृ पालनपूरणयोः ॥ ९४७ ऋप्रोरिः पूर्वस्य ६ ॥ ऋप्रोः पूर्वस्य  
 ऋकारस्य इकारो भवति लुकि सति ॥ 'गुणः' (सू० ६९२)  
 पिपति ॥ ९४८ पोरु ७ ॥ पवर्गादुत्तरस्य ऋकारस्य उद् भवति  
 किति ङिति च परे ॥ 'य्वोर्विहसे' (सू० ३१६) पिपूर्तः, पिपुरति ।  
 पिपूर्यात् । पिपर्तु-पिपूर्तात्, पिपूर्ताम्, पिपुरतु । पिपूर्हि । अपिपः ।  
 ऋप्रोर्दिस्वोरङागमौ वा वक्तव्य इति केचित् ॥ अपिपरत्, अपिपूर्ताम्,  
 अपिपरुः । अपिपः-अपिपरः, अपिपूर्तम्, अपिपूर्त । अपिपरम्, अपिपूर्व,  
 अपिपूर्म् । पपार ॥ ९४९ ऋसंयोगादेर्णादेरकिञ्च वाच्यम् ८ ॥  
 कित्वाभावाद्गुणः । पपरतुः, पपरुः । पपरिथ । पूर्यात् । 'ईटो ग्रहाम्'  
 (सू० ८२१) परीता-परिता । परीप्यति-परिप्यति । अपरी-  
 प्यत्-अपरिप्यत् । अपारीत् ॥ ९५० वृद्धिहेतौ साविटो न  
 दीर्घः ९ ॥ अपारिष्टाम्, अपारिषुः । ह्रस्वोऽपि पिपतिरस्ति । पिपति,  
 पिपृतः, पिप्रति । पिपृयात् । पिपर्तु । अपिपः । अपिपरत्, अपि-  
 पृताम्, अपिपरुः । अपिपः-अपिपरः । पपार, पप्रतु, पप्रुः । ऋप्रो-  
 रिङ् । प्रियात् । पर्ता । 'हनृतः स्यपः' (सू० ७९०) परिप्यति ।  
 अपरिप्यत् । अपार्षीत् । ओहाक् त्यागे । ओकावितौ । जहाति ॥  
 ९५१ द्वेस्तौ लोपोऽनुवर्तते इकारश्च १० ॥ द्विरुक्तस्य घातोरा-  
 कारस्य लोपो भवति ङिति खरे इकारश्च ङिति हसे परे ॥ ज-  
 हीतः ॥ ९५२ जहातेराकारस्य किति हसे ईर्वावाच्यः ११ ॥  
 जहितः, जहति ॥ ९५३ जहातेर्यादादावालोपो वाच्यः १२ ॥  
 जझात् । जहातु, जहीतात्-जहितात्, जहिताम्-जहीताम्, जहतु ॥

९५४ ईर्वा हौ १३ ॥ जहातेहौ परे इकारः सिद्ध एव । पक्षे  
 आकारेकारौ भवतः ॥ जहीहि-जहिहि-जहाहि । अजहात् । अज-  
 हीताम्-अजहिताम्, अजहुः । जहौ, जहतुः, जहुः । जहिथ-जहाथ ।  
 'दादेरे' (सू० ८०७) हेयात् । हाता । हास्यति । अहास्यत् ।  
 अहासीत् । ऋ गतौ । 'ऋप्रोरिः पूर्वस्य' (सू० ९४७) ॥ ९५५  
 असवर्णे स्वरे पूर्वस्य इयादेशो भवति १४ ॥ इयति, इयृतः,  
 इयति । इयृयात् । इयर्तु-इयृतात्, इयृताम्, इयृतु । इयृहि-इयृतात्,  
 इयृतम्, इयृत । इयराणि, इयराव, इयराम । ऐयः-ऐयरत्, ऐयृताम्,  
 ऐयरुः । ऐयः-ऐयरः, ऐयृतम्, ऐयृत । ऐयृव, ऐयृम । 'रः' (सू० ११६) ।  
 वृद्धिः । आर, आरतुः, आरुः । 'गुणोर्तिसंयोगाद्योः' (सू० ८१२)  
 अर्यात् । अर्ता । अरिष्यति । अरिष्यत् । ऋदृशोः पुषादित्वात्  
 ङप्रत्ययः । सेरपवादः । 'गुणः' (सू० ६९२) आरत् ॥ ॥  
 इति जुहोत्यादिषु परस्मैपदिप्रक्रिया ॥ ७ ॥

### जुहोत्यादिष्वात्मनेपदिनः ८ ॥

॥ अथात्मनेपदिनः ॥ ओहाङ् गतौ ॥ ९५६ भृजां लुकि  
 १ ॥ डुभृञ् धारणपोषणयोः । ओहाङ् गतौ । माङ् माने इत्येतेषां  
 पूर्वस्याकारस्य इकारो भवति लुकि सति ॥ 'द्वेस्तौ' (सू० ९५१)  
 जिहीते, जिहाते, जिहते । जिहीत । जिहीताम् । अजिहीत । जहे ।  
 हासीष्ट । हाता । हास्यते । अहास्यत । अहास्त, अहासाताम्,  
 अहासत । माङ् माने । मिमीते, मिमाते, मिमते, । मिमीत, मिमी-  
 ताम् । अमिमीत । ममे । मासीष्ट । माता । मास्यते । अमास्यत ।  
 आमास्त ॥ ॥ इति जुहोत्यादिष्वात्मनेपदिप्रक्रिया ॥ ८ ॥

### जुहोत्यादिषु भयपदिनः ९ ॥

अथोभयपदिनः ॥ ॥ डुभृञ् धारणपोषणयोः । डुजावितौ ।  
 बिभर्ति, बिभृतः, बिभ्रति । बिभृते । बिभृयात् । बिभ्रीत । बिभर्तु,  
 बिभृताम् । अबिभः, अबिभृताम्, अबिभरुः । अबिभृत । बभार,  
 बभ्रतुः, बभ्रुः । बभर्थ । बभ्रे । बिभराञ्चकार । बिभराञ्चके । बिभरामास ।  
 बिभराञ्चभूव । यादादौ । भ्रियात् । भृषीष्ट । भर्ता २ । 'हनृतः स्यपः'  
 ( सू० ७९० ) भरिष्यति-भरिष्यते । अभरिष्यत्-अभरिष्यत ।  
 अभाषीत् । 'उः' ( सू० ८६४ ) अभृत । डुदान् दाने ।  
 ददाति ॥ ९५७ दादेः १ ॥ द्विरुक्तस्य धातोराकारस्य लोपो भवति  
 ङिति परे ॥ दत्तः, ददति । दत्ते, ददाते, ददते । दद्यात् ।  
 ददीत । ददातु-दत्तात्, दत्ताम्, ददतु ॥ ९५८ दां हौ २ ॥  
 दाधातोराकारस्यैकारो भवति पूर्वस्य च लोपो भवति हौ परे ॥  
 देहि, दत्ताम् । अददात्, अदत्ताम्, अददुः । अदत्त । ददौ । ददे ।  
 देयात् । दासीष्ट । दाता २ । दास्यति । दास्यते । अदास्यत् । अदा-  
 स्यत 'दादेः पे' ( सू० ७२५ ) अदात्, अदाताम्, अदुः ॥  
 ९५९ दाधास्थामित्वं सेडित्वम् ३ ॥ ङित्वान्न गुणः ॥ 'लोपो  
 ह्रस्वाज्ज्ञसे' ( सू० ८५२ ) अदित, अदिषाताम्, अदिषत । डु-  
 धाञ् धारणपोषणयोः । दधाति । 'दादेः' ( सू० ९५७ ) ॥ ९६०  
 पूर्वस्य ङिति ज्ञसे धः ४ ॥ ज्ञमान्तस्य दधातेः पूर्वदकारस्य धकारो  
 भवति ङिति ज्ञसे परे ॥ धत्तः, दधति । धत्ते । दध्यात् । दधीत ।  
 दधातु । धेहि । धत्ताम् । अदधात् । अदधाः । अधत्त । दधौ । दधे ।  
 धेयात् । धासीष्ट । धाता २ । धास्यति-धास्यते । अधास्यत्-अधास्यत ।  
 'दादेः पे' ( सू० ७२५ ) अधात् । अधित । णिजिर् शौचपोषणयोः ॥  
 श्रित् । 'आदेः णः सः' ( ७४८ ) ९६१ निजां गुणः ५ ॥

निज्विज्विषां पूर्वस्य गुणो भवति लुकि सति ॥ नेनेक्ति, नेनेक्तः,  
 नेनेजति । नेनेक्षि, नेनेक्थः, नेनेक्थ । नेनेज्मि, नेनेज्वः, नेनेज्मः ।  
 नेनेक्ते । नेनेज्यात् । नेनेजीत । नेनेक्तु-नेनेक्तात्, नेनेक्ताम्,  
 नेनेजतु । नेनेग्धि-नेनेक्तात्, नेनेक्तम्, नेनेक्त ॥ ९६२ द्वेः  
 स्वरेऽपि नोपधागुणः ६ ॥ द्विरुक्तस्य धातोरपि विषये पिति  
 स्वरे उपधाया गुणो न भवति ॥ नेनेजानि, नेनेजाव, नेनेजाम ।  
 नेनेक्ताम् । अनेनेक्-अनेनेग्, अनेनेक्ताम् । अनेनेजुः । अनेनेक्त ।  
 निनेज । निनेजे । निज्यात् । 'सिस्योः' (सू० ८५८) निक्षीष्ट ।  
 नेक्ता । नेक्ता । नेक्ष्यति । नेक्ष्यते । अनेक्ष्यत् अनेक्ष्यत । अनिजत्,  
 अनिजताम् । 'अनिटो नामिवतः' (सू० ७५४) अनैक्षीत्, अनैक्ताम्,  
 अनैक्षुः । विजिद् पृथग्भावे । वेवेक्ति । नेनेक्तिवत् ॥ विष्णु व्याप्तौ ।  
 वेवेष्टि । वेवेष्टे । वेविष्यात्, वेविषीत, वेवेष्टु, वेविष्टाम् । अवेवेद्-  
 अवेवेड् । विवेष । विविषे । विष्यात् । विक्षीष्ट । वेष्टा २ । वेक्ष्यति ।  
 वेक्ष्यते । अवेक्ष्यत् । अवेक्ष्यत । 'लित्पुषादेर्ङः' (सू० ७९१)  
 अविषत् । ङो वेति केचित् । 'हशषान्तात्सक्' (सू० ८००)  
 अविक्षत् । अविक्षत ॥ इति जुहोत्यादिभूयपदिप्रक्रिया ॥ ९ ॥  
 इति लुग्विकरणा जुहोत्यादयः ॥ इति तृतीयगणः ॥

### दिवादिषु परस्मैपदिनः १० ॥

अथ दिवादयः ॥ ॥ दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोद-  
 मदस्वप्नकान्तिगतिषु ॥ ९६३ दिवादेर्यः १ ॥ दिवादेर्गणाद्यः प्रत्ययो  
 भवति चतुर्षु परेषु ॥ अपोऽपवादः ॥ 'य्वोर्विहसे' (सू० ३१६)  
 दीव्यति । दीव्येत् । दीव्यतु । अदीव्यत् । दिदेव दिदिबतुः दिदिवुः ।  
 दिदेविथ । दीव्यात् । देविता । देविष्यति । अदेविष्यत् । अदेवीत् ।

षिवु तन्तुसन्ताने । सीव्यति । सीव्येत् । सीव्यतु । असीव्यत् । सिषेव ।  
सीव्यात् । सेविता । सेविष्यति । असेविष्यत् । असेवीत् । नृती  
गात्रविक्षेपे । ईकार इत् । नृत्यति । नृत्येत् । नृत्यतु । अनृत्यत् ।  
ननर्त, ननृततुः, ननृतुः । नृत्यात् । नर्तिता । नर्तिष्यति । अनर्तिष्यत् ॥  
९६४ नृत्वद्छृद्चृत्कृतां सस्यासेरिट् वा वक्तव्यः २ ॥ नत्स्यति ।  
अनत्स्यत् । अनर्तीत् । जृइइ वयोहानौ । 'ऋत इइ' (सू० ८२०)  
'द्योर्विहसे' (सू० ३१६) जीर्यति । जीर्येत् । जीर्यतु । अजीर्यत् । जजार ।  
'गुणः' (सू० ६९२) जजरतुः, जजरुः । जीर्यात् । 'ईटो ग्रहाम्'  
(सू० ८२१) जरिता-जरीता । जरिष्यति-जरीष्यति । अजरिष्यत्-  
अजरीष्यत् । 'इरितो वा' (सू० ७४०) अजरत् । अजारीत् । शो  
तनूकरणे ॥ ९६५ य्योः ३ ॥ यप्रत्यये परे धातोरोकारस्य लोपो  
भवति ॥ श्यति । श्येत् । श्यतु । अश्यत् । शशौ । शयात् ।  
शाता । शास्यति । अशास्यत् । वा सिलोपः । अशात् । अशासीत् ।  
छो छेदने । छ्यति । छ्येत् । छ्यतु । अछ्यत् । चच्छौ । छायात् ।  
छाता । छास्यति । अच्छास्यत् । अच्छात् । अच्छासीत् । षोऽन्त-  
कर्मणि । स्यति । स्येत् । स्यतु । अस्यत् । ससौ । सेयात् । साता ।  
सास्यति । असास्यत् । असात् असासीत् । दो अवखण्डने । द्यति ।  
द्येत् । द्यतु । अद्यत् । ददौ । देयात् । दाता । दास्यति । अदा-  
स्यत् । अदात् । राध् साध् संसिद्धौ । राध्यति । राध्येत् । राध्यतु ।  
अराध्यत् । रराध ॥ ९६६ राधतेर्हिंसायां किति णादौ सेटि  
थपि चैत्वपूर्वलोपौ वा ४ ॥ रेधतुः-रराधतुः । राध्यात् । राद्धा ।  
रात्स्यति । अरात्स्यत् । अरात्सीत् । अराद्धाम् । इष् सर्पणे । इष्यति ।  
इष्येत् । इष्यतु । ऐष्यत् । इयेष । इष्यात् । एषिता । एषिष्यति ।  
ऐषिष्यत् । ऐषीत् । व्यध ताडने । 'ग्रहां किति च' (सू० ८७३)

विध्यति । विध्येत् । विध्यतु । अविध्यत् । विव्याध । व्यद्धा ।  
 व्यत्स्यति । अव्यत्स्यत् । अव्यात्सीत्, अव्याद्धाम्, अव्यात्सुः । पुष्  
 पुष्टौ । पुष्यति । पुष्येत् । पुष्यतु । अपुष्यत् । पुपोष । पुष्यात् ।  
 पोष्टा । पोक्ष्यति । अपोक्ष्यत् । अपुषत् । श्लिष् आलिङ्गने ।  
 श्लिष्यति । श्लिष्येत् । श्लिष्यतु । अश्लिष्यत् । श्लिषे । श्लिष्यात् ।  
 श्लेष्टा । श्लेक्ष्यति । अश्लेक्ष्यत् । 'हशषान्तात्सक्' ( सू० ८०० ) ॥  
 ९६७ श्लिषेरालिङ्गने सक् ५ ॥ ङापवादः । अश्लिषत्कन्यां  
 चैत्रः । अनालिङ्गने—समश्लिषत् जतु काष्ठम् । तृप् प्रीणने ।  
 तृप्यति । तृप्येत् । तृप्यतु । अतृप्यत् । ततर्प । तृप्यात् । रधादि-  
 त्वादिङ्किरूपेण । तर्पिता-त्रप्ता-तर्प्ता । 'रारो ङसे दशाम्' ( सू०  
 ७९६ ) तर्पिष्यति-त्रप्स्यति-तर्प्स्यति । अतर्पिष्यत्-अत्रप्स्यत्-अत-  
 र्प्स्यत् ॥ ९६८ स्पृशस्पर्शकृशतृषां सिवा वक्तव्यः ६ ॥ रधादि-  
 त्वाद्धेद् । अतर्पीत् अत्राप्सीत्-अताप्सीत् । पुषादित्वात् ङः । अतृ-  
 पत् । एवं दृप् हर्षविमोहनयोः । दृप्यति । मुह वैचित्ये । मुह्यति ।  
 मुमोह । मुह्यात् । 'द्रुहादीनां घत्वढत्वे वा' ( सू० २४४ ) मोढा-  
 मोग्धा-मोहिता । रधादित्वाद्धेद् । मोक्ष्यति-मोहिष्यति । अमोक्ष्यत्-  
 अमोहिष्यत् । पुषादित्वात् ङः । अमुहत् । अमोहीत् । अमौक्षीत् ।  
 अमुक्षत् । णश् अदर्शने । नश्यति । ननाश । फणादित्वादेत्वपूर्व-  
 लोपौ । नेशतुः । नेशुः । नश्यात् ॥ ९६९ मस्तिजनशोर्ङ्गसे नुम्  
 वक्तव्यः ७ ॥ 'छिशषराजादेः षः' ( सू० २७६ ) नंष्टा ॥ ९७०  
 नशेः षान्तस्य ८ ॥ नशेः षान्तस्य णत्वं न स्यात् ॥ प्रनंष्टा ।  
 नशिता । नंक्षति-नशिष्यति । अनिष्यत्-अनंक्ष्यत् । पुषादित्वात्  
 ङः ॥ ९७१ छे नृशेरत् एत्वं वा वाच्यम् ९ ॥ अनेशत्-अन-  
 शत् । शम् दम् उपशमे ॥ ९७२ श्मां दीर्घः १० ॥ श्मादीर्घा

दीर्घो भवति ये परे अबादौ विषये च ॥ शाम्यति । शाम्येत् ।  
 शाम्यतु । अशाम्यत् । शशाम, शेमतुः, शेमुः । शम्यात् । शमिता ।  
 शमिष्यति । अशमिष्यत् । लिप्पुषादेर्ङः । अशमत् । अशमीदिति  
 केचित् । 'दम् श्रम् तम् भ्रम् क्षम् क्रम् मद्' एते शमादयः ।  
 रूपं तद्वत् । जिमिदा स्नेहने । आजी इतौ ॥ ९७३ मिदेर्ये गुणो  
 वक्तव्यः ११ ॥ मेद्यति । मेद्येत् । मेद्यतु । अमेद्यत् । मिमेद,  
 मिमिदतुः, मिमिदुः । मिद्यात् । मेदिता । मेदिष्यति । अमेदिष्यत् ।  
 अमिदत् । असु क्षेपणे । अस्यति । आस । असिता । असिष्यति ॥  
 ९७४ अस्यतेर्ङे थुग्वक्तव्यः १२ ॥ आस्थत् । इति दिवादिषु  
 परस्मैपदिप्रक्रिया ॥ १० ॥

### दिवादिष्वात्मनेपदिनः ११ ॥

अथात्मनेपदिनः ॥ जनी प्रादुर्भावे । ईकारेत् ॥ ९७५ जा  
 जनीज्ञोः १ ॥ जनी प्रादुर्भावे । ज्ञाऽवबोधने । अनयोर्जादेशो भवति  
 चतुर्षु परेषु ॥ जायते । जायेत् । जायताम् । अजायत । 'गमां स्वरे'  
 (सू० ७८९) श्रुत्वम् । 'जजोर्ज्ञेः' (सू० २५३) जज्ञे । जनिषीष्ट ।  
 जनिता । जनिष्यते । अजनिष्यत-अजनिष्ट ॥ ९७६ पदादेस्तानि  
 कर्तर्यपि सेरिण् वक्तव्यो दीपादिभ्यो वा २ ॥ 'पद् दीप् जन  
 बुध् पूरि तायि प्यायि' एते पदादयः ॥ ९७७ लोपः ३ ॥ इण्-  
 संयोगे तनो लोपो भवति ॥ 'जनिवध्योर्न वृद्धिः' (सू० ८९०)  
 अजनि, अजनिषाताम् । दीपी दीप्तौ । दीप्यते । दीप्येत । दीप्यताम् ।  
 अदीप्यत । दिदीपे । दीपिषीष्ट । दीपिता । दीपिष्यते । अदीपि-  
 ष्यत । अदीपिष्ट । अदीपि । पूरी आप्यायने, पूर्यते । पूर्येत ।  
 पूर्यताम् । अपूर्यत । पुपूरे । पूरिषीष्ट । पूरिता । पूरिष्यते ।

अपूरिष्यत । अपूरि । अपूरिष्ट । पद् गतौ । पद्यते । पद्येत ।  
 पद्यताम् । अपद्यत । पेदे । पत्सीष्ट । पत्ता । पत्स्यते । अपत्स्यत ।  
 अपादि, अपत्साताम्, अपत्सत । बुध् अवगमने । बुध्यते । बुध्येत ।  
 बुध्यताम् । अबुध्यत । बुबुधे । 'आदिजवानाम्' ( सू० २३९ ) ।  
 'सिस्योः' ( सू० ८५८ ) 'खसे चपा झसानाम्' ( सू० ८९ ) मुत्सीष्ट ।  
 बोद्धा । भोत्स्यते । अबुद्ध, अभुत्साताम्, अभुत्सत । अबोधि । तायङ्  
 पालनसन्तत्योः । तायते । तताये । तायिषीष्ट । तायिता । तायि-  
 प्यते । अतायिष्यत । अतायिष्ट । अतायि । ओप्यायिङ् वृद्धौ ।  
 प्यायते । पप्याये । प्यायिषीष्ट । प्यायिता । प्यायिष्यते । अप्या-  
 यिष्यत । अप्यायिष्ट । अप्यायि, अप्यायिषाताम् । इमौ द्वौ  
 भ्वादिकौ ॥ ॥ इति दिवादिष्वात्मनेपदिप्रक्रिया ॥ ११ ॥

### दिवादिषूभयपदिनः १२ ॥

अथोभयपदिनः ॥ णह बन्धने । नह्यति । नह्यते । नह्येत् । नह्येत ।  
 नह्यतु, नह्यताम् । अनह्यत् । अनह्यत । ननाह, नेहतुः, नेहुः । नेहिथ-  
 ननद्ध । नेहे । नह्यात् । नत्सीष्ट । 'नहो धः' ( सू० ३१० ) नद्धा ।  
 नत्स्यति-नत्स्यते । अनत्स्यत् । अनत्स्यत । अनात्सीत् । अनाद्धाम् ।  
 अनात्सुः । अनद्ध, अनत्साताम्, अनत्सत ॥ इति दिवादिषूभयपदिप्रक्रिया  
 ॥ १२ ॥ इति यविकरणा दिवादयो धातवः ॥ इति चतुर्थगणः ॥

### स्वादिषूभयपदिनः १३ ॥

अथ स्वादयः ॥ तत्रादावुभयपदिनः । षुञ् अभिषवे । ज उभय-  
 पदार्थः । 'आदेः णाः क्तः' ( सू० ७४८ ) ॥ ९७८ स्वादेर्नुः  
 १ ॥ स्वादेर्गणान्नः प्रत्ययो भवति चतुर्षु परेषु ॥ अपोऽपवादः ॥



९७९ नूपः २ ॥ विकरणस्य नुप्रत्ययस्य उपप्रत्ययस्य च गुणो भवति पिति परे ॥ सुनोति, सुनुतः । 'नु धातोः' (सू० ७७६) सुन्वन्ति । सुनोषि, सुनुथः, सुनुथ । सुनोमि ॥ ९८० उर्बमोर्वा लोपः ३ ॥ असंयोगादुत्तरस्य प्रत्ययसंबन्धिन उकारस्य वा लोपो भवति वमोः परयोः । सुनुवः-सुन्वः, सुनुमः-सुन्मः । सुनुते, सुन्वाते, सुन्वते । सुनुयात् । सुन्वीत । सुनोतु, सुनुतात्-सुनुताम्, सुन्वन्तु ॥ ९८१ ओर्वा हेः ४ ॥ प्रत्ययसंबन्धिन उकारादुत्तरस्य हेर्लुग्भवति ॥ वाग्रहणात्संयोगान्न । तेन तक्ष्णुहि त्वक्ष्णुहीत्यत्र न । सुनु, सुनुतात् । सुनवानि । सुनुताम् । असुनोत् । असुनुत । सुषाव, सुषुवतुः । सुषविथ-सुषोथ, सुषुवे । सूयात् । सोषीष्ट । सोता २ । सोष्यति । सोष्यते । असोष्यत् । असोष्यत ॥ 'स्तुसुधृजां पे सेरिद्धा वक्तव्यः' (सू० ९३०) असावीत्, असौषीत् । दुसुस्तुनुधातूनामिद्धेति केचित् । असविष्ट । असोष्ट । चिञ् चयने । चिनोति । चिनुते । चिनुयात् । चिन्वीत । चिनोतु, चिनुताम् । अचिनोत् । अचिनुत ॥ ९८२ चिनोतेः सणादौ कित्वं वा वाच्यम् ॥ ५ ॥ चिकाय, चिक्यतुः, चिक्युः । चिचाय । चिक्ये-चिच्ये । चीयात् । चेषीष्ट । चेता २ । चेप्यति । चेप्यते । अचेप्यत् । अचेप्यत । अचैषीत् । अचेष्ट । स्तृञ् आच्छादने । स्तृणोति । स्तृणुते । तस्तार । 'गुणोर्तिसंयोगाद्योः' (सू० ८१२) तस्तरतुः, तस्तरुः । तस्तर्य । तस्तरे । स्तर्यात् ॥ ९८३ संयोगादि ऋदन्तवृद्धवृजां सिस्थोरात्मनेपदे इडा वक्तव्यः ६ ॥ स्तरिषीष्ट । 'उः' (सू० ८६४) स्तृषीष्ट । स्तर्ता २ । स्तरिष्यति । स्तरिष्यते । अस्तरिष्यत् । अस्तरिष्यत । अस्तार्षीत् । अस्तरिष्ट । अस्तृत । वृञ् वरणे । वृणोति । वृणुते । ववार, वव्रतुः, वव्रुः । वृणोतेस्त्वपो नित्यमिद्ध । ववरिथ, वव्रथुः, वव्र । ववार-ववर, ववृव, ववृम । वव्रे ।

ववृद्धे । व्रियात् । वरिषीष्ट । 'ईटो ग्रहाम्-' (सू० ८२१) वरिषीष्ट-  
वरीषीष्ट । वरिता-वरीता २ । वरिष्यति-वरीष्यति । वरिष्यते-वरीष्यते ।  
अवरिष्यत्-अवरीष्यत् । अवरिष्यत-अवरीष्यत । अवारीत् । अवरिष्ट-  
अवरीष्ट । अवृत । धूञ् कम्पने । धूनोति । धुनुते । धुनुयात् । धुन्वीत् ।  
धुनोतु, धुनुताम् । अधूनोत् । अधुनुत । दुधाव । दुधुवे । धूयात् । धवि-  
षीष्ट-धोषीष्ट ॥ ९८४ स्वरतिस्र्यतिस्र्यतिधूञ् रधादीनां वा ७ ॥  
धविता-धोता । धविष्यति-धोष्यति । अधविष्यत्-अधोष्यत् । अधावीत्-  
अधविष्ट-अधोष्ट ॥ ॥ इति स्वादिषूभयपदिप्रक्रिया ॥ १३ ॥

### स्वादिषु परस्मैपदिनः १४ ॥

॥ अथ परस्मैपदिनः ॥ ॥ हि गतौ वृद्धौ च । हिनोति ॥  
९८५ द्विरुक्तस्य हिनोतेः कुत्वं वाच्यम् १ ॥ जिघाय । हीयात् ।  
हेता । हेप्यति । अहेप्यत् । अहैषीत् । शकल शक्तौ । शक्नोति ।  
शशाक । 'लोपः पचां कित्ये चास्य' (सू० ७६२) शेकतुः, शेकुः ।  
शक्यात् । शक्ता । शक्ष्यति । अशक्ष्यत् । अशकत् । धिवि प्रीतौ ।  
'इदित्' । (सू० ७४५) इति नुम् ॥ ९८६ धिन्विकृण्व्योर्नो लोपो  
वाच्यः २ ॥ चतुर्षु ॥ ९८७ यवयोर्वसे हकारे च लोपः ३ ॥  
धिनोति । धिनुयात् । धिनोतु । अधिनोत् । दिधिन्व । धिन्व्यात् ।  
धिन्विता । धिन्विष्यति । अधिन्विष्यत् । अधिन्वीत् । कृवि हिंसा-  
याम् । कृणोति । चकृण्व । धिनोतिवत् । श्रु श्रवणे । ९८८ श्रुवः  
श्रु ४ ॥ श्रुवः श्रु भवति चतुर्षु परेषु ॥ शृणोति । शुश्राव । शुश्रोथ ।  
श्रूयात् । श्रोता । श्रोप्यति । अश्रोप्यत् । अश्रौषीत् ॥ इति  
स्वादिषु परस्मैपदिप्रक्रिया ॥ १४ ॥

### खादिषु आत्मनेपदिनः ॥ १५ ॥

॥ अथात्मनेपदिनः ॥ अशुङ् व्यासौ । ऊडावितौ । अश्रुते । अश्रुवीत । अश्रुताम् । आश्रुत । 'नुगशाम्' (सू० ७६४) । 'आम्बो-र्णादौ' (सू० ७१२) आनशे । 'ऊदितो वा' (सू० ७५१) अशिषीष्ट-अक्षीष्ट । अशिता-अष्टा । अशिष्यते-अक्ष्यते । आशिष्यत-आक्ष्यत । आशिष्ट-आष्ट, आक्षाताम्, आक्षन् ॥ इति खादिष्वात्मनेपदिप्रक्रिया ॥ १५ ॥ इति नुविकरणाः खादयः ॥ इति पञ्चमगणः ॥

### रुधादिषूभयपदिनः १६ ॥

॥ अथ रुधादयः ॥ तत्रादावुभयपदिनः । रुधिरावरणे । इरित् ॥ ९८९ रुधादेर्नम् १ ॥ रुधादेर्गणान्नम् प्रत्ययो भवति चतुर्षु परेषु ॥ अपोऽपवादः । मकारः स्थाननियमार्थः । णत्वम् । 'तथोर्धः' (सू० ७५३) रुणद्धि । 'नमसोऽस्य' (सू० ८९९) ॥ ९९० हसात् झसस्य सवर्णे झसे लोपो वाच्यः २ ॥ रुन्धः । रुन्धन्ति । रुणत्सि, रुन्धः, रुन्ध । रुणध्मि, रुन्ध्वः, रुन्ध्मः । रुन्धे, रुन्धाते, रुन्धते । रुन्ध्यात् । रुन्धीत । रुणद्धु, रुन्धाम् । अरुणत्-अरुणद् । अरुन्ध । रुरोध, रुरुधतुः, रुरुधुः । रुरोधिथ । रुरुधे, रुरुधाते । रुन्ध्यात् । रुत्सीष्ट । रोद्धा २ । रोत्स्यति । रोत्स्यते । अरोत्स्यत् । अरोत्स्यत । 'अनिटो नामिवतः' (सू० ७५४) अरौत्सीत् । 'सिस्थोः' (सू० ८५८) अरुद्ध, अरुत्सातां, अरुत्सत । 'इरितो वा' (सू० ७४०) अरुधत् । उच्छृदिर् दीप्तिदेवनयोः । उइरावितौ । छृणत्ति, छृन्तः, छृन्दन्ति । छृन्ते । छृन्ध्यात् । छृन्दीत । छृणत्तु, छृन्ताम् । अच्छृणत्-अच्छृणद् ॥ ९९१ दः सः ३ ॥ दकारस्य वा सकारो भवति सिपि विषये ॥ अच्छृणः । अच्छृणतम्, अच्छृणत । चच्छर्द ।

चच्छृदे । छृद्यात् । छृत्सीष्ट-छर्दिषीष्ट । छर्दिता २ । छर्दिष्यति-  
छर्त्स्यति । छर्दिष्यते-छर्त्स्यते । अच्छर्दिष्यत्-अच्छर्त्स्यत् । अच्छर्दि-  
ष्यत्-अच्छर्त्स्यत् । 'इरितो वा' (सू० ७४०) अच्छृदत् । अच्छर्दीत् ।  
अच्छर्दिष्ट । उत्तृदिर् हिंसानादरयोः । तृणत्ति, तृन्तः, तृन्दन्ति ।  
तृन्ते । तृन्द्यात् । तृन्दीत् । तृणत्तु, तृन्ताम् । अतृणत् । अतृन्त ।  
ततर्द । ततृदे । तृद्यात् । तृत्सीष्ट-तर्दिषीष्ट । तर्दिष्यति-तर्त्स्यति ।  
तर्दिष्यते-तर्त्स्यते । अतर्दिष्यत्-अतर्त्स्यत् । अतर्दिष्यत्-अतर्त्स्यत् ।  
अतृदत् । अतर्दीत् ॥ ९९२ नृतृदच्छदच्छृदृच्छोऽसेः सादेरिङ्वा  
४ ॥ अतर्दिष्ट ॥ इति रुधादिषूभयपदिप्रक्रिया ॥ १६ ॥

### रुधादिषु परस्मैपदिनः १७ ॥

अथ परस्मैपदिनः ॥ शिण्ल विशेषणे । शिनष्टि, शिष्टः, शिषन्ति ।  
शिष्यात् । शिनष्टु अशिनट् । शिशेष । शिष्यात् । शेषा ।  
शेक्ष्यति । अशेक्ष्यत् । अशिषत् । हिसि हिंसायाम् । 'इदितः'  
(सू० ७४५) इति नुम् ॥ ९९३ नमः १ ॥ नमः प्रत्यया-  
त्परस्य नस्य लोपो भवति ॥ हिनस्ति, हिंस्तः, हिंसन्ति । हिंस्यात् ।  
हिनस्तु । घौ सलोपो वा सस्य द इति केचित् । हिन्धि-हिन्धि ।  
अहिनत्-अहिनट् ॥ ९९४ दिपि सस्य दः सिपि वा २ ॥  
अहिनत् । अहिनः । जिहिंस । हिंस्यात् । हिंसिता । हिंसिष्यति ।  
अहिंसिष्यत् । अहिंसीत् । भञ्जो आमर्दने । ओ इत् । भनक्ति,  
भङ्कः, भञ्जन्ति । बभञ्ज । भञ्ज्यात् । भङ्का । भङ्क्ष्यति । अभङ्क्ष्यत् ॥  
९९५ सावनिटो नित्यं वृद्धिः ३ ॥ अनिटो घातोर्नित्यं वृद्धि-  
र्भवति परस्मैपदे सौ परे । अभाङ्क्षीत्, अभाङ्काम्, अभाङ्क्षुः ।  
अञ्जू व्यक्तिभ्रक्षणकान्तिगतिषु । अनक्ति । अञ्ज्यात् । अनक्तु,

आनक्-आनग् । आनञ्ज । अज्यात् । अञ्जिता-अञ्ज् । अञ्जिष्यति-  
अङ्क्ष्यति । अञ्जिष्यत् । अङ्क्ष्यत् ॥ ९९६ अञ्जेः सौ नित्यमि-  
डाच्यः ४ ॥ आञ्जीत् ॥ इति रुधादिषु परस्मैपदिप्रक्रिया ॥ १७ ॥

### रुधादिष्वात्मनेपदिनः १८ ॥

अथात्मनेपदिनः ॥ जिइन्वी दीसौ । जिई इतौ । इन्धे ।  
इन्धीत । इन्धाम् । ऐन्ध । इन्धाञ्चक्रे । इन्धिषीष्ट । इन्धिता । इन्धि-  
ष्यते । ऐन्धिष्यत् । ऐन्धिष्यत् ॥ इति रुधादिष्वात्मनेपदिप्रक्रिया ॥ १८ ॥  
इति नम्बिकरणा रुधादयः ॥ इति षष्ठगणः ॥

### तनादिषूभयपदिनः १९ ॥

अथ तनादयः ॥ सर्वे उभयपदिनः । तनु विस्तारे ॥ ९९७  
तनादेरुप् १ ॥ तनादेर्गणादुप् प्रत्ययो भवति चतुर्षु परेषु ॥  
अपोऽपवादः । 'नूपः' (सू० ९७९) तनोति । तनुते । तनुयात् ।  
तन्वीत । तनोतु, तनुताम् । अतनोत् । अतनुत । ततान, तेनतुः,  
तेनुः । तेने । तन्यात् । तनिषीष्ट । तनिता २ । तनिष्यति ।  
तनिष्यते । अतनिष्यत् । अतनिष्यत् । अतानीत्-अतनीत् । अत-  
निष्ट ॥ ९९८ तनादेरकरोतेस्तन्थासोर्वा सिलोपो वाच्यः २ ॥  
'लोपस्त्वनुदात्ततनाम्' (सू० ८८६) अतत । अतथाः । अतनिष्ठाः ।  
क्षणु क्षिणु हिंसायाम् । क्षणोति । क्षणुते । क्षणुयात् । क्षण्वीत ।  
क्षणोतु क्षणुताम् । अक्षणोत् । अक्षणुत । चक्षाण चक्षणे ।  
क्षण्यात् । क्षणिषीष्ट । क्षणिता २ । क्षणिष्यति क्षणिष्यते । अक्ष-  
णिष्यत् । अक्षणिष्यत् । 'ह्यन्तक्षण-' (सू० ७८०) इति न वृद्धिः ।  
अक्षणीत् । अक्षणिष्ट-अक्षत । अक्षथाः-अक्षणिष्ठाः ॥ ९९९ तनादे-

रूपधाया गुणो वा पिति ३ ॥ क्षिणोति-क्षेणोति । अक्षेणीत् ।  
 अक्षित-अक्षणिष्ट । षणु दाने । सेने । सायात् । सन्यात् ।  
 असात्-असनिष्ट । असाथाः-असनिष्ठाः । डुकृञ् करणे । डुजा-  
 वितौ । 'गुणः' ( सू० ६९२ ) 'नूपः' ( सू० ९७९ ) करोति ॥  
 १००० डित्यदुः ४ ॥ करोतेरकारस्य उकारो भवति डिति  
 विभक्तौ परतः ॥ कुरुतः, कुर्वन्ति । करोषि, कुरुथः, कुरुथ । करोमि ॥  
 १००१ कुरल्लुरोर्न दीर्घः ५ ॥ १००२ कृजो नित्यं वमोरु-  
 लोपो वाच्यः ६ ॥ कुर्वः, कुर्मः । कुरुते ॥ १००३ कृजो ये ७ ॥  
 कृञ उत्तरस्य उपप्रत्ययस्य लोपो भवति ये परे ॥ कुर्यात् । कुर्वीत ।  
 करोतु । करवाणि । कुरुताम् । करवै । अकरोत् । अकुरुत । चकार,  
 चक्रतुः, चक्रुः । चकर्थ चक्रे । क्रियात् । कृषीष्ट । कर्ता । करि-  
 ष्यति । अकरिष्यत् । अकार्षीत् । अकृत, अकृषाताम्, अकृषत ॥  
 १००४ संपर्युपेभ्यः करोतेर्भूषणेऽर्थे सुट् ८ ॥ संस्करोति ॥  
 १००५ अइद्वित्वव्यवधानेऽपि सुट् स्यात् ९ ॥ समस्करोत् ।  
 सञ्चस्कार ॥ १००६ ससुट् कृजो णादौ नित्यमिडाच्यः १० ॥  
 सञ्चस्करिथ । एवमुपस्कुरुते ॥ मनु अवबोधने । मनुते । मेने ।  
 मन्ता । वनु याचने । परस्मैपद्यमिल्येके । वनुते ॥ इति तनाद्यु-  
 भयपदिनः ॥ १९ ॥ इत्युबविकरणास्तनादयः ॥ इति सप्तमगणः ॥

### तुदादिषूभयपदिनः २० ॥

अथ तुदादयः ॥ तत्रादावुभयपदिनः ॥ तुद व्यथने । अकार  
 उभयपदार्थः ॥ १००७ तुदादेरः १ ॥ तुदादेर्गणादः प्रत्ययो  
 भवति चतुर्षु परेषु ॥ अपोऽपवादः ॥ डित्त्वान्न गुणः । तुदति ।

तुदते । तुदेत् । तुदेत । तुदतु, तुदताम् । अतुदत् । अतुदत । तुतोद ।  
तुतुदे । तुद्यात् । तुत्सीष्ट । तोत्ता २ । तोत्स्यति । तोत्स्यते । अतोत्स्यत् ।  
अतोत्स्यत । अतौत्सीत्, अतौत्ताम्, अतौत्सुः । अतुत्त, अतुत्साताम्,  
अतुत्सत ॥ अस्जो पाके । ओ इत् ॥ १००८ अन्यत्र सो जः २ ॥  
झस्परत्वाभावे सस्य जो भवति ॥ 'ग्रहां क्ति च' (सू० ८७३)  
१००९ अप्रत्ययो ङिद्वत् ३ ॥ भृजति । भृजते । बभ्रज्ज । 'ऋसं-  
योगात्-' (सू० ७४३) इति क्त्वाभावान्न संप्रसारणम् । बभ्रज्जतुः,  
बभ्रज्जुः । बभ्रज्जिथ-बभ्रष्ट । बभ्रजे ॥ १०१० भृजतेः सकाररेफौ  
लुप्त्वा रमागमोऽनपि वा वाच्यः ४ ॥ बभर्ज । बभर्जे । भृज्यात्-  
भर्ज्यात् । अक्षीष्ट-भर्क्षीष्ट । अष्टा-भर्ष्टा । अक्ष्यति-भर्क्ष्यति । अअ-  
क्ष्यत्-अभर्क्ष्यत् । अआक्षीत्-अभार्क्षीत् । अअष्ट-अभर्ष्ट ॥ दिश  
अतिसर्जने । दिक्षीष्ट । अदिक्षत् । अदिक्षत । क्षिप प्रेरणे ।  
क्षिप्सीष्ट । अक्षिप्त । कृष् विलेखने । कृक्षीष्ट । कृष्टा-कर्ष्टा । अका-  
र्क्षीत्-अक्राक्षीत् । अकृक्षत-अकृष्ट, अकृक्षाताम्, अकृक्षत ॥ मिल  
संगमे । मिमिले । अमेलिष्ट । मुच्छल मोक्षणे ॥ १०११ मुचादेर्मुम्  
५ ॥ मुचादीनां मुमागमो भवति अप्रत्यये परे । मुञ्चति । मुञ्चते ।  
मुमोच । मुमुचे । मुच्यात् । 'सिस्सोः' (सू० ८५८) अनेन गुणा-  
भावः । 'चोः कुः' (सू० २८५) मुक्षीष्ट । मोक्ता २ । मो-  
क्ष्यति । मोक्ष्यते । अमोक्ष्यत् । अमोक्ष्यत । अमुचत्-अमुक्त । लुप्ल  
छेदने । लुम्पति । लुप्सीष्ट । अलुपत् । विद्ल लामे । विन्दति ।  
अवेदिष्ट । अनिड्यमित्येके । वेत्ता । लिप् उपदेहे । 'मुच् लुप्  
विद् लिप् सिच् कृत् पिश् खिद्' एते मुचादयः ॥ लिम्पति ।  
लिलेप । अलिपत् । अलिपत ॥ १०१२ लिप्सिचिह्वयतीनामा-  
त्मनेपदे सेङ्गे वा वाच्यः ६ ॥ अलिप्त । षिच्छल क्षरणे ।

सिञ्चति । सिषेचं । सिञ्च्यात् । सिक्षीष्ट । सेक्ता २ । सेक्ष्यति ।  
असिचत् । असिचत । असिक्त ॥ इति तुदादिषुभयपदिप्रक्रिया ॥ २० ॥

### तुदादिषु परस्मैपदिनः २१ ॥

अथ परस्मैपदिनः ॥ कृती छेदने । कृन्तति । चकर्त । कृत्यात् ।  
कर्तिता । कर्तिष्यति । अकर्तिष्यत् । अकर्तीत् ॥ लुभ विमोहने ।  
लोभिता लोब्धा । अलोभीत् ॥ चृती हिंसाग्रन्थनयोः । चर्तिष्यति ।  
चर्त्स्यति । अचर्तीत् ॥ विध विधाने । वेधिता ॥ कुट कौटिल्ये ॥  
१०१३ कुटादेर्जिङ्गद्वर्जः प्रत्ययो ङिङ्गत् १ ॥ चुकोट, चुकुटिथ ।  
कुटिता । अकुटीत् । चुट् छेदने । चुट्यति । चुटति । ओब्रश्चू छेदने ।  
ओऊ इतौ । 'ग्रहां किति च' (सू० ८७३) वृश्चति । वब्रश्च, ववृश्चतुः,  
ववृश्चुः । वब्रश्चिथ-वब्रष्ट । वृश्च्यात् । 'ऊदितो वा' (सू० ७५१)  
वृश्चिता-व्रष्टा । 'स्कोराद्योश्च' (सू० ३०१) व्रश्चिष्यति । व्रक्ष्यति ।  
अब्रश्चीत् । अब्राक्षीत् । अब्राष्टाम् । कृ विक्षेपे । 'ऋत इइ' (सू० ८२०)  
किरति । चकार, चकरतुः । कीर्यात् । करिता । 'ईटो ग्रहाम्' (सू० ८२१)  
करीता । करीष्यति-करिष्यति । अकरीष्यत्-अकरिष्यत् । अकारीत् ॥  
१०१४ उपात्किरतेऽछेदेऽर्थे सुङ् वाच्यः ॥ १०१५ हिंसायां  
प्रतेश्च ३ ॥ उपस्किरति । उपचस्कार । प्रतिस्किरति ॥ गृ निगरणे ॥  
गिरति ॥ १०१६ गिरते रस्य वा लः स्वरे वाच्यः ४ ॥  
गिलति । जगार-जगाल, जगरतुः-जगलतुः, जगरुः-जगलुः । अगा-  
रीत्-अगालीत् । स्पृश स्पर्शने । स्पृशति । पस्पर्श । स्पृश्यात् ।  
स्पृष्टा-स्पृष्टा । स्पृक्ष्यति-स्पृक्ष्यति । अस्पृक्ष्यत्-अस्पृक्ष्यत् । अस्प्राक्षीत् ।  
रो वा । अस्पर्क्षीत् ॥ १०१७ कृषादीनां वा सिर्वक्तव्यः ५ ॥  
तत्पक्षे । 'हशषान्तात्सक्' (सू० ८००) अस्पृक्षत् । प्रच्छ शीप्सा-



याम् । संप्रसारणम् । पृच्छति । पप्रच्छ, पप्रच्छतुः । पप्रच्छिथ-पप्रष्ठ ।  
 पृच्छ्यात् । प्रष्टा । प्रक्ष्यति । अप्राक्षीत् । सृज विसर्गे । सृजति ।  
 ससर्ज, ससृजतुः, ससृजुः । ससर्जिथ-सस्रष्ठ । सृज्यात् । 'रारो झसे  
 दशाम्' (सू० ७९६) स्रष्टा । स्रक्ष्यति । अस्त्राक्षीत् । दुमस्जो  
 शुद्धौ । दुओ इतौ । 'अन्यत्र सो जः' (सू० १००८) मज्जति ।  
 ममज्ज । मङ्गा । 'मस्जिनशोर्झसे नुम्' (सू० ९६९) मङ्क्ष्यति ।  
 अमाङ्क्षीत्, अमाङ्काम्, अमाङ्क्षुः । विश् प्रवेशने । वेष्टा । अवि-  
 क्षत् । मृष् आमर्शने । अम्राक्षीत् । अमार्क्षीत् । अमृक्षत् । विच्छ गतौ ।  
 'आयः' (सू० ७८१) विच्छायति । विच्छायाञ्चकार-विविच्छ  
 विच्छाय्यात्-विच्छ्यात् । विच्छायिता-विच्छिता । अविच्छायीत् ।  
 इषु इच्छायाम् । 'गमां छः' (सू० ७८७) इच्छति । इच्छेत् ।  
 इयेष । एषिता । एष्टा । लुप स्पर्शे । छोप्ता । अच्छौप्सीत् ॥ लिश  
 गतौ । लेष्टा । अलिक्षत् । खिद परिघाते । खिन्दति । खेत्ता ।  
 असैत्सीत् ॥ पिश अवयवे । पिंशति । पेशिता ॥ इति तुदादिषु  
 परस्मैपदिप्रक्रिया ॥ २१ ॥

### तुदादिष्वात्मनेपदिनः २२ ॥

अथात्मनेपदिनः ॥ मृङ् प्राणत्यागे ॥ १०१८ अयकि १ ॥  
 ऋकारस्य रिङादेशो भवति अकारे प्रत्यये यकि च परे ॥ 'नु धातोः'  
 (सू० ७७६) म्रियते ॥ १०१९ सपरोक्षयोस्तादौ म्रियतेः पर-  
 स्मैपदं वाच्यम् २ ॥ ममार, मम्रतुः । मृषीष्ट । मर्ता । मरिष्यति ।  
 अमरिष्यत् । 'लोपो ह्रस्वाज्झसे' (सू० ८५२) । अमृत, अमृषाताम्,  
 अमृषत ॥ दृङ् आदरे । द्रियते । दद्रे । दृषीष्ट । दर्ता । 'हनृतः स्यपः'  
 (सू० ७९०) दरिष्यते । अदरिष्यत । अदृत । धृङ् अवस्थाने ।

ध्रियते । तद्वत् । पृङ् व्यापारे । व्याप्रियते । व्यापरिष्यते । व्यापृत,  
व्यापृषाताम् । ओविजी भयचलनयोः । विजते । विजेत । विजताम् ।  
अविजत । विविजे । विजिता ॥ १०२० विजेः पर इट् किद्वक्त-  
व्यः ३ ॥ ततो नोपधागुणः । विजिष्यते । अविजिष्यत् । अवि-  
जिष्ट । ओलस्जी व्रीडायाम् । अन्यत्र 'सो जः' (सू० १००८)  
लज्जते । ललज्जे । अलज्जिष्ट ॥ इति तुदादिष्वात्मनेपदिप्रक्रिया ॥ २२ ॥  
इति अविकरणास्तुदादयः ॥ इत्यष्टमगणः ॥

### क्रयादिषूभयपदिनः २३ ॥

अथ क्रयादयः ॥ तत्रादावुभयपदिनः ॥ डुक््रीञ् द्रव्यविनिमये ॥  
१०२१ ना क्रयादेः १ ॥ क्रयादेर्गणान्ना प्रत्ययो भवति चतुर्षु  
परेषु ॥ अपोऽपवादः ॥ णत्वम् । क्रीणाति ॥ १०२२ ई हसे  
२ ॥ ना इत्यस्याकारस्य ईकारो भवति ङिति हसे परे ॥ क्रीणीतः ॥  
१०२३ नातः ३ ॥ ना इत्यस्याकारस्य लोपो भवति ङिति खरे  
परे ॥ क्रीणन्ति । क्रीणासि, क्रीणीथः, क्रीणीथ । क्रीणामि, क्रीणीवः,  
क्रीणीमः । क्रीणीते । क्रीणीयात् । क्रीणीत । क्रीणातु, क्रीणीताम् ।  
अक्रीणात् । अक्रीणीत । चिक्राय, चिक्रियतुः, चिक्रियुः । चिक्रियिथ-  
चिक्रेथ । चिक्रिये । क्रीयात् । क्रेषीष्ट । क्रेता २ । क्रेष्यति । क्रेष्यते ।  
अक्रेष्यत् । अक्रेष्यत । अक्रेषीत् । अक्रेष्ट । प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च ।  
पिप्रिये । मीञ् हिंसायाम् । मीनाति ॥ १०२४ मीनातिमिनो-  
तिदीडां गुणवृद्धिविषये क्यपि च आत्वं वाच्यम् ४ ॥ ममौ,  
मिम्यतुः, मिस्युः । ममिथ-ममाथ । मासीष्ट । माता । अमासीत् ।  
अमेष्ट ॥ स्कुञ् आप्रवृणो ॥ १०२५ स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भुस्कुम्भु-  
स्कुम्भ्यो नुर्नाश्च ५ ॥ स्कुनोति । स्कुनाति । अस्कुनीत् । वुस्कु-

विषे । अस्कौषीत् । अस्कौष्ट ॥ स्तम्भु स्तुम्भु स्कम्भु स्कुम्भु  
रोधने । स्तभ्नोति-स्तभ्नाति । स्तुभ्नोति-स्तुभ्नाति । स्कभ्नोति-स्क-  
भ्नाति । स्कुभ्नोति-स्कुभ्नाति । स्तभान-स्तुभान । स्कभान-  
स्कुभान । अस्तभत् ॥ १०२६ जस्तम्भुमुचुम्भुचुगुचुगुलुचुगुलु-  
श्विभ्यश्चलेरङ् वा ६ ॥ अस्तम्मीत् । पूञ् पवने ॥ १०२७ प्वादे-  
र्हस्वः ७ ॥ प्वादीनां ह्रस्वो भवति चतुर्थे परेषु ॥ पुनाति । पुनीते ।  
पुनीयात् । पुनीत । पुनातु । पुनीताम् । अपुनात् । अपुनीत ।  
पुपाव । पुपुवे । पृयात् । पविषीष्ट । पविता २ । पविष्यति । पवि-  
ष्यते । अपविष्यत् । अपविष्यत । अपावीत् । अपविष्ट । कृञ्  
हिंसायाम् । कृणाति । कृणीते । चकार । चकरे । कीर्यात् । करिषीष्ट ।  
अकारीत् । धूञ् कम्पने । धुनाति । धुनीते । दुधाव । अधविष्ट-  
अधोष्ट ॥ ग्रह उपादाने । 'ग्रहां किति च' (सू० ८७३) गृह्णाति,  
गृहीतः । गृहीते । गृहीयात् । गृहीत । गृह्णातु, गृहीतात्-गृहीताम्,  
गृह्णन्तु ॥ १०२८ हसादान हौ ८ ॥ हसान्तात्क्र्यादेर्गणादानः  
प्रत्ययो भवति हौ परे ॥ नाप्रत्ययाभावः । गृहाण । अगृह्णात् ।  
जग्राह । जगृहे । गृह्णात् । 'ईटो ग्रहाम्' (सू० ८२१) इति ईः ।  
ग्रहीषीष्ट । ग्रहीता २ । ग्रहीष्यति । अग्रहीष्यत् । अग्रहीष्यत । अग्र-  
हीत् । अग्रहीष्ट ॥ इति क्र्यादिषुभयपदिप्रक्रिया ॥ २३ ॥

### क्र्यादिषु परस्मैपदिनः २४ ॥

अथ परस्मैपदिनः ॥ पुष् पुष्टौ । पुष्णाति । पुष्णीयात् । पुष्णातु,  
पुष्णीतात्-पुष्णीताम्, पुष्णन्तु । पुषाण । अपुष्णौत् । पुपोष ।  
पुष्यात् । पोषिता । पोषिष्यति । अपोषिष्यत् । अपोषीत् । मुष  
स्तेये । मुष्णाति । मुमोष । मुष्यात् । मोषिता । मोषिष्यति । अमो-

षिष्यत् । अमोषीत् ॥ शृ हिंसायाम् । शृणाति । शशार, शशरतुः,  
 शशरुः । शीर्यात् । शरिता । शरिष्यति । अशरिष्यत् । अशरीत् ।  
 ज्या वयोहानौ । ग्रहादित्वात्संप्रसारणम् । जिनाति । जिनीयात् ।  
 जिज्यौ, जिज्यतुः, जिज्युः । जिज्यिथ-जिज्याथ । जीयात् । ज्याता ।  
 ज्यास्यति । अज्यास्यत् । अज्यासीत् । ज्ञा अवबोधने । 'जा जनीशोः'  
 (सू० ९७५) जानाति । जज्ञौ । ज्ञायात् । ज्ञेयात् । ज्ञाता । अज्ञा-  
 सीत् । ली श्लेषणे । लीनाति ॥ १०२९ लील्लिङोरात्वं वा १ ॥  
 ललौ । लिलाय, लिष्यतुः । लाता-लेता । अलासीत् । अलैषीत् ।  
 बन्ध बन्धने । बध्नाति । बबन्ध । भन्त्स्यति । अभान्त्सीत् । मन्थ  
 विलोडने । मध्नाति । कुष् निष्कर्षे । कुष्णाति । कुषाण । चुकोष ।  
 कुष्यात् । कोषिता । अकोषीत् । अश भोजने । अश्नाति । अश्नी-  
 यात् । अश्नातु, अश्नीतात्-अश्नीताम्, अश्नन्तु । अशान । आश ।  
 अशिता । आशीत् ॥ इति क्र्यादिषु परस्मैपदिप्रक्रिया ॥ २४ ॥

### क्र्यादिष्वात्मनेपदिनः २५ ॥

अथात्मनेपदिनः ॥ वृङ् संभक्तौ । वृणीते । वृणीत । वृणीताम् ।  
 अवृणीत । ववे । वरिषीष्ट-वरीषीष्ट ॥ १०३० संयोगादिऋदन्तवृङ् वृजां  
 सिष्योरात्मनेपदे इङ्वा वाच्यः १ ॥ वृषीष्ट । 'उः' (सू० ८६४)  
 अवरिष्ट-अवरीष्ट । अवृत—इत्यादि ॥ इति क्र्यादिष्वात्मनेपदिप्रक्रिया  
 २५ ॥ इति नाविकरणाः क्र्यादयः ॥ इति नवमगणः ॥

### " चुरादिगणः २६ ॥

अथ चुरादयः ॥ चुर स्तेये ॥ १०३१ चुरादेः १ ॥ चुरादे-

र्गणात्स्वार्थे जिः प्रत्ययो भवति ॥ उपधाया गुणः । 'सधातुः' (सू० ७८२)  
 अपगुणायः । चोरयति । चोरयेत् । चोरयतु । अचोरयत् ।  
 चोरयाञ्चकार । चोरयाम्बभूव । चोरयामास । चोरयाञ्चके । 'जेः'  
 (सू० ८४४) चोर्यात् । चोरयिता । चोरयिष्यति । अचोरयिष्यत् ।  
 'जेरङ् द्विश्च' (सू० ८४३) 'अङि लघौ ह्रस्व उपधायाः' (सू० ८४५)  
 'लघोर्दीर्घः' (सू० ८४६) अचूचुरत् । चिती संज्ञाने । चेतयति ।  
 अचीचितत् । चिति स्मृत्याम् । 'इदितो नुम्' (सू० ७४५)  
 चिन्तयति । लघोरभावान्न दीर्घः । अचिचिन्तत् । चुरादेर्निर्वेति  
 केचित् । चिन्तति । पीड अवगाहने । पीडयति ॥ १०३२ भ्राज-  
 भासभाषदीपजीवमीलपीडां वोपधाया ह्रस्वो डपरे औ २ ॥  
 अपीपिडत्-अपिपीडत् । प्रथ प्रख्याने । प्रथयति ॥ १०३३  
 स्मृद्भृत्वरप्रथम्रदस्त्वस्पर्शां पूर्वस्यातोऽदङ्परे औ ३ ॥ इत्वाप-  
 वादः । अपप्रथत् । पृथ प्रक्षेपे ॥ १०३४ उपधाया ऋवर्ण-  
 स्याङि ऋ वा वक्तव्यः ४ ॥ इररारामपवादः । अपीपृथत्-  
 अपपर्थत् । ज्ञप ज्ञानज्ञापनयोर्मित् ॥ १०३५ मितां ह्रस्वः ५ ॥  
 मितां धातूनां ह्रस्वो भवति औ परे ॥ ज्ञपयति । चिञ् चयने ।  
 मित् ॥ १०३६ चिस्फुरोर्जावात्वं वा ६ ॥ १०३७ रातो औ  
 पुक् ७ ॥ ऋ गतावित्यस्याकारस्य च पुगागमो भवति औ परे ॥  
 चपयति-चययति ॥ अर्च पूजायाम् । अर्चयति ॥ १०३८ खरादेः  
 परः ८ ॥ खरादेर्धातोः परोऽवयवोऽद्विरुक्तः सखरो द्विर्भवति ॥  
 'नदराः संयोगादयो न द्विः' (सू० ९३९) इति रेफस्य न द्वित्वम् ।  
 आर्चिचत् । कृत संशब्दे ॥ १०३९ धातोरुपधाया ऋकारस्य  
 ईकारादेशो वाच्यो जिप्रत्यये परे ९ ॥ कीर्तयति । अचिकी-  
 र्तत् । गण संख्याने । अकारान्तः । अल्लोपस्य स्थानिवत्त्वान्न

वृद्धिः । गणयति ॥ १०४० अल्लोपिनो नाङ्कार्यम् १० ॥  
 अजगणत् । कथगणयोरङ्कार्यं चेति केचित् । अजीगणत् ।  
 कथ वाक्यप्रबन्धे । कथयति । अचकथत्-अचीकथत् । ऊन  
 परिहाणे । ऊनयति ॥ १०४१ जिनिमित्तस्वरादेशो द्वित्वे  
 कर्तव्ये स्थानिवत् ११ ॥ 'स्वरादेः परः' (सू० १०३८)  
 अर्थङ् याचने । अर्थयते । आर्तथत् । संग्रामङ् युद्धे । अससं-  
 ग्रामत् ॥ अन्ध दृष्ट्युपघाते । आन्दधत् । अङ्क अङ्ग पदे लक्षणे  
 च । आञ्चकत् ॥ इति चुरादिप्रक्रिया ॥ २६ ॥

### ज्यन्तप्रक्रिया २७ ॥

॥ अथ ज्यन्ताः ॥ १०४२ धातोः प्रेरणे १ ॥ प्रयोजकव्या-  
 पारेऽर्थे धातोर्जिः प्रत्ययो भवति ॥ कुर्वन्तं प्रेरयति यः स  
 प्रयोजकः । कारयति । कारयते । अचीकरत् । पाचयति । अपीप-  
 चत् । भवन्तं प्रेरयति भावयति भावयते । भावयांभवूव ।  
 १०४३ अङ्सयोः २ । पूर्वस्योकारस्येत्वं पवर्गयवरलजकारे-  
 ष्ववर्णपरेषु परतः ॥ १०४४ द्विर्निमित्तेऽचि ३ ॥ द्वित्व-  
 निमित्तेऽचि अच आदेशो न द्वित्वे कर्तव्ये ॥ अबीभवत् । मूङ्  
 मोहने । मावयति । अमीभवत् । यु मिश्रणे । अयीयवत् । रु शब्दे ।  
 अरीरवत् । लृञ् छेदने । अलीलवत् । जु गतौ । अजीजवत् ॥  
 १०४५ स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लवतिच्यवतीनाम् ४ ॥ अङ्-  
 सयोः पूर्वस्येत्वं वाऽवर्णपरे धात्वक्षरे परे ॥ असिस्रवत्-असुस्रवत् ।  
 अशिश्रवत्-अशुश्रवत् । अदिद्रवत्-अदुद्रवत् ॥ १०४६ हनो घत् ५ ॥  
 हन्तेर्धदादेशो भवति ङिणति णप्वर्जिते परतः ॥ घातयति । अजी-  
 घत् । शदूल शातने ॥ १०४७ शदेः शत् ६ ॥ शदेः शतादेशो

भवति अगतौ औ परे ॥ शातयति । गतौ तु-शादयति । अशी-  
 शतत् । 'रातो औ पुक् च' (सू० १०३७) डुदाञ् दाने । दापयति ।  
 अदीदपत् । धापयति । अदीधपत् ॥ १०४८ पुगन्तस्य गुणो वक्त-  
 व्यः ७ ॥ अर्पयति 'स्वरादेः परः' (सू० १०३८) आर्पिपत् ।  
 छा गतिनिवृत्तौ । स्थापयति ॥ १०४९ तिष्ठतेरुपधाया इकारो  
 वक्तव्योऽडि परे ८ ॥ ततो द्वित्वम् । अतिष्ठिपत् ॥ १०५०  
 पादेर्युक् ९ ॥ पाशाछासाहेञ्ज्वेजां युगागमो भवति औ परे ॥  
 पाययति ॥ १०५१ पिबतेरडि पूर्वस्येकारोपधालोपौ वक्तव्यौ १० ॥  
 अपीप्यत् । शो तनूकरणे । 'सन्ध्यक्षराणामा' (सू० ८०३) शाय-  
 यति । अशीशयत् । छो छेदने । अचीछयत् । षोऽन्तकर्मणि ।  
 साययति । असीषयत् । हेञ् स्पर्धायाम् ॥ १०५२ ह्वयतेरडि संप्र-  
 सारणं युगभावश्च वक्तव्यः, कृतसंप्रसारणस्य ह्वयतेरडि क्रमा-  
 द्गुणवृद्धी वाच्ये ११ ॥ अजुहावत्-अजूहवत्, अजूहवताम् । व्येञ्  
 संवरणे । व्यायति । अवीव्ययत् । वेञ् तन्तुसंताने । वाययति ।  
 अवीवयत् ॥ १०५३ पातेर्औ लुग्वक्तव्यः १२ ॥ युकोऽपवादः ।  
 पालयति । अपीपलत् । रभ रभस्ये । रभसो वेगहर्षयोः ॥  
 १०५४ रभलभोः स्वरे णाद्यपौ विना नुम्वाच्यः १३ ॥ रम्भ-  
 यति । अररम्भत् । डुलभष् प्राप्तौ । लम्भयति । अललम्भत् ।  
 ग्रीञ् तर्पणे ॥ १०५५ ग्रीञ्धूजोर्नुक् १४ ॥ अनयोर्नुगागमो  
 भवति औ परे ॥ ग्रीणयति । अपीप्रिणत् । धूञ् कम्पने । धूनयति ।  
 अदूधुनत् ॥ सिञ् ईषद्धसने ॥ १०५६ स्मयतेरात्यात्वं औ  
 वाच्यम् १५ ॥ विस्मापयते । असिष्मपत् । आति किम् ? । विस्मा-  
 पयति । असिष्मयत् ॥ १०५७ रुहेर्औ पो वा घाच्यः १६ ॥ रुह  
 बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च । रोहयति । रोपयति । अरूरुहत् । अरूरुपत् ॥

कूपू सामर्थ्ये । 'कूपो रो लः' (सू० ८५७) कल्पयति ॥ १०५८ उपधाया  
 ऋवर्णस्याङि ऋ वा वक्तव्यः १७ ॥ इररारामपवादः । अचीक्लपत्-  
 अचकल्पत् । वृतुङ् वर्तने । वर्तयति । अवीवृतत्-अववर्तत् । मृजूष् शुद्धौ ।  
 मार्जयति । अमीमृजत्-अममार्जत् ॥ १०५९ इडादेर्जौ पुक् च  
 १८ ॥ इङ्क्रीजीनामात्वं भवति जौ परे हीब्लीरीक्यूक्ष्मायीनां  
 पुगागमो भवति जौ परे ॥ इङ् अध्ययने । अध्यापयति । अध्या-  
 पिपत् ॥ १०६० अङ्परि जौ इङो गाङ् वा वक्तव्यः १९ ॥  
 अध्यजीगपत् । डुक्तीञ् द्रव्यविनिमये । आपयति । अचिक्रपत् ।  
 जी जये । जापयति । अजीजपत् । ह्री लज्जायाम् । ह्वेपयति ।  
 अजीहिपत् । ङ्ली वरणे । ङ्लेपयति । अबिब्लिपत् । रीङ् क्षरणे ।  
 रेपयति । अरीरिपत् ॥ क्यू दुर्गन्धे ॥ १०६१ यवयोर्वसे हकारे  
 च लोपो वक्तव्यः २० ॥ क्लोपयति । अचूकुपत् । क्ष्मायी विधूनने ।  
 एकः क्ष्मायति, तमन्यः प्रेरयति-क्ष्मापति । अचिक्ष्मपत् । लीङ् श्लेषणे  
 ॥ १०६२ लीयतेर्जावात्वं वा २१ ॥ विलापयति ॥ १०६३  
 लीलोः पुग् वक्तव्यः २२ ॥ विलेपयति । व्यलीलिपत्-व्यलीलपत् ॥  
 १०६४ लीलोर्जौ क्रमाच्चुग्लुकौ वा २३ ॥ विलीनयति । व्यली-  
 लिनत् । ला ग्रहणे । लापयति । अलीलपत् । लालयति । अली-  
 ललत्, अलीललताम् ॥ १०६५ न रितः २४ ॥ ऋकारेतोऽनेकस्वरस्य  
 शासश्चाङि उक्तं कार्यं न भवति ॥ ढौकृ गतौ । ढौकयति । अडुढौ-  
 कत् । दुयाचृ याच्ञायाम् । याचयति । अययाचत् । शासु अनु-  
 शिष्टौ । शासयति । अशशासत् । दरिद्रा दुर्गतौ । दरिद्रयति ।  
 अददरिद्रत्, अददरिद्रताम् । दुष वैकृत्ये ॥ १०६६ दुषेर्जौ वा  
 दीर्घो वक्तव्यः २५ ॥ दूषयति । दोषयति । अदूदुषत् । घट  
 चेष्टायाम् ॥ १०६७ मितां ह्रस्वः २६ ॥ धातुपाठे मित इत्येवं



पठितानां धातूनां ह्रस्वो भवति औ परे । घटयति । अजीघटत् ।  
व्यथ दुःखभयसंचलनयोः । व्यथयति । अविव्यथत् ॥ एवं पञ्च-  
पञ्चाशतो रूपम् ॥ १०६८ जनीजृषृक्सुरञ्जोऽमन्ताश्च २७ ॥  
एतेऽपि मितः ॥ जनयति । अजीजनत् । जृष् वयोहानौ । ष्  
इत् । जरयति । अजीजरत् । क्सु ह्रणदीप्त्योः । क्सयति ।  
अचिक्कसत् । रञ्ज रागे ॥ १०६९ रञ्जेर्जौ मृगरमणोऽर्थे नलोपो  
वाच्यः २८ ॥ रजयति मृगान् । अरीरजत् । शम दम उपशमे ।  
शमयति । अशीशमत् । दमयति । अदीदमत् ॥ १०७० जानातेर्जौ  
वा ह्रस्वः २९ ॥ ज्ञाऽवबोधने । एको जानाति तमन्यः प्रेरयतीति  
ज्ञपयति । अजिज्ञपत् ॥ १०७१ ज्वलग्लास्ताश्च वा मितः ३० ॥  
ज्वल दीप्तौ । ज्वलयति-ज्वालयति । अजिज्वलत् । ग्लै हर्षक्षये ।  
ग्लपयति-ग्लापयति । अजिग्लपत् । ण्णा शौचे । 'आदेः  
ण्णः स्तः' (सू० ७४८) स्नापयति-स्नपयति । असिस्नपत् ।  
ओस्फायी वृद्धौ ॥ १०७२ स्फायो वकारः स्यात् औ परे ३१ ॥  
स्फावयति । अपिस्फवत् ॥ १०७३ भियो औ वा णुगात्वे वाच्ये  
३२ ॥ भीषयति-भापयति-भाययति । अबीभिषत् । अबीभपत् । अबी-  
भयत् ॥ १०७४ व्यापारमात्रे जिर्वक्तव्यः स च ङित् ३३ ॥  
हलं गृह्णाति-हलयति ॥ इति व्यन्तप्रक्रिया ॥ २७ ॥

## सप्रक्रिया २८

अथ सप्रक्रिया निरूप्यते ॥ १०७५ इच्छायामात्मनः  
सः १ ॥ धातोरिच्छायामर्थे सः प्रत्ययो भवति 'सा चेत्स्वसम्ब-  
न्धिनी । द्विश्च । भवितुमिच्छति-बुभूषति । 'स धातुः' (सू० ७८२)  
धातुत्वादपत्तिबादि । 'अदे' (सू० ६९५) ॥ १०७६ वुः से २ ॥

उच्च ऋच वृ तस्मात् वुः । उवर्णान्ताद्वर्णान्ताच्च ग्रहगुहोश्च से परे  
इद् न भवति ॥ १०७७ नानिटि से ३ ॥ इड्जिते सप्रत्यये परे गुणो  
न भवति ॥ तृ प्लवनतरणयोः ॥ १०७८ नाम्यन्तात्परस्य सस्य  
कित्वं वाच्यम् ४ ॥ 'ऋत इ' ( सू० ८२० ) तरितुमिच्छति-  
तितीर्षति । अतितीर्षति ॥ डुकृञ् करणे । कर्तुमिच्छति-चिकी-  
र्षति ॥ १०७९ से दीर्घः ५ ॥ से परे पूर्वस्य दीर्घो भवति ॥  
चिञ् चयने ॥ १०८० चिनोतेः से णादौ कित्वं वा वाच्यम् ६ ॥  
चिकीषति । चिचीषति । जि जये । 'सपरोक्षयोर्जेर्गिः' ( सू० ७९५ )  
जेतुमिच्छति-जिगीषति । यु मिश्रणे । युयूषति ॥ डुपचष् पाके ।  
'यः से' ( सू० ८४० ) पक्तुमिच्छति-पिपक्षति ॥ पातुमिच्छति-  
पिपासति ॥ १०८१ गौणः प्रकृत्यर्थोऽन्यत्र सात् ७ ॥ प्रकृति-  
प्रत्यययोर्मध्ये प्रत्ययार्थः प्रधानीभूतः । अत्र सप्रत्यये तु वैपरीत्यं,  
प्रकृत्यर्थः प्रधानीभूतः । तेन काष्ठेन पिपक्षतीत्यत्र तृतीयायाः  
पाकेन संबन्धो न त्विच्छया ॥ मृड् प्राणत्यागे । मर्तुमिच्छति-  
मुमूर्षति । 'पोरू' ( सू० ९४८ ) पृ पालनपूरणयोः । पुपूषति ॥  
१०८२ वृड् इत्यस्य उर्वाच्यः ८ ॥ वृड् वरणे । वरितुमिच्छति-  
वुवूर्षति ॥ १०८३ रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः सः किद्वाच्यः  
९ ॥ रुदिद् अश्रुविमोचने । रुरुदिषति । विद् ज्ञाने । विविदि-  
षति । मुष स्तेये । मुमुषिषति । ग्रह उपादाने । 'हो ढः' ( सू०  
२४३ ) 'आदिजबानाम्' ( सू० २३९ ) 'षढोः कः से' ( सू० ७९८ )  
षत्वम् । क्षः । ग्रहीतुमिच्छति-जिघृक्षति ॥ सुषुप्सति । प्रच्छ  
जीप्सायाम् ॥ १०८४ कृगृधृदप्रच्छसिडञ्चशुडतीनां सस्येड्  
वक्तव्यः १० ॥ पिपृच्छिषति ॥ करितुमिच्छति-चिकरिषति ।  
जिगरिषति । जिगलिषति । दिदरिषति । दिधरिषति । सिस्मयिषति ।

‘खरादेः परः’ (सू० १०३८) अञ्जिजिषति । अंशिशिषते । अरि-  
रिषति । अद भक्षणे । ‘सिसयोः’ (सू० ८८४) इति घसादेशः ।  
‘सस्तोऽनपि’ (सू० ८३२) अत्तुमिच्छति-जिघत्सति ॥ १०८५  
हन्तीडोः सो णित् ११ ॥ हन्तीडोर्धात्वोः सो णिद्भवति ॥ हन्  
हिंसागत्योः । द्वित्वम् । ‘पूर्वस्य हसादिः शेषः’ (सू० ७३९) ‘कुहोश्चुः’  
(सू० ७४६) ‘ज्ञपानां जबचपाः’ (सू० ७१४) । ‘यः से’ (सू० ८४०)  
‘हनो मे’ (सू० २६२) ‘अत उपधायाः’ (सू० ७५७) ‘नश्चा-  
पदान्ते ज्ञसे’ (सू० ९५) । ‘स धातुः’ (सू० ७८२) । ‘अप्’ (सू०  
६९१) । ‘अदे’ (सू० ६९५) हन्तुमिच्छति-जिघांसति ॥ १०८६-  
इडः से गम् वाच्यः १२ ॥ अध्येतुमिच्छति-अधिजिगांसते ॥  
१०८७ गमेः से इङ्वाच्यः १३ ॥ गन्तुमिच्छति-जिगमिषति ॥  
१०८८ इस्से १४ ॥ अपिद्वाधारभूलभृशकृपदृपत्मीमिमामाङ्मे-  
ङ्गहिंसार्थराधां खरस्य से परे इसादेशो भवति पूर्वस्य च लोपः ॥  
दित्सति । पित्सति । ‘स्कोराद्योश्च’ (सू० ३०१) खसे चपा’ (सू०  
८९) रिप्सति । लिप्सति । शिक्षते । पित्सते ॥ १०८९ पतो वेट्  
१५ ॥ पित्सति । पिपतिषति । इट्पक्षे इत्पूर्वलोपौ न भवतः ॥ मीञ्  
हिंसायाम् । डुमिञ् प्रक्षेपे । मित्सति । माङ् माने । मेङ् शोधने ।  
मित्सते । राघ संसिद्धौ । रित्सति ॥ १०९० आप्नोतेरीः १६ ॥  
आप्नोतेराकारस्येकारो भवति से परे पूर्वस्य च लोपः ॥ आप्ल  
व्याप्तौ । ईप्सते ॥ १०९१ अशेरनायो वा १७ ॥ अशेरिच्छायां  
संस्थाने वा अनायप्रत्ययो भवति ॥ अशनायति । अशिशिषति ॥  
१०९२ पततनदरिद्राम्यः से वा इङ्वाच्यः १८ ॥ तितनिषति ।  
तितंसति ॥ १०९३ तनेः से वा दीर्घः १९ ॥ तितांसति ।  
दिदरिद्रिषति । दिदरिद्रासति ॥ १०९४ वेडिस्से दीर्घता च

२० ॥ दम्भिज्ञप्योर्धात्वोर्वा इड् भवति सप्रत्यये परे ॥ यदा नेट्  
तदा किम् ? । अनयोर्दम्भिज्ञप्योर्धात्वोः सानुस्वारस्य स्वरस्य इस्  
भवति इकारस्य दीर्घता । दम्भेरिकारस्य वा दीर्घता । चकारात्पूर्वस्य  
लोपः ॥ दम्भ दम्भने । आत्मनः दम्भितुमिच्छति—दिदम्भिषति ।  
द्वित्वम् । इस् । ‘आदिजवानाम्’ (सू० २३९) । ‘स्वसे चपा ज्ञसानाम्’  
(सू० ८९) ‘स्कोराद्योश्च’ (सू० ३०१) वा दीर्घता । धीप्सति—  
धिप्सति । ज्ञाऽवबोधने । ‘इच्छायामात्मनः सः’ (सू० १०७५) ।  
‘द्विश्च’ (सू० ७१०) ‘ह्रस्वः’ (सू० ७१३) ‘पूर्वस्य ह्रसादिः शेषः’  
(सू० ७३९) । ‘यः से’ (सू० ८४०) । वा इट् । ‘गुणः’ (सू०  
६९२) ‘ए अय्’ (सू० ४१) । ‘स्वरहीनम्’ (सू० ३६) षत्वम् ।  
‘स धातुः’ (सू० ७८२) ‘तिप् अप्’ (सू० ६९१) । ‘अदे’ (सू०  
६९५) आत्मनः ज्ञापयितुमिच्छतीति—जिज्ञापयिषति । पक्षे ।  
जिज्ञापि स इति स्थिते । सस्य इस् तस्य दीर्घता । पूर्वस्य लोपः ।  
‘जेः’ (सू० ८४४) ‘स्कोराद्योश्च’ (सू० ३०१) । ज्ञीप्सति । ज्ञप  
ज्ञानज्ञापनयोः । जिज्ञापयिषति । ‘मितां ह्रस्वः’ (सू० १०६७)  
जिज्ञपयिषति । ज्ञीप्सति ॥ इति सप्रक्रिया ॥ २८ ॥

### यङ्प्रक्रिया २९ ॥

अथ यङ्प्रक्रिया निरूप्यते ॥ १०९५ अतिशये ह्रसादेर्यङ् द्विश्च  
१ ॥ ह्रसादेरेकस्वराद्धातोरतिशयेऽर्थे यङ् प्रत्ययो भवति तस्मिन्सति  
धातोर्द्वित्वम् ॥ १०९६ यङि २ ॥ यङि सति लुकि च पूर्वस्य नामिनो  
गुणो भवति ॥ ‘स धातुः’ (सू० ७८२) ङित्वादात्मनेपदम् । अप्  
(सू० ६९१) अतिशयेन भवतीति—बोभूयते । बोभूयेत । बोभूयताम् ।  
अबोभूयत । बोभूयांचक्रे । बोभूयिषीष्ट । बोभूयिता । बोभूयि-

प्यते । अबोभूयिष्यत । अबोभूयिष्ट । बोभुज्यते ॥ १०९७ अनपि  
च हसात् ३ ॥ हसादुत्तरस्य यङो लुम्भवति अनपि विषये ॥  
१०९८ धात्वंशलोपनिमित्ते आर्धधातुके परे तन्निमित्ते समा-  
ननामिनां गुणवृद्धी न वाच्ये ४ ॥ बोभुजांचक्रे । मुह वैचिले ।  
मोमुह्यते । लिह आस्वादने । लेलिह्यते । हु दानादनयोः । जोहू-  
यते । विद ज्ञाने । वेविद्यते ॥ १०९९ आतः ५ ॥ यङि लुकि  
च सति पूर्वस्य अकारस्य आकारो भवति अकिति । पापच्यते । पठ  
व्यक्तायां वाचि । पापठ्यते ॥ ११०० सूचिसूत्रिमूत्र्यत्यर्थशूर्णो-  
तिभ्यो यङ् वाच्यः ६ ॥ सोसूच्यते । सोसूत्र्यते । मोमूत्र्यते ॥  
गत्यर्थात्कौटिल्य एव यङ् । 'स्वरादेः परः' ( सू० १०३८ ) अट  
गतौ । यङ्सहितस्य द्वित्वम् । अट् अट् इति स्थिते । 'पूर्वस्य  
हसादिः शेषः' ( सू० ७४९ ) 'आतः' ( सू० १०९० ) । इति  
पूर्वस्यात्वम् । कुटिलं अटतीति-अटाठ्यते । अटाटांचक्रे । अटाटि-  
षीष्ट । व्रज गतौ । कुटिलं व्रजतीति-वाव्रज्यते । अश्र भोजने ।  
अशास्यते । ऊर्णुञ् आच्छादने । ऊर्णोनूयते । 'स्वरात्पराः संयोगा-  
दयो नदरा द्विर्न' ( सू० ९३९ ) 'गुणोर्तिसंयोगाद्योः' ( सू० ८१२ )  
॥ ११०१ यकारपरस्य रेफस्य द्वित्वं वाच्यम् ७ ॥ अरार्यते ॥  
११०२ लुप्सदचरजपजभदहदशगृभ्यो धात्वर्थगर्हायामेव यङ्  
८ ॥ गर्हितं लुम्पतीति-लोलुप्यते । सासद्यते ॥ ११०३ जमज-  
पां नुक् ९ ॥ अमान्तस्य जपादीनां च पूर्वस्य नुगागमो भवति  
यङि लुकि च सति ॥ 'जप् जभू दह दंश् भञ् पश्' एते जपा-  
दयः ॥ जङ्गम्यते । बम्भज्यते ॥ अङ्गसेऽप्यनुस्वारः । आदेशिना  
आदेशो निर्दिश्यते । यंयम्यते । कण शब्दे । चङ्कप्यते ।  
तन्तन्यते । जप मानसे च । गर्हितं जपतीति-जङ्गप्यते । जभ

गात्रविनामे । जभतीति-जञ्जभ्यते । दह भस्मीकरणे ।  
 दन्दद्व्यते । 'नो लोपः' (सू० ७४२) दन्दद्व्यते । बम्भज्यते ।  
 पश्यतीति-पम्पश्यते । पश् बाधनग्रन्थनयोः ॥ ११०४ चरफलो-  
 रुच्चास्य १० ॥ अनयोर्यङि लुकि च सति पूर्वस्य नुगागमो भवति  
 पूर्वात्परस्य अकारस्य उकारः ॥ चञ्चूर्यते । फल निष्पत्तौ । पम्फु-  
 ल्यते ॥ ११०५ बलयान्तस्य वा नुक् ११ ॥ मव स्थौल्ये । मम-  
 व्यते-मामव्यते । चल कम्पने । चञ्चल्यते । चाचल्यते । दयङ् दाने ।  
 दन्दग्यते-दादग्यते ॥ ११०६ रीगृदुपधस्य १२ ॥ ऋकारोपधस्य  
 धातोर्यङि सति पूर्वस्य रीगागमो भवति ॥ कित्वादाकाराभावः ॥  
 नृती गात्रविक्षेपे । अतिशयेन नृत्यति-नरीनृत्यते नटः ११०७  
 अत्र णत्वाभावो वाच्यः १३ ॥ वृत्तुङ् वर्तने । वरीवृत्यते । ग्रह  
 उपादाने । जरीगृह्यते ॥ ११०८ ऋत्वतो रीगवाच्यः १४ ॥  
 ओत्रश्चू छेदने । वरीवृश्च्यते । प्रच्छ जीप्सायाम् । परीपृच्छयते ।  
 कृपू सामर्थ्ये । 'कृपो रो लः' (सू० ८५७) ऋलृ । चरीकृप्यते ।  
 ११०९ वशोर्यङि न संप्रसारणम् १५ ॥ वावश्यते ॥ १११०  
 पदसंसुध्वंसुध्रंसुदंशुकस्रवश्चुपतस्कन्दां यङि लुकि च सति  
 पूर्वस्य नीगागमो वाच्यः १६ ॥ पनीपद्यते । 'नो लोपः' (सू०  
 ७४२) संसु ध्वंसु अधःपतने । सनीस्यते । दनीध्वस्यते । बनी-  
 अस्यते । वश्चु वश्चने । वनीवच्यते । दनीदस्यते । चनीकस्यते ।  
 पनीपत्यते । चनीस्कद्यते ॥ ११११ ऋतो रिः १७ ॥ ऋकारस्य  
 रिरादेशो भवति यङि सति ॥ ततो द्वित्वम् । 'ये' (सू० ७७९)  
 चेक्रीयते । चेक्रीयंचक्रे । जेहीयते ॥ १११२ दादेरिः १८ ॥  
 अपिहाधामाडोहाकृपिन्नसोस्थानामिकारो भवति किति ङिति हसे  
 परे ॥ देदीयते । देदीयांचक्रे ॥ 'ये' (सू० ७७९) देधीयते । मेमी-

यते । जेगीयते । जेहीयते । पेपीयते । सेषीयते । तेष्ठीयते ॥  
 १११३ घ्राध्मोरीः १९ ॥ अनयोरीकारो भवति यङि सति ॥  
 जेष्ठीयते । देष्मीयते ॥ १११४ हन्तेर्हिंसायां घ्री वा वाच्यः  
 २० ॥ जेष्ठीयते ॥ 'अमजपां नुक्' (सू० ११०३) १११५ द्विरु-  
 क्तस्य हन्तेः कुत्वं वाच्यम् २१ ॥ जङ्घन्यते ॥ १११६ चायो यङि  
 की वाच्यः २२ ॥ चायु सन्तानपालनयोः । चेकीयते ॥ १११७  
 क्वतेर्यङि चुत्वाभावो वाच्यः २३ ॥ कु शब्दे । कोकूयते ॥ १११८  
 शीङोऽयङ् कृति ये वक्तव्यः २४ ॥ शाशय्यते । ढौकृ गतौ ।  
 ढोढौक्यते ॥ त्रौकृ गतौ । तोत्रौक्यते ॥ इति यङ्प्रक्रिया ॥ २९ ॥

### यङ्लुक्प्रक्रिया ३०

अथ यङ्लुक्प्रक्रिया निरूप्यते ॥ १११९ वान्यत्र लुगनुवर्तते  
 १ ॥ अन्यत्रेत्यच्प्रत्ययसंयोगं विनापि वा यङो लुगभवति ॥ ११२०  
 लुकि सति पिति त्सि वा ईकारो वक्तव्यः २ ॥ बोभवीति-बोभोति  
 बोभूतः, बोभुवति । यङ्लुगन्तं परस्मैपदं ह्यादिवच्च द्रष्टव्यम् । ह्यादित्वादपो  
 लुक् द्वित्वमपि ज्ञातव्यम् । बोभूयात् ॥ बोभवीतु-बोभोतु, बोभूतात्,  
 बोभूताम्, बोभुवतु । अबोभवीत् । अबोभोत्, अबोभूताम्, अबोभुवुः ।  
 बोभवांचकार । बोभूयात् । बोभविता । बोभविष्यति । अबोभवि-  
 ष्यत् । 'दादेः पे' (सू० ७२५) गुणं बाधित्वा नित्यत्वादुक् ।  
 अबोभूवीत्-अबोभोत्, अबोभूताम्, अबोभूवुः । पापचीति-पापक्ति,  
 पापक्तः, पापचति । पापच्यात् । पापचीतु-पापक्तु । 'झसाद्धिर्हेः' (सू०  
 ८८१) पापग्धि । अपापचीत् । अपापक् । पापचांचकार । पापच्यात् ।  
 पापचिता । पापचिष्यति । अपापचिष्यत् । अपापचीत् ॥ ११२१ द्वेः  
 ३ ॥ द्विरुक्तस्य पिति सार्वधातुके स्वरेऽपि नोपधाया गुणः । बोभु-

जीति-बोभोक्ति । अबोभुजीत्-अबोभोक् ॥ वावदीति-वावत्ति । जाघ-  
टीति-जाघट्टि ॥ ११२२ ऋकारान्तानामृदुपधानां च यङ्लुकि  
सति पूर्वस्य रुक् रिक् रीक् आगमा वक्तव्याः ४ ॥ 'रः' (सू०  
७६८) डुकृञ् करणे । चर्करीति-चरिकरीति-चरीकरीति । चर्कृति-  
चरिकृति-चरीकृति । चर्कृतः-चरिकृतः-चरीकृतः । चर्कति-चरिकति  
चरीकति । अचर्करीत्-अचरिकरीत्-अचरीकरीत् । वर्वृतीति-वरि-  
वृतीति-वरीवृतीति । वर्वृति-वरिवृति-वरीवृति । अवर्वृतीत्-अवरिवृती-  
त्-अवरीवृतीत् ॥ ११२३ रात्सस्य ५ ॥ रेफादुत्तरस्य सस्यैव लोपो  
नान्यस्य । अवर्वर्त्-अवरिवर्त्-अवरीवर्त् । अवर्वृताम्-अवरिवृताम्-  
अवरीवृताम् । वर्वर्ताञ्चकार-वरिवर्ताञ्चकार-वरीवर्ताञ्चकार । वनीव-  
ञ्चीति-वनीवञ्क्ति । 'नो लोपः' (सू० ७४२) वनीवक्तः । वनीवचति ।  
जङ्गमीति-जङ्गन्ति । 'लोपस्त्वनुदात्ततनाम्' (सू० ८८६) जङ्गतः ।  
'गमां खरे' (सू० ७८९) जङ्गमति । धातुग्रहणोक्तं यङ्लुकि वेति  
केचित् । जङ्गमति-जङ्गमीति ॥ ११२४ मो नो धातोः ६ ॥  
धातोर्मकारस्य नकारो भवति श्लेसे पदान्तवमयोश्च ॥ जङ्गन्मि,  
जङ्गन्वः, जङ्गन्मः ॥ ११२५ द्विरुक्तस्य हन्तेः कुत्वं वाच्यम् ७ ॥  
जङ्गनीति-जङ्गन्ति, जङ्गतः, जङ्गति । जाहेति-जाहाति, जाहीतः,  
जाहति । एवं दाधेतीत्यादि । दादेति-दादाति, दादत्तः, दादति ।  
दादेतु । दादेयात् । अदादात् । एवं घेद् । दाधेति-दाधाति, दाद्धः,  
दाधति । दाधेयात् । अदाधासीत्-अदाधात्-अदाधत् । धाञ् ।  
दाधाति, धत्तः । पितोस्तु । दादेति, दादीतः । दादीहि । दादा-  
यात् । अदादासीत् । जहातेः पूर्वस्य दीर्घो वेति केचित् ॥ जहाति  
॥ इति यङ्लुक्प्रक्रिया ॥ ३० ॥



### नामधातुप्रक्रिया ३१

अथ नामधातुप्रक्रिया ॥ ११२६ नाम्नो य ई चास्य १ ॥ नाम्न  
इच्छायामर्थे यः प्रत्ययो भवति तत्सन्नियोगे चाकारस्य ईकारः ॥  
आत्मनः पुत्रमिच्छतीति-पुत्रीयति । पुत्रीयेत् । पुत्रीयतु । अपुत्री-  
यत्-इत्यादि ॥ ११२७ यादौ प्रत्यये ओकारौकारयोरवावौ  
वक्तव्यौ २ ॥ गां इच्छतीति गव्यति-नावं इच्छतीति-नाव्यति ।  
त्वद्यति । मद्यति । युष्मद्यति । अस्मद्यति । धनीयति ॥ ११२८  
काम्यश्च ३ ॥ पुत्रं इच्छति-पुत्रकाम्यति । गव्याश्चकार ॥ ११२९  
यकारस्यानपि वा लोपो वाच्यः ४ ॥ गवांचकार । गव्यात् ।  
गव्यिता-गविता । अगव्यात्-अगवीत्, अगव्यिष्टाम्-अगविष्टाम्, अग-  
व्यिषुः-अगविषुः ॥ नाव्यात् । नाव्यिता-नाविता । अनाव्यात्-अनावीत् ॥  
११३० हसात्तद्धितस्य लोपो ये ५ ॥ गार्गीयति । वाच्यति ॥ ११३१  
हसाद्यस्य लोपो वाऽनपि ६ ॥ समिध्यिता-समिधिता ॥ ११३२  
मान्ताव्ययाभ्यां यो न ७ ॥ किमिच्छति । इदमिच्छति । स्वरि-  
च्छति ॥ ११३३ करणे च ८ ॥ नाम्नः करणेऽर्थे यः प्रत्ययो  
भवति ॥ कण्डूं करोतीति-कण्डूयति । नमस्यति । तपस्यति ॥  
वरिवस्यति-गुरून् शुश्रूषत इत्यर्थः ॥ ११३४ क्षीरलवणयोस्तृ-  
ष्णायां यः सुट् च ९ ॥ क्षीरस्यति । लवणस्यति ॥ ११३५ शब्दा-  
दिभ्यो यङ् १० ॥ 'ये' ( सू० ७७९ ) शब्दायते । वैरायते । कल-  
हायते । अत्रायते । मेघायते । कष्टायते ॥ ११३६ ऊष्मबाष्पा-  
भ्यामुद्गमने यङ् वाच्यः ११ ॥ ऊष्माणमुद्गमति-ऊष्मायते ।  
बाष्पायते ॥ ११३७ जिडित्करणे १२ ॥ नाम्नौ जिः प्रत्ययो  
भवति करणेऽर्थे स च डित् ॥ अकार उभयपदार्थः । घटं करोतीति-  
घटयति । अग्लोपिनो नाङ्कार्यम् । अजघटत् । महान्तं करोतीति-

महयति । अममहत् ॥ ११३८ जाविष्ठवत्कार्यम् १३ ॥ ११३९  
 पृथ्वादेरः १४ ॥ पृथ्वादेर्ऋकारस्य रो भवति औ परे ॥ पृथुं करोति—  
 प्रथयति । म्रदयति । दृढयति । स्थूलं करोति—स्थवयति । ‘अङि लघौ  
 ह्रस्व उपधायाः’ (सू० ८४५) अतिस्थवत् । दवयति । अदीदवत् ।  
 प्रियं करोति—प्रापयति । गुरुं करोति—गरयति । स्थिरं करोति  
 स्थापयति । ऊढिं करोतीति—ऊढयति । ‘जेरङ् द्विश्च’ (सू० ८४३)  
 ‘जेः’ (सू० ८४४) । ‘स्वरादेः परः’ (१०३८) अङि पूर्वस्य ढस्य  
 वा जः । औढिढत्-औजिढत् । ऊढं करोति—ऊढयति ॥

वहः कृतक्तौ कृतसंप्रसारे हो ढस्तथोर्धः

घुभिना ढि ढश्च ॥ ऊढिश्च जिडित्कारणे

स घातुर्जेरङ् स्वरादेर्ढज औजढच्च ॥ २० ॥

औजढत् ॥ ११४० कर्तुर्यङ् १५ ॥ कर्तुरुपमानादाचारेऽर्थे  
 यङ् प्रत्ययो भवति ॥ श्येन इव आचरतीति—श्येनायते काकः ।  
 पण्डितायते मूर्खः ॥ ११४१ यङि सलोपो वाच्यः १६ ॥  
 ११४२ पयसस्तु विभाषया १७ ॥ अप्सरायते । ओजायते ।  
 पयायते-पयस्यते । सुमनायते ॥ ११४३ नाम्न आचारे क्तिब्  
 वाच्यः १८ ॥ कृष्ण इव आचरति—कृष्णति । क्तिपो लोपः ॥  
 ११४४ आचार उपमानात् १९ ॥ कर्माधारयोरुपमानात् यः  
 प्रत्ययो भवति आचारेऽर्थे ॥ अकारस्येकारः । पुत्रीयति शिष्यमु-  
 पाध्यायः । प्रासादीयति कुट्याम् ॥ ११४५ भृशादिभ्योऽभूत-  
 तद्भावे यङ्वाच्यः २० ॥ अभृशो भृशो भवतीति—भृशायते ।  
 श्यामायते—इत्यादि ॥ ११४६ अश्ववृषयोर्मैथुनेच्छायां यः प्रत्ययः  
 सुगागमश्च २१ ॥ अश्वस्यति वडवा । वृषस्यति गौः ॥ ११४७

सुखादिभ्यो ज्ञापनायां यङ् २२ ॥ सुखं ज्ञापयति-सुखायते ॥  
इति नामधातुप्रक्रिया ॥ ३१ ॥

### आत्मनेपदप्रक्रिया ३२

अथात्मनेपदव्यवस्था ॥ ११४८ निविशादेः १ ॥ नीत्याद्युपस-  
र्गपूर्वकाद्विशादेर्धातोरात्मनेपदं भवति ॥ निविशते ॥ ११४९ विप-  
राभ्यां जेः २ ॥ विजयते । पराजयते ॥ ११५० समो गमादि-  
भ्यः ३ ॥ संगच्छते ॥ ११५१ गमः परौ सिस्थौ आत्मनेपदे  
वा कितौ वाच्यौ ४ ॥ 'लोपस्त्वनुदात्तनाम्' ( सू० ८८६ ) संग-  
सीष्ट-संगंसीष्ट । 'लोपो ह्रस्वाज्ज्ञसे' ( सू० ८५२ ) समगत-समगंस्त ।  
ऋच्छ गतीन्द्रियप्रलयमूर्तिभावेषु । समृच्छते । संपृच्छते । स्मृ शब्दो-  
पतापयोः । संस्वरते । संस्वृषीष्ट-सस्वरिषीष्ट । समियृते । संशृणुते ।  
संविच्ते, संविदाते ॥ ११५२ विच्तेरन्तो वा रुद् अति ५ ॥  
संविद्रते । संविदते । संपश्यते । 'गम ऋच्छ पृच्छ स्मृ ऋ श्रु  
विद दृश' एते गमादयः ॥ ११५३ आडो दोऽनास्यविहरणे ६ ॥  
आङ्पूर्वाद्ददातेरात्मनेपदं भवति मुखप्रसारणव्यतिरिक्तेऽर्थे ॥ आदत्ते-  
मुखं व्याददाति । अत्र न ॥ ११५४ क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च ७ ॥  
अनुसंपरिभ्यः क्रीडतेरात्मनेपदं स्यात् ॥ क्रीड विहारे शब्दे च ।  
अनुक्रीडते । संक्रीडते । परिक्रीडते ॥ ११५५ शब्दे तु न ८ ॥  
संक्रीडति चक्रम् ॥ ११५६ समवप्रोपविभ्यः स्थः ९ ॥ एभ्यस्ति-  
ष्ठतेरात्मनेपदं भवति ॥ सन्तिष्ठते । अवतिष्ठते । प्रतिष्ठते । उपतिष्ठते ।  
वितिष्ठते ॥ ११५७ आडो यमहनः १० ॥ आङ्परयोर्यमहनोरा-  
त्मनेपदं भवति ॥ आयच्छते । आहते । अकर्मकयोरात्माङ्कर्मकयोर्वा ॥  
आयच्छते पाणिम् । आहते शिरः । अन्यथा परशिर आयच्छति ।

शत्रुमाहन्ति ॥ ११५८ हन्तेरात्मनेपदे सिः किद्वाच्यः ११ ॥ 'नो लोपः' ( सू० ७४२ ) आहत । 'लोपस्त्वनुदात्ततनाम्' ( सू० ८८६ ) ॥ ११५९ हन्तेः स्याशीर्यादाद्योर्वधादेश आति वा १२ ॥ अवधिष्ट ॥ ११६० उद्विभ्यां तपः १३ ॥ उद्विभ्यां परस्याकर्म-  
कस्यात्माङ्गकर्मकस्य वा तपतेरात्मनेपदं भवति ॥ उत्तपते वितपते पाणिम् । अन्यथा,—महीं वितपत्यर्कः ॥ ११६१ उदश्चरस्त्यागे १४ ॥ उत्पूर्वाच्चरतेस्त्यागेऽर्थे आत्मनेपदं भवति ॥ धर्ममुच्चरते, त्यजती-  
त्यर्थः ॥ त्यागे किम् ? । मन्त्रमुच्चरति ॥ ११६२ समस्तृतीयायुक्ताच्च १५ ॥ संपूर्वाच्चरतेस्तृतीयान्तेन पदेन युक्तादात्मनेपदं भवति ॥ अश्वेन संचरते ॥ ११६३ व्यवपरिभ्यः क्रीजः १६ ॥ एभ्यः क्रीणाते-  
रात्मनेपदं भवति ॥ विक्रीणीते । अवक्रीणीते । परिक्रीणीते ॥ ११६४ शप उपालम्भे १७ ॥ उपालम्भेऽर्थे शपतेरात्मनेपदं भवति ॥ वाचा शरीरस्पर्शनमुपालम्भः । विप्राय शपते । विप्रशरीरं स्पृशति, शपथं करोतीत्यर्थः ॥ उपालम्भे किम् ? । दुष्टं शपति, शापं ददातीत्यर्थः ॥ ११६५ ज्ञाश्रुस्मृद्दशां सान्तानामात् १८ ॥ सप्रत्ययान्तानामेषामात्मनेपदं भवति ॥ 'यः से' ( सू० ८४० ) जिज्ञा-  
सते । शुश्रूषते । सुस्मूषते । दिदृक्षते ॥ ११६६ अनुपसर्गाजा-  
नातेरात्मगामिनि फले आत्मनेपदं वाच्यम् १९ ॥ गां जानीते ॥ ११६७ कर्मव्यतिहारेऽन्यत्र हिंसादेरात् २० ॥ कर्मव्यतिहारेऽर्थे वाच्ये हिंसार्थान् गत्यर्थान्पठजरूपहसान् विहाय इतरेतरान्योन्यपर-  
स्परपदाभावे सर्वेभ्यो धातुभ्य आत्मनेपदं भवति ॥ परस्परमेकक्रिया-  
करणं=कर्मव्यतिहारः । श्रद्धा=आस्तिक्यबुद्धिः । श्रद्धा व्यतिभवते, पर-  
स्परं भवतीत्यर्थः । व्यतिस्ते । विवदन्ते वादिनः । अन्यत्रेति किम् ? । व्य-  
तिघ्नन्ति । व्यतिगच्छन्ति । व्यतिपठन्ति । व्यतिजरूपन्ति । व्यतिहसन्ति ।

इतरेतरं परस्परं अन्योन्यं वा व्यतिलुनन्ति ॥ ११६८ भुजो भोजने  
आत्मनेपदं वाच्यम् २१ ॥ भुङ्क्ते ओदनम् । भुनक्ति महीं नृपः ॥  
इत्यात्मनेपदव्यवस्थाप्रक्रिया ॥ ३२ ॥

### भावकर्मप्रक्रिया ३३

अथ भावकर्मणोर्येकि प्रक्रिया ॥ ११६९ यक् चतुर्षु १ ॥  
धातोर्भावे कर्मणि च यक् प्रत्ययो भवति चतुर्षु पूर्वोक्तेषु परतः ॥  
ककारो गुणप्रतिषेधार्थः ॥ ११७० आद् भुवि कर्मणि २ ॥ अक-  
र्मकेभ्यो भुवि भावे सकर्मकेभ्यश्च कर्मण्यात्मनेपदं भवति ॥ ये  
कर्मनिरपेक्षां क्रियामाहुस्ते अकर्मकाः—भूएष् आस्शीङ्प्रभृतयः ।  
तदुक्तम्—

लज्जासत्तास्थितिजागरणं वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम् ।

शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्थं धातुगणं तमकर्मकमाहुः ॥ २१ ॥

भावस्यैकत्वादेकवचनमेव भवति प्रथमपुरुषस्य । भूयते भवता ।  
भूयेत भूयताम् । अभूयत । बभूवे ॥ ११७१ स्वरान्तानां हन्ग्रहदृशां  
च भावकर्मणोः सिसतासीत्यपामिट् वा इण् वक्तव्यः ३ ॥ वाश-  
ब्दात्सेटां धातूनां नित्यमिट् स विकल्पेन णित् । अनिटां धातूनां  
विकल्पेन इट् स नित्यं णित् ॥ एवं च हन्ग्रहशोरनिटोर्वा इट् स च  
नित्यं णित् । ग्रहधातुस्तु सेट् । ततः परो नित्यमिट् स च वा णित् ।  
णित्त्वाद्बुद्धिः । भाविषीष्ट । णित्त्वाभावे । भविषीष्ट । भाविता-  
भविता । भाविष्यते—भविष्यते । अभाविष्यत—अभविष्यत ॥ ११७२  
इण्तन्यकर्तरि ४ ॥ धातोस्तानि परे भावे कर्मणि च इण् प्रत्ययो  
भवति ॥ सेरपवादः । णो वृद्ध्यर्थः ॥ ११७३ लोपः ५ ॥ इण्संयोगे

तनो लोपो भवति ॥ अभावि ॥ अकर्मकोऽपि कदाचित् सकर्मकता-  
मनुभवति । उक्तं च—

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।

विहाराहारसंहारपरिहारप्रहारवत् ॥ २२ ॥

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित्तमनुवर्तते ।

विशिनाष्टि तमेवार्थमुपसर्गगतिस्त्रिधा ॥ २३ ॥

सुखमनुभूयते स्वामिना । अन्वभावि भवो भवता । अन्वभावि-  
षाताम्-अन्वभविषाताम् । अन्वभाविषत-अन्वभविषत ॥ ११७४  
शीङोऽयङ् किति ङिति ये वक्तव्यः ६ ॥ शय्यते ।  
शिष्ये । शायिषीष्ट-शयिषीष्ट । अशायि । अन्वशायि, अन्वशा-  
यिषाताम्-अन्वशयिषाताम्, अन्वशायिषत-अन्वशयिषत ॥ ये कर्म-  
सापेक्षां क्रियामाहुस्ते सकर्मकाः । यकि । घटः क्रियते देव-  
दत्तेन । त्वं दुःखी क्रियसे रागैः । विरागैः सुख्यहं क्रिये ।  
चक्रे । कारिषीष्ट । कृषीष्ट । कारिता-कर्ता । कारिष्यते-  
करिष्यते । अकारिष्यत-अकरिष्यत । अकारि, अकारिषाताम्-  
अकृषाताम्, अकारिषत-अकृषत । चिञ् चयने । चीयते । चिच्ये ।  
चायिषीष्ट-चेषीष्ट । चायिता-चेता । चायिष्यते-चेष्यते । अचा-  
यिष्यत-अचेष्यत । अचायि, अचायिषाताम्-अचेषाताम् । 'दादेरिः'  
(सू० १११२) दीयते । ददे, ददाते, ददिरे ॥ ११७५ आतो  
युक् ७ ॥ आकारान्ताद्धातोर्युगागमो भवति ञिति णिति च परे ॥  
दायिषीष्ट-दासीष्ट । दायिता-दाता । दायिष्यते-दास्यते । अदायि,  
अदायिषाताम् । दाधास्थामित्वम् । अदिषाताम् । धीयते । अधायि,  
अधायिषाताम् । अधिषाताम् । स्थीयते । अस्थायि । स्तूयते । तुष्टुवे ।  
अस्तावि, अस्ताविषाताम्-अस्तोषाताम् हरिहरौ भक्तेन । हन्यते ।

‘हनो ज्ञे’ (सू० २६२) जज्ञे । घानिषीष्ट-हंसीष्ट ॥ ११७६ हन्तेः  
 स्याशीर्यादाद्योर्वधादेशो वक्तव्य आति वा ८ ॥ बधिषीष्ट ॥  
 घानिता-हन्ता । घानिष्यते-हनिष्यते । अघानिष्यत-अहनिष्यत ।  
 अघानि, अघानिषाताम् ॥ ११७७ हन आत्मनेपदे सिः किद्वा-  
 च्यः ९ ॥ ‘लोपस्त्वनुदात्ततनाम्’ (सू० ८८६) अहसाताम् । अघानि-  
 षत-अहसत । अवधि, अवधिषाताम् । ‘ग्रहां किति च’ (सू० ८७३)  
 गृह्यते । जगृहे । ग्राहिषीष्ट । ‘ईटो ग्रहाम्’ (सू० ८२१) ग्रहीषीष्ट ।  
 ग्राहिता-ग्रहीता । ग्राहिष्यते-ग्रहीष्यते । अग्राहिष्यत-अग्रहीष्यत  
 अग्राहि, अग्राहिषातां-अग्रहीषाताम् । दृश्यते । ददृशे । दर्शिषीष्ट-  
 दृक्षीष्ट । दर्शिता-द्रष्टा । दर्शिष्यते-द्रक्ष्यते । अदर्शि, अदर्शिषातां-अदृ-  
 क्षाताम् । डुपचष् पाके । पच्यते । पेचे । पक्षीष्ट । पक्तां । पक्ष्यते ।  
 अपक्ष्यत । अपाचि, अपक्षाताम् ॥ ११७८ तनोतेर्नो वा १० ॥  
 तनोतेर्नकारस्य वा आकारो भवति यकि परे ॥ तायते-तन्यते ।  
 तेने । अतानि, अतानिषातां-अतनिषाताम् । भञ्जो आमर्दने । ‘नो लोपः’  
 (सू० ७४२) भज्यते । अकिच्चात् बभञ्जे । भङ्गीष्ट । भङ्गा ।  
 भङ्क्ष्यते ॥ ११७९ भञ्जेरिणि वा नलोपो वाच्यः ११ ॥  
 अभञ्जि-अभाजि । शम उपशमे । शम्यते मुनिना । ‘धातोः प्रेरणे’  
 (सू० १०४२) । ‘मितां ह्रस्वः’ (सू० १०३५) ‘जेः’ (सू० ८४४)  
 शम्यते मोहो हरिणा । शमयांचक्रे ॥ ११८० ज्यन्तानां मिता-  
 मिणि णिदिटि च वा वृद्धिर्वाच्या णिदिटि जिलोपश्च १२ ॥  
 अशमि-अशामि, अशामिषातां-अशमिषाताम् । णिद्वदिडभावपक्षे-  
 अशमयिषाताम् । ‘गुणोर्तिसंयोगाद्योः’ (सू० ८१२) अर्थ्यते । स्मर्यते ।  
 यत्कर्म गुणसंयोगात्कर्तृत्वेन विवक्ष्यते सः-कर्मकर्ता । तदुक्तम्—

क्रियमाणं तु यत्कर्म स्वयमेव प्रसिद्ध्यति ।

सुकरैः स्वैर्गुणैर्यस्मात्कर्मकर्तेति तद्विदुः ॥ २४ ॥

तत्राप्येतदेवोदाहरणम् ॥ ११८१ कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः  
१३ ॥ कर्मस्थया क्रियया तुल्यक्रियः कर्ता कर्मवद्भवति ॥ ल्यते  
केदारः स्वयमेव । लुलुवे । अलावि, अलाविषाताम् । पच्यते ओदनः  
स्वयमेव ॥ भिदिर् विदारणे । भिद्यते काष्ठं स्वयमेव । अभेदि ॥  
११८२ दुहस्तुनमां कर्मकर्तरि यगिणौ न १४ ॥ दुग्धे स्तुते  
गौः स्वयमेव । नमते दण्डः स्वयमेव । अदुग्ध । अस्रोष्ट । अस्त्रा-  
विष्ट । अनस्त ॥

॥ अथ द्विकर्मकाः ॥

दुह्यान्पचदण्डरुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथूमुषाम् ।

कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम् ॥ २५ ॥

न्यादयो ज्यन्तनिष्कर्मगत्यर्था मुख्यकर्मणि ।

प्रत्ययं यान्ति दुह्यादिगौणेऽन्ये तु यथारुचि ॥ २६ ॥

निन्ये विजनमजागरि

रजनीमगमि मदमयाचि संभोगम् ।

गोपी हास्यमकार्यत

भावश्चैनामनन्तेन ॥ २७ ॥

कर्तुरिष्टतमं प्रधानं कर्म । अन्यदप्रधानम् । नगरं नीयते नाग-  
रि कैर्वनेचरः । भोजनं याच्यते यजमानो याचकेन । पृच्छयते  
पन्थानं पथिकेन पान्थः । शिष्येणाचार्यस्तत्त्वं पृच्छयते । कटश्चि-  
कीर्ष्यते देवदत्तेन । 'यतः' (सू० ७८३) बोभूयते । 'अनपि च  
हसात्' (सू० १०९७) पापच्यते । तेन पापचिता । अपापचि-  
इत्यादि ॥ इति भावकर्मप्रक्रिया ॥ ३३ ॥



### लकारार्थप्रक्रिया ३४

अथ लकारार्थप्रक्रिया ॥ ॥ हठपौनःपुन्ययोर्लोष्मध्यमपुरुषै-  
कवचनान्तता निपात्यते । सर्वकाले सर्वपुरुषविषये अतीते काले ॥

पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनं

मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः ॥

विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली

य इत्थमस्वास्थ्यमहर्निशं दिवः ॥ २८ ॥

११८३ वर्तमानार्थाया अपि विभक्तेः स्मयोगे भूतार्थता  
वक्तव्या १ ॥ आह स हारीतः । यजति स युधिष्ठिरः ॥ ११८४  
वैचित्यापह्नवयोरल्पकालेऽपि णादिर्वक्तव्यः २ ॥ सुप्तोऽहं किल  
विललाप । नाहं कलिङ्गं जगाम ॥ ११८५ यावत्पुरानिपातयो-  
योगे भविष्यदर्थे तिबादयः लट् ३ ॥ पुरा करोति । यावत्क-  
रोति,—करिष्यतीत्यर्थः ॥ ११८६ स्मृत्यर्थधातुयोगे भूतेऽर्थे  
लृट् ४ ॥ स्मरसि मित्र ! यदुपकरिष्यसि,—उपकुरुथा इत्यर्थः ॥  
॥ इति लकारार्थप्रक्रिया ॥ ३४ ॥

धातूनामप्यनन्तत्वान्नानार्थत्वाच्च सर्वथा ।

अभिधातुमशक्यत्वादाख्यातख्यापनैरलम् ॥ २९ ॥

इति श्रीअनुभूतिस्वरूपाचार्यविरचितायां सारस्वतप्रक्रियाया-  
माख्यातप्रक्रिया समाप्ता ॥



# कृदन्तप्रकरणम् वृत्तिस्तृतीया

निजजनैर्विधिना निखिलापदो  
झटिति यो विनिवर्तयति स्मृतः ।

जलधिजापरिरम्भणलालसो

नरहरिः कुरुतां जगतां शिवम् ॥ १ ॥

अथ कृदन्तप्रक्रिया निरूप्यते ॥ ११८७ कृत्कर्तरि च ॥  
वक्ष्यमाणाः प्रत्ययाः कृत्संज्ञकास्ते कर्तरि च भवन्ति ॥ चकारा-  
द्भावकर्मणोरपि ॥ ११८८ स्वतन्त्रः कर्ता २ ॥ क्रियायां स्वात-  
न्येण विवक्षितोऽर्थः कर्ता स्यात् ॥ शुद्धो धात्वर्थो भावः ॥ 'कर्तु-  
रीप्सिततमं कर्म' (सू० ४१२) । 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' (सू०  
४१३) विषं भुङ्क्ते देवदत्तः । अन्नं भुङ्क्ते देवदत्तः ॥ ११८९  
तृवुणौ ३ ॥ धातोस्तृवुणौ प्रत्ययौ भवतः ॥ डुपचष् पाके ।  
पच् तृ इति स्थिते । 'चोः कुः' (सू० २८५) पक् तृ  
इति स्थिते । कृत्तद्धितसमासाश्च प्रातिपदिकसंज्ञा इति केचित् ।  
इति नामत्वम् । नामसंज्ञायां स्यादिविभक्तिर्भवति । 'स्तुराद्'  
(सू० १८९) । 'सेरा' (सू० १८४) पचतीति—पक्ता, पक्तारौ,  
पक्कारः । पक्कारम् । पुंलिङ्गे पक्ता । 'ष्ठितः' (सू० ३७४) स्त्रियां  
पक्नी । नपुंसके—पक्तृ, पक्तृणी, पक्तृणि—इत्यादि ॥ डुकृञ् करणे । करो-  
तीति—कर्ता । हृञ् हरणे । हरतीति—हर्ता । मृड् प्राणत्यागे । म्रियते  
इति—मर्ता । डुभृञ् धारणपोषणयोः । विभर्तीति—भर्ता ॥ ११९० कृतः

४ ॥ सेदधातोः परस्य कृत्प्रत्ययस्य वसादेरिडागमो भवति ॥ कृत  
इदं सूत्रं सेदधातुविषयम् ॥ 'स्वसूतिसूयतिधूञ् रधादीनामिडा वक्तव्यः'  
( सू० ७५२ ) धृञ् प्राणिप्रसवे । सूते वा सूयतेऽसौ-सोता-सविता ।  
स्व शब्दे । 'गुणः' ( सू० ६९२ ) वा इद् । स्वरतीति-स्वरिता-स्वर्ता ।  
धृञ् स्तुतौ । स्तौतीति-स्तोता । एध् वृद्धौ । एधतेऽसौ-एधिता ।  
यु मिश्रणे । यौतीति-यविता । रु शब्दे । रौतीति-रविता । णु  
स्तुतौ । नौतीति-नविता । भू सत्तायाम् । भवतीति-भविता । गुपू  
रक्षणे ॥ 'ऊदितो वा' ( सू० ७५१ ) ऊदितो धातोरिडा भवति ॥  
गोपायतीति-गोपिता-गोपायिता-गोप्ता । षिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च ।  
सेधिता-सेद्धा ॥ 'इषुसहलुभरिषरुषामनपि नस्येद्धा भवति' ( सू०  
७९२ ) इषु इच्छायाम् । इच्छतीति-एषिता-एष्टा । लुभू विमो-  
हने । लुभू गाद्धये । लुभ्यतीति-लोभिता । इडभावपक्षे- 'झवे जबाः'  
( सू० ३५ ) 'तथोर्धः' ( सू० ७५३ ) लुभ्यतीति-लोब्धा । रिषू  
बन्धने । रेषतीति वा रिष्यतीति-रेषिता-रेष्टा । रुष क्रोधे । रोष-  
तीति-रोषिता-रोष्टा । षह मर्षणे । 'आदेः णः स्त्रः' ( सू० ७४८ ) ।  
'हो ढः' ( सू० २४३ ) 'तथोर्धः' ( सू० ७५३ ) । 'ष्टुभिः छुः' ( सू०  
७९ ) 'ढि ढो लोपः' ( सू० ८०२ ) । 'सहिवहोरोदवर्णस्य' ( सू०  
८६१ ) सहतेऽसौ-सोढा । वह प्रापणे । वहतीति-वोढा ॥ ११९१  
युवोरनाकौ ५ ॥ यु वु इत्येतयोरन अक इत्येतावादेशौ भवतः यथा-  
संख्येन ॥ णित्त्वाद्बुद्धिः । 'अत उपधायाः' ( सू० ७५७ ) पचति वा  
पाचयतीति-पाचकः, पाचकौ, पाचकाः । देवशब्दवत् । पठति वा  
पाठयतीति-पाठकः । एवं याचते वा याचयतीति-याचकः । भवति  
वा भावयतीति-भावकः । लुनाति वा लावयतीति-लावकः । पुनाति

वा पावयतीति-पावकः । शृञ् श्रवणे । शृणोति वा श्रावयतीति-  
 श्रावकः । यु मिश्रणे । 'औ आव्' (सू० ४८) यौति वा यावयतीति-  
 यावकः । वध हिंसायाम् । वधतीति-वधकः । 'हनो घत्' (सू०  
 १०४६) हन्ति वा घातयतीति-घातकः । जायते वा जनयतीति-  
 जनकः । 'जनिवध्योर्न वृद्धिः' (सू० ८९०) । 'मितां ह्रस्वः' (सू० १०३५)  
 घटते वा घटयतीति-घटकः ॥ ११९२ आतो युक् ६ ॥ आका-  
 रान्ताद्धातोर्युगागमो भवति जिति णिति च परे ॥ डुदाञ् दाने ।  
 ददाति वा दत्तेऽसौ-दायकः । दैप् शोधने । 'सन्ध्यक्षराणामा-' (सू०  
 ८०३) दायतीति-दायकः ॥ ११९३ गुणस्युटौ हित्वा दरिद्रा-  
 तेरनप्यालोपो लुङि वा वक्तव्यः ७ ॥ दरिद्रा दुर्गतौ ।  
 दरिद्राति वा दरिद्रायतीति-दरिद्रायकः । दरिद्रिता । नृतिस्वनि-  
 रञ्जिभ्यो बुर्वक्तव्यः । नृती गात्रविक्षेपे । 'उपधाया लघोः' (सू० ७३५)  
 'राद्यपो द्विः' (सू० ३७) नृत्यतीति-नर्तकः । 'न दादेः' (सू० ३७८)  
 नर्तकी । खनकः । खनकी ॥ ११९४ रञ्जेर्नलोपो वा ८ ॥ रञ्जकः-  
 रजकः । रजकी । युवोरनाकौ इति तद्धितयुप्रत्ययस्य नेति वक्तव्यम् ।  
 तेन ऊर्णायुः ॥ ११९५ नाम्युपधात्कः ९ ॥ नाम्युपधाद्धातोः कः  
 प्रत्ययो भवति ॥ ककारो गुणाभावार्थः । क्षिप् प्रेरणे । क्षिपतीति-  
 क्षिपः । छिदिर् द्वैधीकरणे । छिनत्तीति-छिदः । भिदिर्  
 विदारणे । भिनत्तीति-भिदः । दुह प्रपूरणे । द्रवद्रव्यभागानुकूलो  
 व्यापारः=प्रपूरणम् । कामान् दोग्धि सा-कामदुघा ॥ ११९६ दुहः  
 के वा घो वाच्यः १० ॥ तेन कामदुहा । दुहः-दुघः । तुद्  
 व्यथने । तुदतीति-तुदः । विद् ज्ञाने । वेत्तीति-विदः । द्विष  
 अप्रीतौ । द्वेष्टीति-द्विषः । घुर ऐश्वर्यदीप्त्योः । सुरतीति सुरः । शुभ  
 शोभायाम् । शोभते तत्-शुभं कल्याणम् ॥ ११९७ जानातेश्च

११ ॥ जानातेर्धातोरेपि कः प्रत्ययो भवति ॥ जानातेश्चेति चकारा-  
त्कृगृधृदृप्रीब्रुवामपि कः प्रत्ययो भवति ॥ कृ विक्षेपे । 'ऋत इइ'  
( सू० ८२० ) । किरतीति-किरः ॥ धृञ् धारणे । धरतीति-ध्रः । प्रीञ्  
तर्पणे । प्रीणाति वा प्रीणीतेऽसौ-प्रियः । 'नु धातोः' ( सू० ७७६ ) ।  
गृ निगरणे । गिरतीति-गिरः । 'गिरते रस्य वा लः स्वरे वाच्यः'  
( सू० १०१६ ) ॥ ११९८ गिले परेऽगिलस्य १२ ॥ गिलशब्दं  
विहाय पूर्वस्य मुम् वक्तव्यः । तिमिं गिलतीति-तिमिगिलः । अगि-  
लस्येति किम् ? । गिलगिलः । ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि । 'नु धातोः' ( सू०  
७७६ ) ब्रवीतीति-ब्रुवः । अपिशब्दात्कर्तरि ग्रहेरपि कः प्रत्ययो  
भवति । गृह्णातीति-गृहम् । तात्स्थ्यात्, -गृह्णन्ति ते-गृहाः=दाराः ॥  
११९९ पचिनन्दिग्रहादेरयुणिनि १३ ॥ पचादेर्नन्द्यादेर्ग्रहादेश्च  
अयु णि नि इत्येते प्रत्यया भवन्ति यथासंख्येन ॥ पचतीति-पचः ।  
वक्तीति-वचः । वेत्तीति-वेदः । वपतीति-वपः ॥ १२०० चरिच-  
लिपतिहनिवदीनां वा द्वित्वं पूर्वस्याऽगागमश्च १४ ॥ अप्रत्यये  
परे । हसादिः शेषाभावः । चर गतिभक्षणयोः । चरतीति-चराचरः-  
चरः । चल चलने । चलतीति-चलाचलः-चलः । पतल् पतने ।  
पततीति-पतापतः-पतः । वदतीति-वदावदः-वदः ॥ १२०१  
हन्तेर्घनश्च १५ ॥ हन्तीति-घनाघनः-हनः । चकाराद्धन शब्दे ।  
घनतीति-घनाघनः-घनः-इत्यादि । णद अव्यक्ते शब्दे । नदतीति-  
नदः । छुङ् गतौ । छवतेऽसौ-छवः । चरतेऽसौ-चरः । क्षमूष्  
सहने । क्षमतेऽसौ-क्षमः । पचादिषु देवद् नदद् इति टकारानुब-  
न्धत्वादीप् । दीव्यतीति-देवी । षिवु तन्तुसन्ताने । षेवृ सेवने ।  
सेवतेऽसौ-सेवः । सीव्यतीति-सेवः । व्रण क्षत्वे । व्रण रुजि । व्रण  
शब्दे । व्रणतीति-व्रणः । अन प्राणने । प्राणितीति-प्राणः । इशिर

प्रेक्षणे । पश्यतीति—दर्शः । सृष्ट्वा गतौ । सर्पतीति—सर्पः । भृञ्  
भरणे । भरते वा भरतीति—भरः । ङुभृञ् धारणपोषणयोः । बिभर्ति  
वा बिभृतेऽसौ—भरः । सहतेऽसौ—सहः । पचादिराकृतिगणः । पचादेर-  
प्रत्ययो निरुपपदस्यैव ज्ञातव्यः ॥ इति पचादिः ॥ अथ नन्दादि-  
निरूप्यते ॥ टुणदि समृद्धौ । ‘इदितो नुम्’ ( सू० ७४५ ) नन्दति  
वा नन्दयतीति—नन्दनः । नन्दतीति—नन्दकः । रमु क्रीडायाम् ।  
रमतेऽसौ—रमणः । वाम क्रम संहर्षे । वामतीति—वामनः । क्रामतीति—  
क्रमणः । वासु शब्दे । वासयतीति—वासनः । ‘मितां ह्रस्वः’ ( सू०  
१०३५ ) मदि हर्षे । माद्यतीति वा मदयतीति—मदनः । दुष वैकृत्ये ॥  
१२०२ दुषेर्जौ कृति च दीर्घो वक्तव्यः १६ ॥ दूषयतीति—दूषणः ।  
राध् साध् संसिद्धौ । राध्यतीति वा राधयतीति—राधनः, साधनः ।  
वृधुङ् वृद्धौ । वर्धयतीति—वर्धनः । रु शब्दे ॥ १२०३ रोयुण्  
१७ ॥ रु शब्द इत्येतस्माद्वातोयुण् प्रत्ययो भवति ॥ रौति वा  
रावयतीति—रवणः ॥ १२०४ रुशब्दात् युरपि वक्तव्यः १८ ॥  
तेन रावणः ॥ १२०५ क्रकारान्ताच्च १९ ॥ युण्प्रत्ययो भवति ।  
करोतीति वा कारयतीति—कारणः । कारकः । शुभ शोभने रोचने  
च । शोभयतीति—शोभनः । रुच दीप्तौ । रोचयतीति—रोचनः ।  
विभीषयतीति—विभीषणः । णश् अदर्शने । चित्तं विनाशयतीति—  
चित्तविनाशनः । युध्यते इति—योधनः । एते व्यन्ताः । सहतेऽसौ—  
सहनः । तपतीति—तपनः । ज्वल ज्वलने । ज्वल दीप्तौ । ज्वलतीति—  
ज्वलनः । शम् दम् उपशमे । शाम्यतीति—शमनः । दाम्यतीति—  
दमनः । जरुपतीति—जरुपनः । तृप् प्रीणने । तृप्यतीति—तर्पणः ।  
रमणः । हृप् संदर्पे । हृप्यतीति—दर्पणः । क्रन्द आक्रन्दने । क्रदि  
आह्वाने रोदने च । संपूर्वेः,—संक्रन्दति वा संक्रन्दयतीति—संक्रन्दनः ।

कृष् निष्कर्षे । कृष् आमर्षणे । संकर्षतीति-संकर्षणः । अर्द मर्द अर्दने । अर्द गतौ याचने च । जनान् अर्दयतीति-जनार्दनः । मर्दयतीति-मर्दनः । घृष संघर्षणे । संघर्षतीति-संघर्षणः । पुनातीति-पवनः । पवतेऽसौ-पवनः । षूद क्षरणे । षूद निबर्हणे । सूदी हिंसायाम् । मधुं सूदयतीति-मधुसूदनः । लुनातीति-लवणः । अत्र णत्वं निपात्यते । शत्रून् दाम्यतीति वा दामयतीति-शत्रुदमनः ॥ इति नन्धादिः ॥ अथ ग्रहादिर्निरूप्यते ॥ ग्रह उपादाने । 'इनां शौ सौ' (सू० २६१) 'हसे पः सेर्लोपः' (सू० १५६) णिनिप्रत्ययान्ताः सर्वे दण्डिवत् । गृह्णातीति-ग्राही=उत्साही । आस् उपवेशने । उदास्तेऽसौ-उदासी । दास् दाने । उत्पूर्वः-उद्दासी । भास् दीप्तौ । उद्भासतेऽसौ-उद्भासी । 'आतो युक्' (सू० ११९२) छो छेदने । छ्यतीति-छायी । तिष्ठतीति-स्थायी । मत्रि गुप्तभाषणे । मत्रि अवधारणे । मत्रयतीति-मत्री । मृद मर्दने । मर्द आमर्दने । मृदु आर्जवे । संमर्दति वा संमर्दयतीति-संमर्दी । निस्तौतीति-निस्तावी । निश्चृणोतीति-निश्चावी । रक्ष पालने । निरक्षतीति-निरक्षी । वस् निवासे । निवासतीति-निवासी । दुवप् बीजसंताने । निवपतीति-निवापी । शो तनूकरणे । निश्यतीति-निशायी ॥ १२०६ नञ्पूर्वेभ्यः कृद्वणीयाच्चवदिभ्यो णिनिश्च २० ॥ न करोति वा कुरुतेऽसौ-अकारी । 'इनां शौ सौ' (सू० २६१) न हरतीति-अहारी । णीञ् प्रापणे । न नयतीति-अनायी । न याचतेऽसौ-अयाची । न वदतीति-अवादी । रध हिंसायाम् । णिनिश्चेति चकारादपावपरिविभ्यो णिनिः । अपराध्यतीति-अपराधी । रुधिर आवरणे । अवरुणद्धीति-अवरोधी । परिभवतीति-परिभावी । विपूर्वः । विचरतीति-विचारी । विशेषेण रौतीति-विरावी ॥ इति ग्रहादयः ॥ ॥ अथ दशादिर्निरूप्यते ॥ १२०७ दशादेः शः २१ ॥ दश हन् घेद

ध्मा घ्रा पा दा धा विद् एभ्यः शप्रत्ययो भवति ॥ शकारः शिति  
चतुर्वत्कार्यार्थः ॥ १२०८ शिति चतुर्वत् २२ ॥ शिति प्रत्यये  
परे तिबादिषु परेषु यत्कार्यमुक्तं तद्वति ॥ 'दृशादेः पश्यादिः'  
(सू० ८१०) अप् । 'अदे' (सू० ६९५) पश्यतीति-पश्यः ।  
उत्पूर्वः, -उत् ऊर्ध्व पश्यतीति-उत्पश्यः । हन् हिंसागत्योः ।  
अप् । 'अदे' (सू० ६९५) अदादित्वादपो लुक् । 'अपि-  
त्तादिर्ङित्' (सू० ६९३) । 'गमां खरे' (सू० ७८९) 'हनो घ्ने'  
(सू० २६२) गां हन्तीति-गोघ्नः । पापघ्नः । घेद् पाने । अप् ।  
'अदे' (सू० ६९५) घयतीति-घयः । ध्मा, -धमादेशः । धमतीति-  
धमः । उद्धमतीति-उद्धमः । घ्रा, -जिघ्रादेशः । जिघ्रतीति-जिघ्रः ।  
पा पाने । पिबादेशः । पिबतीति-पिबः । अप् । 'अदे' (सू० ६९५)  
'ह्लादेर्द्विश्च' (सू० ९४२) । 'दादेः' (सू० ९५७) इत्याकारलोपः ।  
ददाति वा दत्तेऽसौ-ददः । दधाति वा धत्तेऽसौ-दधः । 'मुचादेर्मुम्'  
(सू० १०११) 'तुदादेरः' (सू० १००७) विद्ल लामे । गां  
विन्दतीति-गोविन्दः ॥ १२०९ ज्वलादेर्णः २३ ॥ ज्वलादेर्ग-  
णात् णः प्रत्ययो भवति ॥ ज्वलादेर्णो वेति केचित् ॥ पक्षे, -पचादि-  
त्वादः । ज्वल् दीप्तौ । ज्वालः-ज्वलः । तपतीति-तापः-तपः । पथि  
गतौ । चुरादिः । इदित् । पान्थयतीति वा पन्थतीति-पान्थः-पथः ।  
अत्र वृद्धनन्तरं नुमागमः । ज्वलादिगणपाठसामर्थ्यात् । पल्ल  
गलैश्चर्ययोः । पततीति-पातः-पतः । कथ् पचने । कथतीति-काथः-  
कथः । पथ् गत्याम् । पथतीति-पाथः-पथः । मथ् गाहे । मथतीति-  
माथः-मथः । सहतेऽसौ-साहः-सहः ॥ इति ज्वलादिः ॥ ॥ अथाऽ-  
ण् ॥ १२१० कार्येऽण् २४ ॥ धातोः कर्मणि प्रयुज्यमाने अण्  
प्रत्ययो भवति ॥ 'कुम्भकारः । ग्रन्थकारः ॥ १२११ नाम्नि च २५ ॥

टिप्प०-१ अस्याग्रे-धातो डः ॥ आकारान्ताद्धातोः कर्मणि प्रयुज्यमाने  
इप्रत्ययो भवति । गोदः । धनदः । जलदः' इत्यधिकः पाठो दृश्यते ।



नाभ्युपनाममात्रे प्रयोक्तव्ये डप्रत्ययो भवति कर्तरिभावे आखूत्थं  
 द्वाभ्यां पिबतीति-द्विपः । द्वौ वारौ जायतेऽसौ-द्विजः । गृहैर्दारैः  
 सह तिष्ठतीति-गृहस्थः । गिरिशः । शीङ् स्वप्ने । पादैः  
 पिबतीति-पादपः । द्रु गतौ । शुचं द्रवतीति-शूद्रः ॥ १२१२ शुचः  
 शूद्रे २६ ॥ शुचः शूरादेशो भवति द्वे परे ॥ १२१३ उरसः  
 सलोपो मुम्वा २७ ॥ उरसः सकारस्य लोपो भवति डप्रत्य-  
 यान्ते गमौ मुमागमश्च वा ॥ उरसा गच्छतीति-उरगः-उरङ्गः=सर्पः ॥  
 १२१४ विहायसो विहश्च २८ ॥ विहायसशब्दस्य विहादेशो  
 भवति चकारान्मुम्वा ङान्ते गमौ ॥ विहायसि आकाशे गच्छतीति  
 -विहगः-विहङ्गः ॥ १२१५ भुजस्य च मुम्वा डप्रत्ययान्ते गमौ २९ ॥  
 भुजो वक्रार्थे ॥ भुजं वक्रं गच्छतीति-भुजगः-भुजङ्गः । विहायसो  
 विहश्चेति चकारात् तरसस्तुरादेशः । मुम्वेति अनुवर्तनीयम् । तर-  
 सस्तुरादेशः । तुरस्य मुम्वा ङान्ते गमौ ॥ तरसा वेगेन गच्छतीति-  
 तुरगः-तुरङ्गः ॥ १२१६ अटौ ३० ॥ नास्ति कार्ये च उपपदे सति  
 अटौ प्रत्ययौ भवतः ॥ अस्थि हरतीति-अस्थिहरः=श्वा । कवचं हरतीति-  
 कवचहरः कुमारः । धृञ् धारणे । धनुर्धरतीति-धनुर्धरः क्षत्रियो राजा  
 वा । चर गतौ । कुरुषु देशेषु चरतीति-कुरुचरः । ट ईवर्थः । 'धृवितः'  
 ( सू० ३७४ ) स्त्री चेत्,-कुरुचरी । महीचरी । सेनाचरी । मिक्षाचरी ।  
 दीक्षाचरी । अप्रत्ययः सर्वधातुसाधारणः । टप्रत्ययस्तु चरादेरेव  
 भवति । शोकं करोतीति-शोककरी कन्या । यशः करोतीति-यशस्करी  
 विद्या । सृ गतौ । पुरः सरतीति-पुरःसरः । अग्ने सरतीति-अग्नेसरः ।  
 पार्श्वे शेतेऽसौ-पार्श्वशयः । तथैव पृष्ठे शेतेऽसौ-पृष्ठशयः । उदरशयः ।  
 उत्तानादिषु कर्तृषु । उत्तानः शेतेऽसौ-उत्तानशयः । स्तम्बे रमतीति-  
 स्तम्बेरमः=हस्ती । जप जरूप व्यक्तायां वाचि । कर्णेजपः । ग्रह उपादाने ।

शक्तिं गृह्णातीति-शक्तिग्रहः । लाङ्गलग्रहः । पृष्ठिग्रहः । अङ्कुशग्रहः ।  
 तोमरग्रहः । घटीग्रहः । धनुर्ग्रहः । सूत्रग्रहः । पुष्पग्रहः । फलग्रहः ।  
 कामग्रहः । मधुरग्रहः । शंपूर्वः कृञ्-शं सुखं कल्याणं वा करोतीति-  
 शंकरः । शंवदः । भारंवहः । अत्र कर्मणि अणपि वक्तव्यः । भार-  
 वाहः । श्वेतवाहः-इत्यादि ॥ १२१७ इखस्वि ३१ ॥ धातोर्नाम्नि  
 कार्ये च सति इ ख खि एते प्रत्यया भवन्ति ॥ खकारः खिति पद-  
 स्येति सूत्रस्य विशेषणार्थः ॥ १२१८ खिति पदस्य ३२ ॥ खिति  
 प्रत्यये परे पूर्वपदस्याव्ययवर्जितस्य मुमागमो भवति ॥ तेन दोषाम-  
 न्यमहः । आत्मानं दोषा मन्यते तत्-दोषामन्यमहः ॥

शकृत्स्तम्बात्कृञः फलरजोमलाद्ब्रह्मो ह्रजः ।

दृतिनाथादेववातादापः कर्तरि वाच्य इः ॥ २ ॥

वत्सव्रीह्योरेव । डुकृञ् करणे । शकृत्करोतीति-शकृत्करिः वत्सः ।  
 स्तम्बं करोतीति-स्तम्बकरिः व्रीहिः । फलं गृह्णातीति-फलेग्रहिः वा  
 फलानि गृह्णातीति-फलेग्रहिर्वृक्षः । फलस्येदन्तत्वं निपातनात् ।  
 रजो-गृह्णातीति-रजोग्रहिः । मलग्रहिः । दृतिं हरतीति-दृतिहरिः ।  
 नाथहरिः । आप्लु व्याप्तौ । देवान् आमोतीति-देवापिः । वातं  
 आमोतीति-वातापिः ।

करीषकूलसर्वाभ्रात्कषः प्रियवशाद्बदः ।

ऋतिमेघभयात्कृञः क्षेमभद्रप्रियात्तु वा ॥ ३ ॥

कष निष्कर्षे । करीषं कषतीति-करीषंकषः । 'करीषं शुष्कगोम-  
 यम्' इत्यमरः । कूलं कषतीति-कूलंकषः । सर्वं कषतीति-सर्वंकषः ।  
 अम्रं कषतीति-अम्रंकषः । खकारो मुमागमार्थः । वद व्यक्तायां  
 वाचि । प्रियं वदतीति-प्रियंवदः । वशंवदः । ऋतिं करोतीति-  
 ऋतिंकरः । मेघंकरः । भयंकरः । विकल्पपक्षे कार्ये अण् । क्षेमं

करोतीति-क्षेमंकरः-क्षेमकारः । भद्रं करोतीति-भद्रंकरः-भद्रकारः ।  
प्रियं करोतीति-प्रियंकरः-प्रियकारः ॥

आशिताच्च भ्रुवो भावे करणे चतुराङ्गजात् ।

विहायसः सुतोरोभ्यां हृदयाच्च जनात् प्लवात् ॥ ४ ॥

गच्छतेः प्रत्ययः खः स्याद्भ्रुवो धातोस्तु खिर्भवेत् ।

आत्मन्कुक्ष्युदरेभ्यः स्युस्तथा वाचंयमादयः ॥ ५ ॥

आशितेन भूयते इति-आशितंभवम् । ( भावे नपुंसकता वाच्या ) ।  
आशितो भवत्यनेनेति-आशितंभव ओदनः । तुरं गच्छतीति-तुरंगमः ।  
भुजंगमः । विहंगमः । सुतंगमः । उरंगमः । हृदयंगमः । जनंगमः ।  
प्लवेन गच्छतीति-प्लवंगमः । डुभृञ् धारणपोषणयोः । आत्मानं  
बिभर्तीति-आत्मंभरिः । कुक्षिंभरिः । उदरंभरिः । लुप्तविभक्तेश्च पदान्तत्वं  
विज्ञेयम् । अतःपरं वाचंयमादीन् कथयति । वाचंयमादयो  
निपात्याः । वाचं यच्छतीति-वाचंयमः । अत्र अकारो निपात्यते ।  
दृ विदारणे । पुरं दारयतीति-पुरंदरः । तप संतापे । द्विषं तापय-  
तीति-द्विषंतपः । परंतपः । सर्वं सहतेऽसौ-सर्वसहः । विश्वं बिभ-  
र्तीति-विश्वंभरः । भगं दारयतीति-भगंदरः । तृ प्लवनतरणयोः ।  
रथं तरतीति-रथंतरः । वृञ् वरणे । पतिं वृणोतीति वा वृणुते सा-  
पतिंवरा । जि जये । धनं जयतीति-धनंजयः । धृञ् धारणे । वसूनि  
वा वसु धरति वा धरतेऽसौ-वसुंधरा । शत्रुं सहतेऽसौ-शत्रुंसहः ।  
अरिं दाम्यतीति-अरिंदमः । शत्रुंतपः । एते वाचंयमादयः ॥ १२१९  
एजां खश् ३३ ॥ एजृ कम्पने इत्यादीनां खश् प्रत्ययो भवति ॥  
खकारो मुमागमार्थः । शकारः शिति चतुर्वत्कार्थः । 'धातोः प्रेरणे'  
( सू० १०४२ ) इति जिः प्रत्ययः । जनान् एजयतीति-जनमेजयः ॥

ज्यन्तैर्जेर्मन्यतेर्मुञ्जकूलास्यपुष्पतो धयेः ।

नाडीमुष्टिशुनीपाणिकरस्तनात्सनासिकात् ॥ ६ ॥

मनु अवबोधने । 'दिवादेर्यः' ( सू० ९६३ ) । आत्मानं पण्डितं मन्यते सः—पण्डितंमन्यः । घेद् पाने । मुञ्जं धयतीति—मुञ्जधयः । कूलं धयः । आस्यं धयः । पुष्पं धयः । ध्माघेटोस्तुल्योपपदत्वं ज्ञेयम् । ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः । नाडीं धयतीति—नाडिधयः । नाडिधमः ॥ १२२० खशन्ते पूर्वपदस्य ह्रस्वो वाच्यः ३४ ॥ मुष्टिधयः—मुष्टिधमः । शुनिधयः—शुनिधमः । पाणिधयः—पाणिधमः । करं धयः—करंधमः । स्तनधयः—स्तनंधमः । नासिकां धयतीति—नासिकंधयः—नासिकंधमः ॥

ध्माखारीवातघटितो रुजवहौ तु कूलतः ।

अरुर्विधुतिलातुद् स्यादसूर्योगादृशिस्तपिः ॥ ७ ॥

ललाटतो बहाभ्राह्मिह मितमाननखात्पचिः ।

वातादजिरिरायामद् जहातिः शर्धतिस्तथा ॥ ८ ॥

खारीं धमतीति—खारिंधमः,—वातंधमः । घटिंधमः । रुजो भङ्गे । वह प्रापणे । उत्पूर्वः । कूलमुद्रुजतीति—कूलमुद्रुजः । कूलमुद्रुहतीति—कूलमुद्रुहः । अरुः किम् ? मर्मस्थानम् । अरुस्तुदतीति—अरुंतुदः । विधुंतुदः । तिलंतुदः । दृशिद् प्रेक्षणे । न सूर्यं पश्यन्तीति—असूर्यं पश्या राजदाराः । उग्रंपश्यः । ललाटंतपः । लिह आस्वादने । वहं लेढीति—वहंलिहः । अभ्रंलिहः । मितं पचतीति—मितंपचः । प्रस्थंपचः । मानंपचः । नखंपचः । अज गतौ क्षेपणे च । वातमजतीति—वातमजः । मदी गर्वप्लवनयोः । इरया माद्यतीति—इरंमदः । ओहाक्

त्यागे । शर्धं जहतीति-शर्धजहा माषाः ॥ इति खश्प्रत्ययः ॥  
 १२२१ ख्युद् करणे ३५ ॥ घातोः करणेऽर्थे ख्युद् प्रत्ययो भवति ।  
 १२२२ अभूततद्भावे ३६ ॥ १२२३ आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्ना-  
 न्धप्रियेषु कृजः ख्युद् वाच्यः ३७ ॥ अनाढ्यः आढ्यः क्रियतेऽनेनेति-  
 आढ्यंकरणं द्यूतम् । सुभगंकरणम् । स्थूलंकरणं किम् ? । दधि । पलितं-  
 करणं किम् ? । शीतवस्तुसेवनम् । अनग्ना नमः क्रियते अनेनेति-  
 नमंकरणं द्यूतम् । अन्धंकरणं किम् ? । सूर्यावलोकनमसकृत् । अप्रियः  
 प्रियः क्रियते अनेनेति-प्रियंकरणं मैत्र्यम् ॥ १२२४ दार्वाहनो  
 अण् वक्तव्यः ३८ ॥ तकारस्य च टः ॥ १२२५ घदादेशो  
 वक्तव्यः ३९ ॥ 'उवम्' (सू० ३८) दारु आहन्तीति-दार्वाघाटः ॥  
 १२२६ चारौ वा ४० ॥ चारुं आहन्तीति-चारवाघाटः-चारवाघातः ॥  
 १२२७ कर्मणि संपूर्वाच्च ४१ ॥ वर्णान् संहन्तीति-वर्णसंघातः ॥  
 १२२८ जायापत्योष्टक् ४२ ॥ जायापत्योरुपपदयोर्हन्तेष्टक्प्रत्ययो  
 भवति लक्षणवति कर्तरि ॥ जायां हन्तीति-जायाम्नः ना । पतिं  
 हन्तीति-पतिघ्नी स्त्री ॥ १२२९ अमनुष्यकर्तृके च ४३ ॥ जायाम्नः  
 तिलकालकः । कपाले भ्रमरः । पतिघ्नी पादरेखा ॥ १२३० पाणिघताडघौ  
 शिल्पिनि निपात्येते ४४ ॥ १२३१ राजघ उपसंख्यानम् ४५ ॥  
 १२३२ भजां विण् ४६ ॥ भजसहवहां कर्तरि विण् प्रत्ययो  
 भवति ॥ णकारो वृद्ध्यर्थः ॥ १२३३ वेः ४७ ॥ वेर्लोपो भवति ॥  
 भज सेवायाम् । अर्धं भजतीति-अर्धभाक् । 'चोः कुः' (सू० २८५)  
 सुखभाक् । दुःखभाक् । 'सहादेः सादिः' (सू० ५०६) 'हो ढः' (सू०  
 २४३) । 'वाऽवसाने' (सू० २४०) । सह मर्षणे । 'सहादेः सादिः'  
 (सू० ५०६) इति सूत्रेण त्वरायास्तुरादेशः । तुरां शत्रूणां वेगं  
 सहतेऽसौ-तुराषाद् । 'सहेः षः सो ढि' (सू० २४७) तुरासाहौ, तुरा-

साहः । वह प्रापणे । भारं वहतीति—भारवाद्-भारवाङ्, भारवाहौ, भारवाहः । भारवाहम्, भारवाहौ । ‘वाहो वौ’ (सू० २४५) भारौहः । भारौहा, भारवाङ्भ्याम्, भारवाङ्भिः—इत्यादि ॥ १२३४ पृच्छते-  
विण् ४८ ॥ तत्त्वं पृच्छतीति—तत्त्वप्राद् । अम्बूनि वहतीति—अम्बु-  
वाद् । शसादौ तु—अम्बूहः ॥ १२३५ अन उः ४९ ॥ अनकारादुत्त-  
रस्य वाहो वाकारस्य उः स्यात् शसादौ स्वरे परे ॥ शालिवाद् शाख्यूहः ॥  
१२३६ शमेरपि विण् वक्तव्यः ५० ॥ ‘मो नो धातोः’ (सू० २७५)  
शम दम उपशमने । प्रकर्षेण शाम्यतीति—प्रशान्, प्रशामौ, प्रशामः ॥  
१२३७ अभूततद्भावे कृभ्वस्तियोगे नाम्नाश्चिवः ५१ ॥ अभूत-  
तद्भावेऽर्थे कृ भू अस् इत्येतेषु नाम्नाश्चिवः प्रत्ययो भवति ॥ १२३८  
संपद्यकर्तरीति वक्तव्यम् ५२ ॥ तेन अगृहे गृहे भवतीति—गृहे  
भवति । चकारश्चौ दीर्घ इति विशेषणार्थः । अथवा चकारः प्रत्यय-  
भेदज्ञापनार्थः । ‘वेः’ (सू० १२३३) ॥ १२३९ च्वौ दीर्घ ई  
चास्य ५३ ॥ च्वौ प्रत्यये परे आकारस्य ईकारादेशो भवति, अ-  
न्यस्य स्वरस्य दीर्घो भवत्यव्ययवर्जितस्य ॥ अमिथुनं मिथुनं संपद्यमानं  
तथा करणं इति—मिथुनीकरणं=पाणिग्रहणम् । च्व्यन्तत्वादव्ययम् ।  
‘अव्ययाद्विभक्तेर्लुक्’ (सू० ३५९) असहायः सहायः संपद्यमान-  
स्तथा स्यात् इति—सहायी स्यात् । अकृष्णः कृष्णो यथा संपद्यमान-  
स्तथा करोतीति—कृष्णीकरोति । हेतुकृतम् । अव्ययस्य न दीर्घत्वम् ।  
अस्वस्ति स्वस्ति यथा संपद्यमानस्तथा स्यादिति—स्वस्ति स्यात् । संपद्य-  
कर्तारि किम् ? । अगृहे गृहे भवतीति—गृहेभवति । ‘अलुक्  
क्वचित्’ (सू० ५४९) इति विभक्तेरलुक् ॥ १२४० च्वौ सलो-  
पश्च ५४ ॥ मनस्-महस् रजस् इत्यादीनां सकारस्य लोपो भवति  
च्वौ प्रत्यये परे ॥ द्वौ नजौ प्रकृतमर्थमनुसरतः । उत्सुकं मनो

यस्यासौ-उन्मनाः, न उन्मनाः-अनुन्मनाः; अनुन्मनाः उन्मनाः संप-  
द्यमानस्तथा भाव इति-उन्मनीभावः । विगतं मनो यस्याऽसौ-विमनाः,  
न विमनाः-अविमनाः, अविमना विमनाः संपद्यमानः तथा भाव  
इति-विमनीभावः । न विद्यते मनो यस्यासौ-अमनाः, न अमनाः  
-अनमनाः, अनमनाः अमनाः संपद्यमानस्तथा भाव इति-अमनी-  
भावः । तथा सुमनीभावः । सुचेतीभावः । महीकरोति । अरू-  
करोति । चक्षूकरोति ॥ १२४१ डाच् क्वचिद्वक्तव्यः ५५ ॥  
अभूततद्भावेऽर्थे क्वचित् डाच् प्रत्ययो भवति ॥ अदुःखं दुःखं संपद्यते  
तत् करोतीति-दुःखाकरोति । तथा भद्राकरोति ॥ १२४२ आतो  
मनिष्कनिब्वनिपः ५६ ॥ प्रादौ नास्ति च प्रयुज्यमाने आकारान्ता-  
द्धातोर्मनिष् कनिष् वनिष् इत्येते प्रत्यया भवन्ति ॥ सुष्ठु ददातीति-  
सुदामा । राजन्शब्दवद्रूपम् । 'खसे चपा झसानाम्' (सू० ८९)  
अश्वे तिष्ठतीति-अश्वत्थामा ॥ १२४३ स्थामी ५७ ॥ इश्च ईश्च ई,  
दासोमास्थां ह्रस्व इकारो भवति । दा सोमा स्थां ह्रस्व इकारो भवति  
धागैहाक्पिबतीनां दीर्घ ईकारो भवति तकारादौ किति हसे परे, न  
क्यपि क्पि वा कनिष्प्रत्ययः । सुष्ठु पिबतीति-सुपीवा । भूरि ददातीति  
-भूरिदिवा । घृतं पिबतीति-घृतपीवा । घनदिवा । मलसिवा । मार्गस्थिवा ।  
धनधीवा । सुगीवा । दोषहीवा ॥ १२४४ कनिष् क्वचिदन्येभ्योऽपि  
दृश्यते ५८ ॥ सुष्ठु करोतीति-सुकर्मा । सुष्ठु शृणोतीति-सुशर्मा । अन  
प्राणने । अत्र क्पि । प्राणितीति-प्राण्, प्राणौ, प्राणः । हे प्राण् ॥ १२४५  
अनः ५९ ॥ पदान्ते वर्तमानस्यापि अनो नस्य णत्वं स्यात् । अधौ  
इति विशेषणान्नलोपो न शङ्कनीयः । इण् गतौ ॥ १२४६ ह्रस्वस्य  
पिति कृति तुक् ६० ॥ ह्रस्वस्य पिति कृति परे तुगागमो भवति ॥  
प्रातरेतीति-प्रातरित्वा ॥ १२४७ वनिपि जमस्यात्वं वाच्यम् ६१ ॥

जनी प्रादुर्भावे । विजयतेऽसौ—विजावा । केवलेभ्योऽपि वनिप् । ओण्  
 अपनयने । ओणतीति—अवावा, अवावानौ ॥ १२४८ ईपि वनो नस्य रो  
 वाच्यः ६२ ॥ 'न्रण' ईप् (सू० ३६५) ओणति सा—अवावरी । पारं  
 पश्यतीति—पारदृश्वा । पारं पश्यतीति सा—पारदृश्वरी । केवलेभ्योऽपि  
 कनिप् । षुञ् अभिषवे । षूङ् प्राणिगर्भविमोचने । सुनोतीति—सुत्वा ।  
 तुक् । धेद् पाने । धयतीति—धीवा । गै शब्दे । गायतीति—गीवा ।  
 जहातीति—हीवा । पीवा ॥ १२४९ क्तिप् ६३ ॥ उपपदे सति  
 असति च सर्वधातुभ्यः क्तिप् प्रत्ययो भवति ॥ क्तिपः सर्वापहारित्वा-  
 ल्लोपः । कपावितौ ॥ 'वेः' (सू० १२३३) 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्'  
 (सू० १२४६) । कर्म करोतीति—कर्मकृत् । अग्निं चिनोतीति—  
 अग्निचित् । देवान् स्तौतीति—देवस्तुत् । सोमं पिबतीति—सोमपः ।  
 सर्वं पश्यतीति—सर्वदृक् । 'दिशाम्' (सू० ३१९) इति कुत्वम् ।  
 दिश अतिसर्जने । दिशतीति—दिक् । क्तिप् ॥ १२५० वचिप्रच्छया-  
 यतस्तुकटप्रुङ्जुश्रीणां दीर्घः संप्रसारणाभावश्च वक्तव्यः ६४ ॥  
 वक्त्यनया सा—वाक् वा, उच्यते अनया सा—वाक् । प्रच्छ शीप्सा-  
 याम् । तत्त्वपूर्वः । तत्त्वं पृच्छतीति—तत्त्वप्राट् । 'छशषराजादेः षः'  
 (सू० २७६) ॥ १२५१ छोः शऊ वाच्यौ किति डिति झसे  
 परेऽनुनासिके कौ च ६५ ॥ तेन तत्त्वप्राच्छौ, तत्त्वप्राच्छः । षुञ्  
 स्तुतौ । आयतं स्तौतीति—आयतस्तूः । प्रुङ् गतौ । कटं प्रवतेऽसौ  
 —कटप्रूः । जु गतौ । जवतेऽसौ—जूः । सुष्ठु श्रयतीति—सुश्रीः । वा  
 सुष्ठु श्रीर्यस्याऽसौ—सुश्रीः । श्रयन्ते जना यामिति—श्रीः ॥ १२५२ नहिवृ-  
 त्तिव्यधिवृषिरुर्चिसहितनिषु क्तिबन्तेषु पूर्वपदस्योपसर्गस्यान्ते  
 दीर्घो वाच्यः ६६ ॥ गृह बन्धने । 'आदेः णः स्नः' (सू० ७४८) । 'नहो  
 षः' (सू० ३१०) उप समीपे नह्यतीति—उपानत् । नितरां वर्ततेऽसौ—



नीवृत् । व्यध ताडने । 'ग्रहां किति च' (सू० ८७३) मर्माणि विध्यतीति  
 -मर्मावित् । वृष वृष्टौ । प्रकर्षेण वर्षतीति-प्रावृद् । रुच दीप्तौ । नितरां  
 रोचतेऽसौ-नीरुक् ॥ १२५३ गम्यमूनमूहन्तनादीनां क्किपि  
 जमस्य लोपो वाच्यः क्यपि वा ६७ ॥ तुक् । परितः तनोतीति  
 -परितत् । कटं चिकीर्षतीति-कटचिकीः । चिकीर्षतेः क्किप् ।  
 'यतः' (सू० ७८३) इत्यकारलोपः । 'दोषाम्' (सू० २९७) इति  
 षस्य रेफः । 'रिलोपो दीर्घश्च' (सू० ११७) इति मध्यमरेफस्य  
 लोपः ॥ नतु संयोगान्तस्य लोपः । रसे पदान्ते चेति चकारात् ॥  
 'रात्सस्य' (सू० ९०५) 'स्रोर्विसर्गः' (सू० १२५) कटचिकीर्षौ,  
 कटचिकीर्षः । वह प्रापणे । 'यजां यवराणाम्' (सू० ८३१) अनो  
 वहतीति-अनङ्गान् ॥ १२५४ क्क्विन्ते वह्यनसो ङान्तादेशो  
 वाच्यः ६८ ॥ (क्क्विन्ते राजतौ परे समो मस्यानुस्वाराभावो वाच्यः ।)  
 अनङ्गाहौ, अनङ्गाहः । राजृ दीप्तौ । 'भो राजि समः कौ'  
 (सू० २७८) तेन सम्यक् राजतेऽसौ-सम्राट् । ध्यै चिन्तायाम् ॥  
 १२५५ ध्यायतेः क्किपि संप्रसारणं दीर्घता च वक्तव्या ६९ ॥  
 सुष्ठु ध्यायतीति-सुधीः ॥ १२५६ द्युतिगमिजुहोतीनां क्किपि  
 क्वचित् द्वित्वं वाच्यम् ७० ॥ हसादिः शेषाभावः ॥ १२५७  
 द्योततेः क्वचित्पूर्वस्य क्किपि संप्रसारणं वाच्यम् ७१ ॥ द्योततेऽसौ  
 -दिद्युत् । गच्छति उत्पत्तिस्थितिलयान् प्राप्नोतीति-जगत् । जुहोते-  
 दीर्घश्च । जुहोत्यनया सा-जुहः ॥ १२५८ दृशेष्टकृसकौ चोपमाने  
 कार्ये ७२ ॥ दृशेर्घातोः सर्वादिषु ट्कृसकौ प्रत्ययौ भवत उपमाने  
 कार्ये सति ॥ चकारात् क्किप् वक्तव्यः ॥ १२५९ आ सर्वादेः ७३ ॥  
 एतेषु प्रत्ययेषु परेषु सर्वादेः पूर्वस्य टेरात्वं भवति ॥ दृशिद् प्रेक्षणे ।  
 अन्य इव दृश्यतेऽसौ-अन्यादृशः । 'छशषराजादेः षः' (सू० २७६) ।  
 'षढोः कः से' (सू० ७९८) । 'क्किलात्' (सू० १४१) । अन्यादृशः-

अन्यादृक् । स इव दृश्यतेऽसौ—तादृशः-तादृक्षः-तादृक् । य इव दृश्यतेऽसौ—यादृशः-यादृक्षः-यादृक् । एष इव दृश्यतेऽसौ—एतादृशः-एतादृक्षः-एतादृक् ॥ १२६० किमिदमः कीदृशौ ७४ ॥ किम्शब्दस्य इदम्शब्दस्य च कीद् ईश् इत्येतावादेशौ भवतः टकारादिषु प्रत्ययेषु परेषु ॥ शकारः सर्वादेशार्थः । क इव दृश्यतेऽसौ—कीदृशः-कीदृक्षः-कीदृक् । अयमिव दृश्यतेऽसौ—ईदृशः-ईदृक्षः-ईदृक् । ईदृशी वार्ता । सर्वादित्वादेरात्वम् । भवदादिषु दशोष्टकारादयः पूर्वस्य टेर्दीर्घता च वक्तव्या ॥ भवानिव दृश्यतेऽसौ—भवादृशः-भवादृक्षः-भवादृक् । चकारात् एतेषु प्रत्ययेषु परेषु समान-शब्दस्य सो वाच्यः । समान इव दृश्यतेऽसौ—सदृशः-सदृक्षः-सदृक् ॥ १२६१ अदसोऽमू आदेशः ७५ ॥ अदस्शब्दस्य टगादिषु सत्सु अमू आदेशो भवति किति परे ॥ असाविव दृश्यतेऽसौ—अमूदृशः-अमूदृक्षः-अमूदृक्-ग् ॥ १२६२ प्रत्ययोत्तरपदयोः परतो युष्मद-स्मदोरेकत्वे त्वत् मत् इत्येतावादेशौ भवतः ७६ ॥ त्वमिव दृश्यतेऽसौ—त्वादृशः-त्वादृक्षः-त्वादृक्-ग् । अहमिव दृश्यतेऽसौ—मादृशः-मादृक्षः-मादृक्-ग् । ( त्यादेष्टेरस्यादौ इत्यकारः । ) यूयमिव दृश्यतेऽसौ—युष्मादृशः-युष्मादृक्षः-युष्मादृक् । वयमिव दृश्यतेऽसौ—अस्मादृशः-अस्मादृक्षः-अस्मादृक् । टकारानुबन्धत्वादीप् । तादृशी । यादृशी । एतादृशी । त्वादृशी । मादृशी । अन्यादृशी । युष्मादृशी । अस्मादृशी । भवादृशी—इत्यादि ॥ १२६३ णिनिरतीते ७७ ॥ धातोरतीते काले शीलेऽर्थे च णिनिप्रत्ययो भवति ॥ १२६४ करणे उपपदे यजेर्णिनिर्वाच्यः ७८ ॥ ‘इनां शौ सौ’ ( सू० २६१ ) अग्निष्टोमेन इयाज इति वा अग्निष्टोमेन अयाक्षीत् इति वा—अग्निष्टोमयाजी । वा अग्निष्टोमं यष्टुं शीलं यस्य सः—अग्निष्टोमयाजी । अश्राद्धं मुक्ते इत्येवंशीलः—अश्राद्ध-

भोजी । अर्धं भुङ्क्ते इत्येवंशीलः—अर्धभोजी । सुखभोजी । उष्णं भुङ्क्ते इत्येवंशीलः वा भुक्तवान् इति—उष्णभोजी । ‘हनो घत्’ (सू० १०४६) ॥ १२६५ हन्तेर्निन्दायां णिनिर्वाच्यः ७९ ॥ पितरं जघान वा अवधीत् इत्येवंशीलः—पितृघाती । दण्डिन्शब्दवद्रूपं ज्ञेयम् ॥ १२६६ कर्तर्युपमाने णिनिर्वाच्यः ८० ॥ अभ्र इव पततीति—अभ्रपाती । मत्त इव करोतीति—मत्तकारी । हंस इव गच्छतीति—हंसगामी । स्त्री चेत्,—हंसगामिनी । ईप् ॥ १२६७ क्षिप् कनिष् डः ८१ ॥ धातोर्गतीति काले शीलेऽर्थे च क्षिप् कनिष् डः इत्येते प्रत्यया भवन्ति ॥ १२६८ क्षिप् ८२ ॥ वृत्र ब्रह्म भ्रूण एतत्पूर्वकादेव हन्तेः क्षिप् स्यात् ॥ अतीते काले एव,—वृत्रं हतवानिति—वृत्रहा । ब्रह्महा । भ्रूणहा । अन्यत्र,—शत्रुघातीत्यत्र णिनिः । शत्रुं हन्तीत्येवंशीलः—शत्रुघाती । सुष्ठु करोति स्मासौ—सुकृत् । कर्मकृत् । पापकृत् । पुण्यकृत् । शास्त्रकृत् । सोमं सुनोति स्मासौ—सोमसुत् । अग्निं चिनोति स्मासौ—अग्निचित् । इत्येते क्बन्ताः ॥ कनिष् । युध संप्रहारे । राजानं युध्यते स्मासौ—राजयुध्वा । राजानं करोतीत्येवंशीलः—राजकृत्वा । सह युध्यते स्मासौ—सहयुध्वा । सहकृत्वा । शुभ्रं प्राणिप्रसवे । कनिष् तुक् । कित्वाद्गुणाभावः । सुनोति स्मासौ वा सुतवान् इति—सुत्वा । स्तुत्वा । यजति स्मासौ—यज्वा । पारमद्राक्षीत् इति—पारदृश्वा । इत्येते क्बन्ताः ॥ जनी प्रादुर्भावे ॥ १२६९ सप्तम्यां जनेर्डः ८३ ॥ सप्तम्यां जनेर्धातोर्डः प्रत्ययो भवति अतीते काले ॥ सरसि जायते स्म तत्—सरसिजं पद्मम् । ‘अलुक् कचित्’ (सू० ५४९) सरसि जातं—सरोजम् । संस्कारजः । अजः । द्विजः । परितः खाता इति—परिखा । प्रकर्षेण जायते स्मेति—प्रजा । सर्वं गतवान् इति—सर्वगः

वा सर्वं गच्छति स्माऽसौ—सर्वगः । गै शब्दे । साम गीतवान् गायति स्माऽसौ—सामगः ॥ इति डप्रत्ययान्ताः ॥ इति कर्त्रर्थप्रक्रिया ॥ १ ॥

### निष्ठाधिकारप्रक्रिया २

अथ निष्ठाधिकारप्रक्रिया ॥ १२७० क्तक्तवतू १ ॥ धातोर-  
तीते काले क्तक्तवतू प्रत्ययौ भवतः ॥ भावकार्ययोः क्तः । क्तवतुः  
कर्तर्येव ॥ उकावितौ । उर्नुमर्थः । ण्णा शौचे । स्नातं त्वया ।  
आगम्यते स्म तत्—आगतम् । स्थीयते स्म तत्—स्थितं देवदत्तेन ।  
भावस्यैकत्वादेकवचनं नपुंसकत्वं च । भावे नपुंसकता ॥

अन्तः प्रान्तेऽन्तिके नाशे स्वरूपे च मनोहरे ।

धात्वर्थः केवलः शुद्धो भाव इत्यभिधीयते ॥ ८ ॥

क्रियते स्माऽसौ—कृतः कटस्तेन । स कटं कृतवान् । करोति  
स्माऽसौ—कृतवान् । कृष्णः सर्वं कृतवान् । ‘त्रितो नुम्’ (सू० २९२)  
इति नुमागमः ॥ १२७१ गत्यर्थादकर्मकाच्च कर्तरि क्तः २ ॥  
गत्यर्थादकर्मकाच्च कर्तरि क्तः प्रत्ययो भवति ॥ चाद्भावकर्मणोरपि ॥  
‘लोपस्त्वनुदात्तनाम्’ (सू० ८८६) गच्छति स्म इति—गतः । ‘स्थामी’  
(सू० १२४३) तिष्ठति स्म इति—स्थितः । ‘कृतः’ (सू० ११९०)  
अटति स्म इति—अटितः । शम दम उपशमे ॥ १२७२ जमान्तस्य  
क्विति झसे दीर्घः ३ ॥ जमान्तस्य धातोर्दीर्घो भवति क्विति झसे  
परे क्विपि वा ॥ शाम्यति स्म इति—शान्तः । दाम्यति स्म इति  
—दान्तः । दुवम् उद्गिरणे । वमति स्म इति—वान्तः ॥ १२७३  
यस्य क्वचिद्विकल्पेनेट् तस्य निष्ठायां नेङ् वाच्यः ४ ॥ ‘अधिशी-  
इस्थाऽऽसां कर्म’ (सू० ४२९) ॥ १२७४ श्लिष्टशीङ्स्थाआस्-  
श्रिवसजनरुहजीर्यतीनां सोपसर्गत्वेन सकर्मकाणामपि कर्तरि

क्तो वाच्यः ५ ॥ रमामाश्लिष्यति स्मेति आश्लिष्टः हरिः । हरी  
रमामाश्लिष्टः । शेषमधिशिष्ये इति-अधिशयितः । को विष्णुः ।  
शेषमधिशयितो विष्णुः । स्वर्गमधितष्ठाविति स्वर्गमधिष्ठितः । उपा-  
सांचक्रे इति उपासितः भक्तो हरिम् । भक्तो हरिमुपासितः । आश्र-  
यति स्म इति आश्रितः । एकादशीमुपोवास इति उपोषितः वा  
हरिदिनमुपोवास इति उपोषितः ॥ १२७५ वसिष्ठुध्योरिट् ६ ॥  
आभ्यां नित्यमिट् स्यात् ॥ 'घसादेः षः' ( सू० ९३२ ) राममनुजज्ञे  
इति अनुजातोऽच्युतः तमनुजातः । वृषमारुरोह इति आरूढः  
शिवः । जृष् वयोहानौ । 'ऋत इट्' ( सू० ८२० ) । 'ध्वोर्विहसे'  
( सू० ३१६ ) जगत् अनुजजार इति-अनुजीर्णोऽच्युतः । जगदनु-  
जीर्णो वासुदेवः ॥ १२७६ रः ७ ॥ रेफादुत्तरस्य क्तस्य नो भवति ॥  
णत्वम् ॥ पक्षे तेन रमाश्लिष्टा हरिणा इत्यादि ज्ञेयम् ॥ १२७७  
क्तो वा सेट् ८ ॥ उकारोपधान्मृषश्च परः सेट् क्तः प्रत्ययः किद्धा  
भवति ॥ दिद्युते तत्-द्युतितम् । द्योतते स्म तत्-द्योतितम् । प्रकर्षेण  
दिद्युते स्माऽसौ-प्रद्युतितः । प्रकर्षेण द्युतं प्राप्तः वा प्रद्योतते स्माऽसौ-  
प्रद्योतितः ॥ मृष क्षान्तौ संपूर्वः । सम्यक् ममृषे तत्-संमृषितं-संम-  
र्षितम् । उदयं प्राप्तः उद्यते स्माऽसौ-उदितः । रोदनं प्राप्तः-रोदितः  
वा रोदिति स्माऽसौ रोदितः-रुदितः । मुष्यते स्माऽसौ-मोषितः  
-मुषितः । 'ग्रहां किति च' ( सू० ८७३ ) गृह्यते स्माऽसौ-गृहीतः ।  
नुद्यते स्म इति-नोदितः-नुदितः । वेदितः-विदितः ॥ १२७८ शीङ्-  
स्विदिमिदिक्ष्विदिष्टुपूङ्क्षेमार्थे ९ ॥ एभ्यः परौ सेटौ क्त-  
वतू प्रत्ययौ कितौ न भवतः ॥ १२७९ पूङो वा क्तः सेट् १० ॥  
पूङ्क्षः परस्य क्तप्रत्ययस्येडा भवति ॥ पूङ्क्षो धोने । पुपूवेऽसौ-पवितः-  
पूतः । शिष्येऽसौ-शयितः ॥ १२८० कितः ११ ॥ उवर्णान्तात्

ऋवर्णान्तात् श्विश्रियश्च घातोः परस्य कित्प्रत्ययस्य वसादेः इद् न भवति ॥ बभूवेत्यसौ वा भवति स्म इति-भूतः । णु स्तुतौ । नौति स्म इति नुतः । वृञ् वरणे । ववार इति-वृतः । टुओश्चिर्गतिवृद्धोः । शिश्वायेति-श्वितः । श्रयते स्म इति-श्रितः ॥ १२८१ श्रयतेः संप्रसारणस्य दीर्घः १२ ॥ अशिश्चियदिति शूतः ॥ १२८२ आदी-दितः १३ ॥ आदित ईदितश्च परस्य क्तस्येद् न भवति ॥ १२८३ जीतां तक् वर्तमानेऽपि १४ ॥ जीतां घातूनां मतिबुद्धिपूजार्थानां च वर्तमानेऽपि तक् प्रत्ययो भवति ॥ अपिशब्दात् भावकर्मणोरपि ॥ १२८४ दस्तस्य नो दश्च १५ ॥ दकारादुत्तरस्य कितस्तस्य नत्वं भवति ॥ चकाराद्दकारस्य नकारो भवति ॥ जिमिदा स्नेहने ॥ १२८५ आदितः कर्मणि निष्ठा कर्तरि च वाच्या १६ ॥ मिद्यते तत्-मिन्न । मिन्नमन्नं तैलेन वर्तते ॥ १२८६ भावे कर्तरि चादितः क्तस्येष्ट वा वाच्यः १७ ॥ १२८७ मिदेर्गुणः १८ ॥ मेद्यतेऽसौ-मेदितः । मिद्यते तत्-मेदितम् । ह्राद आह्लादने ॥ १२८८ निष्ठायां ह्रस्वो वाच्यः १९ ॥ ह्रादतेऽसौ-ह्रन्नः । जिष्विदा गात्रप्रक्षरणे ह्रादने च । आयासेन प्रस्विद्यतेऽसौ-प्रस्विन्नः । प्रस्वेदितः । स्वेदितं तेन । जिक्ष्विदा संचूर्णने । क्ष्विद्यतेऽसौ-क्ष्विण्णः । क्ष्विद्यते तत्-क्ष्वेदितं तेन । जिघृषा प्रागरभ्ये । स्वादिषु । धृष्णोतीति-धर्षितः-धृष्टः । मन्यतेऽसौ-मतः । बुध अवगमने । बुध्यतीति-बुद्धः । पूज अर्चयाम् । पूज्यत इति-पूजितः सः । जीतां तक् वर्तमानेऽपि इत्यपिशब्दात् जार्चे-च्छार्थशीलादेस्तक् । ज्ञा अवबोधने । अर्च पूजयाम् । इषु इच्छायाम् । शील स्वभावे । एतेषां तक् भवति ॥ ज्ञातः । अर्चितः । इष्यतेऽसौ-एषितः । शील्यतेऽसौ-शीलितः ॥ १२८९ क्तस्य च वर्तमाने २० ॥ वर्तमानार्थस्य क्तस्य योगे षष्ठी स्यात् ॥ तेन राज्ञां पूजितः ।

पूज पूजने । अन्यत्र, -कार्ये क्तः सामान्यः । दस्तस्य नो दश्चेति  
चकारान्मदेनेति वाच्यम् । तेन माद्यतीति-मत्तः । मदी हर्षे ॥  
१२९० अदो जघुः २१ ॥ अदो जघुरादेशो भवति निष्ठायां किति  
तकारे परे क्यपि च ॥ उकार उच्चारणार्थः ॥ १२९१ क्तक्तवत्  
निष्ठा २२ ॥ एतौ प्रत्ययौ निष्ठासंज्ञौ स्तः ॥ 'तथोर्धः' (सू० ७५३) ।  
'झवे जबाः' (सू० ३५) । अद् भक्षणे । अद्यते स्म तत्-जग्धम् ।  
किं? अन्नम् । 'रः' (सू० १२७६) दृ विदारणे । कृ हिंसायाम् ।  
कृ विक्षेपे । 'ऋत इश्' (सू० ८२०) । 'ध्वोर्विहसे' (सू० ३१६)  
विकीर्यते स्माऽसौ-विकीर्णः । जृष् वयोहानौ । षकारः षिद्धिदाम्  
इत्यस्य विशेषणार्थः । जीर्यते स्म तत्-जीर्णम् । किं? शरीरम् । गीर्यते  
स्म तत्-गीर्णम् । पूरी पूर्ती । पूर्यते स्माऽसौ-पूर्णः ॥ १२९२ र इति  
सूत्रं न पिपर्तेः २३ ॥ 'पोरु' (सू० ९४८) पिपर्ति स्म इति-पूर्तः ॥  
१२९३ ल्वाद्योदितः २४ ॥ ल्वादेरोदितश्च घातोः कितस्तो नो  
भवति ॥ लृञ् छेदने । लृयते स्माऽसौ-लूनः । ज्या वयोहानौ ।  
'ग्रहां किति च' (सू० ८७३) जीनाति स्माऽसौ-जीनः । भुजो  
कौटिल्ये । 'चोः कुः' (सू० २८५) भुज्यते स्माऽसौ-भुमः । ओहाक्  
त्यागे । 'स्थामि' (सू० १२४३) हीयते स्माऽसौ-हीनः । षूङ् दूङ्  
डीङ् घीङ् रीङ् मीङ् दीङ् लीङ् व्रीङ् एते नव ओदितः । षूङ्  
प्राणिप्रसवे । सूयते स्माऽसौ-सूनः । दूङ् परित्यागे । दूङ् दुःखे । दूयते  
स्माऽसौ-दूनः । डीङ् विहायसा गतौ ॥ १२९४ डीङ् इडभावः  
२५ ॥ डीयते स्माऽसौ-डीनः । घीङ् धारणे । घीङ् सामर्थ्ये । घीयते  
स्माऽसौ-धीनः । रीङ् क्षरणे । रीङ् स्रवणे । रीयते स्माऽसौ-रीणः ।  
मीङ् प्राणवियोगे । मीङ् हिंसायाम् । मीयते स्माऽसौ-मीनः । दीङ् क्षये ।  
दीयते स्माऽसौ-दीनः । लीङ् आश्लेषणे । लीङ् विलेपने । लीयते स्माऽसौ-

लीनः । व्रीड वरणे । व्रीयते स्माऽसौ-व्रीणः । इत ओदितः ।  
 ओप्यायी वृद्धौ ॥ १२९५ प्यायः पी २६ ॥ प्यायः पी आदेशो  
 भवति निष्ठायाम् ॥ प्यायते स्मासौ-पीनः । क्षि क्षये ॥ १२९६  
 क्षियो निष्ठायां कर्तरि दीर्घो वाच्यः २७ ॥ १२९७ दीर्घादेव  
 क्षियो निष्ठायास्तस्य नो वाच्यः २८ ॥ क्षीयते स्माऽसौ-क्षीणः ।  
 क्षीणवान् । भावकर्मणोस्तु, -क्षीयते स्म तत्-क्षितं । तेन क्षितः कामो  
 मया वा ॥ १२९८ यरलवसंयोगादेरादन्तान्निष्ठातस्य नो वाच्यः  
 २९ ॥ द्रा स्वप्ने । द्रायते स्माऽसौ-द्राणः । ग्लै ग्लै हर्षक्षये ।  
 ग्लायते स्मासौ-ग्लानः । ग्लानः । हि गतौ । हीयते स्माऽसौ हितः ।  
 त्रैड पालने ॥ १२९९ त्राणाद्या वा ३० ॥ त्राणादीनां नत्वं वा  
 निपात्यते । त्रायते स्माऽसौ-त्राणः-त्रातः । त्रा गन्धोपाद ने । जिघ्रति  
 स्माऽसौ-घ्राणः-घ्रातः । ह्री लज्जायाम् । हीयते स्माऽसौ-हीणः-हीतः ।  
 नुद् प्रेरणे । नुद्यते स्माऽसौ-नुन्नः-नुत्तः । विदिद् विचारणे । विद्यते  
 स्माऽसौ-विन्नः-वित्तः ॥

वेत्ति रूपं विद् ज्ञाने विन्ते विदिद् विचारणे ।

विद्यते विद् सत्तायां विद् लाम्बे च विन्दति ॥ १० ॥

उन्दी क्लेदे । उद्यते स्माऽसौ-उन्नः-उन्तः । वा गतिगन्धनयोः ।  
 निर्वाति स्म वा निर्वायते स्माऽसौ-निर्वाणः-निर्वातः । विद् सत्ता-  
 याम् । विद्यते स्माऽसौ-विन्नः-वित्तः । एते त्राणाद्या ज्ञेयाः ॥  
 १३०० सं परि उप एभ्यः परस्य करोतेर्धातोर्भूषणोऽर्थे शोभ-  
 नेऽर्थे च वाच्ये सति सुट् प्रत्ययो भवति ३१ ॥ टित्त्वादादौ ।  
 संस्कियते स्माऽसौ-संस्कृतः । परिष्क्रियते स्माऽसौ-परिष्कृतः ।  
 उपस्कियते स्माऽसौ-उपस्कृतः । यदा संस्कृतिर्न तदा संस्कियते  
 स्माऽसौ-संस्कृतः । परिष्क्रियते स्माऽसौ-परिष्कृतः । उपस्कृतः । भावे



घञ् । संस्क्रियते स्मासौ-संस्कारः । अलंक्रियते स्मासौ-अलंकारः ।  
विद ज्ञाने । विद्यते स्मासौ-विदितः ॥ १३०१ दो दत्ति ३२ ॥  
दा इत्यस्य दद्भवति किति तकि परे ॥ दीयते स्माऽसौ-दत्तः । ददाति  
स्म इति-दत्तवान् । 'वितो नुम्' ( सू० २९२ ) ॥ १३०२ स्वरात्तो  
वा ३३ ॥ स्वरादुत्तरस्य दा इत्यस्य वा तो भवति किति तकि परे ॥  
प्रकर्षेण दीयते स्माऽसौ-प्रत्तः-प्रदत्तः । अवदीयते स्माऽसौ-अवदत्तः-  
अवत्तः ॥ १३०३ नाम्यन्तोपसर्गस्य दीर्घो भवति ३४ ॥  
१३०४ ददातेस्तो वाच्यः ३५ ॥ नितरां दीयते स्म तत् नीचं  
नीदत्तम् । पर्यासमन्ताद्भावेन दीयते स्म तत्-परीचं-परीदत्तम् ॥  
१३०५ दधातेर्हिनिष्ठायां वाच्यः ३६ ॥ धीयते स्मासौ-हितः ।  
दधाति स्माऽसौ-हितवान् ॥ १३०६ जहातेश्च किति ३७ ॥ जहा-  
तेर्धातोः किति प्रत्यये परे हिरादेशः स्यात् ॥ तेन पूर्वं हित्वा हीय-  
ते स्माऽसौ-हितः । अहासीदिति-हितवान् ॥ १३०७ ध्याख्यापृम्-  
र्च्छिमदां क्तस्य नत्वाभावो वाच्यः ३८ ॥ ध्यै चिन्तायाम् ।  
ध्यायते स्माऽसौ-ध्यातः । ख्या प्रकथने । ख्यायते स्माऽसौ-ख्यातः ।  
पृ पालने । पूर्यते स्माऽसौ-पूर्तः । 'पारु' ( सू० ९४८ ) । खोर्वि-  
हसे ( सू० ३१६ ) मुच्छा मोहसमुच्छ्राययोः ॥ १३०८ राह्योपश्र्योः  
३९ ॥ रेफादुत्तरयोश्छोर्लोपो भवति किति तकारे परे ॥ मूच्छर्यते  
स्माऽसौ-मूर्तः । मदी हर्षे । मद्यते स्म इति-मत्तः । यज देवपूजा-  
संगतिकरणदानेषु । यजेः क्तः । षत्वम् । षुत्वम् । संप्रसारणम् ।  
इज्यते स्म तत्-इष्टं-इष्टवान् । दुवप् बीजतन्तुसन्ताने । उप्यते स्म  
तत्-उप्तम् । वह प्रापणे । 'हो ढः' ( सू० २४३ ) । 'तथोर्धः' ( सू०  
७५३ ) 'ढि ढो लोपो दीर्घश्च' ( सू० ८०२ ) उब्यते स्माऽसौ-ऊढः  
भारः । ऊढोऽनङ्गहा पङ्गुः । वेष् तन्तुसन्ताने । ऊयते स्माऽसौ-

उतः । व्येञ् संवरणे । संवीयते स्माऽसौ-संवीतः । हेञ् स्पर्धायाम् ।  
हेञ् आह्वाने । हेञ् कौटिल्ये । संपसारणं दीर्घः । आह्वयते स्माऽसौ-  
आहृतः । वद व्यक्तायां वाचि । संपसारणम् । उद्यते स्माऽसौ-  
उदितः । वच परिभाषणे । उच्यते स्माऽसौ-उक्तः । 'वसिक्षुघ्योरिट्  
(सू० १२७५) वस् निवासे । उष्यते स्माऽसौ-उषितः ।  
'घसादेः षः' (सू० ८३२) क्षुध बुभुक्षायाम् । क्षुध्यते स्मासौ-  
क्षुधितः । जिष्वप् शये । सुष्यते स्मासौ-सुप्तः । ओब्रश्चू  
छेदने ॥ १३०९ वेटो निष्ठायां इट् न ४० ॥ 'स्कोराद्योश्च' (सू०  
३०१) संपसारणं । 'ल्वाद्योदितः' (सू० १२९३) इति नत्वम् ।  
णत्वम् । 'चोः कुः' (सू० २८५) प्रवृश्च्यते स्माऽसौ-प्रवृक्णः ॥  
१३१० जनेर्जा निष्ठायाम् ४१ ॥ जनेर्घातोर्जा आदेशो भवति  
निष्ठायां परतः ॥ जन जनने । जन्यते स्माऽसौ-जातः ॥ १३११  
खनेरात्वं निष्ठायाम् ४२ ॥ खन खनने । खन्यते स्माऽसौ-खातः ॥  
१३१२ पचो वः ४३ ॥ पचेः परस्य क्तस्य वो भवति निष्ठायाम् ॥  
पच्यते स्माऽसौ-वा पाकक्रियया निर्वृत्तः-पक्कः । पचति स्माऽसौ-  
पक्वान् ॥ १३१३ क्षायो मः ४४ ॥ क्षायः परस्य क्तस्य मो  
भवति निष्ठायाम् ॥ क्षै क्षये । 'सन्ध्यक्षराणामा-' (सू० ८०३)  
क्षायते स्माऽसौ-क्षामः ॥ १३१४ शुषेः कः ४५ ॥ शुषेः परस्य  
क्तस्य को भवति निष्ठायाम् ॥ शुष् शोषणे । शुष्यते स्माऽसौ-  
शुष्कः ॥ १३१५ स्फायः स्फीः ४६ ॥ स्फायः स्फीरादेशो  
भवति निष्ठायां परतः ॥ ओस्फायी वृद्धौ । स्फायते स्माऽसौ-स्फीतः ।  
घेद् पाने । पीयते स्म तत्-पीतम् । 'स्थामी' (सू० १२४३) गै  
शब्दे । गीयते स्म तत्-गीतम् । पा पाने । पीयते स्म तत्-पीतम् ।  
दो अवखण्डने । दीयते स्म तत्-दितम् । षोऽन्तकर्मणि । सीतेय

स्म तत्-सितम् । माङ् माने । मीयते स्म तत्-मितम् ॥ १३१६  
सेति निष्ठायां वेर्लोपो वाच्यः ४७ ॥ चोर्यते स्माऽसौ-चोरितः ।  
याच्यते स्माऽसौ-याचितः ॥ क्तवत् निष्ठासंज्ञौ ॥ इति निष्ठा-  
धिकारप्रक्रिया ॥ २ ॥

### क्खादिप्रक्रिया ३

अथ क्खादिप्रक्रिया ॥ १३१७ क्सुकानौ णवेवत् १ ॥ धातोः  
क्सुकानौ प्रत्ययौ भवतः अतीते काले वाच्ये सति तौ च णप् ए इति वत्  
परस्मैपदात्मनेपदे भवतः ॥ णवादित्वाद्विर्वचनं न तु णपो णित्वा-  
द्वृद्धिरित्याशयः ॥ यथा च णप् परस्मैपदे तथा क्सुः । यथा  
आत्मनेपदे ए तथा कानः । ककारो गुणप्रतिषेधार्थः । उकारो  
नुम्बिधानार्थः । डुकृञ् करणे । चकार इति-चकृवान् । 'त्रितो नुम्'  
(सू० २९२) हे चकृवन् । चकृवांसौ, चकृवांसः । चकृवांसम्,  
चकृवांसौ । 'वसोर्व उः' (सू० ३०२) चक्रुषः । चक्रुषा । 'वसां  
रसे' (सू० २३६) चकृवञ्चाम्, चकृवद्भिः-इत्यादि । चक्रे इति-  
चक्राणः । स्त्रीलिङ्गे, -चक्रुषी । नपुंसके, -चक्रुषः, चक्रुषी, चक्रुवांसि ।  
भिदिर् विदारणे । बिभेद इति-बिभिद्वान्, बिभिद्वान्सौ, बिभिद्वान्सः ।  
बिभिद्वान्सम् । बिभिद्वान्सौ । 'वसोर्व उः' (सू० ३०२) बिभिदुषः ।  
बिभिदुषा । 'वसां रसे' (सू० २३६) बिभिद्वञ्चाम्, बिभिद्वद्भिः-  
इत्यादि । बिभिदे इति-बिभिदानः । भञ्जो आमर्दने । बभञ्ज इति-बभ-  
ञ्जवान् । बभञ्जे इति-बभञ्जानः । जागृ निद्राक्षये । जजागार इति-जजागृ-  
वान्-जजागर्वान् इत्यपि भवति ॥ १३१८ जागर्तेः किति गुणो वक्त-  
व्यः २ ॥ तेन जजागरुषः ॥ १३१९ कृतद्वित्वनामेक्स्वराणामाद-  
न्तानां च घसेरेव क्सोरिद्वाच्यो नान्येषाम् ३ ॥ बभूव इति बभू-

वान् । ऋगतौ आर इति—आरिवान् । पपौ इति—पपिवान् । अद भक्षणे ।  
आद इति—आदिवान् । तस्थौ इति—तस्थिवान् । बभौ इति—बभिवान् ।  
ययौ इति—ययिवान् । या प्रापणे । दरिद्रातेरनपि नित्यालोपित्वेनेद् ।  
ददरिद्रौ इति—दरिद्रिवान् ॥ १३२० वृणूसयुटौ हित्वा दरिद्रा-  
तेरनप्यालोपो वाच्यो लुङि वा ४ ॥ ददरिद्रुषः । डुदाञ् दाने ।  
ददौ इति—ददिवान् दुदुषः । घस्ल अदने । जघास इति—जक्षिवान् ।  
‘कुहोश्चुः’ ( सू० ७४६ ) । ‘झपानां जबचपाः’ ( सू० ७१४ ) । ‘गम ।  
स्वरे’ ( सू० ७८९ ) । ‘खसे चपा झसानाम्’ ( सू० ८९ ) । ‘किलात्’  
( सू० १४१ ) वस्योत्वे कृते इडभावः । चक्षुषः ॥ १३२१ गम्-  
हन्विद्विशदृशां क्सोर्वेद् ५ ॥ गस्ल गतौ । जगाम इति—जग्मि-  
वान्-जगन्वान् । ‘भो नो धातोः’ ( सू० २७५ ) ॥ १३२२ द्विरु-  
क्तस्य हन्तेर्हकारस्य घत्वं वक्तव्यम् ६ ॥ जघान इति जग्मिवान्-  
जघन्वान् । विद ज्ञाने । विवेद इति—विविदिवान्-विविद्वान् । विश्  
प्रवेशने । विवेश इति—विविशिवान्-विविश्वान् । दृशिद् प्रेक्षणे ।  
ददर्श इति—ददृशिवान्-ददृश्वान् । इण् गतौ ॥ १३२३ इणो दीर्घता  
क्सौ वक्तव्या ७ ॥ इयाय इति—ईयिवान् । उपेयाय इति—उपेयि-  
वान् । ‘लोपः पचां कित्ये’ ( सू० ७६२ ) पपाच इति—पेचिवान् ॥  
१३२४ शतृशानौ तिप्तेवत् क्रियायाम् ८ ॥ क्रियापदे गम्यमाने  
सति धातोः शतृशानौ प्रत्ययौ भवतः । वर्तमानेऽर्थे तौ च तिप्तेवत्  
परस्मैपदात्मनेपदयोर्भवतः ॥ ‘अदे’ ( सू० ६९५ ) पचतीति—पचन्  
आस्ते ॥ १३२५ ऋकारानुबन्धस्य नुमागम एव भवति न  
दीर्घता वक्तव्या ९ ॥ पठतीति—पठन् तिष्ठति । गायतीति—  
गायन् आगच्छति । पिबतीति—पिबन् ॥ १३२६ मुमानेतः  
१० ॥ अकारस्य आने परे मुमागमो भवति ॥ पचतेऽसौ—

पचमानः । पिबति वा पठति । यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु ।  
यजतेऽसौ-यजमानः स्तौति । मन ज्ञाने । मन्यतेऽसौ-मन्यमानः । मनु  
अवबोधने । 'तनादेरुप-' ( सू० ९९७ ) मनुतेऽसौ-मन्वानः । पराग-  
च्छति । करोतीति-कुर्वन् सः । 'डित्यदुः' ( सू० १००० ) कुरुतेऽसौ-  
कुर्वाणः । क्रियतेऽसौ-क्रियमाणः ॥ १३२७ उपसर्गस्थनिमित्तात्  
नकारस्य णो वाच्यः ११ ॥ प्रपीयतेऽसौ-प्रपीयमाणः ॥ १३२८  
आसेरानई १२ ॥ आसेर्घातोः परस्य आन आकारस्य ईकारादेशो  
भवति ॥ आस् उपवेशने । आस्तेऽसौ-आसीनः ॥ १३२९ वा  
दीपोः शतुः १३ ॥ अवर्णात्परस्य शतृप्रत्ययस्य वा नुमागमो भवति  
ईकारे ईपि च परे ॥ तुद व्यथने । तुदतीति तुदन्, तुदन्तौ,  
तुदन्तः । स्त्रीलिङ्गे तुदति सा-तुदन्ती-तुदती, तुदन्त्यौ-तुदत्यौ,  
तुदन्त्यः-तुदत्यः । नपुंसके तुदतीति-तुदत्, तुदन्ती-तुदती, तुदन्ति, ।  
इत्यादि ॥ १३३० अप्ययोरान्नित्यम् १४ ॥ अप्प्रत्ययायप्रत्यय-  
संबन्धिनः अकारात्परस्य शतुर्नित्यं नुमागमो भवति ईपोः परतः ॥  
भवति इति-भवन्, भवन्तौ, भवन्तः । भवति सा-भवन्ती, भवन्त्यौ,  
भवन्त्यः । भवति तत्-भवत्, भवन्ती, भवन्ति । पचतीति-पचन्,  
पचन्ती स्त्री । नपुंसके पचति तत्-पचत्, पचन्ती, पचन्ति । दिवु  
क्रीडादिषु । दीव्यति इति-दीव्यन् । दीव्यन्ती स्त्री । नपुंसके, दीव्यति  
तत्-दीव्यत्, दीव्यन्ती, दीव्यन्ति । पठतीति-पठन् । पठन्ती स्त्री ।  
नपुंसके, पठन्, पठन्ती, पठन्ति । हसतीति-हसन् । हसन्ती स्त्री ।  
हसत् नपुंसके । श्लिष्यतीति-श्लिष्यन् । श्लिष्यन्ती स्त्री । श्लिष्यन्  
नपुंसके । जयतीति-जयन् । जयन्ती स्त्री । नपुंसके जयत् ॥  
१३३१ वादिपोः शतुरित्यत्र वाशब्दात् द्विरुक्तानां जक्षादीनां  
च शतुर्नित्यं नुमप्रतिषेधो वक्तव्यः नपुंसके शौ वा १५ ॥

ददातीति—ददत्-दधत् ददती ददति । जक्षं भक्षहसनयोः । जक्षतीति—  
जक्षत्—जक्षती-जक्षति, जक्षन्ति, कुलानि । जागृ निद्राक्षये । जागर्तीति—  
जाग्रती, जाग्रत्, जाग्रन्ति-जाग्रति । दरिद्रा दुर्गतौ ॥ १३३२ दरि-  
द्रातेरालोपो वक्तव्यः १६ ॥ दरिद्रातीति—दरिद्रत्, दरिद्रन्ती,  
दरिद्रति-दरिद्रन्ति । चकास्तीति—चकासत्, चकासती, चकासन्ति-  
चकासति । शास्तीति तत्—शासत् । अनुशास्ति तत्—अनुशासत् ।  
'दादेः' ( सू० ९५७ ) ददत्, ददती, ददन्ति-ददति । दधत्—इत्यादि ॥  
१३३३ विदेर्वा वसुः १७ ॥ विदेर्धातोः शतृविषये वा वसुप्र-  
त्ययो भवति ॥ वेत्तीति—विद्वान्-विदन् ॥ १३३४ भविष्यदर्थे  
तिप्तेवत् शतृशानौ भवतः १८ ॥ १३३५ अत्रभवत्तत्रभव-  
च्छब्दौ पूज्यार्थे निपात्येते १९ ॥ अत्रभवन्तो भट्टमिश्राः, पूज्या  
इत्यर्थः । तत्रभवद्भिर्भगवत्पादैर्भणितम् ॥ १३३६ शीले तृन् २० ॥  
धातोस्तृन् प्रत्ययो भवति शीले स्वभावेऽर्थे ॥ नकारः प्रत्ययभेदज्ञा-  
पनार्थः । करोतीत्येवंशीलः—कर्ता । विचरतीत्येवंशीलः—विचरिता ॥  
णीञ् प्रापणे । नयतीत्येवंशीलः—नेता । धर्ता । म्रियते इत्येवं-  
शीलः—मर्ता । विभर्तीत्येवंशीलः—भर्ता । शयिता—इत्यादि ॥ इति  
कस्मादिप्रक्रिया ॥ ३ ॥

### शीलार्थप्रक्रिया ४

अथ शीलार्थप्रक्रिया ॥ १३३७ इष्णुस्तुक्रुः १ ॥ धातोः शीले  
स्वभावेऽर्थे इष्णु स्तु क्रु इत्येते प्रत्यया भवन्ति । अलंपूर्वः ॥ १३३८  
अलंकृञ् निराकृञ् प्रजन् उत्पच् उत्पत् उत्पद् ग्रस् उन्मत्  
रुच् अपत्रप् वृत्तु वृधु सह चर भू भ्राज् ज्यन्त एभ्य इष्णुः  
२ ॥ अलंकरोतीत्येवंशीलः—अलंकरिष्णुः । निराकरिष्णुः । प्रजायते इत्ये-

वंशीलः प्रजनिष्णुः । उत्पत्ततीत्येवंशीलः—उत्पचिष्णुः । पल्ल पत्तने ।  
 उत्पत्ततीत्येवंशीलः—उत्पतिष्णुः । पद गतौ । उत्पद्यते इत्येवंशीलः—  
 उत्पदिष्णुः । ग्रस् अदने । ग्रसतीत्येवंशीलः—ग्रसिष्णुः । उन्माद्यती-  
 त्येवंशीलः—उन्मदिष्णुः । रुच दीप्तौ । रोचतीत्येवंशीलः—रोचिष्णुः ।  
 त्रपूष् लज्जायाम् । अपत्रपति वा अपत्रपते इत्येवंशीलः—अपत्रपिष्णुः ।  
 वृत्तु वर्तने । वर्तते इत्येवंशीलः—वर्तिष्णुः । वृधुङ् वृद्धौ । वर्धते  
 इत्येवंशीलः—वर्धिष्णुः । सहति सहते वेत्येवंशीलः—सहिष्णुः ।  
 चरतीत्येवंशीलः—चरिष्णुः । भविष्णुः । आजृ दीप्तौ । आजते इति  
 —आजिष्णुः ॥ १३३९ इष्णुप्रत्यये परे व्यन्तानां जिलोपाभावो  
 वाच्यः ३ ॥ कारयतीत्येवंशीलः—कारयिष्णुः ॥ एते इष्णुप्रत्ययान्ताः ॥  
 १३४० ग्ला जि स्था भू म्ला क्षि पच् यज् परिमृज् एभ्यः  
 स्त्रुः ४ ॥ ग्लै हर्षक्षये । ग्लायतीत्येवंशीलः—ग्लास्त्रुः । जयतीत्येवं-  
 शीलः—जिष्णुः । भवतीत्येवंशीलः—भूष्णुः ॥ १३४१ जिभ्वोः स्त्रौ  
 गुणाभावो न इट् ५ ॥ १३४२ क्षेत्थ तथा ६ ॥ तिष्ठतीत्येवं-  
 शीलः—स्थास्त्रुः । क्षि क्षये । क्षयतीत्येवंशीलः—क्षयिष्णुः । पचतीत्ये-  
 वंशीलः—पक्ष्णुः । यजतीत्येवंशीलः—यक्ष्णुः । मृजूष् शुद्धौ ॥ १३४३  
 मृजेर्गुणनिमित्ते प्रत्यये परे वृद्धिर्वाच्या ७ ॥ परिमार्ष्टीत्येवंशीलः—  
 परिमार्ष्णुः ॥ १३४४ विप्ल् त्रस् गृध् धृष् क्षिप् एभ्यः क्तुः ८ ॥  
 विप्ल् व्याप्तौ । वेवेष्टि इत्येवंशीलः—विष्णुः । त्रसी उद्वेगे । त्रसी  
 भये । त्रस्यतीत्येवंशीलः—त्रस्त्रुः । गृधु अभिकाङ्क्षायाम् । दिवादिः ।  
 गृध् यतीत्येवंशीलः—गृध्रुः । जिघृषा प्रागरभ्ये । स्वादिः । घृष्णोतीत्येवं-  
 शीलः—घृष्णुः । क्षिप् प्रेरणे । क्षिपतीत्येवंशीलः—क्षिप्त्रुः । ककारो  
 गुणनिषेधार्थः ॥ १३४५ पाकोक्कणः ९ ॥ घालोः शीऽलेर्थे षाक उ  
 लकण् इत्येते प्रत्यया भवन्ति ॥ १३४६ जल्प भिक्ष कुट्ट लुण्ट वृङ्

एभ्यः षाकः प्रत्ययो भवति १० ॥ जल्प व्यक्तायां वाचि ।  
 जल्पतीत्येवंशीलः—जल्पाकः । भिक्ष याच्यायाम् । भिक्षतीत्येवंशीलः—  
 भिक्षाकः । कुट्ट ताडने वा छेदने । कुट्टतीत्येवंशीलः—कुट्टाकः । लुण्ट  
 चौर्ये । लुण्टतीत्येवंशीलः—लुण्टाकः । वृङ् संभक्तौ । वृञ् संवरणे ।  
 वर निवारणे । वृणुते वा वरतीत्येवंशीलः वा वृणीत इत्येवंशीलः—  
 वराकः । ष ईबर्थः । वराकी ॥ १३४७ सान्ताशंस भिक्ष एभ्य  
 उः प्रत्ययो भवति ११ ॥ १३४८ सान्ताशंसयोश्च १२ ॥  
 सप्रत्ययान्तादाङ्पूर्वात् शंसु स्तुतावित्यस्माद्धातोश्च शीलार्थं विनापि  
 उः प्रत्ययो भवति ॥ वच् परिभाषणे । विवक्षतीति—विवक्षुः ।  
 ‘इच्छायामात्मनः सः’ (सू० १०७५) द्वित्वम् । ‘पूर्वस्य हसादिः  
 शेषः’ (सू० ७३९) ‘ऋत इह’ (सू० ८२०) । ‘ध्वोर्विहसे’  
 (सू० ३१६) । ‘कुहोश्चुः’ (सू० ७४६) चिकीर्षतीत्येवंशीलः—  
 चिकीर्षुः । जिघृक्षतीत्येवंशीलः—जिघृक्षुः । आङ्पूर्वः शंसु स्तुतौ  
 शंस कथने । आशंसतीत्येवंशीलः—आशंसुः । भिक्षतीत्येवंशीलः—  
 भिक्षुः । पिपासतीत्येवंशीलः—पिपासुः । तितीर्षतीत्येवंशीलः—तितीर्षुः ॥  
 १३४९ लष पत पद भिक्ष स्था भू वृष हन् कम् गम् शृ एभ्य  
 उकाण् प्रत्ययो भवति १३ ॥ लष कान्तौ । लषतीत्येवंशीलः—  
 लाषुकः । पततीत्येवंशीलः—पातुकः । पद गतौ । णित्वाद्बुद्धिः ।  
 पद्यतीत्येवंशीलः—पादुकः । भिक्ष याच्यायाम् । भिक्षतीत्येवंशीलः—  
 भिक्षुकः । तिष्ठतीत्येवंशीलः—स्थायुकः । भवतीत्येवंशीलः वा भवितुं  
 शीलमस्यास्तीति—भावुकः । वृष वृष्टौ । वृषु सेचने । वर्षतीत्येवं-  
 शीलः—वर्षुकः । हन्तीत्येवंशीलः—घातुकः । कम् कान्तौ । कामयते  
 इत्येवंशीलः वा कामितुं शीलमस्यास्तीति—कामुकः । गम्ल गतौ ॥  
 गच्छतीत्येवंशीलः—गामुकः । शृ हिंसायाम् । शृणातीत्येवंशीलः—



शारुः ॥ १३५० शृवन्धोराः १४ ॥ शृवन्धोर्धात्वोराः प्रत्ययो  
भवति ॥ शराः । वन्दारः ॥ १३५१ स्पृहि गृहि पति शीङ्  
एभ्य आलुर्वाच्यः १५ ॥ स्पृह ईप्सायाम् । ईप्सा इच्छा । ग्रह  
ग्रहणे । पत ऐश्वर्ये । त्रयश्चुरादयोऽदन्ताः ॥ १३५२ आलौ विलो-  
पाभावो वाच्यः १६ ॥ स्पृहयतीत्येवंशीलः-स्पृहयालुः । गृहयतीत्ये-  
वंशीलः-गृहयालुः । पतयतीत्येवंशीलः-पतयालुः । शीङ् स्वप्ने । शेते  
इत्येवंशीलः-शयालुः ॥ १३५३ नमादे रः १७ ॥ नम् कपि स्मिङ्  
नञ्पूर्वो जस् कम् हिंस् दीप् एभ्यो रः प्रत्ययो भवति शीलेऽर्थे ॥  
णमु प्रहृत्वे शब्दे च । नमतीत्येवंशीलः-नम्रः । कपि चलने ।  
कम्पतीत्येवंशीलः-कम्पः । स्मिङ् ईषद्वसने । स्मयते इत्येवंशीलः-  
स्मेरः । जसु मोक्षणे । जस् गतिनिवृत्तौ । दिवादिः । न जस्यती-  
त्येवंशीलः-अजस्रम् । कामयते इत्येवंशीलः-कम्रः । हिसि हिंसा-  
याम् । हिनस्तीत्येवंशीलः-हिंस्रः । दीपी दीप्तौ । दीप्यते इत्येवंशीलः-  
दीप्रः ॥ १३५४ घसादेः क्मरः १८ ॥ घस् सृ अद् एभ्यः क्मरः  
प्रत्ययो भवति शीलेऽर्थे ॥ घस्ल अदने । घसतीत्येवंशीलः-घस्सरः ।  
सृ गतौ । सृ सरणे । सृ हिंसायाम् । सरतीत्येवंशीलः-सृमरः । अद्  
भक्षणे । अत्तीत्येवंशीलः-अक्षरः ॥ १३५५ भिदि छिदि विदि  
एभ्यः कुरङ्गाच्यः शीलेऽर्थे १९ ॥ भिनत्तीत्येवंशीलः-भिदुरः ।  
विद् ज्ञाने । वेत्तीत्येवंशीलः-विदुरः । छिदि द्वैधीकरणे । छिनत्तीत्येवं-  
शीलः-छिदिरः ॥ १३५६ भासादेर्घुरः २० ॥ भास् भञ् भिद्  
एभ्यो घुरः प्रत्ययो भवति शीलेऽर्थे ॥ घकारो धित्कार्यार्थः ॥  
भास् दीप्तौ । भासते इत्येवंशीलः-भासुरः ॥ १३५७ चजोः कणौ  
घिति २१ ॥ घातोश्चकारजकारयोः ककारगकारौ भवतः घिति प्रत्यये

परे ॥ भञ्जो आमर्दने । भनक्तीत्येवंशीलः—भङ्गुरः । जिमिदा गात्र-  
 विक्षेपे । मेघते इत्येवंशीलः—मेदुरः ॥ १३५८ यङ ऊकः २२ ॥ यज्  
 जप् दंश् वद् एभ्यो यङ्प्रत्ययान्तेभ्य ऊकः प्रत्ययो भवति शीलेऽर्थे ॥  
 यङो लुक् । तत्सन्नियोगेन धातोर्द्विर्वचनम् । यज देवपूजासंगतिकरण-  
 दानेषु । अतिशयेन यजतीति वा इज्यते इत्येवंशीलः—यायजूकः ।  
 जप व्यक्तायां वाचि । ‘जमजपां नुक्’ ( सू० ११०३ ) जञ्जप्यत  
 इत्येवंशीलः—जञ्जपूकः । दंश् दंशने । दंशूकः । वावघते इत्येवंशीलः—  
 वावदूकः ॥ १३५९ जागर्तेरूको वाच्यः २३ ॥ जागर्तीत्येवंशीलः—  
 जागरूकः ॥ १३६० इण्णशजिसृगमिभ्यः क्कण् वाच्यः २४ ॥  
 इण् गतौ । ‘ह्रस्वस्य पिति’ ( सू० १२४६ ) एतीत्येवंशीलः—इत्वरः ।  
 णश् अदर्शने । नश्यतीत्येवंशीलः—नश्वरः । जयतीत्येवंशीलः—  
 जित्वरः । सरतीत्येवंशीलः—सत्वरः ॥ १३६१ गत्वरो निपात्यते  
 शीलेऽर्थे २५ ॥ गच्छतीत्येवंशीलः—गत्वरः ॥ १३६२ भियः  
 ऋक्कुक्कौ वक्तव्यौ २६ ॥ बिमेतीत्येवंशीलः—मीरुः—मीरुकः ॥  
 १३६३ इषेरुश्छश्च २७ ॥ इषेरुः प्रत्ययो भवति छान्तादेशश्च ।  
 इच्छतीति—इच्छुः ॥ १३६४ वरः २८ ॥ स्था ईश् भास् पिस्र  
 कसादिभ्यो वरः प्रत्ययो भवति शीलेऽर्थे ॥ तिष्ठतीत्येवंशीलः—  
 स्थावरः । ईश् ऐश्वर्ये । ईष्टे इत्येवंशीलः—ईश्वरः । भास् दीप्तौ ।  
 भासते इत्येवंशीलः—भास्वरः । पिस्र गतौ । पिसतीत्येवंशीलः—  
 पेस्वरः । कस् गतौ । कसतीत्येवंशीलः—कस्वरः ॥ १३६५ आदृतः  
 किर्दिश्च भूते २९ ॥ आकारान्तादकारान्ताद्धातोर्जनिनमिगमिभ्यश्च  
 शीलेऽर्थे भूतकाले किः प्रत्ययो भवति णबादिवद्धातोश्च द्विर्वचनं  
 भवति ॥ ‘आतोऽनपि’ ( सू० ८०५ ) ॥

रामः सोमं पपिर्यज्ञे ददिर्गाश्चक्रिरद्भुतम् ।

याजकान् वविराजहिः पौण्डरीके महाद्विजान् ॥ १ ॥

तदा जज्ञिर्महाश्चर्यं नेमिर्नृपगणोऽपि तम् ।

ब्राह्मणानां श्रुतिविदां गणो जग्मिर्धनं मुदा ॥ २ ॥

इति कृदन्तप्रक्रियायां शीलार्थप्रक्रिया ॥ ४ ॥

### उणादिप्रक्रिया ५

अथोणादयो निरूप्यन्ते ॥ १३६६ सदोणादयः १ ॥ सर्व-  
स्मिन्काले उणादयः प्रत्यया भवन्ति ॥ १३६७ कृ वा पा जि मि  
खदि साधि अशूङ् एभ्य उण् प्रत्ययो भवति २ ॥ णकारो  
वृद्ध्यर्थः । करोतीति-कारुः-कारुकः । वा गतिगन्धनयोः । 'आतो  
युक्' ( सू० ११९२ ) वातीति-वायुः । पा पाने । पातीति-पायुः ।  
जयति अनेनेति-जायुः । डुमिञ् प्रक्षेपणे । मि कौटिल्ये । मिनो-  
तीति-मायुः । खदि आस्वादने । खद्यते इति-खादुः । साध्यतीति-  
साधुः । अश्नोतीति-आशुः ॥ १३६८ सि तनि गमि मसि सचि  
अवि हि धा कुशि एभ्यस्तुन्प्रत्ययो भवति ३ ॥ षिञ् बन्धने ।  
सिनोतीति-सेतुः । तनोतीति-तन्तुः । गच्छतीति-गन्तुः । मसि  
परिणामे रक्षणे च । मस्यतीति-मस्तुः । षच संबन्धे । सचतीति-  
सक्तुः । अव रक्षणे । अवतेर्वकारस्य उकारः । अवतीति-ओतुः । हि  
गतौ वृद्धौ च । हिनोतीति-हेतुः । दधातीति-धातुः । कुश आह्वाने ।  
कुशि रोदने च । कुश् आक्रोशे । 'छशषराजादेः षः' ( सू० २७६ )  
'ष्टुमिः षुः' ( सू० ७९ ) क्रोशतीति-क्रोष्टा १ अव रक्षणे पालने  
च । कित्वात्संप्रसारणमुकारः ॥ १३६९ अवतेष्टुर्क ४ ॥ अवते-

र्धातोर्मुक्प्रत्ययो भवति ॥ अवतीति—ओम्, ओमौ, ओमः ॥ १३७०  
 अतिवृहिभ्यां मनिष् ५ ॥ अत सातत्यगमने । सततं अततीति—  
 आत्मा वा अतति, अखिलजनान्तर्निवासित्वेन सुकृतदुष्कृतकर्माणि  
 पश्यतीति आत्मा । वृहि वृद्धौ ॥ १३७१ मन्युपधाया ऋ रः  
 ६ ॥ मनिष्प्रत्यये परे उपधाया ऋकारस्य रेफो भवति ॥ वृंहतीति—  
 ब्रह्मा ॥ १३७२ घृष्टृपदो मः ७ ॥ घृ क्षरणे दीप्तौ च । घर्तीति—  
 वा घ्रियते इति—घर्मः । घृ धारणे । घर्तीति वा घ्रियतेऽसौ—घर्मः ।  
 पद गतौ । पद्यते तद्—पद्मम् ॥ १३७३ ऋ स्तु सु ह हु मृक्षि क्षु  
 मा मा या वा जक्ष रै नी श्यैङ् पद एभ्यो मः प्रत्ययो भवति  
 ८ ॥ ऋ गतौ । ऋच्छतीति—अर्मः=नेत्ररोगः । स्तौतीति—स्तोमः ।  
 ऋ प्रसवे । सूतेऽसौ—सोमः । हर्मः । जुहोतीति—होमः । घ्रियत इति  
 —मर्मः । क्षि निवासगत्योः । क्षयतीति—क्षेमः । दुक्षु शब्दे । क्षौतीति—  
 क्षोमः । भातीति—भामः । यातीति—यामः । वातीति—वामः । जक्ष-  
 भक्ष हसनयोः । जक्षमः । रायतीति—रामः । नेमः । श्यैङ् दीप्तौ ।  
 श्यायतीति—श्यामः । पद्मः ॥ १३७४ मीध्वोर्वा मक् ९ ॥ विमे-  
 त्यस्मादिति—मीमः । धूयतेऽसौ—धूमः ॥ १३७५ ध्वादेरुल्लिक्  
 १० ॥ ध्वादेर्धातोरुल्लिक् प्रत्ययो भवति ॥ धूनोति वा धूयतेऽसौ—  
 धूलिः । अगि लघि रघि गत्यर्थाः । इदितः । अङ्गते सा—अङ्गुलिः ॥  
 १३७६ भविष्यदर्थे णिनिः ११ ॥ आगमिष्यतीति—आगामी ।  
 भविष्यतीति—भावी ॥ १३७७ शसादेः करणे त्रक् १२ ॥  
 शसादेर्धातोः करणेऽर्थे त्रक् प्रत्ययो भवति ॥ १३७८ सर्वधातु-  
 भ्यस्त्वमनौ १३ ॥ शस् हिंसायाम् । शंसति वा शस्यते अनेनेति—  
 शस्त्वम् । शास् अनुशिष्टौ । शिष्यते अनेनेति—शास्त्वम् । असु क्षेपणे ।  
 अस्यते अनेनेति—अस्त्वम् । पा पाने । पीयते अनेनेति—पात्रम् ।

नीयते अनेनेति-नेत्रम् । दाप् लवने । दीयते अनेनेति-दात्रम् ॥  
 १३७९ युवहागिभ्यो निः १४ ॥ एभ्यो धातुभ्यो निः प्रत्ययो  
 भवति ॥ यु मिश्रणे । यौतीति-योनिः । वहतीति-वह्निः । अङ्गतेऽसौ-  
 अग्निः ॥ १३८० इदिचदिशकि रुदिभ्यो रः १५ ॥ एभ्यो रप्रत्ययो  
 भवति ॥ इदि चदि आह्लादने दीप्तौ च ॥ इन्दतेऽसौ-इन्द्रः ।  
 चन्दतेऽसौ-चन्द्रः । शक्नोतीति-शक्रः । रोदितीति-रुद्रः ॥ १३८१  
 पुष्पादेरः १६ ॥ पुष्पादेर्धातोरः प्रत्ययो भवति ॥ पुष्प विकसने ।  
 पुष्पति तत्-पुष्पम् । फल निष्पत्तौ । फलति तत्-फलम् । मूल व्याप्तौ ।  
 मूलति तत्-मूलम् । रघ सामर्थ्ये ॥ १३८२ उप्रत्ययः १७ ॥ रघते  
 शास्त्राणां शत्रूणां च अन्तं गच्छति प्राप्नोतीति-रघुः ॥ १३८३ गमेर्ढोः  
 १८ ॥ गमेर्धातोर्ढोः प्रत्ययो भवति । गच्छतीति-गौः ॥ १३८४ ग्लानु-  
 दिभ्यां ङौः १९ ॥ ग्लायतीति-ग्लैः । नुदतीति-नौः । नुद प्रेरणे ।  
 ष्वै स्त्यै शब्दसंघातयोः ॥ १३८५ स्त्यायतेर्दृट् २० ॥ ङित्वाट्टिलोपः ।  
 'संयोगान्तस्य लोपः' ( सू० २३५ ) ङित्वादीप् । स्त्यायति समूहं  
 करोति सा-स्त्री । लक्ष दर्शनाङ्कनयोः ॥ १३८६ लक्षतेरी मुट् च  
 २१ ॥ लक्षतेर्धातोरीः प्रत्ययो भवति तस्य ईप्रत्ययस्य मुडागमश्च ॥  
 लक्षयते पुमान् अनया सा-लक्ष्मीः ॥ १३८७ राजादेः कन् २२ ॥  
 राजादेर्धातोः कन् प्रत्ययो-भवति ॥ राज् धन्व यु द्यु प्रतिदिक् वृष्  
 तक्ष् दंश् पचि षप् अशूङ् नु मह एते राजादयः । राजृ दीप्तौ ।  
 राजतेऽसौ-राजा । धन्व गतौ । धन्वतीति-धन्वा । यु मिश्रणे ।  
 यौतीति-युवा । द्यु गतौ । द्योतीति-द्युवा । प्रतिदीव्यतीति-प्रति-  
 दिवा । वृषु वृद्धौ । वर्षतीति-वृषा । तक्षू तनूकरणे । तक्ष्णोतीति-  
 तक्षा । दंशन्तीति-दश । पचि विस्तारे । पचि संख्याने । 'इदित्  
 जसृशसोर्लुक्' ( सू० २६४ ) पञ्चतीति-पञ्च । षप् संबन्धे । षप् गणने ।

अशङ्क व्याप्तौ ॥ १३८८ षपेरशेः किति तुग् वक्तव्यः २३ ॥  
 सपन्ति ते-सप्त । अश्रुवते इति-अष्ट । णु स्तुतौ ॥ १३८९ अस्य  
 गुणः २४ ॥ नुवन्ति ते-नव । मह पूजायाम् ॥ १३९० अस्य  
 घान्तादेशो वुगागमश्च निपात्यते कन्प्रत्यये परे २५ ॥ मद्यते  
 इति मघवा । इति राजादयः ॥ १३९१ इस्मन्त्रासुकः सर्वधातुभ्यः  
 २६ ॥ सर्वधातुभ्य इस् मन् त्र असुक् इत्येते प्रत्यया भवन्ति ॥  
 १३९२ वचादेरस् २७ ॥ वचादेर्धातोस् प्रत्ययो भवति वा सर्व-  
 धातुभ्योऽस्प्रत्ययः ॥ उच्यते इति-वचः । मद्यते इति-महः । पीङ्  
 णे । पीयते तत्-पयः ॥ १३९३ पिबतेरपि २८ ॥ पिबतेर्धातो-  
 रसुन्प्रत्ययो भवति इकारान्तादेशश्च ॥ पीयते इति-पयः । तिज्  
 निज्ञाने क्षमायां च । तितिक्षतीति-तेजः । तप्यते इति-तपः । रज्ज्  
 रागे ॥ १३९४ असि नलोपो वाच्यः २९ ॥ रजते तत्-रजः ।  
 रक्ष हिंसायाम् । रक्षतीति-रक्षः ॥ १३९५ अर्चिरुचिशुचिहुसृपि-  
 च्छादिछृदिभ्य इस् प्रत्ययो भवति ३० ॥ अर्चिरुची दीप्तौ । अर्च-  
 तीति-अर्चिः । गुणः । रोचिः । शोचिः । ह्वयत इति-हविः । सर्पिः ॥  
 १३९६ छादेरिस्मन्त्रघञ्किप्सु ह्रस्वो वाच्यः ३१ ॥ छद संवरणे ।  
 चुरादिः । छादयतीति-छदिः । उच्छृदिर् दीप्तिदेवनयोः । छृणतीति-  
 छर्दिः ॥ 'सर्वधातुभ्यस्त्रमनौ' (सू० १३७८) तनु विस्तारे । तनोति तत्-  
 तन्नम् । मन ज्ञाने । मन्यते इति-मन्नः । यम उपरमे । यच्छतीति-यन्नः ।  
 छदि संवरणे । व्यन्तः । छादयतीति-छत्रम् । क्रियते तत्-कर्म । वृज्  
 आच्छादने । वृणोतीति-वर्म । मर्म । दाम । धर्म । छादयतीति-छन्नम् ॥  
 १३९७ धनार्तिचंक्षिङ्पृवपितपिजनियजिभ्य उस् प्रत्ययो भवति  
 ३२ ॥ धन शब्दे । धनतीति-धनुः । ऋ गतौ । गुणः । अरुः ।  
 चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि । चष्टे इति-चक्षुः । पिपतीति-परुः । वष-

तीति-वपुः । तपतीति-तपुः । जायते इति-जनुः । यजतीति-यजुः ॥  
 १३९८ अवतृस्तृञ्त्तन्त्रिकण्ठिभ्य ईः ३३ ॥ अवतीति-अवीः ।  
 तरतीति-तरीः । स्तृञ् आच्छादने । स्तृणोतीति-स्तरीः । तन्नि धारणे ।  
 कण्ठ अवधारणे । तन्नयति वा तन्नयते सा-तन्त्रीः । कण्ठयतीति-  
 कण्ठीः ॥ १३९९ सौकर्ये केलिमः ३४ ॥ सुखेन भिद्यते तत्-  
 भिदेलिमं वा मेतुं सुकरम् । भिदेलिमं किम् ? । काष्ठम् । सुखेन पच्यन्ते  
 इति पचेलिमा आढक्यः, वा पक्तुं सुकराः पचेलिमाः । के ? । तण्डुलाः ॥<sup>१</sup>

संज्ञासु धातुरूपाणि प्रत्ययाश्च ततः परे ।

कार्याद्विद्यादनूबन्धमेतच्छास्त्रमुणादिषु ॥ १ ॥

उणादयोऽपरिमिता येषु संख्या न गम्यते ।

प्रयोगमनुसृत्याद्वा प्रयोक्तव्यास्ततस्ततः ॥ २ ॥

इति कृदन्ते उणादिप्रक्रिया ॥ ५ ॥

### भावाधिकारप्रक्रिया ६

१४०० तुम् तदर्थायां भविष्यति १ ॥ धातोर्भविष्यति  
 काले तुम् प्रत्ययो भवति तदर्थायां क्रियायां प्रयुज्यमानायाम् ॥ भुज-  
 पालनाभ्यवहारयोः । भोक्ष्यतीति-भोक्तुं व्रजति । पठिष्यतीति-  
 पठितुं ईष्टे । स्तोष्यतीति-स्तोतुं ईहते । स्थातुं ईहते ॥ १४०१  
 तुमर्थे वुण् वक्तव्यः २ ॥ द्रक्ष्यतीति-द्रष्टुम् । कृष्णं द्रष्टुं व्रजति ।

टिप्प०—१ अस्याग्रे-‘गमेडौ’ । गमेडौः प्रत्ययो भवति । गच्छतीति-गाः ॥  
 ग्लानुदिभ्यां डौः । ग्लायतीति-ग्लौः । नुदतीति-नौः ॥ क्रादीनामि-  
 स्पष्टम् । कविः । रविः इत्यादि । मनेरत उच्च । मनधातोर्दकारस्योकारो भवति ।  
 मुनिः । पुः कुषन् । पृधातोः कुषन्नादेशो भवति । पोरु । पुरुषः । माप्रसृतिभ्यः  
 षः । मासः । दासः । मादिभ्यो यः । माया । जाया । दधातेर्नुद् । धान्यम् ।  
 पतिचिदिभ्यामालम् । पातालम् । चाण्डालः । इति पाठोऽधिकः कचिलभ्यते ।

कृष्णदर्शको व्रजति ॥ १४०२ कालसमयवेलासु तुम् ३ ॥ भोक्तुं  
 कालः । अध्येष्यतीति-अध्येतुं समयः । स्तोष्यतीति-स्तोतुं वेला ॥  
 १४०३ घञ् भावे ४ ॥ धातोर्भावे घञ् प्रत्ययो भवति ॥ 'चजोः  
 कगौ घिति' (सू० १३५७) पच्यते तत्-पचनं=पाकः । त्यज् वयो-  
 हानौ । त्यज्यते तत्-त्यजनं=त्यागः । भज्यते तत्-भजनं=भागः ।  
 इज्यते तत्-यजनं=यागः । विभज्यते तत्-विभजनं=विभागः ।  
 युजिद् योगे । अनुप्रयुज्यतेऽसौ-अनुप्रयोगः । अनूच्यते तत्-अनुव-  
 चनं-अनुवाकः । इण् गतौ । नन्दादित्वाद्युः । ततोऽनादेशः । गुणः  
 वृद्धिः । अयनं आयः । भूयते तत्-भवनं=भावः । 'आतो युक्'  
 (सू० ११९३) दीयते तत्-दानं=दायः । पानं पायः ॥ १४०४  
 भावे करणेष्ये घञि रञ्जेर्नलोपो वाच्यः ५ ॥ रज्यते अनेनेति  
 रञ्जनं वा-रागः । भावे किम् ? । रज्यतेऽस्मिन्निति-रङ्गः । रभ रामसे ॥  
 १४०५ रभलभोः स्वरेणाद्यपौ विना नुम् वाच्यः ६ ॥ आरम्भः ।  
 अञ्चु गतिपूजनयोः । परितो अञ्चतीति-प्राङ्ङः ॥ १४०६ संज्ञाया-  
 मकर्तरि च ७ ॥ धातोः कर्तृवर्जिते कारके भावे कर्मणि च घञ्  
 प्रत्ययो भवति संज्ञायां विषये ॥ कार्यं कार्यं प्रति आह्वियते इति-  
 प्रत्याहारः । दीयते अस्मिन् इति-दायः । पीयते अस्मिन् इति-पायः ।  
 विक्रियते अनेनेति-विकारः । मृजूष् शुद्धौ । अपामृज्यते अनेनेति-  
 अपामार्गः । लिख् आलेखने । लिख्यतेऽस्मिन्निति-लेखः । आचर्यतेऽ-  
 स्मिन्निति-आचारः । उपाधीयतेऽस्मादिति-उपाध्यायः ॥ १४०७  
 स्वरादः ८ ॥ इउऊवर्णान्तेभ्यो धातुभ्यः अः प्रत्ययो भवति भावादौ ॥  
 घञोऽपवादः । संचयीतेऽसौ-संचयः । चयनं चयः । जीयते इति-  
 जयः । नीयते तत्-न्यनं=नयः । उन्नीयते इति-उन्नयः । नूयते तत्-  
 नवनं=नवः । लवनं लवः । स्तूयते तत्-स्तवनं=स्तवः । कृ विक्षेपे ।



कीर्यते इति-करः । गरः नृ विक्षेपे । त्रियते विक्षिप्यते कामादिभिरिति-नरः । पिबू बन्धने । विशेषेण सीयते बध्यते अनेनेति-विषयः ॥

१४०८ मदामः ९ ॥ मदादीनां अः प्रत्ययो भवति भावादौ कर्तृ-वर्जिते ॥ मदी हर्षे । मद्यते तत्-मदनं मदः । प्रमद्यते अनेनेति-

प्रमदः । प्रमद्यते पुरुषोऽनया सा-प्रमदा । पण्यते तत्-पणनं पणः-शमु दमु उपशमे । शम्यतेऽसौ-शमः । दमनं दमः । श्रम स्वेदे । श्रम्यते इति-श्रमः । अमः । यमु उपरमे । यम्यते इति-यमः । व्यति

विश्रमनेनेति-देवः । जङ्गम्यतेऽसौ-जङ्गमः । हिसि हिंसायाम् ॥

१४०९ सिंहे वर्णविपर्ययश्च १० ॥ चकारादः प्रत्ययः । हिनस्तीति-सिंहः ॥ १४१० मूर्तौ घनः ११ ॥ मूर्तौ काठिन्ये परिच्छेदेऽर्थे

चाभिधेये हन्तेरः प्रत्ययो भवति भावादौ हन्तेर्घनादेशश्च ॥ दधि-काठिन्यं हन्यते इति-दधिघनः । परिच्छिन्नं सैन्धवं हन्यते इति-

सैन्धवघनः ॥ १४११ हनो वधादेशश्चाप्रत्ययः १२ ॥ हन्यते इति वधः ॥ १४१२ द्वितोऽथुः १३ ॥ द्वितो धातोरथुः प्रत्ययो

भवति भावादौ ॥ दुवेष्ट कम्पने । वेप्यते अनेनेति-वेपथुः । दुनदि समृद्धौ । नन्दते अनेनेति-नन्दथुः । दुवप् बीजतन्तुसन्ताने ।

उप्यते इति-वपथुः । दुक्षेष्ट क्षेपणे । क्षेप्यते अनेनेति-क्षेपथुः । दुओश्चि गतिवृद्धोः । श्वयथुः । दुक्षु शब्दे । क्षूयते इति-क्ष्वयथुः ।

दुवम् उद्गिरणे । वमथुः ॥ १४१३ द्वितस्त्रिमक् १४ ॥ द्वितो धातोस्त्रिमक् प्रत्ययो भवति । तेन धात्वर्थेन कृतेऽर्थे वाच्ये सति ॥

क्रियया निर्वृत्तः-कृत्रिमः घटः । संभारेण संभृतं वा निर्वृत्तं-संभृत्रिमं युद्धम् । पाकेन निर्वृत्तं-पक्त्रिमं फलम् । याचनेन निर्वृत्तं याचित्रिमं किम् ? । विप्रघनम् ॥ १४१४ नङ्की १५ ॥ धातोर्नङ्की इत्येतौ भवतः

भावादौ ॥ १४१५ यज् याच् यत् विच्छ प्रच्छ स्वप् एभ्यो नङ्

प्रत्ययो भवति १६ ॥ 'स्तोः श्रुभिः श्रुः' (सू० ६) असंप्रसारणम् ।  
 इज्यते अनेनेति-यज्ञः । याच्यते सा-याच्चा । यती प्रयत्ने ।  
 यत्यते तत्-यतनं=यत्नः ॥ १४१६ छः श्रे १७ ॥ छकारस्य  
 शकारादेशो भवति नप्रत्यये परे भावादौ ॥ शकारादेशः संप्रसारण-  
 बाधार्थः । विच्छि गतौ । विच्छद्यते इति-विश्रः । प्रच्छि ज्ञीप्सायाम् ।  
 पृच्छद्यतेऽसौ-प्रश्नः । रक्ष्यतेऽसौ-रक्षणः । सुप्यते इति-स्वप्नः ॥  
 १४१७ उपसर्गकर्माधारेषु दाधोः किः १८ ॥ उपसर्गे कर्मण्यु-  
 पपदे आधारे च दाधोः किः प्रत्ययो भवति ॥ अन्तर्धीयते इति-  
 अन्तर्धिः । आधिः । आदिः । विधिः । आधीयते तत्-आधानं  
 आधिः । आदीयते तत्-आदानं=आदिः । 'आतोऽनपि' (सू० ८०९)  
 इत्याकारलोपः । विधीयते तत्-विधानं=विधिः । संधीयते तत्-  
 संधानं=संधिः । उदकं धीयतेऽस्मिन्निति-उदधिः ॥ १४१८ उदकस्य  
 १९ ॥ उदकशब्दस्य उदादेशो भवति अधिकरणे ॥ पयोधिः । अम्भो  
 निधीयते यत्र स-अम्भोनिधिः ॥ १४१९ भावे युट् २० ॥ धातोर्भावे  
 युट् प्रत्ययो भवति ॥ 'युवोरनाकौ' (सू० ९१) ज्ञायते तत्-ज्ञानम् ।  
 क्रियते तत्-करणम् । दीव्यते तत्-देवनम् । दीयते तत्-दानम् ।  
 भूष अलंकारे । भूष्यते तत्-भूषणम् । द्वियते तत्-हरणम् । ह्रयते  
 तत्-हवनम् । उब्यते तत्-वहनम् । भाष व्यक्तायां वाचि । भाष्यते  
 तत्-भाषणम् । दुष वैचिल्ये । दूष्यते तत्-दूषणम् । गीयते तत्-  
 गानम् । पीयते तत्-पानम् । मीयते तत्-मानम् ॥ १४२० उदः  
 स्थास्तम्भोः सलोपश्च २१ ॥ उदुपसर्गात्परयोः स्थास्तम्भयोः सकारस्य  
 लोपो भवति ॥ उत्थीयते तत्-उत्थानम् । स्तम्भ रोधने । उत्तम्भ्यते  
 तत्-उत्तम्भनम् ॥ १४२१ साधनाधारयोर्युट् २२ ॥ साधने आधारे  
 चार्थे युट् प्रत्ययो भवति ॥ पच्यते अनेनेति-पचनः=अग्निः । पच्यते-

ज्यां स्थाल्यां सा-पचनी=स्थाली ॥ १४२२ ईषदुःसुषु खल्यू २३ ॥  
 ईषदादिषु प्रयुज्यमानेषु खल्यू इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः भावादौ ॥ लकारः  
 प्रत्ययभेदज्ञापनार्थः । खकारो गुणविधानार्थः । मुमागमार्थश्च । ईषत्सु  
 अकृच्छार्थौ । दुः कृच्छार्थः । ईषदनायासेन भूयते इति-ईषद्भवः ।  
 दुर्भवः । सुभवः । ईषदनायासेन क्रियते इति-ईषत्करः प्रपञ्चो हरिणा ।  
 दुःखेन क्रियते इति-दुष्करः । सुखेन क्रियतेऽसौ-सुकरः । ईषदाढ्यः  
 क्रियते अनेनेति-ईषदाढ्यंकरः । आढ्यंकरश्चत्रो भवता । ईषत् पीयते  
 असौ-ईषत्पानः सोमो भवता । दुष्पानः । सुपानः । युधि संप्रहारे ।  
 दुःखेन योधयितुं शक्यः-दुर्योधनः । सुखेन योधयितुं शक्यः-सुयोधनः ।  
 ईषत्शासनः । दुःखेन शासयितुं शक्यः दुःशासनः । सुशासनः ॥

इति कृदन्ते भावाधिकारप्रक्रिया ॥ ६ ॥

### कृत्यप्रक्रिया ७

अथ कृत्यप्रक्रिया ॥ तव्यादीनां कृत्यसंज्ञा पाणिनीयानाम् । कृत्यादि-  
 भावकर्मणोरेव ॥ १४२३ तव्यानीयौ १ ॥ धातोस्तव्यानीयौ प्रत्ययौ  
 भवतः भावादौ ॥ एध वृद्धौ । एध्यते वा एधितुमर्ह एधितव्यं एधनीयं  
 धनं त्वया । भावस्यैकत्वादेकवचनं नपुंसकत्वं च । भूयते वा भवि-  
 तुमर्ह-भवितव्यं=भवनीयम् । क्रियते वा कर्तुमर्ह-कर्तव्यं=करणीयम् ।  
 आस्यते वा आसितुमर्ह-आसितव्यं=आसनीयम् । कर्तव्यः करणीयो  
 वा धर्मस्त्वया । या प्रापणे । प्रयातुमर्ह प्रयातव्यं प्रयाणीयम् । 'ईटो  
 ग्रहाम्' ( सू० ८२१ ) गृह्यते तत्-ग्रहीतव्यं ग्रहणीयम् । वृङ्  
 संभक्तौ । व्रियते वा वरितुं योग्यं-वरितव्यं=वरीतव्यम् वरणीयम् ।  
 वृष् वरणे । व्रियते तत्-वरितव्यं-वरीतव्यं=वरणीयम् ॥ १४२४  
 स्वराद्यः २ ॥ खरान्ताद्धातोर्त्यः प्रत्ययो भवति भावादौ ॥ ऽचीयते वा

चेतुमर्ह-चेयम् । नेयम् । जेयम् । मीयते तत्-मेयम् ॥ १४२५  
 असरूपोऽपवादः प्रत्ययोऽस्त्रियां वा बाधकः सरूपस्तु नित्यम्  
 ३ ॥ चीयते वा चेतुमर्ह-चेतव्यं=चयनीयम् । चिकीर्ष्यते वा  
 चिकीर्षितुमर्ह-चिकीर्ष्यम् । दातुमिच्छतीति दित्सति वा दित्स्यते इति-  
 दित्स्यम् ॥ १४२६ क्षय्यजय्यौ च शक्यार्थे निपात्येते ४ ॥ क्षेतुं  
 शक्यं-क्षय्यम् । जेतुं शक्यं-जय्यम् । अन्यत्र, क्षेयं पापं, जेयं मनः ।  
 'क्षय्यजय्यौच' इति चकारादजर्यमिति निपात्यते । न जीर्यतीति-अजर्य  
 संगतम् ॥ १४२७ इच्चातः ५ ॥ आकारान्ताद्धातोर्थः प्रत्ययो  
 भवति आकारस्य च इकारादेशः ॥ दीयते वा दातुमर्ह-देयम् ।  
 ज्ञातुं योग्यं-ज्ञेयम् । गीयते तत्-गेयम् । ग्लेयम् । पातुमर्ह-पेयम् ।  
 घीयते तत्-घेयम् ॥ १४२८ पुशकात् ६ ॥ पवर्गान्तात् शकादेश्च  
 यः प्रत्ययो भवति भावादौ ॥ शप् उपालम्भे आक्रोशे च । शप्यते  
 इति-शप्यम् । जप्तुं योग्यं-जप्यम् । सरूपत्वात् पक्षे न घ्यण् ।  
 शक्यम् । शक् सह गद् मद् चर् यम् तक् शस् चत् यत् पत् जन्  
 हन् शल् रुच् एते शकादयः । षह मर्षणे । सोढुं शक्यं शक्यते  
 सद्यते वा सोढुमर्ह-सद्यम् । गद्यते वा गदितुमर्ह-गद्यम् । मद्यते  
 वा मदितुमर्ह-मद्यम् । चरितुमर्ह-चर्यम् । यम्यम् । तक् हसने  
 तक्यते वा तकितुमर्ह-तक्यम् । शसु हिंसायाम् । शसितुमर्ह-  
 शस्यम् । चते माने । चते कान्तौ । चत्यते इति-चत्यम् । यत्यम् ।  
 पत्यम् । जन्यम् ॥ १४२९ हनो वधादेशो ये ७ ॥ हन्यते वा  
 हन्तुमर्ह-वध्यम् । शल् शोभायाम् । शल्यम् । रोचितुं शक्यं-  
 रुच्यम् । डुलभष प्रांसौ । लब्धुं योग्यं-लभ्यम् । यभू मैथुने । यब्धुं  
 शक्यं-यभ्यम् । शक् सामर्थ्ये । शकल शक्तौ । शक्यते तत्-शक्यम् ॥  
 १४३० ऋहसात् घ्यण् ८ ॥ ऋवर्णान्ताद्धसान्ताच्च धातोर्घ्यण्

प्रत्ययो भवति भावादौ ॥ घंकारो घित्कार्यार्थः । णकारो वृद्धार्थः ।  
क्रियते वा कर्तुमर्हं कार्यम् । वृञ् वरणे । त्रियते तत्-वार्यम् ।  
चार्यम् । हस् हसने । हास्यम् । द्वियते तत्-हार्यम् । 'हनो घत्' (सू०  
१०४६) हन्यते तत्-घात्यम् । 'चजोः कगौ घिति' (सू० १३५७)  
पक्तुं योग्यं-पाक्यम् । याच्यते तत्-याच्यम् । रुज्यते तत्-रोज्यम् ।  
वच परिभाषणे ॥ १४३१ वचेः शब्दसंज्ञायां कुत्वं वाच्यम्  
९ ॥ तेन वाक्यम् । अन्यत्र, -वाच्यम् ॥ १४३२ यज्याच्वचरूच्-  
प्रवच्अर्चत्यज्पूजर्गर्भुजां घ्यणि कुत्वाभावः १० ॥ याज्यम् ॥  
याच्यम् । वाच्यम् । रोच्यम् । प्रवाच्यम् । अर्च्यम् । त्याज्यम् ।  
पूज्यम् । गर्ज शब्दे । गर्ज्यते तत् गर्ज्यम् । भुज्यते तत् भोज्यम् ।  
बाध् हिंसायाम् । बाधितुं योग्यं-बाध्यम् । भजितुं योग्यं-भाज्यम् ॥  
१४३३ ओरावश्यके घ्यण् ११ ॥ उवर्णान्ताद्धातोरावश्यकेऽर्थे  
घ्यण् प्रत्ययो भवति ॥ १४३४ ओदौतोर्यः प्रत्ययः स्वरवत्  
१२ ॥ घातोरोकारौकारयोर्निमित्तं वा संबन्धी यः प्रत्ययः स स्वरवत्  
स्यात् ॥ समासे अवश्यमादीनामन्तलोपमिच्छन्ति शाब्दिकाः ॥

लुम्पेदवश्यमः कृत्ये तुं काममनसोरपि ।

समो वा हिततयोर्मांसस्य पचि युद्धवञोः ॥ १ ॥

लृञ् छेदने । लृयते वा लवितुं योग्यः-लव्यः । अवश्यं  
लव्यः-अवश्यलव्यः । भोक्तुं कामो यस्य सः-भोक्तुकामः । श्रोतुं  
मनो यस्य सः-श्रोतुमनाः । सम्यक्प्रकारेण हितं-सहितं-संहितम् ।  
संततं-सततम् । मांसस्य पचनं-मांसपचनम् । युद्धवञोः पचि परे मांस-  
स्याकारो वा लुम्पेत् । मांसस्य पचनं-मांसपचनम् । मांसस्य पाकः-  
मांस्पाकः-मांसपाकः ॥ १४३५ ऋदुपधात् क्यप् १३ ॥ ऋका-

रोपधाद्धातोः क्यप् प्रत्ययो भवति भावकार्ययोः । कृती छेदने । कर्तितु-  
 मर्ह—कृत्यम् । नितरां कर्तितुं योग्यं—निकृत्यम् । वृद्धात् । वृत्यते तत्—  
 वृत्यम् ॥ १४३६ कृपिचृत्योर्न क्यप् १४ ॥ कृपू सामर्थ्ये ।  
 'कृपो रो लः' ( सू० ८५७ ) कल्पितुं योग्यं—कल्प्यम् । चृत दीप्तौ ।  
 चर्त्यम् ॥ १४३७ मृजो वा क्यप् १५ ॥ मृज्यं मार्ग्यम् ॥  
 १४३८ ह्रस्वाच्च क्यप् १६ ॥ ह्रस्वान्ताद्धातोर्भावे क्यप् प्रत्ययो  
 भवति ॥ तस्य ग्रहणे तदन्तस्य ग्रहणम् । क्रियते तत्—कृत्यम् ॥  
 १४३९ कृजः क्यपि वा रिङ् वक्तव्यः तुगभावश्च १७ ॥  
 कृत्या क्रिया ॥ १४४० डिदनेकाक्षरोऽप्यादेशस्तदन्तस्यैव  
 वक्तव्यः १८ ॥ १४४१ गुप्गुहोः क्यप् १९ ॥ गोप्तुं योग्यं—  
 गुप्यम् । गूहितुं योग्यं—गुह्यम् ॥ १४४२ वदेः क्यप् भावादौ २० ॥  
 वदेर्धातोः क्यप् प्रत्ययो भवति भावादौ ॥ मृषा उद्यते इति—मृषो-  
 द्यम् । ब्रह्मणा उद्यते या कथा सा—ब्रह्मोद्या ॥ १४४३ ग्रहेः  
 क्यप् २१ ॥ अर्जुनगृह्या सेना ॥ १४४४ भुवो भावे क्यप् २२ ॥  
 नान्नि उपपदे भुवो भावे क्यप् प्रत्ययो भवति ॥ ब्रह्मणो भावः  
 ब्रह्मभूयं गतः । ब्रह्मणा भूयते तत्—ब्रह्मभूयम् । नान्नि किम् ? ।  
 भवितव्यं भव्यम् ॥ १४४५ इण् स्तु वृ द् भृ शास् जुष् खन्  
 एभ्यः क्यप् वाच्यः २३ ॥ तुक् । ईयते इति—इत्यः । स्तुत्यः ।  
 वृत्यः । दृङ् आदरे । दृत्यः । भृत्यः । 'शासेरिः' ( सू० ९१६ )  
 शिष्यः । जुष् प्रीतिसेवनयोः । जुष्यः ॥ १४४६ खन् एत्वं  
 क्यपि वाच्यम् २४ ॥ खन्यते इति—खेयम् ॥ १४४७ मिद्योध्यौ  
 नदे निपात्येते २५ ॥ भिनत्ति कूलमिति—भिद्यः । उज्ज उत्सर्गे ।  
 उज्जति जलमिति—उज्जः नदः । नदे किम् ? । भेत्ता उज्जिता ॥  
 १४४८ कृवृण्योर्वा क्यप् २६ ॥ क्रियते तत्—कृत्यम् । कर्तु

योग्यं कार्यम् । वृष वृष्टौ । वृष्यम् । वर्ष्यम् ॥ १४४९ एते भाव-  
कार्ययोर्विहितास्तव्यादयस्तेऽर्हविधौ च वक्तव्याः २७ ॥  
'रारो ज्ञसे दशाम्' (सू० ७८६) दर्शनार्हः-द्रष्टव्यः । द्रष्टुं अर्हः-  
दर्शनीयः-दृश्यः । इङ् अध्ययने । स्वाध्यायोऽध्येतव्यः । स्वाध्यायो  
नाम वेदः । श्रु श्रवणे । श्रवणार्हः श्रोतव्यः । श्रोतुं योग्यं-श्रवणीयम् ।  
मान पूजायाम् । मानितुं योग्यः-मानितव्यः-माननीयः । ध्यै  
चिन्तायाम् । ध्यानाहोर्ध्यातव्यः । ध्यातुं योग्यः-ध्यानीयः । मन  
ज्ञाने । मननार्हः-मन्तव्यः । मन्तुं योग्यः-मननीयः ॥ १४५०  
सप्रत्ययान्तादपि एते प्रत्यया भवन्ति २८ ॥ नितरां ध्यातु-  
मेष्टव्यः-निदिध्यासितव्यः । भवितुमेष्टव्याः-बुभूषितव्यः-बुभूषणीयः ।  
तव्यानीयौ क्यबुध्यण्याः ॥

कृत्याः पञ्च समाख्याता ध्यण्क्यपौ भावकर्मणोः ।

तव्यानीयौ खराद्यश्च शब्दशास्त्रविचक्षणैः ॥ २ ॥

॥ इति कृत्यप्रक्रिया ॥ ७ ॥

### स्त्रीप्रत्ययाधिकारः ८

अथ ह्यधिकारः ॥ १४५१ स्त्रियां यजां भावे क्यप् १ ॥  
यजादेर्घातोः स्त्रियां भावे क्यप् प्रत्ययो भवति ॥ यज् व्रज् समज्  
निषद् निपत् मन् नम् विद् षुज् शीङ् भृज् इण् कृ इषु परिसृप्  
परिचर अटाद्य आस् चर् जागृ हन् एते यजादयः ॥ किन्त्वात्संप्र-  
सारणम् ॥ इज्यते सा-इज्या । स्त्रीत्वादाप् । व्रज्यते सा-व्रज्या ।  
अज गतौ क्षेपणे च । समज्यते सा-समज्या शिबिका । प्रकर्षेण  
सा० व्या० १७

ब्रज्यते अस्यामिति-प्रब्रज्या । षट् विशरणगत्यवसादनेषु । निषद्यते  
 सा-निषद्या । निषद्या । मन ज्ञाने । मन्यते सा-मन्या । नम्या ।  
 विद्यते सा-विद्या । सुत्या ॥ १४५२ शीडोऽयङ् कृति ये  
 वक्तव्यः २ ॥ शय्या । भृत्या । ईयते सा-इत्या । कृत्या ॥  
 १४५३ कृजो यक् वा वाच्यः ३ ॥ अयकि । क्रियते सा-क्रिया ॥  
 १४५४ इषेऽछान्तादेशो यलोपश्च ४ ॥ इष्यते सा-इच्छा ॥  
 १४५५ सरतेर्गुणः ५ ॥ परिसर्या । परिचर्या । अटाख्या । आस्या ।  
 चर्या ॥ १४५६ जागर्तेर्गुणः ६ ॥ जागर्या । हनस्तकारान्तादेशो  
 हिंसायामर्थे । हन्यते सा-हत्या ॥ १४५७ हन्तेस्तः ७ ॥ हन्तेर्न-  
 कारस्य तकारादेशो भवति क्यपि स्त्रियाम् ॥ ब्रह्म हन्यते इति-  
 ब्रह्महत्या ॥ १४५८ स्त्रियां भावे क्तिः ८ ॥ धातोः स्त्रियां भावे  
 क्तिः प्रत्ययो भवति ॥ क्रियते सा-कृतिः । बुद्ध्यते सा-बुद्धिः ।  
 स्मृङ् चिन्तायाम् । स्मर्यते सा-स्मृतिः । पच्यते सा-पक्तिः ।  
 पचि विस्तारे । पच्यते तत्-पञ्चनं-पंक्तिः । संप्रसारणम् । उद्यते सा-  
 उद्विः । संविद्यते सा-संवित्तिः ॥ १४५९ शमां दीर्घः ९ ॥ शमा-  
 दीनां दीर्घो भवति क्तिप्रत्यये परे ॥ शम्यते सा-शान्तिः । दम्यते  
 सा-दान्तिः । गम्यते सा-गतिः । हन्यते सा-हतिः । भ्रमु चलने ।  
 भ्रम्यते सा-भ्रान्तिः । अनुभूयते तत्-अनुभवनं-अनुभूतिः । विशिष्टा  
 भूतिः-विभूतिः । प्रभूतिः । भवनं भूतिः । शुध शौचे । शोधनं  
 शुद्धिः ॥ १४६० ईश्शीडोर्वरक्तिप्रत्ययौ नेङ्गुणश्च १० ॥ ईश्-  
 शीडोर्वरक्तिप्रत्ययौ स्तो वरप्रत्ययस्य क्तिप्रत्ययस्य च इद् न । शीडो  
 गुणोऽपि न भवति ॥ ईष्टेऽसौ ईश्वरः । संशय्यते तत्-संशयनम्-  
 संशीतिः । ह्री गतौ । ह्रीयते इति-ह्रीतिः । जागरणं जागृतिः ।



निगृह्यते सा-निगृहीतिः । 'कुच संकोचने । कुचं संपर्चनकौटिल्य-  
प्रतिष्ठम्भविलेखनेषु । तुदादिः । निकुचितिः । निपठितिः । खिह  
आस्कन्दने । उपखिहितिः । निपतितिः । विशेषेण ध्रियते सा-  
विधृतिः ॥ १४६१ ग्लाम्लाज्याहाकृत्वरिभ्यः केरर्थे निः प्रत्ययो  
भवति ११ ॥ ग्लायते सा-ग्लानिः । ज्यानिः । हानिः । जित्वरा  
संभ्रमे ॥ १४६२ त्वरतेर्वस्य उत्वं वाच्यम् १२ ॥ त्वर्यते सा-  
तूर्णिः ॥ १४६३ कल्वादिभ्यश्च केरर्थे निः प्रत्ययो भवति  
१३ ॥ 'ऋत इ' (सू० ८२०) कीर्यते सा-कीर्णिः । लूनिः ।  
धूनिः । पूर्णिः ॥ १४६४ संपदादेः क्तिप् वा वाच्यः १४ ॥  
संपत् संपत्तिः ॥ १४६५ कर्तरि क्तिश्च संज्ञायाम् १५ ॥ कर्त्रर्थे  
धातोः क्तिः प्रत्ययो भवति संज्ञायां विषये ॥ डुकृञ् करणे ।  
प्रकुरुते सा-प्रकृतिः । धृञ् धारणे । विपूर्वः विशेषेण धरतीति-  
विधृतिः ॥ १४६६ षिद्धिदामङ् १६ ॥ षितो धातोर्भिदादेश्च  
स्त्रियामङ् प्रत्ययो भवति भावादौ ॥ पच्यते सा-पचा । मृज्यते सा-  
मृजा । जृषु वयोहानौ ॥ १४६७ जरादौ डानुबन्धरहितः अः  
प्रत्ययो भवति १७ ॥ जीर्यत्यनया सा-जरा । इषु इच्छायामिति  
निर्देशाज्ज्ञापकादिच्छा इत्यादि निपात्यते । इच्छा ॥ १४६८  
इषादेरङ्गर्थे युट् १८ ॥ एषणमिति-एषणा । भिद्यते अनया  
सा-भिदा । छिद्यतेऽनया सा-छिदा । क्षिपा । गुह्र संवरणे ।  
गुहा । मेघृ हिंसायाम् । मेघृ बधमेधासंगेमेषु । मेध्यते इति-  
मेधा । कृपा । पीड बाधायाम् । पीडा । बाध पीडायाम् ।  
बाधा । क्षपा रात्रिः ॥ १४६९ गुरोर्हसात् १९ ॥ गुरुमतो हसान्ता-  
द्भातोः स्त्रियामङ् प्रत्ययो भवति भावादौ न क्तिः ॥ ईह चेष्टायाम् ।  
इह्यते सा-ईहा । उह्यते सा-उहा । ईक्ष दर्शनाङ्गनयोः । ईक्ष्यते तत्-

ईक्षणं-ईक्षा । एध्यते सा-एधा । गुरोः किम् ? । भक्तिः । हसात्किम् ? ।  
नीतिः । लिख् रिख् लेखने । लिख्यते तत्-लेखनं-लेखा । रिख्यते तत्-  
रेखणं-रेखा । गुध परिवेष्टने । गुध्यते इति-गोधा । घेद् पाने । सुष्टु  
धीयते इति-सुधा । डुधाञ् धारणपोषणयोः । श्रद्धीयते सा-श्रद्धा ॥  
१४७० क्तिरापादिभ्यः २० ॥ आप्तिः । दीप्यते सा-दीप्तिः ।  
राध्यते सा-राद्धिः । प्रशास्तिः ॥ १४७१ प्रत्ययान्तात् २१ ॥  
प्रत्ययान्ताद्धातोः स्त्रियामङ् प्रत्ययो भवति भावादौ ॥ चिकीर्ष्यते  
सा-चिकीर्षा । आत्मनः कर्तुमिच्छा-चिकीर्षा । आत्मनः पुत्रेच्छा  
वा । पुत्रीयते सा-पुत्रीया । अशितुमिच्छा-अशनाया । लोल्यते सा-  
लोल्या । अटाट्या । कण्डूञ् गात्रविघर्षणे । कण्डूयते सा-कण्डूया ।  
मुमूर्षणं मुमूर्षा ॥ १४७२ इक्श्तिपौ धातुनिर्देशे २२ ॥ धातुनि-  
र्देशे वाच्ये सति इक्श्तिपौ प्रत्ययौ भवतः । शकारः शिति शतुव-  
त्कार्यार्थः । पच् इत्ययं धातुः पचिः । श्रयतिः । पचतिः । भवतिः ॥  
१४७३ ज्यन्तआमृग्रन्थअर्थश्रन्थघटविद्वदिइषिभ्यः स्त्रियां  
युर्वाच्यः २३ ॥ डुकृञ् करणे । 'युवोरनाकौ' ( सू० ११९१ ) कारणा ।  
आसना । अर्थ याच्चाप्रकाशनयोः । अर्थना । ग्रन्थ संदर्भे ।  
ग्रथ्यते तद्ग्रन्थनमिति-ग्रन्थना । उपासनमिति-उपासना । श्रथि  
शैथिल्ये । श्रन्थना । घटनमिति-घटना । विद्यते वेदनमिति-वेदना ।  
वन्दते सा-वन्दना । एषणमिति-एषणा ॥ १४७४ इञ् अजादिभ्यः  
२४ ॥ अज गतौ । आजिः । अत सातत्यगमने । आतिः ॥ १४७५  
इक् कृष्यादिभ्यः २५ ॥ भावादौ ॥ कृष्यते सा-कृषिः । गिरिः ।  
किरिः । सर्वधातुभ्य इः । कविः । रविः ॥

इति ख्यधिकारप्रक्रिया ॥ ८ ॥

### क्त्वाप्रत्ययाधिकारः ९

अथ क्त्वादयः प्रत्ययाः ॥ १४७६ पूर्वकाले क्त्वा १ ॥  
 धातोः क्त्वा प्रत्ययो भवति पूर्वकाले समानकर्तृके धातौ प्रयुज्यमाने ॥  
 देवदत्तः स्नात्वा मुञ्चे ॥ भुक्त्वा व्रजति ॥ १४७७ न क्त्वा सेट् ॥ २  
 सेट् क्त्वा किञ्च भवति ? ॥ वर्तित्वा । शपित्वा । भवित्वा । सेट्  
 किम् ? । कृत्वा ॥ १४७८ रलो व्युपधाद्दलादेः संश्च ३ ॥ उश्च  
 इश्च वी ते उपधे यस्य तस्माद्दलादे रलन्तात्परौ क्त्वासनौ सेटौ वा  
 कितौ स्तः ॥ विद ज्ञाने । विदित्वा-वेदित्वा । लिखित्वा । द्युतित्वा ।  
 व्युपधात्किम् ? । वर्तित्वा । रलः किम् ? । सेवित्वा । हलादेः किम् ? ।  
 एषित्वा । सेट् किम् ? । भुक्त्वा ॥ १४७९ मृड्मृद्गुध्गुह्कुष्क्लि-  
 श्वद्वस्त्रमुष्ग्रहिभ्यः ४ ॥ सेट् किद् भवति । मृड सुखने ।  
 मृडित्वा । मृद क्षोदे । मृदित्वा । गुध् रोचने । गुध् रोषे । गुधित्वा ।  
 गुह् रोगे । गुह् संवरणे । गुहित्वा । कुष् निष्कर्षे । कुषित्वा ।  
 क्लिश् विबाधे । क्लिशित्वा । वद व्यक्तायां वाचि । उदित्वा ।  
 वस् निवासे । उषित्वा । मुषित्वा । गृहीत्वा ॥ १४८० नोपधा-  
 त्थफान्ताद्वा कित् ५ ॥ नकारोपधात् थफान्ताद्धातोः सेट् क्त्वा वा  
 किद्भवति ॥ ग्रन्थ संदर्भे । 'नो लोपः' (सू० ७६२) ग्रथित्वा-ग्रन्थित्वा ।  
 गुम्फ् ग्रन्थने । गुफित्वा-गुम्फित्वा इत्यादि ॥ १४८१ अलंखल्वोः  
 प्रतिषेधे क्त्वा ६ ॥ प्रतिषेधार्थयोरलंखलुशब्दयोः पूर्वपदयोः सतोः  
 पूर्वकालं विनापि क्त्वा प्रत्ययो भवति ॥ अत्रालंखलुशब्दौ निषेधार्थौ,  
 तयोरुपपदत्वात् । अलं भुक्त्वा, न भोक्तव्यम्, भोजनं मा कुरु इत्यर्थः ।  
 खलु भुक्त्वा, न भोक्तव्यम् ॥ १४८२ उदितः क्त्वा वेट् ७ ॥  
 उदितो धातोः परस्य क्त्वाप्रत्ययस्य वा इडागमो भवति ॥ एषित्वा-

इष्ट्वा । अमु चलने । अमित्वा-भ्रान्त्वा । 'अदो जघुः' ( सू० १२९० )  
जगध्वा ॥ १४८३ समासे क्यप् ८ ॥ समासे सति पूर्वकाले  
क्यप्प्रत्ययो भवति तत्कर्तृके धातौ प्रयुज्यमाने ॥ 'ह्रस्वस्य पिति  
कृति तुक्' ( सू० १२४६ ) ङुभृज् धारणपोषणयोः । संभृत्वा करो-  
तीति-संभृत्यकरोति । णमु प्रहृत्वे शब्दे च । प्रकर्षेण कायवाङ्मनो-  
भिर्नत्वा इति प्रणम्य गच्छति । अनञ्पूर्व इत्येके । अकृत्वा जल्पति ।  
अकृत्वा गच्छति ।

अजित्वा शात्रवान्सर्वानकृत्वा विमलं यशः ।

अदत्त्वा वित्तमर्थिभ्यः कथं जीवन्ति भूभृतः ॥ १ ॥

१४८४ क्यपि जेर्गुणश्च ९ ॥ क्यपि लघुपूर्वस्य जेरयादेशोऽपि  
वाच्यः ॥ परिणमयित्वा इति-परिणमय्य भुङ्क्ते । विगमय्य । विग-  
णय्य । अलघुपूर्वस्य न । तेन जेलोपो वाच्यः । प्रतार्य । संप्रधार-  
यित्वा इति-संप्रधार्य । विचार्य करोति । आप्लव व्याप्तौ । आमो-  
तेर्वा । प्रापय्य-प्राप्य ॥ १४८५ दादीनां क्यपि ईत्वाभावो  
वाच्यः १० ॥ क्यपि 'स्थामी' इति ईकारो न भवति ॥ दो अवखण्डने ।  
प्रदाय । प्रसाय । प्रमाय । प्रस्थाय । उप समीपे स्थित्वा इति-उप-  
स्थाय । पिबतेर्वा-प्रपाय-प्रपीय । 'लोपस्त्वनुदात्ततनाम्' ( सू० ८८६ )  
१४८६ जमस्य क्यपि वा लोपः ११ ॥ प्रकर्षेण नत्वा इति-  
प्रणम्य-प्रणत्य । आसमन्तात् ग्रामे । आगम्य-आगत्य ॥ १४८७  
विपूर्वस्य दधातेः करोतेरर्थे क्यप् १२ ॥ विधाय । प्रहाय ॥ १४८८  
तत्कालेऽपि क्यप् षड्यते १३ ॥ नेत्रे निमील्य हसति । मील संमी-  
लने । मील संगमे । उभयपदी । अक्षिणी संमीलित्वा इति-अक्षिणी  
संमील्य हसति । चक्षुषी संमील्य हसति । मुखं व्यादत्त्वा इति-

मुखं व्यादाय स्वपिति ॥ १४८९ पौनःपुन्ये णम्पदं द्विश्च १४ ॥  
 समानकर्तृकेषु धातुषु मयुज्यमानेषु पूर्वकाले पौनःपुन्यार्थे धत्तोर्णम्  
 प्रत्ययो भवति णमन्तस्य पदस्य द्विर्वचनं भवति ॥ 'आतो युक्'  
 (सू० ११९२) पीत्वा पीत्वा इति-पायं पायं गच्छति । आदरे  
 वीप्सायां द्विर्भावः । भुक्त्वा भुक्त्वा इति-भोजं भोजं व्रजति ।  
 स्मृत्वा स्मृत्वा इति-स्मारं स्मारं नमति शिवम् ॥ १४९० कथमा-  
 दिषु स्वार्थे कृञो णम् १५ ॥ कथं इत्थं अन्यथा एवं एतेषु प्रयुज्य-  
 मानेषु स्वार्थे कृञो णम् प्रत्ययो भवति ॥ कथंकारं इत्थंकारं  
 अन्यथाकारं एवंकारं पठति, एवं पठतीत्यर्थः ॥ १४९१ समूला-  
 कृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहां णम् वाच्यः स्वार्थे तेषामनुप्रयोगश्च १६ ॥  
 समूलघातं हन्ति । अकृतकारं करोति । जीवं गृहीत्वा इति-जीवग्राहं  
 गृह्णाति-इत्यादि ॥ १४९२ वर्णात्कारः १७ ॥ वर्णमात्रात्कारः  
 प्रत्ययो भवति ॥ क इति वर्णः ककारः । व इति वर्णो वकारः ।  
 अ इति वर्णः अकारः । वर्णसमुदायादपि कारो दृश्यते । अहंकारः ।  
 ओंकारः । टकारः । पकारः । तकारः इत्यादि ॥ १४९३ रादिफो  
 वा १८ ॥ र इति वर्णः रेफः-रकारः ॥

रकारादीनि नामानि श्रुत्वा तत्रास रावणः ।

रत्नानि च रमण्यश्च संत्रासं जनयन्ति मे ॥ २ ॥

रकारादीनि नामानि शृण्वतो मम पार्वति ।

मनः प्रसन्नतामेति रामनामाभिश्ङ्कया ॥ ३ ॥

१४९४ लोकाच्छेषस्य सिद्धिर्यथा मातरादेः १९ ॥ अस्व  
 सारस्वतव्याकरणस्य ये शेषप्रयोगास्तेषां लोकात् अन्यव्याकरणा-  
 त्सिद्धिर्भवति यथा मातरादेः । इत्यादिप्रयोगानुसारेण बोद्धव्यम् ॥

स्वरूपान्तोऽनुभूत्यादिः शब्दोऽभूद्यत्र सार्थकः ।

स मस्करी शुभां चक्रे प्रक्रियां चतुरोचिताम् ॥ ४ ॥

अवताद्वो हयग्रीवः कमलावर ईश्वरः ।

सुरासुरनराकारमधुपापीतपत्कजः ॥ ५ ॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्याऽनुभूतिस्वरूपाचार्यविरचितायां  
कृदन्तप्रक्रियायां क्त्वादिप्रत्ययप्रक्रिया समाप्ता ॥ ९ ॥

संपूर्णोऽयं ग्रन्थः ॥





DONATED TO  
TTD CENTRAL LIBRARY





# संग्राह्य व्याकरणग्रन्थ

मृ. डा. ख.

**लघुधातुरूपसंग्रह—**( टिप्पणीसहित ) पंडितश्रीदेवानंदज्ञा-

प्रणीत. इसमें लघुसिद्धान्तके सब धातुओंकी रूपसिद्धि ऐसी

अच्छी लिखी है कि जिसके पढ़नेवाले बालकोंको पढ़नेमें बड़ी

सुगमता होती है.

... .. १८ ८८

**लघुसिद्धान्तकौमुदी—**वरदराजप्रणीत टिप्पणादिभिरलंकृत ... ११

८८

**मध्यसिद्धान्तकौमुदी—**वरदाचार्यकृत ... .. ३

१८

**सारस्वतव्याकरण—**चन्द्रकीर्तिप्रणीतव्याख्यासहित ( वृत्ति-

प्रत्ययत्मक ) ... .. ८

१११

**सारस्वतपूर्वपक्षावलि** ... .. १८

८८

**सिद्धान्तकौमुदी—**भट्टोजिदीक्षितकृत, अष्टाध्यायीसूत्रपाठ,

गणपाठ, धातुपाठ, लिङ्गानुशासन, शिक्षा, सूत्रानुक्रमव्यादि-

समेत ... .. ५

१११

**रामचन्द्रिका—**संस्कृतशब्दरूपावलि, गुञ्जीक कृत ... .. १११

८११

**शब्दरूपावलि—**गुञ्जीक कृत ... .. १८

८८

**धातुरूपावलि** ... .. ११

८८

**समासचक्र** ... .. १८

८८

मॅनेजर, निर्णयसागर प्रेस, बंबई २